

1975-2025  
50 years of Excellence



# अभिव्यक्ति

संयुक्तांक-वर्ष 2023-24 तथा 2024-25

“स्वर्ण जयंती विशेषांक”



पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय  
रामनगर (नैनीताल) उत्तराखण्ड

## संस्थापक



स्व. ला. प्यारे लाल गलबलिये



स्व. ला. नन्दकिशोर गलबलिये

## कुलगीत

सुख सरिता कोसी के तीर  
बसा है सुन्दर विद्यापीठ  
जहाँ प्रवाहित विद्या-नीर  
प्रसरित सदा ही ज्ञान-दीठ।  
संगीत, कला, कविता का ठाठ  
शिल्प, रसायन, भौतिक-ज्ञान  
सिखलाता गुरुकुल यह पाठ  
प्राणि, वनस्पति, योग और ध्यान  
देवभूमि के रज से पावन  
रामनगर उपवन मनभावन  
शक्ति-शील उद्योग प्रधान  
राष्ट्र प्रेम है, निज पहचान॥  
सत्य, अहिंसा, न्याय-विहान  
सर्वोपरि है, अपनी आन॥

मानवता संदेश महान  
समता-हित, सरबस बलिदान।  
माँ गिरिजा की आँचल-छाया  
गुरुकुल ने सौभाग्य है पाया  
ज्ञान-ज्योति से ज्योतित सारा  
प्रमुदित विद्या-सदन हमारा॥  
यहाँ विराजित हंस-वाहिनी  
सदा सुपूजित वीणा-वादिनी  
ऋतु ज्ञानान्न मुक्ति-मंत्र प्रदायिनी  
शत् अभिनन्दन पुस्तक धारिणी॥

सुख सरिता कोसी के तीर  
बसा है सुन्दर विद्यापीठ  
जहाँ प्रवाहित विद्या-नीर  
प्रसरित सदा ही ज्ञान-दीठ।

“जान किसी अनथक ज्वाला से, दीप्त तुम्हारी भी है छाती।  
मैं ही तुमको सौंप रहा हूँ, यह अपने प्राणों की थाती।  
मूल्य जानकर इसका रखना, उस में बसाकर।”



# अभिव्यक्ति

वार्षिक पत्रिका स्वर्ण जयन्ती अंक  
2023-24 एवं 2024-25

संयुक्तांक



पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,  
रामनगर (नैनीताल)

## संरक्षक

प्रोफेसर मोहन चन्द्र पाण्डे

## प्रधान सम्पादक

डॉ. पुनीता कुशवाहा

## सहयोगी सम्पादक

डॉ. मूलचंद शुक्ला

डॉ. नीमा राणा

डॉ. डी.एन. जोशी

डॉ. ऋचा पुनेठा

डॉ. प्रकाश सिंह बिष्ट

## छात्र सम्पादक

प्रियांशु लखचौरा

पूजा मेहरा

**ले० ज० गुरमीत सिंह**

पीवीएसएम यूवाईएसएम, एवीएसएम,  
वीएसएम (से.नि.)

राज्यपाल उत्तराखण्ड



सत्यमेव जयते

राजभवन उत्तराखण्ड

देहरादून 248003

दूरभाष : 0135 - 2757400

2757403



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर, नैनीताल द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका “**अभिव्यक्ति**” के संयुक्तांक (वर्ष 2023-24 तथा 2024-25) का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका न केवल महाविद्यालय की शैक्षिक एवं सृजनात्मक परंपरा का प्रतीक है, बल्कि विद्यार्थियों की बौद्धिक एवं अभिव्यक्तिगत क्षमता को एक सशक्त मंच भी प्रदान करती है।

महाविद्यालय गुणवत्तायुक्त शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रगति एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महाविद्यालय पत्रिका, छात्र-छात्राओं की मौलिक रचनात्मकता व सृजनात्मक प्रतिभा के विकास को अभिव्यक्त करने का सुलभ अवसर प्रदान करती है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है, कि “**अभिव्यक्ति**” पत्रिका में प्रकाशित लेख, शोध एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारी न केवल महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए बल्कि अन्य सभी पाठकों के लिए भी ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मंडल, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा समस्त छात्र-छात्राओं को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

**गुरमीत**

(ले ज गुरमीत सिंह)

**धर्मेन्द्र प्रधान**  
**Dharmendra Pradhan**



सत्यमेव जयते

**शिक्षा मंत्री**  
भारत सरकार  
**Minister of Education**  
Government of India



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल, उत्तराखण्ड अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अपनी वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” का ‘स्वर्ण जयंती विशेषांक’ प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे आशा है कि यह विशेषांक विद्यार्थियों की रचनात्मकता को एक प्रभावी मंच प्रदान करेगी।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय अपनी पत्रिका के ‘स्वर्ण जयंती विशेषांक’ के माध्यम से विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता को विकसित करने और नवीन ज्ञान-सृजन में एक महत्वपूर्ण स्रोत बनेगा। यह पत्रिका निश्चित रूप से महाविद्यालय के कद और लोकप्रियता को बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

मैं, पत्रिका के ‘स्वर्ण जयंती विशेषांक’ के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

  
(धर्मेन्द्र प्रधान)

पुष्कर सिंह धामी



मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय  
देहरादून - 248001

फोन : 0135-2650433  
0135-2716262

फैक्स : 0135-2712827  
कैम्प कार्यालय

फोन : 0135-2750033  
0135-2750344

फैक्स : 0135-2752144



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (जनपद-नैनीताल) द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका का संयुक्तांक “अभिव्यक्ति” (वर्ष 2023-24 तथा 2024-25) का प्रकाशन करने के साथ-साथ वर्ष- 2025 में महाविद्यालय की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर अभिव्यक्ति का आगामी विशेषांक संस्करण “स्वर्ण जयन्ती विशेषांक” का भी प्रकाशन किया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि किसी भी विद्यालय की पत्रिका छात्रों के चहुँमुखी विकास की प्रतिभा का एक मंच प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन है। इस प्रकार की पत्रिका में संकलित प्रत्येक रचना सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में विद्यालय स्तर की विभिन्न गतिविधियों के सफल आयोजनों सहित विभिन्न प्रकार की उपयोगी जानकारियों का भी समावेश होगा, जो निःसन्देह महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं पाठकों के सर्वांगीण विकास में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

मेरी ओर से पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (जनपद-नैनीताल) के समस्त महाविद्यालय परिवार को इस वार्षिक पत्रिका संयुक्तांक “अभिव्यक्ति” (वर्ष 20223-24 तथा 2024-25) एवं अभिव्यक्ति का आगामी विशेषांक संस्करण “स्वर्ण जयन्ती विशेषांक” के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(पुष्कर सिंह धामी)

**डॉ. धन सिंह रावत**

मंत्री

चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा  
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा  
विद्यालयी शिक्षा

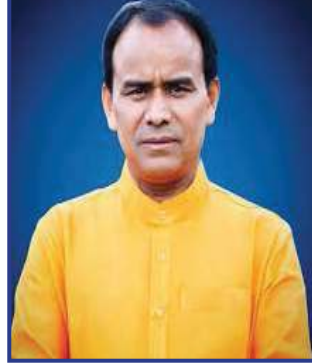


विधान सभा भवन

कक्ष सं. : 20

फोन : (0135) 2666304

फैक्स : (0135) 2666308



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) अपनी वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” के संयुक्तांक (वर्ष 2023-24 एवं 2024-25) का प्रकाशन “स्वर्ण जयन्ती विशेषांक” के रूप में प्रकाशित करने जा रही है। पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक और शिक्षणेत्तर गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दर्पण होती है, जो अध्ययनरत् विद्यार्थियों को उनमें अंतर्निहित मौलिक, सृजनात्मक प्रतिभा के विकास एवं अभिव्यक्ति का सुलभ अवसर प्रदान करती है। रचनाशीलता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि “अभिव्यक्ति” पत्रिका इस लक्ष्य की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

सन् 1975 से सन् 2025 तक की 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा के इतिहास में महाविद्यालय ने अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। गत वर्षों में महाविद्यालय ने अनेक नवोन्मेषी कार्यक्रमों के द्वारा स्वयं को प्रत्येक के अत्यन्त प्रतिष्ठित राजकीय महाविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक शिक्षा एवं शोध क्षेत्र के साथ ही महाविद्यालय की सांस्कृतिक, सामाजिक और जन सरोकारों से जुड़े विषयों पर सक्रियता को प्रतिबिम्बित करते हुए एक उदाहरण प्रस्तुत करेगा और ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी रचनाओं के माध्यम से उत्तराखण्ड राज्य तथा भारतवर्ष के बौद्धिक नव निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

मैं, महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मंडल, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा समस्त छात्र-छात्राओं को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनों प्रेषित करता हूँ।

  
(डॉ0 धन सिंह रावत)

**डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा**  
आई.ए.एस.  
सचिव



तकनीकी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा  
उत्तराखण्ड शासन  
04, सुभाष मार्ग, देहरादून  
टेलीफोन : (0135) 2659850  
ई-मेल: ranjitksinha@gmal.com  
अर्द्ध.शा.पत्र.सं. 400/व.नि.स./स.उ./2025  
दिनांक: 26/03/2025



## शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) वर्ष 2025 में स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण कर रहा है तथा अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के आगामी अंक 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' का प्रकाशन करने जा रहा है। ज्ञान, सृजन और नवाचार की सशक्त अभिव्यक्ति 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' पत्रिका का प्रकाशन महाविद्यालय के अकादमिक और सृजनशील गौरव का प्रतीक है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, अपितु विद्यार्थियों की बौद्धिक उड़ान और उनके विचारों की संजीवनी है, जो कल्पनाओं को शब्दों में ढालने का अनुपम अवसर प्रदान करेगी।

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका उसकी आत्मा होती है, जहाँ उसकी शैक्षिक उत्कृष्टता, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और बौद्धिक परम्पराएँ उजागर होती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा सशक्त माध्यम बनेगी जो उनके विचारों, अनुभवों एवं रचनात्मकता को उभारने का कार्य करेगी।

मैं 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि यह पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा एवं नवाचार का उज्ज्वल आलोक बनकर विद्यार्थियों के भविष्य को आलोकित करेगी।

(डॉ० रंजीत कुमार सिन्हा)



## उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी - 263139 (नैनीताल)

E-mail - highereducation.director@gmail.com

**डॉ. विश्वनाथ खाली**

निदेशक (उच्च शिक्षा)



अर्द्धशासकीय पत्रांक: 3147/2025-26

दिनांक: 03 सितम्बर, 2025

### शुभकामना संदेश

महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) अपनी वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” सत्र 203-24 एवं 2024-25 के संयुक्तांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दर्पण होती है, जो अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनमें अन्तर्निहित मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा के विकास एवं अभिव्यक्ति का सुलभ अवसर प्रदान करती है। रचनाशीलता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। “अभिव्यक्ति” इस लक्ष्य की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम होगी। शिक्षकों के आलेख एवं रचनाएँ सृजनात्मकता को मुखरित एवं अभिप्रेरित करने में सहायक होने के साथ ही विद्यार्थियों के साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभागिता को प्रतिबिम्बित करती है। वस्तुतः वार्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से चिन्तन, मनन, सृजन एवं नवाचार की श्रृंखला उदित अभिपुष्ट एवं परिवर्द्धित होती है।

मैं उक्त पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, समस्त प्राध्यापकों एवं छात्र/छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

Sd/-

प्रो. (डॉ. बी.एन. खाली)



# कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

स्लीपी हॉलो, नैनीताल-263001, उत्तराखण्ड, भारत

**Kumaon University, Nainital**

Sleepy Hollow, Nainital-263001, Uttarakhand, India  
(Accredited "B+" Grade by NAAC)

**प्रो. दीवान एस. रावत**

एफ.एन.ए.एससी., एफ.आर.एस., सीसी.केम (लन्दन)  
कुलपति

**Prof. Diwan S. Rawat**

FNASc, FRSC, CChem (London)  
Vice-Chancellor



## शुभकामना संदेश

यह जानकरी प्रसन्नता हो रही है पीएनजी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान से प्रकाशित पत्रिका में छात्र-छात्राओं द्वारा दी गयी रचनायें, विचार, कहानियां आदि उनके बौद्धिक विकास को तो दर्शाता ही है साथ ही ऐसे प्रयासों से छात्र-छात्राओं के आत्मविश्वास में भी अशांति वृद्धि होती है। आशा है महाविद्यालय अपने दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए भविष्य में भी उच्च स्तरीय प्रकाशनों, सेमीनार, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को लाभान्वित करने में अग्रसर रहेगा।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में (स्वर्ण जयन्ती विशेषांक) प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी। पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी प्राध्यापकों, विद्यार्थियों, अधिकारियों कार्मिकों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

दिनांक - 21/03/2025

नैनीताल

(प्रो० दीवान एस० रावत)

प्रो० ओम प्रकाश सिंह नेगी  
कुलपति  
Prof. Om Prakash Singh Negi  
Vice Chancellor



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय  
Uttarakhand Open University

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

## शुभकामना संदेश



मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) महाविद्यालय अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण करने पर महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” (संयुक्तांक सत्र 2023-24 तथा 2024-25) का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकायें विद्यार्थियों के उज्ज्वलतम भविष्य एवं सक्रिय कार्यकुशलता में बढ़ोत्तरी व परस्पर सहयोग एवं रचनात्मक अभिरूचियों को प्रकाशन में लाने का उत्कृष्ट कार्य करती है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका में जनसामान्य हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा। जिससे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शैक्षिक अनुसंधान में पठन सामग्री से अध्यापक, छात्र/छात्राओं एवं समाज के अन्य वर्ग लाभान्वित होंगे तथा उत्तराखण्ड जनमानस को नयी ऊर्जा प्राप्त होगी। साथ ही पत्रिका दूरस्थ शिक्षा भी देश व क्षेत्र की जन सामान्य की चेतना को जागृत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

मैं “अभिव्यक्ति” के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्य, सम्पादक, शिक्षकों, शिक्षणोत्तर कर्मचारियों तथा छात्र-छात्राओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

(प्रो. ओ०पी०एस० नेगी)

**दीवान सिंह बिष्ट**  
विधायक  
सदस्य- राज्य वन्यजीव  
सलाहकार बोर्ड, उत्तराखण्ड



61- विधानसभा रामनगर (नैनीताल)  
60- विधायक हॉस्टल रेस्कोर्स,  
देहरादून, उत्तराखण्ड  
मो0 नं0- 9837138988



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) की वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित किया जा रहा है। महाविद्यालय एवं शैक्षणिक संस्थाओं की पत्र-पत्रिकाओं का अपना एक विशिष्ट स्थान और महत्व है, जो न केवल महाविद्यालय की छवि को प्रस्तुत करती है बल्कि छात्र-छात्राओं के लिए उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर भी उपलब्ध कराती है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से जहां छात्रों की बहुमुखी प्रतिभा का विकास होगा, वहीं उनके चारित्रिक और साहित्यिक स्तर में वृद्धि होगी।

मैं पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) की वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” के स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मण्डल, समस्त प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

  
(दीवान सिंह बिष्ट)

**मंगेश घिल्डियाल**  
आई.ए.एस.



## शुभकामना संदेश



पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” का संयुक्तांक (2023-2025) के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका न केवल महाविद्यालय की अकादमिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि यह विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों की सृजनात्मकता को भी उजागर करने का एक सशक्त मंच प्रदान करेगी।

मुझे आशा है कि विगत वर्षों की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों एवं विचारों को समेटते हुए यह संयुक्तांक महाविद्यालय के सतत विकास और शैक्षणिक समर्पण की गाथा कहेगा। “अभिव्यक्ति” के इस विशेष संस्करण में रचनात्मक लेख, कविताएं, शोध आलेख, संस्मरण, एवं रिपोर्ट्स के माध्यम से ज्ञान और भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति होगी।

मैं पत्रिका में योगदान देने वाले उन सभी लेखकों, संपादकों, सहयोगियों एवं तकनीकी टीम के प्रयासों को साधुबाद देता हूं, जिनके परिश्रम और प्रतिबद्धता से यह अंक संभव हो पाया। मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए प्रेरणादायक, विचारोत्तेजक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

एक बार पुनः “अभिव्यक्ति” के सफल प्रकाशन हेतु अनेकानेक शुभकामनाएं।

  
(मंगेश घिल्डियाल)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल)  
उच्च शिक्षा, उत्तराखण्ड

डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद  
सेवानिवृत्त प्राचार्य

शुभकामना संदेश



अत्यंत हर्ष का विषय है कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का संयुक्तांक, वर्ष 2023-24 एवं 2024-25, प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय पत्रिका किसी भी शिक्षण संस्थान के बहुआयामों को सशक्त रूप से प्रदर्शित करने का माध्यम होता है। विद्यार्थियों को बौद्धिक सृजनशीलता, अद्यतन उपलब्धियों, कृत कार्यों एवं चुनौतियों की दिशा एवं दशा को भी प्रतिबिंबित करता है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में ऐसी ज्ञान-वर्धक, एवं सारगर्भित पाठ्य-सामग्री प्रकाशित की जाएगी जिससे छात्र-छात्राओं का सही मार्ग दर्शन होगा और उनके जीवन दर्शन व कार्य-संस्कृति में रचनात्मक परिवर्तन आयेगा।

'अभिव्यक्ति' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मंडल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित-

06.6.2025

(डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल)

उच्च शिक्षा, उत्तराखण्ड

डॉ. बी.सी. उप्रेती  
पूर्व प्राचार्य

शुभकामना संदेश



गिरिराज हिमालय को साक्षी मानकर देवभूमि उत्तराखण्ड के सुरम्य आंचल में अवस्थित पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) की वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन मेरे लिये अति हर्ष व उल्लास का विषय है।

1975 में जिन सार्थक एवं संरचना संकल्पनाओं के साथ पर्वतीय अंचल के भाबर में इस महाविद्यालय को स्थापित किया गया था उन समस्त संभावनाओं तथा लक्षणों को साकार करता हुआ उच्च शिक्षा का यह केन्द्र कर्तव्यनिष्ठ एवं विद्वत प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, सुयोग्य प्राध्यापकों कर्तव्यनिष्ठ शिक्षणोत्तर कर्मचारियों के सहयोग से स्वस्थ नैतिक समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान सराहनीय है।

समस्त सद्भावनाओं सहित -

Sd/-

(डॉ. बी.सी. उप्रेती)

मो० अकरम

अध्यक्ष

नगरपालिका परिषद, रामनगर

## शुभकामना संदेश



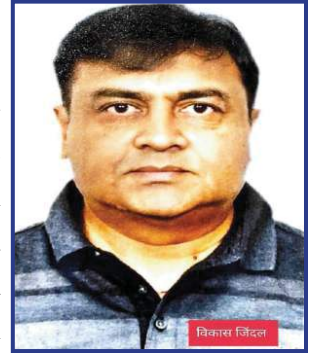
मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्यारेलाल नन्द किशोर गलबलिये राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर वर्तमान वर्ष 2025 ममें अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण कर रहा है। अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस उपलक्ष्य में महाविद्यालय प्रशासन द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' (संयुक्तांक) सत्र 2023-24 तथा 2024-25 का प्रकाशन इस वर्ष 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' के रूप में किया जा रहा है। आशा है कि इस विशेषांक के माध्यम से महाविद्यालय के साथ-साथ क्षेत्रान्तर्गत स्थित अन्य विद्यालयों के छात्रों को भी उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होगी। विशेषांक में प्रकाशित रचनात्मक लेखों, साहित्य तथा अन्य शिक्षाप्रद जानकारी से छात्र समुदाय के साथ-साथ अन्य पाठकों का भी ज्ञानवर्धन होगा। महाविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा से सम्बन्धित गतिविधियों को प्रदर्शित करने तथा छात्र समुदाय की प्रंतिभा को निखारने में स्वर्ण जयन्ती विशेषांक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी सिद्ध होगा। महाविद्यालय का यह प्रयास सराहनीय है।

प्यारेलाल नन्द किशोर गलबलिये राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की उत्तरोत्तर प्रगति व विकास की कामना करते हुये 'स्वर्ण जयन्ती विशेषांक' के उद्देश्यपूर्ण एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

  
(मो० अकरम)

विकास जिन्दल

## शुभकामना संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है, कि पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) अपनी वार्षिक पत्रिका "अभिव्यक्ति" का संयुक्तांक (वर्ष 2023-24 तथा 2024-25) "स्वर्ण जयन्ती अंक" प्रकाशित कर रहा है। इस महाविद्यालय के संस्थापक हमारे दादाजी श्रद्धेय स्वर्गीय लाला प्यारेलाल गलबलिये जी तथा श्रद्धेय स्वर्गीय लाला नंद किशोर गलबलिये जी का स्वप्न था, कि इस क्षेत्र के विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करके अनेक क्षेत्रों में अपना नाम रोशन करें परन्तु उस समय रामनगर में महाविद्यालय ना होने के कारण यहां के और आसपास के विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए अन्य महाविद्यालयों में जाना पड़ता था। जिससे उन्हें अनेक तरह के कष्ट और विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। उन्हें अपने परिवार से भी दूर रहना पड़ता था। उनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी कमजोर होती थी। जिस कारण बहुत से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा का सपना "स्वप्न" बन कर ही रह जाता था। हमारे दादाजी ने इस समस्या पर विचार करते हुए रामनगर में ही महाविद्यालय खोलने का संकल्प लिया और तन-मन-धन से रामनगर में महाविद्यालय की स्थापना की।

आज उनका स्वप्न साकार हो गया है। वर्तमान में इस महाविद्यालय से शिक्षा ग्रहण किए हुए बहुत से विद्यार्थी उच्च पदों पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। क्रीड़ा के क्षेत्र में खिलाड़ियों ने महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। विद्यार्थी शोध कार्यों में भी निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं और अनेक शोधार्थी उच्च शिक्षा में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। देश की रक्षा में योगदान दे रहे हैं।

मैं वार्षिक पत्रिका "अभिव्यक्ति" के स्वर्ण जयन्ती संयुक्तांक के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मण्डल, समस्त प्राध्यापकों, रचनाकारों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(विकास जिन्दल)

## प्राचार्य की कलम से.....

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अभिव्यक्ति का संयुक्तांक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। स्वर्ण जयन्ती अंक के रूप में प्रकाशित यह पत्रिका विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ ही पचास वर्षों की विकास-यात्रा का अभिलेख भी है। पत्रिका को समृद्ध और सशक्त बनाने में इस अंक में पूर्व छात्रों तथा पूर्व कार्मिकों ने भी लेखकीय सहयोग प्रदान किया है। सभी हितधारकों के साझा प्रयास और मातृ संस्था प्रति उनके जुड़ाव से महाविद्यालय सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसर है। केन्द्र एवं उत्तराखण्ड राज्य की सरकारों द्वारा गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने तथा उक्त हेतु उचित संरचना प्रदान करने के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित किये गये हैं जिनको महाविद्यालय द्वारा पूर्ण निष्ठा तथा प्रतिबद्धता के साथ लागू किया गया है। परिणामस्वरूप, महाविद्यालय गतवर्षों में अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त कर सका है। मिनी स्टेडियम, वाणिज्य संकाय भवन, परीक्षा भवन का निर्माण प्रारम्भ हो चुका है। अन्य अनेक भवन शीघ्र स्वीकृति व निर्माण की स्थिति में हैं। अनेक भवनों का जीर्णोद्धार किया गया है। प्रयोगशालाओं का आधुनिकीकरण किया गया है। शिक्षण व शोध के क्षेत्र में अनेक व्यक्तिगत तथा सामूहिक कीर्तिमान बने हैं। शिक्षण गतिविधियों व सामाजिक कार्यों में भी महाविद्यालय ने विश्वविद्यालय, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इन उपलब्धियों को धरातल पर लाने के लिए राज्य सरकार तथा विभाग के उच्चाधिकारियों, महाविद्यालय के शिक्षण व शिक्षणोत्तर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के प्रति मैं आभारी हूँ। विगत वर्षों में प्राप्त शैक्षिक, शिक्षणोत्तर तथा भौतिक उपलब्धियों को चित्रित करता यह अंक निश्चय ही सर्वसमाज से महाविद्यालय को परिचित कराते हुए रामनगर क्षेत्र के गौरव को भी रेखांकित करता है।

अभिव्यक्ति पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनादाताओं के साथ ही समस्त हितधारकों को उनके सहयोग एवं अनुराग के लिए पुनः कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका के आकर्षक व ससमय मुद्रण के लिए उत्तरायण प्रकाशन के प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

दिनांक - 01.01.2026



*(Handwritten signature)*

प्रो. (डॉ.) एम.सी. पाण्डे

## सम्पादकीय

विश्व पटल पर अपना विशेष स्थान बनाये हुए प्रकृति की गोद में स्थित पी. एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) की वार्षिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” का वर्ष 2023-24 तथा 2024-25 का संयुक्तांक सुधी पाठकों तक पहुंचाने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हर्ष का विषय है, कि सन् 2025 में इस महाविद्यालय ने अपनी 50 वर्ष की यशस्वी यात्रा को पूर्ण किया है और “अभिव्यक्ति” पत्रिका का वर्तमान अंक “स्वर्ण जयंती अंक” के रूप में 50 वर्षों की उपलब्धियों को अपने में संजोए हुए है। इस स्वर्ण जयंती अंक में पुरातन विद्यार्थियों के संदेश, लेख तथा कविताएं भी संकलित की गई हैं।



हमारे देश में विकास की बयार बह चली है। यह हमारे राज्य उत्तराखंड के लिए अत्यंत गौरव की बात है, कि नई शिक्षा नीति को धरातल पर लाने में हमारे राज्य का सर्वप्रथम स्थान है। नई शिक्षा नीति 2021 के अंतर्गत एक संकाय का विद्यार्थी अन्य संकाय के विषयों का भी अध्ययन करता है, क्योंकि अपने चयनित संकाय से इतर विषयों की गहन जानकारियां वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। स्मार्ट सिटी की अवधारणा, स्वच्छता अभियान, बेटा बचाओ बेटा पढ़ाओ, वोकल से लोकल, मेक इन इंडिया, पर्यावरण संरक्षण हेतु “एक वृक्ष मां के नाम” आदि योजनाएं पल्लवित हो रही हैं। इनके साथ-साथ नवाचार, देवभूमि उद्यमिता योजना, मेधावी छात्रों की प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग हेतु आर्थिक सहायता योजना, मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा शोध प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री मेधावी छात्र पुरस्कार योजना, तथा विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना आदि अनेक योजनाएं हमारी वर्तमान पीढ़ी को उन्नत विचार तथा गतिशीलता प्रदान कर रही हैं। यद्यपि वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय का केवल दर्पण ही नहीं होती, अपितु ज्ञान के आलोक से प्रतिबिंबित नवोदित प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति का मंच भी होती है। आज युवा शक्ति के अभ्युदय एवं उसके स्वर्णिम भविष्य के निर्माण हेतु उनके द्वारा महत् दायित्व का सपना साकार हो रहा है।

भारतीय संस्कृति की जो धरोहर हमने अपने पूर्वजों से प्राप्त की है, उसमें सौहार्द, सहिष्णुता, समता तथा प्रत्येक धर्म के विचारों का सम्मान हमारी विशिष्टता रही है। आधुनिक जीवन शैली में “सर्वे भवन्तु सुखिनः” तथा “वसुधैव कुटुंबकम्” के सिद्धांत केवल कोरे आदर्श नहीं, बल्कि हमारे दैनन्दिनी-जीवन के अंग रहे हैं। इसी कारण अनेक विदेशी आक्रमणों तथा सैकड़ों वर्षों की परतंत्रता के पश्चात् भी हम अपनी अस्मिता, अलग पहचान और अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हमारे राजनेताओं द्वारा ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित था, जिससे भारतीयता प्रगाढ़ होती है।

मैं समस्त छात्र शक्ति से आह्वान करती हूं, कि वे अपनी समस्त ऊर्जा अपने देश को विकसित देश बनाने में लगाएँ, उसी में हम सभी का कल्याण है। मैं उन महानुभावों अपने विद्वान सहयोगियों का आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने अपने संदेश, विचार तथा लेख भेज कर इस पत्रिका को समृद्ध किया है। कुछ अभिभावकों तथा मेधावी छात्रों के विचार इस अंक में संकलित किए गए हैं। विभागीय आख्याओं, विभागीय प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के साथ-साथ महाविद्यालय के विकास यात्रा में कुछ कार्य “मील का पत्थर” सिद्ध हुए हैं। मैं महाविद्यालय के उन विद्यार्थियों की आभारी हूं, जिन्होंने अपनी रचनाएं “अभिव्यक्ति” पत्रिका में प्रकाशन हेतु प्रेषित की हैं। यद्यपि संकलन विविधता पूर्ण एवं स्तरीय होते हैं विभिन्न विषयों पर आधारित कविताएं, लेख एवं अन्य संकलन हेतु छात्र-छात्राओं के प्रयास सराहनीय हैं मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है, कि हमारा महाविद्यालय अनुभवी, कर्मशील, कर्मठ प्राचार्य प्रोफेसर डॉक्टर मोहन चंद्र पांडे जी के कुशल निर्देशन और मार्गदर्शन प्राप्त कर निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है।

जीवन एक अनवरत प्रक्रिया है आने वाली पीढ़ियों के प्रति हम उत्तरदायी हैं। हमें निरंतर आगे बढ़ना ही होगा-

गहन सघन मनमोहक वन तरू, मुझको आज बुलाते हैं,  
किंतु किये जो वादे मैंने, याद मुझे वो आते हैं।  
अभी कहां आराम बदा, यह मूक निमंत्रण छलना है,  
अरे! अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है।

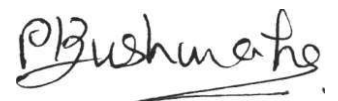
मूल कविता : रॉबर्ट फ्रॉस्ट

"the woods are lovely, dark and deep"

अनुवादक : डॉक्टर हरिवंश राय बच्चन।

अभिव्यक्ति पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य प्रोफेसर डॉक्टर मोहन चन्द्र पांडे जी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं, कि जिनके कुशल मार्गदर्शन, निरंतर प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा अथक सहयोग से पत्रिका के प्रकाशन का कार्य संपन्न हो सका। मैं पत्रिका हेतु अपनी रचनाएं प्रेषित करने के लिए नवोदित रचनाकारों, छात्र-छात्राओं, प्रबुद्ध प्राध्यापक गणों, एवं बुद्धजीवियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं। मैं अपने सहयोगी संपादक मंडल के विद्वान साथियों के पूर्ण सहयोग हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं। मैं पत्रिका मुद्रक उत्तरायण प्रकाशन, नैनीताल रोड, हल्द्वानी का धन्यवाद ज्ञापित करती हूं, जिनके निर्देशन में मुद्रण का कार्य भलीभांति पूर्ण हो सका।

यद्यपि संपादक मंडल के सदस्यों द्वारा वर्तनी शुद्धिकरण को लेकर यथासंभव प्रयास किया गया है, तथापि कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं व्यक्तिगत रूप से क्षमा प्रार्थी हूं। महाविद्यालय निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रहे और पाठकों के हृदय में अपनी अविस्मरणीय छवि अंकित कर सके। इसी कामना के साथ आपके स्नेहिल प्रोत्साहन की आकांक्षी.....



(डॉ. पुनीता कुशवाहा)

**स्वर्ण जयन्ती समारोह (1975-2025) : दीप प्रज्ज्वलन एवं अतिथि सम्मान**



**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयन्ती विशेषांक**

# स्वर्ण जयन्ती समारोह (1975-2025) : सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं दर्शक दीर्घा



सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां



अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयन्ती विशेषांक

# विषय सूची

| क्र.सं. | विवरण   | पृष्ठ संख्या |
|---------|---|--------------|
| 1.      | संदृष्टि और ध्येय                                     | 6            |
| 2.      | प्रपत्र - 4   | 7            |
| 3.      | प्राचार्य कार्यकाल                                    | 8            |
| 4.      | महाविद्यालय छात्र-संघ के अध्यक्षों एवं सचिवों की सूची | 9            |
| 5.      | Galaxy of our Esteemed Alumni                         | 10-11        |

## हिन्दी अनुभाग

|     |  |   |       |
|-----|--|---|-------|
| 6.  | महाविद्यालय : उपलब्धि के 50 वर्ष                               | डॉ. नीमा राणा, असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग        | 13-14 |
| 7.  | बेटी (कविता)   | श्रीमती मीना जोशी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग         | 15    |
| 8.  | रामनगर महाविद्यालय: मेरे हिस्से का विकास और चुनौतियाँ          | प्रो. एम.सी. पाण्डे, प्राचार्य                    | 16-21 |
| 9.  | महाविद्यालय का प्रारंभिक वृत्तान्त                             | ब्रजमोहन गुप्त, डी.लिट्., पूर्व प्राध्यापक        | 22-23 |
| 10. | स्मृतियाँ  | डॉ. डी.के. पनेरू, उपाचार्य हिन्दी (सेवानिवृत्त)   | 23-26 |
| 11. | संस्मरण : ऊधौ मोहे ब्रज बिसरत नहीं                             | रमेश चन्द्र पाण्डे, महाविद्यालय कर्मचारी (से.नि.) | 26-28 |
| 12. | वे दिन, वे लोग   | प्रोफेसर (डॉ.) जी.सी. पन्त                        | 29    |
| 13. | रामनगर : एक ऐतिहासिक शहर                                       | डॉ. शरद भट्ट, असि. प्रोफेसर, इतिहास विभाग         | 30-33 |
| 14. | राष्ट्रीय एकता का महामंत्र                                     | अमित चौहान, बी.ए. प्रथम वर्ष                      | 34-35 |
| 15. | हिन्दी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान               | सीमा, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर                       | 35-38 |
| 16. | गजानन माधव मुक्तिबोध   | रोहित खत्री, बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर                  | 38-39 |
| 17. | राष्ट्र की एकता ही है उसका आधार (कविता)                        | प्रियांशु टम्टा, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर             | 30    |
| 18. | हम्रि संस्कृति हम्रि पछ्ण                                      | गणेश काण्डपाल, एम.ए. इतिहास तृतीय सेमेस्टर        | 40    |
| 19. | मौन संघर्ष (कविता)   | रोमा पाल, बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर                  | 40    |
| 20. | सूचना अधिकार अधिनियम 2005                                      | अंशिका, बी.ए. प्रथम वर्ष                          | 41    |
| 21. | आहार से उपचार  | डॉ. लोतिका अमित, सहायक प्रो., गृहविज्ञान          | 42-43 |
| 22. | रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया (केन्द्रीय बैंक)                        | डॉ. ममता भदोला जोशी, असि. प्रोफेसर (वाणिज्य)      | 44-45 |
| 23. | एक क्लिक पर पढ़ें पंसदीदा किताबें                              | डॉ. दीपक खाती, असि. प्रोफेसर वाणिज्य              | 46-47 |
| 24. | हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग : भक्तिकाल                        | डॉ. नीमा राणा, असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग        | 47-49 |
| 25. | उच्च शिक्षा और हिन्दी : ज्ञान, संस्कृति और संवेदनशीलता का सेतु | सुरेश चंद्रा, सहा. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग       | 49    |
| 26. | शिक्षा तथा विद्या दोनों ही हों अध्यापन का उद्देश्य             | डॉ. जया भट्ट, असि. प्रो. इतिहास विभाग             | 50-51 |
| 27. | शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का पारम्परिक स्वरूप      | डॉ. पुनीता कुशवाहा, एसोसिएट प्रो. हिन्दी          | 52-53 |
| 28. | क्षण भंगुर जीवन (कविता)  | डॉ. पुनीता कुशवाहा, एसोसिएट प्रोफेसर- हिन्दी      | 53    |
| 29. | संगीत  |   | 54-55 |

## कवितायें-

|     |   |  |       |
|-----|---|--|-------|
| 30. | देवभूमि उत्तराखण्ड                      | कैलाश चन्द्र, बी.एड. प्रथम सेमेस्टर          | 56    |
| 31. | मन की व्यथा                             | नवल किशोर जोशी, बी.एड. प्रथम सेमेस्टर        | 56    |
| 32. | अभिव्यक्ति                              | डॉ. रीता तिवारी, सहायक प्राध्यापक हिन्दी     | 57    |
| 33. | एहसास                                   | शीतल, एम.एस.सी. II <sup>nd</sup> सेमेस्टर    | 57    |
| 34. | मेरी अभिलाषा                            | ममता डंगवाल, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर            | 58    |
| 35. | नासमझी                                  | कविता मनराल, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर            | 58    |
| 36. | मौन संघर्ष - 2                          | डौली, बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर                 | 59    |
| 37. | शहादत दिवस : 30 जनवरी                   | सपना आर्या, बी.एड. प्रथम सेमेस्टर            | 59    |
| 38. | कामयाबी का रास्ता                       | पूजा मौलेखी, स्नातक प्रथम वर्ष               | 60    |
| 39. | दिल की बात                              | मेजर नवीन पोखरियाल, पूर्व छात्र              | 60    |
| 40. | कविता                                   | अलीशा, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर                  | 61    |
| 41. | सच्चा पत्रकार                           | अल्लमस, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर                | 61    |
| 42. | टॉपर की पीड़ा                           | अल्लमस, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर                | 62    |
| 43. | बचपन                                    | अंबर छिम्वाल, बी.कॉम, षष्ठ सेमेस्टर          | 62    |
| 44. | माँ की पुकार                            | डॉ. भगवती पनेरू, पूर्व प्रवक्ता हिन्दी       | 63    |
| 45. | मंजिल तक                                | श्रीमती मीना जोशी, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग  | 63    |
| 46. | घसियारिन, अधोहस्ताक्षरी                 | मोहित सिंह नेगी, शोधार्थी, हिन्दी            | 64-65 |
| 47. | दिल की बात                              | नवीन पोखरियाल, पूर्व छात्र                   | 65    |
| 48. | बैरागि                                  | निखिलेश उपाध्याय, बी.ए. सन् 1979             | 65    |
| 49. | घुमक्कड़ी, विवाह नहीं करना              | प्रियांशु लखचौरा, बी.ए. पंचम सेमेस्टर        | 66    |
| 50. | आज जो पीछे हटी तो.., पढ़ो लिखो आगे बढ़ो | डॉ. सीमा अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग | 67    |
| 51. | इच्छाशक्ति                              | शीतल, एम.एस.सी. II <sup>nd</sup> सेमेस्टर    | 68    |
| 52. | मासूमियत                                | रुचि जोशी, बी.एड. प्रथम सेमेस्टर             | 68    |

## संस्कृत अनुभाग

|    |   |   |       |
|----|---|---|-------|
| 1. | सुभाषितानि  | इरम नाज़, बी.ए. तृतीय वर्ष                        | 70    |
| 2. | विद्या - सदाचारयोर्महत्त्वम्  | जीतेन्द्र रावत, बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर               | 70    |
| 3. | संस्कृत भाषा का महत्व   | कु. तान्या, बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर               | 71    |
| 4. | हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव वैदिक साहित्य               | कु. तान्या, बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर               | 71    |
| 5. | स्कन्दपुराणानुसार मानसखण्डान्तर्गत नन्दादेवी का माहात्म्य एवं पौराणिकता | डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल, असि0 प्रोफेसर, संस्कृत विभाग | 72-74 |

## English Section

|     |   |  |       |
|-----|---|--|-------|
| 1.  | No Fail Policy And Its Impact   | Dr. Gurpreet Singh, Asst. Prof., Dept. of Psychology | 76-77 |
| 2.  | Concept of Urban Gardens in India   | Dr. Siraj Ahmad, Asst. Prof., Dept. of Geography     | 78-80 |
| 3.  | Emotional Maturity and Stress Management Among Adolescents  | Dr. Kusumn Gupta, Asst. Prof., Dept. of Psychology   | 81    |
| 4.  | Artificial Intelligence And Human Behaviour   | Prof. Aneeta Joshi, Dept. of Psychology              | 82-83 |
| 5.  | Emotional Intelligence and Improved Interpersonal Skills: Strengthening Bonds and Improving Interaction | Dr. Dev Ashish, Asst. Prof. Deptt. of Psychology     | 83-85 |
| 6.  | Impact of Social Media on Mental Health   | Shubham Rawat, B.Com (III) Sem                       | 86-87 |
| 7.  | National Unity Day  | Harshita Nainwal, B.A. I Sem.                        | 87    |
| 8.  | Mindful Eating  | Dr. Lotiha Amit, Home Science                        | 88    |
| 9.  | Uncovering the Secrets of the past: The Magic of Carbon Dating  | Mansi Bisht, B.Sc. IV <sup>th</sup> Sem (P,C,M.)     | 88    |
| 10. | Smile is a Universal Language   | Khasti Arya, B.A. - 4th SEM                          | 89    |
| 11. | "Democracy in India" Are we Really Democratic ?   | Altamas, B.A. - 4th SEM                              | 89    |
| 12. | Impact of Social Media on Mental Health   | Miskaat Sabbag, MA. Sociology (I) Sem                | 90-91 |
| 13. | 24 UK [G] BN NCC ALMORA   |  | 91    |
| 14. | Natural Resources of Jim Corbett National Park  | Gosiya, Research Scholar                             | 92    |
| 15. | Myth-Busting with Chemistry: Separating Fact from Fiction   | Isha Chuphal, B.Sc. IV <sup>th</sup> Sem             | 93    |
| 16. | Impact of Social Media on Mental Health   | Kajal Joshi, B.Sc (V) Sem                            | 93-94 |
| 17. | Uncovering the Secrets of the Past: The Magic of Carbon Dating  | Mansi Bisht, B.Sc. IV <sup>th</sup> Sem (P.C.M.)     | 94    |
| 18. | Artificial Intelligence's Current Trends and Applications in Chemistry                                  | Dr. Manoj Kumar Nailwal, Deptt. of Chemistry         | 95-96 |
| 19. | The Role of Pharmaceutical Chemistry in Medicine  | Prof. Jagmohan Singh Negi, Deptt. of Chemistry       | 97    |

### विभागीय गतिविधियाँ (Report of Departments)

**88-150**

|   |         |
|---|---------|
| प्राध्यापकों की सूची वर्ष 2023-24 एवं वर्ष 2024-25        | 151-152 |
| शिक्षणेत्र कर्मचारी वर्ष 2023-24 एवं वर्ष 2024-25         | 153     |
| बी.एड. विभाग वर्ष 2023-24                                 | 154     |
| Total Degree Awarded Ph.D Scholar Details till 2025       | 154     |
| Total Degree Awarded Hindi Ph.D Scholar Details till 2025 | 155     |
| Total Registered Till 2025                                | 156-159 |
| Total Ph-D Awarded 1975-2025                              | 159     |



## संदृष्टि

सामान्य पृष्ठभूमि के छात्रों का गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण करना जिससे वे न्यूनतम लागत पर वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बन सकें।

## ध्येय

- छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विभेद किए बिना समग्र समाज के उत्थान हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- नवाचार और प्रभावी शिक्षण पद्धति के माध्यम से आनंदमय वातावरण में उत्कृष्ट शैक्षणिक मानक बनाए रखना।
- छात्रों को वैश्विक नागरिक के रूप में ढालना।
- उपयोगी अनुभव के लिए अनुकूल शिक्षण-वातावरण बनाए रखना।
- छात्रों में वैज्ञानिक कौशल और शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना।

**प्रपत्र-4**  
**(नियम 8 देखिए)**

|                |  |
|----------------|--|
| प्रकाशन का नाम | - अभिव्यक्ति   |
| प्रकाशक अवधि   | - वार्षिक  |
| मुद्रक का नाम  | - उत्तरायण प्रकाशन, हल्द्वानी  |
| प्रकाशक का नाम | - प्रो. (डॉ.) एम.सी. पाण्डे  |
| राष्ट्रीयता    | - भारतीय   |
| पता            | - प्राचार्य, पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय<br>रामनगर (नैनीताल) उत्तराखण्ड |

उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है- इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैं प्रो. (डॉ.) एम.सी. पाण्डे घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता हेतु रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। रचनाओं में व्यक्त अभिमत से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रो. (डॉ.) एम.सी. पाण्डे  
प्राचार्य

## प्राचार्य - कार्यकाल

|     | प्राचार्य                     |   | कार्यकाल                    |
|-----|-------------------------------|---|-----------------------------|
| 1.  | डॉ. ओ.पी. शर्मा               | - | 27-07-76 से 28-04-79 तक     |
| 2.  | डॉ. लाभ सिंह                  | - | 16-05-79 से 21-07-84 तक     |
| 3.  | प्रो. यज्ञ दत्त पाण्डे        | - | 28-07-84 से 30-06-86 तक     |
| 4.  | डॉ. आर.पी. उप्रेती (प्रभारी)  | - | 01-08-86 से 06-02-87 तक     |
| 5.  | प्रो. आई.एस. नायक             | - | 07-02-87 से 16-08-91 तक     |
| 6.  | प्रो. जी.बी. उप्रेती          | - | 17-08-91 से 27-11-92 तक     |
| 7.  | डॉ. मुहम्मद सईद               | - | 06-01-93 से 30-06-98 तक     |
| 8.  | प्रो. एस.सी. साह (प्रभारी)    | - | 01-07-98 से 04-11-98 तक     |
| 9.  | प्रो. जी.एन. खोलिया           | - | 05-11-98 से 30-06-2000 तक   |
| 10. | प्रो. डी.एस. बगड़वाल          | - | 08-07-2000 से 31-12-2005 तक |
| 11. | डॉ. बी.सी. मलकानी (प्रभारी)   | - | 01-01-2006 से 31-02-2006 तक |
| 12. | प्रो. सी.एस. पाण्डे           | - | 11-02-2006 से 31-01-2008 तक |
| 13. | प्रो. जी.एस. गढ़िया (प्रभारी) | - | 01-02-2008 से 31-07-2008 तक |
| 14. | डॉ. बी.सी. मलकानी (प्रभारी)   | - | 01-08-2008 से 16-08-2009 तक |
| 15. | डॉ. बी.सी. उप्रेती            | - | 17-08-2009 से 30-11-2011 तक |
| 16. | डॉ. पूर्णिमा भटनागर (प्रभारी) | - | 01-12-2011 से 22-12-2011 तक |
| 17. | डॉ. पी.एस. मखलोगा             | - | 23-12-2011 से 12-10-2012 तक |
| 18. | डॉ. (श्रीमती) हेमा प्रसाद     | - | 13-10-2012 से 14-07-2020 तक |
| 19. | डॉ. प्रीति त्रिवेदी (प्रभारी) | - | 15-07-2020 से 17-10-2020 तक |
| 20. | प्रो. मोहन चन्द्र पाण्डे      | - | 18-10-2020 से अद्यतन        |

## महाविद्यालय छात्र-संघ के अध्यक्षों एवं सचिवों की सूची

| वर्ष      | अध्यक्ष                | सचिव                |
|-----------|------------------------|---------------------|
| 1978-79   | धन सिंह मेहरा          | संजय कुमार          |
| 1979-80   | स्व. जितेन्द्र अग्रवाल | बलवन्त सिंह         |
| 1980-81   | सुरेन्द्र सिंह नेगी    | स्व. दिगपाल लटवाल   |
| 1981-82   | दिनेश लोहनी            | गोपाल दत्त शर्मा    |
| 1982-83   | स्व. दिगपाल सिंह लटवाल | रमेश चन्द्र जोशी    |
| 1983-84   | गोपाल लोहनी            | दिनेश चन्द्र        |
| 1984-85   | देवेन्द्र चन्द्र भट्ट  | हामिद अली           |
| 1985-86   | ललित तिवारी            | चंदन सिंह नेगी      |
| 1986-87   | राजीव पपनै             | विजय सिंह डंगवाल    |
| 1987-88   | स्व. अम्बादत्त मिश्रा  | लक्ष्मण दत्त तिवारी |
| 1988-89   | प्रभात ध्यानी          | हरमोहन लटवाल        |
| 1989-90   | शेर सिंह लटवाल         | आनन्द जोशी          |
| 1990-91   | संजय पाण्डे            | नवीन नैनवाल         |
| 1991-92   | नन्दन सिंह नेगी        | प्रदीप भण्डारी      |
| 1992-93   | गिरीश मठपाल            | महेन्द्र सिंह लटवाल |
| 1993-94   | नवीन नैनवाल            | दिनेश सत्यवली       |
| 1994-95   | स्व. कुशल सिंह अधिकारी | गणेश रावत           |
| 1995-96   | असद अली                | हीरा सिंह चौहान     |
| 1996-97   | नवीन नैथानी            | विनोद बिष्ट         |
| 1997-98   | आलोक गुसाईं            | संजय नेगी           |
| 1998-99   | स्व. दलीप सिंह रावत    | कमल पाण्डे          |
| 1999-2000 | गणेश रावत              | रमेश शर्मा          |
| 2000-2001 | यजुवेन्द्र सिंह रावत   | नवीन सुनेजा         |
| 2001-2002 | राजेन्द्र सिंह         | राजेन्द्र रावत      |

| वर्ष      | अध्यक्ष              | सचिव                    |
|-----------|----------------------|-------------------------|
| 2002-2003 | देवेन्द्र सिंह नेगी  | दीप चन्द्र गुणवन्त      |
| 2003-2004 | जगमोहन सिंह बिष्ट    | लोकेश नेगी              |
| 2004-2005 | विजय सिंह सुप्याल    | विकास सिंह बिष्ट        |
| 2005-2006 | संजय डोर्बी          | हरप्रीत सिंह            |
| 2006-2007 | दीपचन्द्र गुणवंत     | चन्दन बंगारी            |
| 2007-2008 | हरप्रीत सिंह         | राहुल रावत              |
| 2008-2009 | भूपेन्द्र सिंह खाती  | विनय पड़लिया            |
| 2009-2010 | संगीता नेगी          | कमल तिवारी              |
| 2010-2011 | विनोद वर्मा          | ज्योति पाण्डे           |
| 2011-2012 | जितेश रावत           | अमित चन्द्रा            |
| 2012-2013 | कमल रौतेला           | दीपक चन्द्रा            |
| 2013-2014 | चन्दन सिंह बिष्ट     | पूजा रावत               |
| 2014-2015 | हेमन्त रावत          | मनोज भण्डारी            |
| 2015-2016 | सुमित लोहनी          | स्व. दिगपाल सिंह डंगवाल |
| 2016-2017 | गौरव फर्त्याल        | अमित बिष्ट              |
| 2017-2018 | रविन्द्र सिंह रौतेला | कमल फुलारा              |
| 2018-2019 | जितेन्द्र सिंह रावत  | अमित कुमार              |
| 2019-2020 | अमितपाल सिंह रावत    | विशाल बंगारी            |
| 2020-2021 | No Election          |                         |
| 2021-2022 | No Election          |                         |
| 2022-2023 | आशीष मेहरा           | धीरज रावत               |
| 2023-2024 | ललित कड़ाकोटी        | चेतन पन्त               |
| 2024-2025 | No Election          |                         |
| 2025-2026 | कृष्ण कुमार          | मनीष जोशी               |

# Galaxy of our Esteemed Alumini

| Alumnus                     | Status   |
|-----------------------------|--|
| Late. Dr. Guddi Prakash     | Principal, Govt. P.G. College, Tanakpur                    |
| Dr. (Smt.) Hema Prasad      | Principal, P.N.G.Govt., P.G. College, Ramnagar             |
| Prof. Girish Chand Pant     | Prof. Hindi, Govt. Digree College, Maldhanchour            |
| Prof. Shreesh Maurya        | Prof. Kumaon University, Nainital                          |
| Prof. Janki Suyal           | Prof. Economics, R.H.G.P.G. College Kashipur, U.S. Nagar   |
| Dr. Kalpana Pant            | Asso. Prof., Hindi, Govt. P.G. College Rishikesh           |
| Dr. Kiran Kumar Pant        | Asso. Prof. Commerce, P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar  |
| Dr. Siraj Ahmad             | Asso. Prof., Georaphy P.N.G.Govt., P.G. College, Ramnagar  |
| Dr. Chandra Prakash         | Asso. Prof. Commerce, Govt. P.G. College, Rudrapur         |
| Mr. Mangesh Ghildiyal (IAS) | Deputy Secretary (PMO).                                    |
| Mr. Vinod Kumar Chhimwal    | Wing Commander Indian Air force                            |
| Dr. Deepak Khati            | Asst. Prof. Commerce, P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar  |
| Dr. Mamta Bhadoa Joshi      | Asst. Prof. Commerce, PNG College, Ramnagar                |
| Dr. Subhash Pokhriyal       | Asst. Prof. Physics, P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar   |
| Dr. Pankaj Kandwal          | Asst. Prof, Chemistry, NIT Uttarakhand, Srinagar, Garhwal. |
| Dr. Maya Gola               | Assi. Prof. Hindi, SSJ University, Almora                  |
| Dr. Renu Rani               | Assi. Prof. Economics, Govt. P.G. College, Rudrapur        |
| Dr. Mohan Chandra Bahuguna  | Attache, Hindi & Bhartiya Dutawas, Kathmandu, Nepal        |
| Major Shivam Agarwal        | Major, 6 Garhwal Rifles                                    |
| Dr. Rohit Kumar Singh       | Health Educator, Govt. Medical College, Haldwani           |
| Capt. Ajay Upadhyay         | Capt. Engineering Core                                     |
| Km. Deepika Bora            | Asst. Statistical Officer, Forest Department, Ramnagar     |
| Dr. Deepak Bangari          | Asst. Prof. Lovely Professional University, Punjab         |
| Dr. Deepak Kumar            | Asst. Prof. Mathematics Kumaon Unversity Nainital          |
| Dr. Tajpal Singh            | Asst. Prof. Hindi, SSJ Campus, Almora, KU Nainital         |
| Dr. Nirmala Pandey Joshi    | Asst. Prof. Hindi. Govt. College Someshwar, Almora         |
| Dr. Chandra Khati           | Asst. Prof. Hindi, Govt. P.G. College Bageshwar            |
| Sri Ganesh Rawat            | Journalist & Socio Political Activist                      |
| Sri Anil Kumar Singh        | Head of Operation, UAE Exchange, U.K. Ltd. London          |

|                         |  |
|-------------------------|--|
| Sri Manish Suyal        | Shodh Adhikari, Uttarakhand Intermediate Board Office, RMR           |
| Sri Ankur Bhatnagar     | Fellow, Aziz Premji Foundation                                       |
| Sri Nadeem Ansari       | Asst. Accountant Sub Treasury, Ramnagar                              |
| Dr. Manoj Kumar Nailwal | Asst. Prof Chemistry, P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar            |
| Dr. Indu Arya           | Asst. Prof Music, P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar                |
| Dr. Himani Bisht        | Assi. Prof. Chemistry, Govt. Degree College, Satpuli                 |
| Shankar Ram             | Asst. Prof. Chemistry, From the Public Service Commission<br>2018-19 |
| Km. Pratibha Shah       | Asst. Prof. Commerce, From the Public Service Commission<br>2018-19  |
| Devjani Khatri          | Asst. Prof. Commerce, From the Public Service Commission<br>2018-19  |
| Km. Anita Khetwal       | Asst. Prof. Commerce, From the Public Service Commission<br>2018-19  |
| Chandsut Hariom         | Asst. Prof. Commerce, From the Public Service Commission<br>2018-19  |
| Meena Pargai            | Asst. Prof. Maths, From the Public Service Commission<br>2018-19     |
| Seema Negi              | Asst. Prof. Maths, From the Public Service Commission<br>2018-19     |
| Mahesh Chandra Arya     | Asst. Prof. Maths, From the Public Service Commission<br>2018-19     |
| Devendra Kumar          | Asst. Prof. History, From the Public Service Commission<br>2018-19   |
| Shuhaib Ansari          | Asst. Prof. P.G. College, Jaihari Khal                               |
| Dr. Neelam Chintola     | Asst. Prof. (Maths) Govt. PG College, Syalde, Almora                 |
| Dr. Rasmi               | Asst. Prof. (Geography) Govt. PG College, Agroda                     |
| Km. Himani Bisht        | Sub-Inspector, Delhi Police  |
| Bhawana Rana            | Senior Assistant, Uttarakhand Board Office, Ramnagar                 |
| Karishna                | Research officer UOU Haldwani  |
| Dr. Manju Chauhan       | K.G.K., P.G. College, Moradabad                                      |
| Prof. Seema Agarawal    | Gokuldas Hindu Girls College, Moradabad                              |



# हिन्दी अनुभाग

# महाविद्यालय : उपलब्धि के 50 वर्ष

● डॉ. नीमा राणा

असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

रामनगर के स्थानीय नागरिकों के अथक प्रयासों से 14 अगस्त 1975 को महाविद्यालय की नींव रखी गयी थी। एक वर्ष तक अशासकीय महाविद्यालय बने रहने के उपरान्त 14 अगस्त 1976 का वह सुनहरा सवेरा, जब पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपने अस्तित्व में आ गया। ऐसा नहीं कि महाविद्यालय सरलता से बिना किसी प्रयास के स्थापित हो गया होगा। रामनगर में महाविद्यालय खोलने के लिए स्थानीय नागरिकों एवं छात्र/छात्राओं ने तीव्र आन्दोलन न्यायोचित एवं व्यवहारिक होने के कारण स्थानीय जनता का सहयोग मिलना तय था। पग-पग पर प्रारम्भ से ही महाविद्यालय स्थापना में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन वित्तमंत्री माननीय श्री नारायण दत्त तिवारी जी का विशेष वरद हस्त प्राप्त था। स्थानीय लोगों का अथक प्रयास एवं माननीय तिवारी जी के सहयोग से 14 अगस्त 1975 ई0 को इसकी स्थापना “छिम्बाल छात्रावास” में श्री नन्द किशोर गलवलिया द्वारा की गई। महाविद्यालय के स्थापना समारोह में माननीय तिवारी जी स्वयं उपस्थित थे। गलवलिया परिवार ने दो लाख रू0 की आर्थिक सहायता महाविद्यालय को स्थापित करने के लिए प्रदान की और इस तरह यह महाविद्यालय प्यारे लाल नन्दकिशोर गलवलिया महाविद्यालय नाम से स्थापित हो गया।

अब छात्र/छात्राओं एवं स्थानीय नागरिकों की दूसरी लड़ाई महाविद्यालय को राजकीय मान्यता दिलाने की थी। महाविद्यालय को राजकीय बनाने के लिए आन्दोलनरत विद्यार्थियों की तीव्र मांग पर महाविद्यालय राज्य सरकार द्वारा 14 अगस्त 1976 को राज्य द्वारा अधिगृहीत किया गया। और अब यह महाविद्यालय पी.एन.जी. राजकीय महाविद्यालय रामनगर के रूप में आ गया। इससे पूर्व इसे जनता महाविद्यालय के नाम से भी जाना जाता था। महाविद्यालय को राजकीय महाविद्यालय बनने की घोषणा माननीय श्री तिवारी जी जो अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बन चुके थे, द्वारा स्वयं रामनगर पधार कर की गई थी।

बस फिर अब क्या था? महाविद्यालय अपने विकास पथ पर निरन्तर उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया, तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री तिवारी जी ने 24 अप्रैल 1977 को रामनगर पधार कर

“भोटिया पड़ाव” में महाविद्यालय भवन निर्माण का शिलान्यास किया। 14 एकड़ भूमि पर अवस्थित रामनगर महाविद्यालय का प्रथम शैक्षणिक सत्र 1976-77 में छः विषयों के साथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, इतिहास एवं राजनीति विज्ञान विषय अध्ययन-अध्यापन के लिए आरम्भ हुआ, आवश्यकतानुसार ठीक एक वर्ष के पश्चात 1977-78 में स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र विषय में भी शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो गया। छात्र संख्या के चलते शैक्षणिक सत्र 1978-79 में छात्र संघ की भी स्थापना हो गई।

धीरे-धीरे महाविद्यालय अपनी विकास यात्रा में आगे बढ़ता गया और आवश्यकतानुसार एवं बढ़ती छात्र संख्या के आधार पर सत्र 1979-80 में स्नातक स्तर पर भूगोल एवं मनोविज्ञान विषयों के साथ-साथ वाणिज्य संकाय का भी प्रारम्भ महाविद्यालय में हो गया। महाविद्यालय में अब दो संकाय खुल चुके थे। कला संकाय एवं वाणिज्य संकाय। अब छात्रों की संख्या एवं रुचि को देखते हुए महाविद्यालय को विज्ञान संकाय की आवश्यकता जान पड़ी। इस तरह से शैक्षणिक सत्र 1989-90 में स्नातक स्तर पर विज्ञान संकाय, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं गणि विषय (ZBC एवं PCM) दोनों गुणों के साथ विज्ञान संकाय प्रारम्भ हो गया।

कई वर्षों तक महाविद्यालय में स्नातक स्तर के ही विषयों का अध्ययन-अध्यापन होता रहा, 2003-04 तक आते-आते महाविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर पर कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र विभाग प्रारम्भ हो चुके थे। महाविद्यालय की विकास यात्रा यहीं नहीं रुकी बल्कि सत्र 2006-07 में जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा गणित विषयों में भी स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाएं संचालित करने हेतु स्थायी सम्बद्धता प्राप्त हुई।

महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विषय के अतिरिक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन अध्यापन सत्र 2008-09 से ईको टूरिज्म, पी.जी. डिप्लोमा, योग एवं

वैकल्पिक चिकित्सा, कार्यालय प्रबन्धक एवं सचिवीय पद्धति, पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन, टूरिज्म स्टडीज कम्प्यूटराईज्ड एकाउंटिंग, स्ववित्त पोषित बी.एड. आदि कार्यक्रम प्रारम्भ हुए। सत्र 2009-10 से महाविद्यालय में उत्तराखण्ड ओपन यूनिवर्सिटी का केन्द्र भी स्थापित है। पी.जी. भवन का अधिग्रहण महाविद्यालय द्वारा सत्र 2015-16 में किया गया। भौतिक विज्ञान और इतिहास विषय स्नातकोत्तर स्तर पर सत्र 2016-17 से कक्षाओं का संचालन हो गया।

महाविद्यालय का अकादमिक ढांचा विकसित होने के साथ-साथ प्रचार एवं प्रसार समितियाँ जैसे क्रीड़ा, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी., रोवर रेंजर, नमामि गंगे, सांस्कृतिक व छात्र संघ गतिविधियाँ भी समय के साथ-साथ तेजी से विकसित हो रही हैं। अनेकों छात्र/छात्राएं विभिन्न सम्मानित पदों पर चयनित होकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। महाविद्यालय में प्रत्येक संकाय में शोधार्थी विभिन्न विषयों में पंजीकृत हैं। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में अच्छी संख्या में छात्रों ने प्रवेश लिया है। महाविद्यालय यू.जी.सी. के 2 (F) व 12 (B) की सूची में शामिल है और पर्याप्त मात्रा में अनुदान प्राप्त करता है।

महाविद्यालय का चरणबद्ध विकास यात्रा-

- ❖ सत्र 2020-21 में महाविद्यालय को महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार ने डिस्ट्रिक्ट ग्रीन चैम्पियन सर्टिफिकेट द्वारा पुरस्कृत किया।
  - ❖ सत्र 2020-21 में आई.एन.एस.सी. संस्था द्वारा प्राचार्य प्रोफे. मोहन चन्द्र पाण्डे को प्रिन्सिपल ऑफ द इयर अवार्ड-2021 से सम्मानित किया गया।
  - ❖ कोरोनाकाल में भी निर्बाध रूप से ऑनलाईन शिक्षण कार्य संचालित रहा।
- सत्र 2021-22 (05.09.2021) शिक्षक दिवस से गुरुदिवस व्याख्यानमाला की श्रृंखला प्रारम्भ होकर इस समय द्वितीय श्रृंखला का अन्तिम पड़ाव चल रहा है। इसके अन्तर्गत महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध विद्वान आमन्त्रित करते हैं। इसके द्वारा महाविद्यालय से लेकर राज्य/देश स्तरीय छात्रों के ज्ञान के संवर्धन के साथ सर्वांगीण विकास का राजपथ प्रशस्त करना है।

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

- ❖ सत्र 2021-22 में दिव्य हिमगिरि संस्था द्वारा “प्रिन्सिपल ऑफ द इयर” अवार्ड से पुरस्कृत प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे।
- ❖ सत्र 2021-22 में वानस्पतिक उद्यान की स्थापना।
- ❖ सत्र 2021-22 में मुख्यमंत्री नवाचार योजनान्तर्गत “हिमालयी औषधीय पादपज्ञान केन्द्र” स्थापित।
- ❖ सत्र 2021-22 में क्रीड़ा विभाग कु.वि.वि. अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु द्वितीय उपविजेता कुलपति ट्रॉफी प्राप्त।
- ❖ सत्र 2021-22 में क्रीड़ा विभाग कु.वि.वि. अन्तर्महाविद्यालयी 06 प्रतियोगिताओं में विजेता।
- ❖ सत्र 2021-22 में दिव्य हिमगिरि संस्था द्वारा महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय को सत्र 2021-22 में बेस्ट हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट इन कामर्स ऑफ द इयर- 2021 के तहत हिमालयी शैक्षिक उत्कृष्टता अवार्ड- 2021 पुरस्कार प्राप्त।
- ❖ सत्र 2021 से ई बुलेटिन पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ।
- ❖ वर्ष 2022 में मा. डॉ. धन सिंह रावत, उच्च शिक्षा मन्त्री जी द्वारा महाविद्यालय में नवनिर्मित बहु-उद्देशीय भवन का उद्घाटन/लोकार्पण किया गया।
- ❖ वर्ष 2022 में मा. उच्च शिक्षा मन्त्री, डॉ. धन सिंह रावत जी ने महाविद्यालय में नवीन स्थापित “कम्प्यूटर केन्द्र” का उद्घाटन किया।
- ❖ साइंटिफिक रिसर्च प्रोजेक्ट भौतिकविज्ञान विभाग को 2022 से 2024 हेतु प्राप्त।
- ❖ सत्र 2022-23 में ग्रीन आर्मी की स्थापना।
- ❖ सत्र 2022-23 में गृह विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित, विषय-स्वास्थ्य और कल्याण में निरन्तरता संभावनाये, समस्याएँ एवं चुनौतियाँ।

सत्र 2023-24 तथा सत्र 2024-25 में निर्माण कार्य-

- 1- मिनी गोल्फ कोर्ट का निर्माण।
- 2- बर्चुअल लैव की स्थापना।
- 3- मिनी स्टेडियम मैदान का निर्माण।

- 4- ओपन इयर थ्रेटर और सोलर लाइट का निर्माण।
- 5- पार्किंग स्थल का निर्माण।
- 6- रेन वॉटर हाइड्रस्टिंग चैम्बर का निर्माण।
- 7- परीक्षा भवन का कार्य निर्माणाधीन है।
- 8- वाणिज्य संकाय हेतु भवन निर्माण कार्य प्रगति पर।
- 9- आवासीय भवन का कार्य प्रगति पर।
- 10- विज्ञान भवन से पी.जी. भवन तक के सम्पर्क मार्ग पर टिनशेड का कार्य पूर्ण।
- 11- महाविद्यालय चाहर दीवारी एवं हाइटैक शौचालय का निर्माण।

### जीर्णोद्धार का कार्य-

- 1- प्राचार्य आवास का जीर्णोद्धार।
- 2- कम्प्यूटर कक्ष का निर्माण तथा रूसा-2 जीर्णोद्धार का कार्य पूर्ण।
- 3- वाचनालय भवन निर्माण तथा रूसा-01 जीर्णोद्धार का कार्य।

महाविद्यालय का अकादमिक ढाँचा विकसित होने के साथ ही प्रसार आदि गतिविधियों समयानुकूल निरन्तर विकसित होती रही हैं। जैसे - क्रीड़ा, छात्रसंघ, एन.सी.सी., एन.एस.एस., नमामि गंगे, रोवर रेंजर्स एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि। उक्त इन सभी इकाईयों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छात्र/छात्राएँ प्रतिभाग कर महाविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन कर रहे हैं। अनेकों विद्यार्थी विभिन्न सेवाओं में चयनित होकर विभिन्न क्षेत्रों में देश-विदेश में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। महाविद्यालय के लगभग प्रत्येक संकाय में शोध छात्र पंजीकृत हैं। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय केन्द्र में विद्यार्थी प्रवेश ले रहे हैं। महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 2(F) एवं 12 (B) की सूची में सम्मिलित हैं और अनुदान भी प्राप्त करता है। महाविद्यालय प्रोजेक्ट उत्कर्ष एवं प्रधानमन्त्री युवा योजना की भी साझीदार संस्था के रूप में सूचीबद्ध है।

हम महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हैं।



## बेटी

● श्रीमती मीना जोशी  
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

बेटी जितना सुख देती है,  
औरों में उतना दम ही नहीं।

बेटों से उनकी क्या तुलना,  
वे बेटों से तो कम भी नहीं।

धरती में वो आकाश में वो,  
माँ-बाप की अन्तिम आस में वो।

हर प्राणी से वो प्रेम करे,  
और कण-कण के विश्वास में वो।

वो चिन्तपूर्णा है जग की,  
उसने जीवन को जाना है।

वो जननी है पूरे जग की,  
माँ उसको सबने माना है।

मैं नमन करूँ हर बेटी को,  
उनसे जीवन में ज्योति है।

जब बेटी का आशीष मिले,  
तब सृष्टि सुरक्षित होती है।

उस बेटी को सम्मान मिले,  
जो अन्नपूर्णा है सबकी।

वो सबल बने और बढ़े चले,  
उसे लाज बचानी भारत की।

-: बेटी बचाओ बेटी बढाओ :-



# रामनगर महाविद्यालय: मेरे हिस्से का विकास और चुनौतियाँ

● प्रो. एम.सी. पाण्डे  
प्राचार्य

विकास एक अनवरत प्रक्रिया है। एक-एक कदम बढ़ते हुए जब एक यात्रा पूर्ण हुई सी लगती है तो अगला पड़ाव आमन्त्रित करने लगता है। महाविद्यालय की विकास यात्रा में भी इसी प्रकार के अनेक पड़ाव आते रहे हैं। स्वर्ण जयन्ती वर्ष सिंहावलोकन का एक अवसर है जिसमें इसके निजी महाविद्यालय के रूप में कला संकाय के सीमित विषयों के साथ वर्ष 1975 में जन्म से लेकर इसके राजकीयकरण किये जाने, विज्ञान और वाणिज्य विषयों को प्रारम्भ करने, स्नातकोत्तर कक्षाओं का संचालन, स्ववित्तपोषित बी.एड. व डिप्लोमा कार्यक्रमों का संचालन के साथ ही शोध सुविधाओं के विकास जैसी उपलब्धियों ने इसे एक श्रेष्ठ महाविद्यालय के रूप में स्थापित होने का आधार दिया है।

प्रारम्भ में छिम्वाल छात्रावास तथा तदुपरान्त नार्मल स्कूल में संचालन के बाद महाविद्यालय सन् 1984 में अपने भवन में स्थापित हुआ। इसके बाद विज्ञान संकाय कक्ष, छात्रावास व आवासीय भवन का निर्माण, स्नातकोत्तर भवन का निर्माण के अतिरिक्त कतिपय अन्य छोटे भवनों का भी निर्माण हुआ।

वर्ष 2020 से 2025 तक पाँच वर्ष के कालखण्ड में प्राचार्य के रूप में कार्य करने तथा अनेक घटनाओं और उपलब्धियों का साक्षी बनने का अवसर मिला है, साथ ही अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है। 17 अक्टूबर 2020 के अपराह्न में जब इस महाविद्यालय का दायित्व स्वीकार किया तब सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था। महाविद्यालय भी इस वातावरण की चपेट में था। कभी महाविद्यालय खुलता, किसी का टैस्ट पॉजीटिव आता तो सैनेटाइजेशन किया जाता और फिर दो दिन के लिए महाविद्यालय बन्द हो जाता था। पीड़ित को 28 दिन का अवकाश अनुमन्य होता था। महाविद्यालय का एक भाग पहले स्टेजिंग एरिया के रूप में तथा उसके बाद वैक्सिनेशन सेन्टर के रूप में उपयोग हो रहा था। महाविद्यालय परिवार के अनेक कार्मिक भी इस सेवा में प्राणपण से जुटे थे। उस समय एक अजीब से भय का वातावरण था। कार्यप्रणाली में भी अनेक परिवर्तन आ रहे थे। एक नया ऑनलाइन कक्षाओं का अध्याय प्रारम्भ हो चुका था।

विश्वव्यापी परिवर्तनों का प्रभाव महाविद्यालय पर भी स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा था।

## नैक का निरीक्षण-

महाविद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा प्रत्यायन किया जाना था। एसएसआर रिपोर्ट स्वीकृत हो चुकी थी। निरीक्षण दल का आना जनवरी-फरवरी 2021 में सम्भावित था। तैयारियाँ पहले से चल रही थीं। इसी बीच, कोविड की गम्भीर चपेट में आने के कारण स्वयं मुझे भी तीन सप्ताह के अवकाश पर जाना पड़ा। इसी संकटमय स्थिति से उबरते हुए 15-16 फरवरी 2021 को नैक का निरीक्षण हुआ। परिणाम हमारी आशा के अनुरूप नहीं थे किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों के दृष्टिगत इससे सन्तोष किया जाना ही उचित था। कोविड-कालीन परिस्थितियों में संप्रेक्षण एवं समन्वय की समस्या भी संभवतः इसका कारण हो सकती है। महाविद्यालय इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और वर्ष 2026 में अपने ग्रेड में सुधार के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है।

## निर्माण एवं पुनरूद्धार-

पचास वर्ष पुराने इस महाविद्यालय की अधिकांश इमारतें 30 वर्ष अथवा अधिक पुरानी हो चुकी हैं। समय के साथ इनके पुनरूद्धार की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। महाविद्यालय के प्रशासनिक भवन तथा सभागार पुनरूद्धार के लिए ₹0 2.38 करोड़ धनराशि की घोषणा तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी द्वारा की गई थी। इस रकम से महाविद्यालय की संरचना को सुधारने का अवसर मिला। महाविद्यालय के कार्यालय, शास्ता कक्ष, आईक्यूएसी, पूछताछ कक्ष तथा परीक्षा आदि सुविधाओं का विकास किया गया तथा कुछ विभागों (मनोविज्ञान, हिन्दी, अर्थशास्त्र, भूगोल, डीसीए, डीओएमएसपी आदि) व कक्षा कक्षों को भी इस धनराशि से सुधारा गया। महाविद्यालय का सभागार भी एक सुसज्जित रूप ले सका। यदि ये मदद पहले मिल गई होती तो सम्भवतः नैक की ग्रेडिंग में भी कुछ लाभ हो सकता था। इस मद की बचत राशि से महाविद्यालय के बाहरी ओर दो द्वारों के मध्य की जर्जर चाहरदीवारी का पुनर्निर्माण, मुख्यद्वार का स्वर्ण

जयन्ती द्वार के रूप में जीर्णोद्धार तथा सुरक्षाकर्म कक्ष का निर्माण कराया गया।

माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी की घोषणा संख्या 320 / 2023 के द्वारा महाविद्यालय के क्रीड़ांगन को **मिनी स्टेडियम** के रूप में विकसित किये जाने की घोषणा की गई। इसके अन्तर्गत चेंजिंग रूम व शौचालयों का निर्माण, ओपन जिम की स्थापना, खेल मैदान का विकास तथा ड्रेनेज सिस्टम का निर्माण आदि कार्य किया जा रहा है।

प्रशासनिक नियन्त्रण एवं सुरक्षा की दृष्टि से खेल मैदान को लोहे की रेलिंग तथा गेट द्वारा सुरक्षित किया गया जिसमें उच्च शिक्षा निदेशालय तथा तत्कालीन छात्रसंघ (2022-23) का वित्तीय सहयोग प्राप्त हुआ। इसी क्रम में खेल मैदान और मुख्य भवन के बीच छात्रावास के निकट की दीवार व गेट का निर्माण भी कराया गया।

रूसा के द्वितीय चरण में प्राप्त धन से **विज्ञान प्रयोगशालाओं का विकास** किया गया। अनेक ऐसे उपकरण क्रय किये जा सके जिन्हें सामान्यतः प्राप्त अनुदान से स्थापित नहीं किया जा सकता था। इसी चरण में नवीन भवन के रूप में एक **कम्प्यूटर केन्द्र का निर्माण** किया गया जिसका उद्घाटन उच्चशिक्षा मंत्री श्री धनसिंह रावत द्वारा किया गया। सुरक्षा की दृष्टि से कम्प्यूटर प्रयोगशाला पीजी भवन में स्थापित करते हुए नये भवन का प्रयोग बी.एड. कक्षाओं के संचालन हेतु करना उचित लगा। इससे बी.एड. को एनसीटीई मानकों के अनुरूप विकसित करने में सुविधा हुई। रूसा के प्रथम चरण की बचत से एक **ओपन एयर थियेटर का निर्माण** किया गया। स्नातकोत्तर भवन में एक 5 के.वी.ए. का ऑफग्रीड **सौर ऊर्जा संयंत्र** भी इसी मद से स्थापित किया गया।

**क्रीड़ा विभाग का जीर्णोद्धार व सुंदरीकरण** का कार्य भी किया गया जिससे क्रीड़ा गतिविधियों के संचालन तथा उपलब्धियों के प्रदर्शन में आसानी हुई। सेवानिवृत्त जिला क्रीड़ा अधिकारी श्री देवेन्द्र भट्ट के सहयोग से एक **बॉक्सिंग रिंग** की स्थापना भी की गई है। **मिनी गोल्फ कोर्स** की स्थापना कुमाऊँ विश्वविद्यालय के वित्तीय सहयोग से की गई है।

माननीय विधायक श्री दीवान सिंह बिष्ट जी द्वारा स्टाफ कार **पार्किंग शेड** का निर्माण कराया गया। साथ ही, मुख्य भवन से स्नातकोत्तर भवन को जोड़ने वाले मार्ग पर भी टिन

शेड का निर्माण भी कराया गया। इनके निर्माण से वर्षा तथा तेज धूप के मौसम में आवागमन में आ रही कठिनाइयों को दूर किया जा सका।

शासन की वित्तीय स्वीकृति से **प्राचार्य आवास का जीर्णोद्धार** रु. 14.12 लाख की धनराशि से उत्तराखण्ड कृषि उत्पाद विपणन बोर्ड द्वारा किया गया।

नगर पालिका रामनगर के सहयोग से महाविद्यालय में एक लाख तथा पचहत्तर हजार लीटर क्षमता वाले दो रेनवाटर हार्वेस्टिंग टैंक का निर्माण कराया गया। महाविद्यालय की जल-आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही नैक मूल्यांकन की दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नगरपालिका के सहयोग से द्वितीय द्वार के निकट राजमार्ग पर एक **आधुनिक शौचालय** अन्दर व बाहर की ओर इस प्रकार निर्मित किया गया कि इसका उपयोग महाविद्यालय के छात्र तथा पर्यटक दोनों कर सकते हैं। महाविद्यालय की कोसी नदी की ओर **क्षतिग्रस्त चाहरदीवारी का निर्माण** जी-20 सम्मेलन के समय जिलाधिकारी महोदय द्वारा कराया गया। यह कार्य महाविद्यालय की सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। साथ ही, द्वितीय द्वार के पास **इन्टरलॉकिंग टायल्स** लगाई गई है जो कि महाविद्यालय की सुविधा तथा सुन्दरता में वृद्धि करते हैं।

जिला विकास योजना के अन्तर्गत एक **बहुउद्देश्यीय भवन** का निर्माण लम्बे अन्तराल से अपूर्ण था। सौभाग्य से इसकी लम्बित धनराशि अवमुक्त होने के बाद भवन पूर्ण हुआ जो वर्तमान में बैडमिण्टन तथा टेबल-टेनिस हॉल के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। इसका उद्घाटन उच्चशिक्षा मंत्री श्री धनसिंह रावत द्वारा किया गया।

महाविद्यालय के तीस से अधिक वर्ष पुराने छात्रावास में जीर्णोद्धार विद्युत व्यवस्था से जोखिम उत्पन्न हो रहा था। उच्च शिक्षा निदेशालय के कार्पस फण्ड से धनराशि स्वीकृत करार कर पूरी **इलैक्ट्रिक वायरिंग** बदलवाई गई तथा आधुनिक पैनल स्थापित कर जानमाल की सुरक्षा सुनिश्चित की गई। इसी प्रकार महाविद्यालय में स्थापित किन्तु अप्रयुक्त दो जनरेटर सैट को उपयोग योग्य बनाते हुए उनका इस प्रकार स्थान परिवर्तन किया गया कि छात्रावास, बी.एड. विभाग तथा मयूर सभागार तक को निर्बाध विद्युत आपूर्ति मिल सके। मुख्य भवन की छत पर एक 30 केवी क्षमता का **ऑनग्रीड सौर ऊर्जा संयंत्र**

स्थापित किया गया है जिससे महाविद्यालय के बिजली बिलों को कम किया जा सकेगा। पानी के बिल में कटौती की दृष्टि से पूर्व से संयोजित अनुपयोगी पानी के तीन कनेक्शन को हटा दिया गया। स्नातकोत्तर भवन में स्थित कांप्रेंस हाल को नवीन सज्जा प्रदान की गई।

आधारभूत संरचना की दृष्टि से **वाणिज्य संकाय भवन** की स्वीकृति सबसे बड़ी उपलब्धि है। रू. 893.39 लाख की लागत से एक भव्य तीन मंजिला भवन उत्तराखण्ड शासन द्वारा स्वीकृत किया गया है जिसका निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस भवन के बनने के बाद वाणिज्य के विद्यार्थियों को पुराने जर्जर तथा अपर्याप्त कक्षों से मुक्ति मिलेगी तथा विषय के विस्तार के प्रयासों को बल मिलेगा। एक अन्य उल्लेखनीय उपलब्धि रही है **परीक्षा भवन** की स्वीकृति। रू. 563.67 लाख की लागत से इस भवन का निर्माण भी इस लेख से छपने से पहले ही प्रारम्भ हो जायेगा। इस भवन के बनने से अनेक प्रशासनिक समस्याएं स्वतः हल हो जायेंगी तथा परीक्षाओं के समय महाविद्यालय में होने वाले अन्य कार्यों में होने वाला अवरोध समाप्त हो जायेगा। उपरोक्त दोनों भवन का निर्माण भी उत्तराखण्ड कृषि उत्पाद विपणन बोर्ड द्वारा किया जा रहा है।

महाविद्यालय के विकास के लिए एक दीर्घकालीन कार्ययोजना तैयार की गई है। शासन के निर्देश पर गैप एनालाइसेज किया गया है जिसके आधार पर एक भव्य **विज्ञान संकाय भवन** की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। शीघ्र ही इसके निर्माण सम्बन्धी आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण होने पर यह भवन अस्तित्व में आ जायेगा। पुराने भवनों में वाटरपूफिंग कराई गई थी किन्तु अनेक प्रयास के बाद भी वह सफल नहीं हो सकी है। गैप एनालाइसेज के आधार पर इन भवनों पर **प्रोफाइल कवरिंग** कराये जाने की स्वीकृति शासन स्तर से हो गई है। **आवासीय भवन** के रूप में आठ प्राध्यापक आवास तथा चार कार्मिक आवास निर्मित किये जाने का प्रस्ताव शासन को प्रेषित किया गया है। उपरोक्त कार्य पूर्ण होने पर महाविद्यालय अपने विकास के चरम स्तर पर पहुँच जायेगा तथा इसे एक ऑटोनोमस महाविद्यालय बनाये जाने की संकल्पना को बल मिलेगा।

### व्यवस्थात्मक परिवर्तन एवं सुधार-

नवीन व्यवस्थाओं को लागू करने से प्रशासनिक एवं प्रबन्धकीय व्यवस्थाओं को धरातल पर लाना संभव हो सका

है। महाविद्यालय में एक **स्टूडेंट सपोर्ट गैलरी** स्थापित की गई है जिसमें प्रवेश, परीक्षा, वेरीफिकेशन, परिचय-पत्र, अंकतालिका के वितरण तथा पूछताछ आदि का कार्य किया जाता है। इस गैलरी में उत्तराखण्ड शासन की विभिन्न छात्रोपयोगी योजनाओं को डिस्प्ले-बोर्ड्स में प्रदर्शित किया गया है। मुख्य शास्ता कक्ष में **वीडियो कांप्रेंसिंग** हेतु आवश्यक अवस्थापना सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

मुख्यमंत्री नवाचार योजना के अन्तर्गत वनस्पति विज्ञान विभाग के समक्ष एक **हिमालयन मेडीसनल प्लांट नोलेज सेन्टर** स्थापित किया गया है, जिसके अन्तर्गत एक पौधशाला स्थापित की गई तथा गैलरी सुसज्जित की गई है। इस गैलरी में हिमालय के औषधीय पादपों को सचित्र प्रदर्शित किया गया है। संगीत विभाग के अन्तर्गत एक **रिकार्डिंग सेन्टर** की स्थापना की गई है जिसमें महाविद्यालय के छात्रों को संगीत तैयार करने में सुविधा हुई है। इसमें महाविद्यालय का कुलगीत भी रिकार्ड किया गया है।

### शिक्षण, शोध, नवाचार एवं प्रकाशन-

नियमित कक्षाओं के संचालन के लिए सभी आवश्यक प्रबन्ध किये गये हैं। कक्षाओं में एल.सी.डी. प्रोजेक्टर लगाये गये हैं। दो कक्षाओं को स्मार्ट क्लास में परिवर्तित किया गया है। बी.एड. विभाग में भी स्मार्ट क्लास बनाया जा रहा है। विज्ञान संकाय में एक **वर्चुअल लैब** की स्थापना उत्तराखण्ड शासन की महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत किया गया है। इसके अतिरिक्त आठ कक्षा कक्षों में फर्नीचर का नवीनीकरण किया गया है। जहाँ कमी थी वहाँ नया छात्र फर्नीचर, हवाईट बोर्ड आदि स्थापित किया गया है। शासकीय अनुदान तथा व्यक्तिगत दान की राशि से पुस्तकालय हेतु पुस्तकों का क्रय किया गया है। शिक्षण क्षेत्र में एक विशिष्ट उपलब्धि के रूप में महाविद्यालय को अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों को सिविल सेवा की तैयारी कराये जाने हेतु **कोचिंग सेंटर** की स्वीकृति प्राप्त हुई है। समाज कल्याण विभाग द्वारा वित्तपोषित यह केन्द्र क्षेत्र के अनुसूचित वर्ग के युवाओं के लिए वरदान सिद्ध होगा।

विगत पाँच वर्षों में महाविद्यालय ने शोध, नवाचार, प्रकाशन जैसे क्षेत्रों में अपनी श्रेष्ठता स्थापित की है। पाँच वर्ष पहले तक जहाँ मात्र 30-35 शोधार्थी पंजीकृत थे, वहीं अब 100 से

**अधिक शोधार्थी** शोधरत हैं। लगभग सभी विभागों में शोधार्थी पीएच.डी. हेतु पंजीकृत हैं जिनमें से अनेक नेट या सेट योग्यताधारक हैं। महाविद्यालय में कार्यरत चार प्राध्यापक भी वर्तमान में पीएच.डी. कर रहे हैं। प्रयास किया जा रहा है कि शोधार्थी शोध के लिए स्थानीय विषयों को वरीयता दें। शोध समन्वयन हेतु पृथक कार्यालय स्थापित किया गया है, पृथक पुस्तकालय स्थापित किया जा रहा है, शोध प्राविधि की कक्षाओं का संचालन हो रहा है तथा शोधार्थियों को आधुनिक कम्प्यूटर लैब के प्रयोग का अवसर मिल रहा है।

महाविद्यालय के शिक्षकों में उत्कृष्ट शोधपत्रों के प्रकाशन की दिशा में नया उत्साह जाग्रत हुआ है। विगत नैक अंकेक्षण के समय जहाँ मात्र दो शोधपत्र स्तरीय पाये गये थे, वहीं अब यह संख्या तीस से अधिक अनुमानित है। प्रकाशित शोधपत्रों का संकलन **अनुसंधान** नाम से मुद्रित कराया जा रहा है। अनेक प्राध्यापकों द्वारा लिखित अथवा सम्पादित पुस्तकों का प्रकाशन भी इस अवधि में कराया गया है। कतिपय प्राध्यापकों द्वारा वाह्य वित्तपोषित परियोजनाओं में प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है। प्राध्यापकों ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में प्रतिभाग किया है तथा शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। इस अवधि में एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन भी गृह विज्ञान विभाग एवं समाजशास्त्र विभाग द्वारा किया गया है।

उत्तराखण्ड विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी काउन्सिल (यूकॉस्ट) के सहयोग से **बौद्धिक सम्पदा प्रकोष्ठ** का गठन किया गया है जिसके अन्तर्गत पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चेतना का प्रसार होगा तथा बौद्धिक सम्पदा अधिकारों को संरक्षित करने में मदद मिलेगी। विधिक अधिकारों के संरक्षण एवं प्रसार हेतु जिला विधिक संरक्षण इकाई के अधीन एक **विधिक प्रकोष्ठ** स्थापित किया गया है।

महाविद्यालय द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका के साथ ही एक त्रैमासिक **न्यूज बुलेटिन अभ्युदय** का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। इसे मुख्यतः ई-बुलेटिन के रूप में प्रसारित किया जाता है।

नवाचार के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा एक ऑनलाइन लेक्चर सीरीज की शुरुआत 5 सितम्बर 2021 को **गुरुदिवस व्याख्यानमाला** के रूप में की गई जिसमें विभिन्न विषयों के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा समसामयिक विषयों पर व्याख्यान

प्रस्तुत किया जाता है। इस श्रृंखला में अभी तक 82 व्याख्यान आयोजित किये जा चुके हैं। प्रत्येक वर्ष इसके व्याख्यानों का विवरण एक विवरणिका (ब्रोशर) के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

### हितधारक समूह और समझौते-

विभिन्न हितधारकों के साथ महाविद्यालय के सम्बन्ध अधिक स्थिर व सुदृढ़ हुए हैं। पूर्व छात्र परिषद (एलुमनाई एसोसिएशन) अब एक पंजीकृत इकाई बन गई है। शिक्षक अभिभावक एसोसिएशन (पी.टी.ए.) का निरन्तर गठन किया जा रहा है। विभिन्न वाह्य संस्थाओं के साथ समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) हस्ताक्षरित हुए हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण समझौता आई.आई.टी. बाम्बे के साथ हुआ है जिनकी **स्पोकन ट्यूटोरियल** योजना में महाविद्यालय के विद्यार्थी विभिन्न कोर्स निःशुल्क पूर्ण कर रहे हैं। इसका शुल्क महाविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है। अन्य एम.ओ.यू. में श्रीराम इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड टेक्नोलॉजी, काशीपुर तथा इलैक्ट्रॉनिक सर्विस एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर (ई.एस.टी.सी.) प्रमुख हैं।

### मानव संसाधन-

विगत पाँच वर्षों में प्राध्यापक वर्ग के तीन पद प्राप्त हुए हैं। शेष रिक्त शिक्षण पदों के विरुद्ध नितांत अस्थाई प्राध्यापकों की व्यवस्था उच्च शिक्षा निदेशालय द्वारा की गई है। चतुर्थ श्रेणी के रिक्त पदों के विरुद्ध सात नियुक्तियाँ उपनल के माध्यम से महाविद्यालय स्तर से की गई। महाविद्यालय में पद उच्चीकरण के द्वारा मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का पद प्राप्त हुआ। एक योग शिक्षक की नियुक्ति संविदा आधार पर शासन स्तर से की गई है। तीन नवनियुक्त प्रयोगशाला सहायकों के आगमन से भी मानव संसाधन की व्यवस्था में सुधार हुआ है। इस बीच कुछ पद सेवा निवृत्ति के कारण रिक्त हो गये हैं। पुस्तकालय अभी भी कार्मिकों की कमी से जूझ रहा है। कार्यालय में भी अनेक तृतीय श्रेणी पद रिक्त हैं।

### सौंदर्यीकरण-

छात्रों तथा प्राध्यापकों के सहयोग से **ग्रीन आर्मी** का गठन किया गया है जो पर्यावरण, जल और ऊर्जा के संरक्षण हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है। परिसर में अवस्थित विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों की गणना की गयी है तथा उनका चिन्हीकरण किया गया है। परिसर में आम, इमली, आँवला, बेल, पिलखन आदि

फलदार व छायादार वृक्षों के साथ ही सौन्दर्यीकरण की दृष्टि से टिकोमा, चम्पा, चमेली, जकरेंडा (नीलमोहर), बोगनवेलिया, एरिका पाम, चायना पाम जैसे पौधे लगाये गये हैं। स्वच्छता व सौंदर्य की दृष्टि से मुख्यद्वार के पास एक सीमेंटेड फर्श बनाया गया है। साथ ही, एक निर्झर (फाउण्टेन) तैयार किया गया है। शौर्य दीवार को नवीन स्वरूप प्रदान किया गया है। एक नयी **पर्यावरणरक्षक दीवार** हरियाली के रक्षकों को समर्पित की गयी है जिसमें विशेषतः उत्तराखण्ड के जुड़े पर्यावरण वीरों से परिचय कराया गया है। महाविद्यालय द्वारा जिम कार्बेट पार्क तथा वन विभाग से भी समन्वय किया है। जिम कार्बेट पार्क द्वारा हमें अपनी बाघ रक्षक योजना में सम्मिलित करते हुए महाविद्यालय को **बाघ रक्षक महाविद्यालय** घोषित किया है।

### शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ-

विगत वर्षों में प्राध्यापकों के कुशल नेतृत्व में छात्र-छात्राओं द्वारा क्रीड़ा, एन.सी.सी., एन.एस.एस., रोवर्स रेंजर्स, नमामि गंगे आदि क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता सिद्ध की है। क्रीड़ा में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय में सेकण्ड रनर-अप रहकर कुलपति की ट्राफी प्राप्त की। साथ ही, कुछ नवीन क्षेत्रों यथा- सेपक टाकरा, ड्राप रोबाल, वुड बाल, मिनी गोल्फ, योगासन आदि में भी अपनी श्रेष्ठता राष्ट्रीय स्तर तक प्रदर्शित की है।

एन.सी.सी. में एक छात्रा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शिविर में कजाकिस्तान जाकर प्रतिभाग किया गया। एन.सी.सी. तथा एन.एस.एस. के छात्रों द्वारा गणतन्त्र दिवस परेड में प्रतिभाग किया गया। रोवर व रेंजर्स द्वारा महाविद्यालय में प्रादेशिक समागम का आयोजन कराया गया है। नमामि गंगे इकाई तथा विभागीय परिषदों के द्वारा वाद-विवाद, भाषण, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल निर्माण, दीपदान, कोसी नदी स्वच्छता जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। विभिन्न राष्ट्रीय दिवसों में भी प्रतियोगिताओं के आयोजन किये जा रहे हैं। रासेयो के अन्तर्गत महाविद्यालय के छात्रों की लघु फिल्म को राज्य स्तर पर पुरस्कृत किया गया है। संगीतायन कार्यक्रम के द्वारा सांस्कृतिक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया गया।

### कार्यालय प्रबन्धन एवं अंकेक्षण-

महाविद्यालय में एक स्वतंत्र पोर्टल तैयार किया गया है जिससे प्रवेश-प्रक्रिया तथा परिचय-पत्र, बोनाफाइड सर्टिफिकेट, चरित्र प्रमाणपत्र, स्थानान्तरण प्रमाणपत्र आदि

जारी करना आसान हुआ। लेखांकन सम्बन्धी अनेक प्रकरणों में सुधार किया जाना अपेक्षित था, अतः कुछ सुधार किये गये जिन्हें गोपनीयता के कारण व्यक्त करना कठिन है। इन सुधारों के कारण बैंकों में जमा मृत राशि वसूल हो सकी तथा अनेक खातों का सही मिलान संभव हो सका। राज्य आडिट विभाग का स्वतंत्र चार्टर्ड एकाउन्टेंट द्वारा तथा ऑडिटर जनरल का अंकेक्षण इस अवधि में सफलतापूर्वक कराया गया तथा उनके द्वारा कोई अनियमितता इंगित नहीं की गई। पुस्तकालय में कोई भी विशिष्ट स्टाफ न होने के कारण विभिन्न अन्य विभागों के कार्मिकों से व्यवस्था संचालित की गई है।

### पुरस्कार, सम्मान एवं उपाधियाँ-

वर्ष 2020 में डॉ. भक्तदर्शन उच्चशिक्षा गौरव पुरस्कार 2020 माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत द्वारा वाणिज्य, प्रबन्धन व विधि वर्ग में यह पुरस्कार जब मुझे 1 नवम्बर 2020 को प्राप्त हुआ तब मैं रामनगर की सेवा में था। दूसरी ओर यही पुरस्कार रामनगर में कार्यरत प्रो. संजय कुमार को मानविकी में प्राप्त हुआ किन्तु वे पुरस्कार प्राप्ति तक यहाँ से स्थानांतरित हो चुके थे। इस प्रकार कुल चार में से दो पुरस्कारों का सम्बन्ध रामनगर से जुड़ गया। वर्ष 2021 में मुझे माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा प्रिंसिपल ऑफ द इयर का सम्मान दिया गया। इसी वर्ष आई.एन.एससी. बंगलौर द्वारा भी सर्वश्रेष्ठ प्राचार्य सम्मान भी प्रदान किया गया। ग्लोबल लीडरशिप फोरम द्वारा भारत-नेपाल एनवायरनमेंट लीडरशिप अवार्ड मुझे भारत-नेपाल मैत्री सम्मेलन काठमाण्डु में वर्ष 2024 में प्रदान किया गया। इसी वर्ष उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत द्वारा के. एस. अय्यर वाणिज्य गौरव सम्मान भी प्रदान किया गया। इस अवधि में महाविद्यालय के अन्य अनेकों प्राध्यापकों को भी विभिन्न मंचों पर पुरस्कृत होने का सौभाग्य मिला। इनमें श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, श्रेष्ठ शोधकर्ता सम्मान, वाणिज्य गौरव सम्मान, उपाधि गौरव सम्मान, डॉ. अम्बेडकर एक्सीलेंसी अवार्ड आदि सम्मिलित हैं।

महात्मा गाँधी नेशनल काउंसिल ऑफ रूरल एजुकेशन हैदराबाद (उच्च शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा महाविद्यालय को डिस्ट्रिक्ट **ग्रीन चैम्पियन अवार्ड** प्रदान किया गया। देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में यूकॉस्ट-हिमगिरी आदि द्वारा महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग को उत्तराखण्ड के **सर्वश्रेष्ठ वाणिज्य महाविद्यालय** का सम्मान प्रदान किया

गया। हमारे महाविद्यालय को कुमाऊँ विश्वविद्यालय का केन्द्रीय मूल्यांकन केन्द्र बनाया गया तथा इस केन्द्र को माननीय उच्चशिक्षा मंत्री द्वारा श्रेष्ठ मूल्यांकन केन्द्र के रूप में सम्मानित भी किया गया। ये पुरस्कार एक ओर कार्य की उत्कृष्टता को रेखांकित करते हैं, वहीं हमारा उत्साहवर्द्धन भी करते हैं।

### आगमन-

विगत पाँच वर्षों में महाविद्यालय अनेक माननीय अतिथियों के आगमन का साक्षी बना जिनमें वर्तमान मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत एवं श्री तीरथ सिंह रावत, पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत तथा श्री भगत सिंह कोश्यारी, उच्चशिक्षा मंत्री श्री धनसिंह रावत आदि प्रमुख हैं। एयर चीफ मार्शल श्री वी.आर. चौधरी, एयर मार्शल श्री आर.जी.के. कपूर तथा एयर कोमोडोर श्री ताहिर खान का भी महाविद्यालय द्वारा स्वागत किया गया। इसके अतिरिक्त रियर एडमिरल (से.नि.) श्री ओ.पी.एस. राणा, पद्मश्री कल्याण सिंह रावत मैती, मुख्यसचिव उत्तराखण्ड श्रीमती राधा रतूड़ी, कुलपतिगण प्रो. दीवान सिंह रावत, प्रो. एन.के. जोशी, प्रो. ओ.पी.एस. नेगी, प्रो. नवीन लोहनी तथा उच्चशिक्षा के निदेशकगण प्रो. वी.एन. खाली, प्रो. प्रवीण जोशी, प्रो. सी.डी. सूँठा, प्रो. संदीप कुमार शर्मा, प्रो. कुमकुम रौतेला, पूर्व निदेशक

डॉ. बी.सी. मलकानी, संयुक्त निदेशक प्रो. ए.एस. उनियाल, पूर्व संयुक्त निदेशक व कुलपति प्रो. आइ.एस. नायक, पूर्व संयुक्त निदेशक प्रो. बी.एस.बिष्ट का भी स्वागत किया गया। कार्बेट टाइगर रिजर्व के निदेशक डॉ. साकेत बड़ोला का आगमन भी महत्वपूर्ण रहा। रामनगर के माननीय विधायक श्री दीवान सिंह बिष्ट अनेक अवसरों पर महाविद्यालय में पधारे हैं तथा अन्य विधायकगण श्री बंशीधर भगत, श्रीमती सरिता कपूर, श्री रामसिंह कैड़ा का भी आगमन हुआ। जिलाधिकारी श्री धीराज गर्वाल एवं श्रीमती वन्दना के आगमन से भी महाविद्यालय गौरवान्वित हुआ है। अन्य अनेक महानुभावों का भी आगमन हुआ जो हमारे लिए अति महत्वपूर्ण रहा।

महाविद्यालय के इस कालखण्ड को स्मरणीय बनाने के लिए महाविद्यालय के ऊर्जावान कार्मिक एवं प्राध्यापकगण, अनुशासित छात्र समुदाय, पूर्व छात्र, अभिभावकगण, स्थानीय सामाजिक कार्यकर्तागण, उच्चशिक्षा निदेशालय के अधिकारीगण, शासन के उच्चाधिकारीगण तथा माननीय उच्चशिक्षा मंत्रीजी व मुख्यमंत्री जी के प्रति हम कृतज्ञ हैं। आशा है कि सभी के सहयोग से महाविद्यालय में नये विषयों को प्रारम्भ करने तथा अन्य प्रशासनिक प्रस्तावों की स्वीकृति से महाविद्यालय उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर हो सकेगा।

**Disclaimer :** यह एक स्मृति आधारित लेख है। कुछ प्रसंग छूट सकते हैं अथवा कुछ तथ्य वास्तविक प्रमाणिक तथ्यों से आंशिक रूप से भिन्न हो सकते हैं।

# महाविद्यालय का प्रारंभिक वृत्तान्त

● ब्रजमोहन गुप्त, डी.लिट्.  
पूर्व प्राध्यापक

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का क्षण है कि रामनगर महाविद्यालय अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूरे कर रहा है। किसी विकासोन्मुख संस्था का अपने को आँकने और आगे बढ़ने की दिशा तय करने का भी। इस संस्था के साथ ही उस समय मेरा चिर संचित सपना (डिग्री कॉलेज में पढ़ाने का) पूरा हुआ था जिसके लिए मैंने प्रख्यात 'मेयो कालेज, अजमेर' का आमंत्रण ठुकरा दिया था। मैं इस कॉलेज को अपनी मातृ संस्था मानता हूँ। अपार शुभकामनाएँ।

**आरम्भ** - "प्यारेलाल नंदकिशोर गलवलिया जनता महाविद्यालय, रामनगर का उद्घाटन श्री नारायण दत्त तिवारी, वित्तमंत्री, उत्तर प्रदेश के करकमलों द्वारा दिनांक 14 अगस्त 1975 को हुआ।" रामनगर के छात्र-समूहों और स्थानीय संगठनों द्वारा महीनों से चलाये जा रहे आन्दोलनों की परिणति उक्त आलेख में हुई। श्री तिवारी जी इस क्षेत्र के लिए पूर्णतः समर्पित नेता थे। काम छोटा हो या बड़ा, सभी के लिए वही केन्द्र थे। संभवत उन्हीं के पूर्व आश्वासन पर जून 1975 में ही प्रवक्ताओं के लिए आवेदन माँगे गये थे तथा अगस्त 1975 के मध्य साक्षात्कार हुए थे। जिनमें स्नातक कक्षाओं में छह कला विषयों के लिए हिन्दी में प्रो. ब्रजमोहन गुप्त, अंग्रेजी में प्रो. जीवन चन्द्र तिवारी, संस्कृत में प्रो. कु. लता कांडपाल, राजनीति विज्ञान में प्रो. किशन गुरुरानी, इतिहास में प्रो. के.पी. सिंह तथा अर्थशास्त्र में (शशि अग्रवाल, एम.पी. अग्रवाल क्रमशः छोड़कर चले जाने पर) प्रो. प्रेमबल्लभ पाण्डे की नियुक्ति हुई। चूँकि केवल बी.ए. प्रथम एक क्लास थी। अतः श्री के.पी. सिंह (इतिहास) को अस्थायी प्राचार्य का कार्यभार दिया गया।

**व्यवस्था** - महाविद्यालय की संचालन व्यवस्था कोई हंसी-खेल नहीं था। अतः सर्वप्रथम एक कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें सेठ देवीदत्त छिम्बाल अध्यक्ष, श्री त्रिलोक सिंह कठायत, उपाध्यक्ष, डॉ. सनत कुमार मेहरोत्रा प्रबंधक, श्री मदनमोहन जिन्दल मंत्री तथा श्री आनंद बल्लभ बेलवाल कोषाध्यक्ष चुने गये। ये सभी नगर के प्रतिष्ठित और राजनीतिक पहुँच वाले व्यक्ति थे। नगर सेठ श्री रामकुमार जी गलबलिये ने अपने पूर्वजों के नाम पर महाविद्यालय का नाम रखने के लिए

दो लाख रुपये का अनुदान दिया। उसमें से एक लाख दस हजार रूपया कुमाऊँ विश्वविद्यालय से मान्यता हेतु विश्व विद्यालय में जमा किया गया। प्राध्यापकों के वेतन तथा अन्य खर्चों के लिए विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों से चंदे द्वारा धन एकत्र किया जाता था।

अगस्त 1975 में स्वीकृत सभी विषयों में प्रवेश एवं अध्यापन कार्य सुचारु रूप से प्रारंभ हो गया। केवल 72 छात्र-छात्राओं ने बी.ए. प्रथम में प्रवेश लिया था और छात्रों का अध्ययन में इतना उत्साह था कि लगभग प्रत्येक विषय में शत-प्रतिशत उपस्थिति रहती थी। वर्ष पर्यन्त विश्वविद्यालय की मान्यता न मिलने के कारण परीक्षा हेतु केन्द्र बनाने की स्वीकृति नहीं मिली। अतः सभी विद्यार्थियों को परीक्षा हेतु हल्द्वानी कॉलेज जाना पड़ा, साथ में यहाँ से तीन प्राध्यापक भी गये।

**राजकीयकरण** - आपातकाल लगा और बहुगुणा जी के स्थान पर श्री तिवारी जी मुख्य मंत्री बने और अन्ततः 17 जुलाई 1976 को शासन ने महाविद्यालय अपने हाथ में ले लिया। डॉ. ओउम् प्रकाश शर्मा, वाणिज्य विभागाध्यक्ष, ज्ञानपुर को प्राचार्य बनाकर भेजा गया और श्री तिवारी जी ने स्वयं रामनगर आकर महाविद्यालय कार्यालय में प्राचार्य को शासनादेश सौंपा। चूँकि अब तक कॉलेज अस्थायी रूप से नारायण दत्त छिम्बाल, छात्रावास में था (वर्तमान में डी.डी. छिम्बाल विद्यालय चल रहा है)

अतः कुछ समय पश्चात् उच्च शिक्षा निदेशक डॉ. ए.पी. मेहरोत्रा यहाँ आये और मेरे द्वारा वर्तमान भवन का स्थल उन्हें प्राचार्य जी के साथ दिखलाया गया। उन्होंने इसे पसंद कर शासन को लिखा। 1977 में मुख्यमंत्री आये और वर्तमान में जिस हिस्से में पी.डब्ल्यू.डी. विभाग की कालोनी है, वहाँ उद्घाटन का पत्थर लगा। लीजदार ने हाईकोर्ट से स्टे ले लिया। इसी बीच सिचाई विभाग ने अपनी कॉलोनी बनाकर वर्तमान सड़क बना दी। स्टे वैकेट होने पर वर्तमान भवन सन् 1984-85 में बनकर तैयार हुआ। (निरंतर परिवर्धन स्वरूप अब तो बहुत बड़ा परिसर है) खैर, नारायण छात्रावास से सन् 1977 में

खताड़ी ब्लाक के पास, जहाँ राजकीय इंटर कॉलेज है (वहाँ कभी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज था, वह बंद हुआ और उसी के छात्रावास भवन में लगभग 7 वर्ष महाविद्यालय संचालित रहा और बाद में इस नये भवन में शिफ्ट हुआ।

**शैक्षिक गतिविधियाँ** – स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और भूगोल विषय स्वीकृत हुए 1978 में बी.काम. एवं स्नातकोत्तर स्तर पर पहले अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान स्वीकृत हुए और एक वर्ष बाद हिन्दी एवं समाजशास्त्र स्वीकृत हुए। नये भवन में संभवतः अंग्रेजी विषय की स्वीकृति हुई। मैंने

सन् 1981 में यही पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की और 1984 में डी.लिट् हेतु पंजीकृत हुआ। कॉलेज ही नहीं विश्व विद्यालय के लिए भी यह गौरव की बात थी कि मेरे निर्देशन में एक छात्रा कु. सीमा अग्रवाल ने स्कालरशिप सहित नैट परीक्षा उत्तीर्ण की थी। विश्व विद्यालय की यह पहली उपलब्धि थी। 1988 में स्थानान्तरण होकर मैं चला गया।

आज यह महाविद्यालय हर क्षेत्र में मानक स्थापित कर रहा है। बस ईश्वर से कामना है – ‘शुभास्तु ते पन्थानः सन्तु’



## स्मृतियाँ

● डॉ. डी. के. पनेरू

उपाचार्य हिन्दी (सेवानिवृत्त)

राजकीय सेवा में स्थानान्तरण होना निर्धारित प्रक्रिया है। राजकीय महाविद्यालय सेवा में प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी के रूप में मेरी नियुक्ति 09 मार्च 1976 को राजकीय महाविद्यालय रूद्रपुर (जिला नैनीताल) में प्रवक्ता पद पर हुई। प्रारम्भ में तदर्थ प्रवक्ता (हिन्दी) के रूप में मैंने उक्त कालेज में 12 मार्च 1976 को प्रभार ग्रहण किया।

राजकीय महाविद्यालय रूद्रपुर जिला नैनीताल में आठ वर्ष की सेवा करने तथा नियमित प्राध्यापक हो जाने के बाद अब स्थानान्तरण की चिन्ता सताने लगी थी। स्थानान्तरण चिन्ता का विषय इसलिए था कि उस समय उत्तराखण्ड अलग राज्य नहीं था, और उत्तर प्रदेश में स्थापित राजकीय कालेज बहुत कम थे और दूर दराज के साधन विहीन क्षेत्रों में ही थे। वार्षिक स्थानान्तरण के आवेदन पत्र में रामनगर, हल्द्वानी तथा रानीखेत तीन कॉलेजों में से एक कॉलेज में स्थानान्तरण चाहा था लेकिन सरकार तथा सरकारी अधिकारियों ने विशेष कृपा कर मुझे अपेक्षाकृत दूर स्थित राजकीय महाविद्यालय बागेश्वर जाने का आदेश निर्गत कर दिया था। आदेश प्राप्त कर मैंने अपने सम्बन्धों का इस्तेमाल कर उक्त स्थानान्तरण आदेश निरस्त कराकर राजकीय महाविद्यालय रामनगर जिला नैनीताल को नया आदेश करवाने में सफलता प्राप्त की। 11 जुलाई 1983 को मैंने राजकीय महाविद्यालय रामनगर में कार्यभार ग्रहण किया, तब रामनगर डिग्री कॉलेज खत्याड़ी मोहल्ले में स्थित राजकीय

इण्टर कॉलेज द्वारा प्रदत्त कुछ कमरों में चलाया जा रहा था, लेकिन कोशी नदी के तट पर हल्द्वानी रोड में स्थित वर्तमान महाविद्यालय के निर्माण का कार्य जोरों पर चल रहा था। दो वर्ष की अवधि बीतते-बीतते हमें हमारा नवनिर्मित महाविद्यालय उपलब्ध हो गया था। यहाँ भी मुझे नये भवन में लगी सैनेटरी फिटिंग का सत्यापन करने का कार्य मिला और मैंने उक्त फिटिंग के अन्तर्गत जो-जो सामग्री लगाई गई थी उसकी गिनती करते हुए कुल नग का उल्लेख करते हुए बता दिया था कि लगाई गयी सामग्री का सत्यापन किया जाता है लेकिन टैक्नीकल न होने के कारण यह नहीं बताया जा सकता है कि सभी सामग्री कार्य करने की दृष्टि से सही है। नयी विल्डिंग बहुत बड़ी नहीं थी कि सभी विषयों के लिए विभाग कक्ष पृथक रूप से दिये जा सकें। किसी विभाग के एक कक्ष के ऊपर पेंसिल से मैंने हिन्दी विभाग लिख दिया था और प्राचार्य जी ने भी अपनी सहमति जता दी थी। जब तक मैं राजकीय महाविद्यालय रामनगर में कार्यरत रहा हिन्दी विभाग वहीं दो मंजिले में खुले स्थान पर चलता रहा।

अब मैं कुछ बातों से आपका परिचय कराता हूँ जो मुझे बार-बार याद आती है, अर्थात् रामनगर कॉलेज में कार्य प्रारम्भ करने से लेकर अब तक स्मृतियों के रूप जीवित हैं। मेरे बहुत साथी कहा करते थे, इस कॉलेज को रूद्रपुर कॉलेज समझने की गलती मत करना। यहाँ अधिकतर कुमाऊँ व गढ़वाल के

गरीब छात्र-छात्राएँ शिक्षा प्राप्त करते हैं और उनमें भी प्रतिभाशाली विद्यार्थी नहीं के बराबर मिलेंगे। मैंने इस जानकारी को चुनौती के रूप में लिया और साथियों, से भी कहा शिक्षक में ऐसी सामर्थ्य होती है कि वह कुम्भकार के घड़े की तरह अपने शिष्यों को रूप आकर और निखार दे सकता है। थोड़े परिश्रम, समर्पण और जागरूकता की आवश्यकता जरूर होती है। हिन्दी विषय में विभागाध्यक्ष/विभाग प्रभारी के रूप में कार्य करते हुए मुझे पहली सफलता यह मिली कि जिस कॉलेज में एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष में एक तथा प्रथम वर्ष में चार-पाँच विद्यार्थी थे और यह भी कहा जाता था कि हिन्दी विषय कोई एम.ए. में लेना ही नहीं चाहता। आश्चर्य यह था कि अगले सत्र में बी.ए. करने वाली तथा प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाली अधिकांश छात्राओं ने एम.ए. के लिए हिन्दी विषय चुना और एम.ए. प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में प्रवेश लेने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या सत्रह तक पहुँच गई। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब तक मैं रामनगर में कार्य करता रहा एम.ए. प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में छात्र संख्या घटी नहीं वरन् निरन्तर बढ़ती रही। हिन्दी में कार्यरत हम तीन-चार प्राध्यापक थे जो परिश्रमी और लगनशील थे। चार-पाँच प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के चलते यह संख्या भी निरन्तर बढ़ती गई। मैं समझता हूँ कि हिन्दी विभाग रामनगर का यह रिकार्ड ही होगा कि वर्ष 1986-87 अथवा 87-88 में से किसी एक वर्ष एम.ए. द्वितीय वर्ष में 19 छात्र-छात्राओं में से बारह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। उल्लेखनीय यह है कि कुमाऊँ विश्वविद्यालय की टॉपर के अतिरिक्त तीसरा और चौथा स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा भी रामनगर कालेज की ही थी। अनुमान कीजिए ऐसी मधुर तथा गुदगुदा देने वाली स्मृतियों को कोई शिक्षक भुला कैसे सकता है।

छात्र-छात्राओं को पढ़ाते हुए प्रसंगवश बताना होता था कि आगे चलकर आप लोग शोधकार्य करेंगे, शोध पत्र प्रकाशित करायेंगे तथा पीएच.डी. की उपाधि के लिए अध्ययन करेंगे और हमारी ही तरह भविष्य में प्राध्यापक बनेंगे। विचार आया कि यू.जी.सी. को हिन्दी में सेमिनार कराने के लिए प्रोजेक्ट भेजा जाय। 'हिन्दी नाटक: उपलब्धि और चुनौतियाँ' शीर्षक पर प्रोजेक्ट तैयार कर यू.जी.सी. को भेजा गया। मैं अपना और रामनगर कॉलेज का सौभाग्य मानता हूँ कि दिनांक 23, 24, व 25 फरवरी 1992 को इस महाविद्यालय में किसी विषय में आयोजित होने वाला पहला राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न हुआ।

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

तत्कालीन प्राचार्य प्रो० आई.एस. नायक ने सेमिनार के सफल आयोजन के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रेरित तथा उत्साहित करने में स्वयं उत्साह दिखाया। सेमिनार के लिए मात्र रु. 32,000/- (बत्तीस हजार रुपये) स्वीकृत हुए थे जो आयोजन सम्बन्धी मेरी कल्पना से अति न्यून राशि थी। सहभागिता करने वाले विद्वानों व प्राध्यापकों को पोर्टफोलियों देना, उन्हें सरकारी अतिथि गृहों में टिकाना, नाश्ता भोजन आदि उच्चकोटी का रखना, उन्हें लाने-पहुँचाने के लिए तथा रामनगर क्षेत्र के दर्शनीय स्थल ढिकाला घुमाने के लिए बस व्यवस्था आदि सभी का प्रबन्ध करना असम्भव सा लग रहा था। तीन-चार प्राध्यापक मित्रों को साथ लेकर रामनगर के दो-चार धनी-मानी दानदाताओं से सम्पर्क किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि तीन दानदाताओं ने एक-एक दिन भोजन कराने तथा दो ने दो दिन का नाश्ता कराने की जिम्मेदारी उठाने की सहर्ष स्वीकृति दे दी। रामनगर के जाने-माने व्यवसायी झूले वाले सेठ जी से सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा कि आप के मेहमानों को लाने ले जाने व घुमाने के लिए कार तथा बस की व्यवस्था मैं करूँगा, शर्त यह कि आप दानदाता के रूप में किसी से भी मेरा नाम नहीं लेंगे। सेमिनार के लिए आमंत्रित विशिष्ट विद्वानों को यात्रा भत्ता मानकों से कई गुना अधिक प्रदान किया और उन्होंने बताया कि हमने अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में ऐसी व्यवस्था कहीं नहीं देखी। विद्वानों तथा शिक्षकों को जो मुख्यतः उत्तर प्रदेश के महाविद्यालयों के शिक्षक थे, नाश्ता व खाना परोसने की जिम्मेदारी एम.ए. हिन्दी की प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने संभाली जो एक ही रंग के वस्त्र पहन कर आती थी। सेमिनार मंच पर आसीन आयोजन सचिव डॉ. डी. के. पनेरू श्री राम कुमार गलबलिए (उद्योगपति) डॉ. विजय पाल सिंह विभागाध्यक्ष हिन्दी बी.एच.यू. वाराणसी सत्र के अध्यक्ष थे। सेमिनार में उपस्थित विद्वानों व विद्यार्थियों को सम्बोधित करते प्राचार्य प्रो. आइ.एस. नायक इस सेमिनार के आयोजन के छात्र/छात्राएँ, शिक्षकों और रामनगर की आम जनता में भी बड़ी प्रसन्नता एवं विद्यालय की गतिविधियों की जानकारी से विशेष हर्ष व्याप्त हुआ।

राजकीय महाविद्यालय रामनगर में कार्य करते हुए समय-समय पर कॉलेज में रहे प्राचार्यजनों ने मुझे पता नहीं क्यों बड़े-बड़े दायित्व सौंपे और ईश्वर की कृपा से मुझे कभी नीचा नहीं देखना पड़ा। मुझे राष्ट्रीय सेवा योजना में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया और कार्यक्रम के योजना अधिकारी

का कार्यकाल पूर्ण हो जाने पर मुझे योजना अधिकारी अर्थात् राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी नियुक्त कर दिया गया। रा.से.यो. की उपलब्धि पूर्ण कार्य देखकर कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा इस कालेज में रा.से.यो. के स्वयं सेवकों (छात्र/छात्राओं) की संख्या में निरन्तर वृद्धि की जाती रही। मेरे रा.से.यो. प्रभारी रहते हुए छात्राओं का 10 दिवसीय विशेष शिविर ग्राम सावलदे में लगाया गया जहाँ झोपड़पट्टी वाली दो बस्तियाँ बोक्सा जनजाति के लोगों की थी। शिविर की सामग्री व छात्राओं, कार्यक्रम अधिकारियों खाने-पीने, ठहरने के लिए स्व० श्री आनन्द बल्लभ बेलवाल (सेठ जी) ने अपना एक बहुत बड़ा आवास उपलब्ध करा दिया था। जहाँ कठिनाई नाम की कोई बात नहीं थी। छात्राओं को व्यवस्थित करने उपरान्त अपराह्न 4 बजे छात्राओं को लेकर हम कार्यक्रम अधिकारी बोक्सा मोहल्लों में क्या कार्य किया जा सकता है देखने निकले ही थे कि बोक्सा पुरुष और औरतें घर को खुला छोड़कर इधर-उधर निकल गए क्योंकि उनके घर आगन बहुत गन्दे थे, सम्भवतः उन्हें शर्म आ रही थी कि ये कोई सरकारी आदमी आ गए जो घर को गंदा होने पर हमें दंड दे सकते हैं। अगली सुबह जब हम लोग नाश्ता करने के बाद बोक्सा बस्ती में गए तो देखा कि सभी बोक्सा औरतें मर्द घर आंगन की सफाई में जुटे थे। छात्राओं को झाड़ू देकर उन्हीं के साथ लगा दिया गया। एक ही दिन में बोक्सा महिलाओं, पुरुषों और बच्चों का भय भाग गया। अब तो बोक्सा महिलाएँ रात्रि में होने वाले छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखने भर के लिए नहीं, कार्यक्रमों में सहभागिता करने के लिए भी उत्साहित हो चली। शिविर का निरीक्षण करने कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० एम.डी. उपाध्याय तथा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक पहुंचे और उन्होंने शिविरार्थियों एवं कार्यक्रम अधिकारियों की खूब प्रशंसा की। मैंने कुलपति जी से कहा कि मैं अपने द्वारा चलाई जा रही शिविर की गतिविधियों को सदैव कम करके आंकता हूँ। इस पर कुलपति बोले इससे अच्छा और क्या होता है।

आपने अपनी पूरी क्षमता के साथ शिविर का संचालन किया है और मैं चाहता हूँ कि इतनी ही छात्राओं का एक दस दिवसीय विशेष शिविर इसी स्थान पर आयोजित किया जाय जिसमें प्रदेश के उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री आर.के. शर्मा जी को आमंत्रित किया जायेगा। इस विशेष शिविर के लिए विश्वविद्यालय आपको विशेष अनुदान देगा। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० आई.एस. नायक ने उक्त की सहमति कुलपति जी

को तत्काल दे दी। ग्राम सावलदे में उसी स्थान पर विशेष शिविर आयोजित किया गया जो अनेक नये-नये कार्यक्रमों से युक्त था। बोक्सा महिलाओं को छात्राओं ने कढ़ाई-सिलाई करना सिखाने के अतिरिक्त आचार-मुरब्बा डालने का प्रशिक्षण भी दिया। रोगग्रस्त व अस्वस्थ महिलाओं/बच्चों व पुरुषों के स्वास्थ्य का परीक्षण करने के लिए प्रतिदिन चिकित्सक/चिकित्सिकाओं की टीम बुलाने की व्यवस्था की गई। जनजातीय महिलाओं में अनेक ऐसे घातक रोगों का पता चला जिसे वे संकोचवश छिपाये रही। उनके पर्चे बनाए गए और स्थानीय राजकीय चिकित्सालय रामनगर के चिकित्सकों के सम्पर्क में रहते रहने पर इन आदिवासीजनों को रोग से मुक्त होने का लाभ मिला। बोक्सा झुग्गी वासियों को ब्लाक-ए तथा ब्लाक-बी नाम दिया गया था। स्वच्छता उच्चस्तर की रखी गयी थी। शिक्षा राज्यमंत्री (30शि0) श्रीमान् शर्मा के पधारने की बेला में भारत तथा कनाडा के एन.सी.सी. के छात्र/छात्राओं के 15 सदस्यी टीम की उपस्थिति तथा कार्यक्रमों में सहभागिता आकर्षण का बिन्दु रही। शिविर का अवलोकन करने के उपरान्त लखनऊ लौटे मंत्री जी ने यू.पी. के मैदानी कालेजों के अनेक एन.एस.एस. शिविरों का दौरा करते हुए रामनगर कालेज के एन.एस.एस. शिविर की सर्वत्र खूब प्रशंसा की और कहा एन.एस.एस. शिविर वास्तव में चलाना चाहते हैं तो रामनगर जाइये और वहाँ के कार्यक्रम अधिकारियों से ट्रेनिंग लेकर आइये। हम सभी शिक्षक उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत ही थे तब अनेक मित्रों ने हमें प्रत्यक्ष भेंट होने पर अथवा पत्र लिखकर पूछा था कि आपने माननीय मंत्री महोदय पर ऐसा क्या जादू कर दिया कि वे हमारे द्वारा आयोजित शिविरों को फर्जी बता रहे हैं। मेहनत बच्चों ने की निर्देशन कार्यक्रम अधिकारियों ने किया और नाम हुआ कालेज और विश्वविद्यालय का।

यदि मुझ से पूछा जाय कि आपको रामनगर कैसा लगा? तो बहुत सोचना पड़ेगा। प्राचार्यजनों का, शिक्षक मित्रों का, छात्र/छात्राओं का तथा स्थानीय जनता का मुझे इस कदर सहयोग मिला कि मैं वह सब शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। हाँ, मैं इस सबसे इतना उत्साहित हो गया था कि मुझे अब असम्भव कुछ भी नहीं लगता था। इसी उत्साह का परिणाम था कि शोधकार्य करवाने की दृष्टि से जमकर काम किया। महाविद्यालय के अधिकतम प्रभारों की जिम्मेदारी निभाई और इसी अवधि में उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय शिक्षक संघ का महामंत्री भी निर्वाचित हुआ। महामंत्री के रूप में निर्वाचन

मत-पत्र के द्वारा हुआ था प्रदेश के प्रायः सभी महाविद्यालयों में जाकर शिक्षक मित्रों के सम्पर्क पर प्रचार करने जैसा कार्य अपने महाविद्यालय के शिक्षकों से प्राप्त आर्थिक सहायता से कर सका था।

मैंने पाया कि रामनगर महाविद्यालय में छात्र/छात्राएँ सीधे तथा सरल होने के साथ-साथ मेधावी भी थे। इन्हें समुचित मार्गदर्शन तथा वात्सल्य की आवश्यकता जरूर थी। मैंने सम्भवतः एक शिक्षक के रूप में जो लोकप्रियता और सम्मान यहाँ कार्य करते हुए प्राप्त किया उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर का मेरा सेवा काल समग्र सेवा की अवधि का 'स्वर्णकाल' रहा है।



## संस्मरण : ऊधौ मोहे ब्रज बिसरत नाहीं

● रमेश चन्द्र पाण्डे

महाविद्यालय कर्मचारी (से.नि.)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) अपना स्वर्ण जयन्ती समारोह मना रहा है। यह महाविद्यालय अपनी स्थापना वर्ष 1975 के बाद आज तीसरी पीढ़ी को शिक्षा का लाभ प्रदान कर रहा है। उस समय कुछ प्रबुद्ध और जागरूक नागरिकों ने यहाँ उच्च शिक्षा केन्द्र की स्थापना हेतु एक उच्च शिक्षा प्रसार सभा (समिति) बनाई। स्थानीय एम.पी. इण्टर कालेज के छात्रावास B.A. - I की कक्षाएं प्राइवेट तौर पर चलाने तथा कु.वि. विद्यालय नैनीताल से इसकी अनुमति लेने के लिए प्रयास किया। इसके लिए एक प्रबन्धक समिति बनाई गई जिसमें 1. श्री देवीदत्त छिम्वाल, अध्यक्ष 2. श्री त्रिलोक सिंह कठायत, उपाध्यक्ष 3. डॉ. सनत कुमार मेहरोत्रा, प्रबन्धक 4. श्री मदनमोहन जिंदल, सचिव, 5. श्री आनन्दबल्लभ बेलवाल, कोषाध्यक्ष तथा कार्यकारिणी सदस्यों में- श्री के.सी. पंत ऊर्जा मंत्री भारत सरकार, श्री नारायण दत्त तिवारी मु. मंत्री उ.प्र. सरकार, श्री बालकिशन सनवाल विधायक रामनगर (नैनीताल), श्री मिथिलेश कुमार गलवल्लिये, श्री बिष्णु भगवान, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल प्रधानाचार्य M.P.I.C., श्री ओमकार शरण मेहरोत्रा, श्री सोबनसिंह बिष्ट आदि लोग थे। छेपे-छेपे दान-दाताओं से लेकर बड़े दानवीरों ने इस समिति (उ.शि.प्र.स.) की आर्थिक सहायता की जिसमें प्रमुख नाम प्यारेलाल नन्दकिशोर गलवल्लिये जी का है, उन्होंने दो लाख रुपये देने का वचनदान दिया। महाविद्यालय की प्रान्तीयकरण तिथि तक एक लाख पच्चीस हजार की दान धनराशि एकमुश्त उनके द्वारा दी गई थी।

जब माननीय नारायणदत्त तिवारी जी (तत्कालीन मु.मंत्री उ.प्र.) की कृपा से इस साधनहीन महाविद्यालय के टेक ओवर

होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, तब इसके पास एक टाइपराइटर और एक टाइपिस्ट तक नहीं था। स्टाफ के नाम पर मैं अकेला तृतीय श्रेणी कर्मचारी और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी में श्री बांकलाल नाम से एक व्यक्ति थे, वह दफ्तरी पद पर टेक ओवर हुए। इसके आगे मैं जो भी लिखने जा रहा हूँ उसमें सबसे पहले मैं आप सभी सुधी पाठकों से भाषा और लिपि त्रुटि की क्षमा याचना के साथ एक और याचना करना चाहता हूँ कि मैं जो कुछ भी संस्मरण बयों करूँगा उसका मेरे पास कोई प्रमाण नहीं होगा और निश्चित तिथि भी नहीं, क्योंकि मैं अकेला ही कर्मचारी था जिसने कागजात तैयार कर टेकओवर की प्रक्रिया जैसे-तैसे पूरी की। 1 जून 1976 से टेक ओवर होने तक सभी पद रिक्त थे और प्रवक्ताओं की नियुक्ति हेतु विज्ञापन प्रकाशित हो चुका था, सभी विषयों में आवेदन आ चुके थे। इस प्रकार जून से जुलाई 76 के प्रथम सप्ताह तक प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद अस्तित्व में आया हमारा आज का महाविद्यालय रामनगर। शासनादेश सं0 5128/5(15)/28-दो-1976 दि0 14 जुलाई 1976, और टेक ओवर की वास्तविक तिथि हुई 17 जुलाई 1976.

भोटिया पड़ाव/बल्दिया पड़ाव:- भारत, तिब्बत, चीन व्यापार के कारण सहमान्त के हमारे भोटिया व्यापारी अपने व्यापार के सिलसिले में तराई-भाबर में जाड़ों में अपनी बकरियों-भेड़ों के साथ आते थे। जहाँ-जहाँ वे रहते थे उन स्थानों को भोटिया पड़ाव कहते थे, रामनगर का भोटिया पड़ाव श्री केंदार सिंह नाम के भोटिया को 90 वर्षों की लीज पर ब्रिटिश काल से आबंटित था। इस पर रामनगर के एक प्रतिष्ठित

परिवार की खुद मुख्तयारी थी। 1960 के चीन युद्ध के कारण व्यापार संधि समाप्त होने से लीज खाली करवाने नगरपालिका रामनगर की ओर से हाईकोर्ट इलाहाबाद में वाद दायर किया गया था।

माननीय श्री देवीदत्त छिम्वाल सेठ जी से निवेदन किया गया था कि आप इस भूमि को नगरपालिका की ओर से महाविद्यालय को आर्बंटित कर दें। इधर महाविद्यालय प्रान्तीयकृत हो गया था। उधर श्री केदार सिंह भोटिया की लीज कौंसिल होकर भूमि नगरपालिका को मिल गई थी। प्रान्तीयकरण के बाद स्थानीय जनता के अनुरोध पर मा० मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी जी द्वारा उद्घाटन की घोषित तिथि पर महाविद्यालय के लिए आर्बंटित स्थल पर भवन निर्माण हेतु उद्घाटन कर दिया गया है।

३०प्र० विधान सभा के चुनाव में रामनगर क्षेत्र से श्री रामदत्त जोशी जी समाजवादी पार्टी के विधायक निर्वाचित हो गए थे। उन्होंने विधानसभा में क्या प्रश्न लगाया इसका विवरण तो मुझे ज्ञात नहीं है, लेकिन जब मुझे जिस काम को करने के लिए कहा गया तो उसमें प्रमुख कार्य था श्री रामदत्त जोशी जी मा० विधायक को कालेज में बुला के लाना है। हमारे विभाग के निदेशक उच्च शिक्षा श्री ए०पी० मेहरोत्रा जी कालेज में निरीक्षण हेतु आए थे उनको माननीय विधायक जी से कुछ निवेदन करना था। मैं मा० विधायक जी को कालेज में बुलाने के लिए उनके आवास चोरपानी (चित्रकूट) चला गया संयोग से वह घर पर ही मिल गए। मेरे अनुनय को उन्होंने स्वीकार किया और वह कालेज पधारे, उनकी शिक्षा निदेशक से क्या बात हुई यह मैं नहीं जानता परन्तु उन्होंने महाविद्यालय के हित में अपना प्रश्न वापस ले लिया जिससे शिक्षा निदेशक महोदय को राहत मिली।

**बाउन्डीवाल :-** अपने महाविद्यालय परिसर में चारों ओर पत्थरों की बनी हुई एक बाउन्डीवाल केदार सिंह भोटिया के कब्जे के समय से है। जिन्हें ज्ञात नहीं उनके लिए बताना चाहता हूँ कि भोटिया पड़ाव परिसर की पुरानी बाउन्डी हल्द्वानी रोड के पार PWD कालोनी तक है यानि वहाँ तक भोटिया पड़ाव की जमीन थी।

मैं हाथ से लिख कर ही पत्राचार करता था। मैंने प्राचार्य जी से कहा कि केदारसिंह भोटिया द्वारा जो बाउन्डी पत्थरों की

दीवाल बनाकर चिन्हित की गई है वह सब भूमि महाविद्यालय की है, चाहे रकवा जितना भी हो, भूमि भवन (5) की फाइल में यह पत्र अब भी होगा। ऐसा लिखकर हमने नगरपालिका के पत्र का उत्तर दिया और अपनी जमीन संरक्षित की।

प्राचार्य आवास बनने से पूर्व आवास के ऊपर की बस्ती वाले मकान मालिक आए दिन नीचे तक खेत बना देते थे। प्राचार्य आवास के पीछे तक कटहल के पेड़ लगा दिए थे, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भाइयों को ले जाकर हम कच्चे कटहल तोड़ कर अपना हक जमाते रहते थे। इसी सन्दर्भ में एक व्यक्ति ने मुझ पर जानलेवा हमला करने की कोशिश की पर सफल नहीं हुआ।

**छात्रावास का लोकार्पण:-** महाविद्यालय का छात्रावास बनकर तैयार हुआ, काफी समय हो गया था छात्र उसे उपयोग में लेने हेतु महाविद्यालय प्रशासन से आर्बंटन करने की मांग कर रहे थे परन्तु कठिनाई ये आ रही थी कि लोकार्पण किस से कराया जाय, क्योंकि कांग्रेस और भा.ज.पा. दोनों राजनीतिक दल लोकार्पण हेतु अपना दावा कर रहे थे, शायद केन्द्र में कांग्रेस तथा प्रान्त में भा.ज.पा. सरकार थी। कई बार कोशिश की गई कि दोनों एक मत हो जाय पर बात नहीं बनी।

नवागन्तुक प्राचार्य श्रद्धेय सईद साहब जी ने प्र० बगड़वाल जी से जो बाद में यहाँ के प्राचार्य भी रहे, सलाह कर तय किया कि माननीय श्री रामदत्त जोशी जी पूर्व M.L.A. को इस लोकार्पण के लिए मनाया जाय। उन्हें निमन्त्रण देने और इस कार्य को सम्पन्न करवाने के लिए अनुरोध करने हेतु उनके आवास पर जाने का कार्य पुनः मुझे दिया गया, यानि मुझे उनको इस कार्य के लिए मनाना था। जब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि आपको तो मालूम है कि मैं राजनीति से सन्यास ले चुका हूँ। राजनीति से सन्यास लेने की घोषण वह विधानसभा लखनऊ में कर चुके थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि यह राजनीति से संबंधित कार्य है ही नहीं। गरीब बच्चों को छात्रावास में प्रवेश मिल जायेगा। उनकी सहायता हो जायेगी। उन्होंने महाविद्यालय का आमंत्रण स्वीकार कर लिया। इस प्रकार ये कार्य भी निर्धारित समय में पूरा हुआ और माँ शारदा के मंदिर में एक पुष्प चढ़ाने का मुझे भी अवसर प्राप्त हो गया।

इतिहास अच्छा बुरा यथार्थ का वर्णन है, माननीय विधायक श्री रामदत्त जोशी जी ने रामनगर-काशीपुर क्षेत्र के लिए बहुत

कार्य किए, रामनगर में चिकित्सालय को अपग्रेड करवाना, सरकारी हाईस्कूल खुलवाना आदि। उल्लेखनीय यह है कि जब हाईस्कूल जोशी जी के प्रयास से खुला तो शासनादेश में लिपिकीय त्रुटि से “रामनगर विकास खण्ड कार्यालय के पास” के स्थान पर “रामनगर विकास खण्ड में” एक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खोला जाता है ऐसा टाइप हो गया। जिसकी कु-व्याख्या डॉ० ओम प्रकाश शर्मा (तत्कालीन प्राचार्य) जी ने यह की कि रामनगर वि०ख० के अन्तर्गत कहीं हाईस्कूल की कक्षाएं चलाओ। नार्मल स्कूल (जो बाइन्डअप हो गया था) के भवन डिग्री कालेज को अस्थाई तौर पर कक्षा चलाने के लिए दिए गए थे, यह सब भवन अब उच्च शिक्षा को मिल गए हैं ऐसा प्रचार कर दिया। उन कमरों में फर्नीचर रखवा कर कब्जा कर लिया गया। हाईस्कूल के प्रधानाचार्य के आवास पर भी वह स्वयं रहने लगे वह भी नार्मल स्कूल के प्रधानाचार्य को आवंटित था।

यह शिकायत जब हाईस्कूल के स्टाफ ने मा० विधायक जी से की तो उन्होंने शर्मा जी को समझाया पर उन्होंने उनकी बात नहीं मानी। उसी दौरान मा० शिक्षा मंत्री उ०प्र० सरकार का आगमन गढ़वाल अपने गाँव की तरफ हुआ और वह रामनगर होते हुए जा रहे थे। फारेस्ट डॉक बंगले में रुके वहाँ जोशी जी ने उन्हें यह वृत्तान्त सुनाया और उन्होंने हमारे प्राचार्य डॉ० शर्मा जी को बुलाया। माननीय मंत्री जी से भी डॉ. शर्मा उलझ गए। एक सप्ताह के अन्दर प्रशासकीय आधार पर उनका स्थानान्तरण चकिया महाविद्यालय उ०प्र० हो गया।

इस प्रकार के स्वभाव वाले व्यक्ति थे डॉ० शर्मा। जिस समय महाविद्यालय टेकओवर हुआ, इमरजेंसी लगी हुई थी, दलील, अपील, वकील आदि करना खतरे से खाली नहीं था, इसका दुरुपयोग कर मेरी नियुक्ति को अपने हाथ में रखकर मुझे पदावनत कर दिया। शासनादेशानुसार मुझे प्रधान लिपिक के पद पर टेकओवर किया जाना था। डॉ० शर्मा जी के बाद प्रथम परावर्ती प्राचार्य डॉ० लाभ सिंह जी से लेकर मेरी सेवानिवृत्ति

के समय कार्यरत प्राचार्य श्रद्धेय प्रो० डी०एस० बगड़वाल तक सभी प्राचार्यों ने उक्त त्रुटि को सुधारने और मुझे वास्तविक लाभ/पद, प्र०लि०, प्रान्तीयकरण की तिथि से प्रदान किए जाने हेतु निदेशालय को बार-बार लिखा परन्तु “रहिमन फाटे दूध को मथे न माखन हो।” एक व्यक्ति द्वारा दिए गए घावों से महाविद्यालय के प्रति मेरी भक्ति कम नहीं हो सकती।

मैं कहना चाहता हूँ कि इस महाविद्यालय में मुझे जितने प्राचार्यों के साथ काम करने का सौभाग्य मिला तथा इसी महाविद्यालय के प्रवक्ता के रूप में कार्यरत प्रो. बी.सी. मेलकानी जो निदेशक उच्च शिक्षा रहे, आज भी सभी मेरी मूल्यवान पंजी के रूप में हैं। प्रो. जी.एन खोलिया साहब ने जो यू.पी. जैसे बड़े प्रदेश शासन में प्रख्यात संयुक्त सचिव रहे, निदेशकी की ओर अग्रसर होने की भावना को त्याग स्वेच्छा से प्राचार्य पद स्वीकार कर रामनगर महाविद्यालय को सुशोभित किया। उनके जैसे बेहद सख्त अनुशासक, राजा हरीशचन्द्र जैसे परम ईमानदार और सत्यवादी, कुशल कार्यशैली के स्वामी के साथ भी, मुझे कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। यद्यपि रामनगर से इतर मुझे, ऋषिकेश, फतेहपुर, खटीमा, मानिला महाविद्यालयों में भी सेवा का अवसर मिला परन्तु रामनगर के विषय में मैं कह सकता हूँ “उधौ मोहे ब्रज विसरत नाहीं।”

इस महाविद्यालय को अत्यन्त लघुरूप से, छोटे पौधे से बढ़ते हुए विशाल वृक्ष बनते देखना मुझे कितना आह्लादित, रोमांचित और हार्दिक आनन्द से भर देता है, अनिर्वचनीय और अकथनीय है। अन्त में जब तक मैं आज के प्राचार्य डॉ. एम. सी. पाण्डे जी का हृदय से आभार व्यक्त नहीं करूंगा तब तक मेरे संस्मरण अधूरे हैं, जिन्होंने मुझे अपने अतीत को लिपिबद्ध करने का सुअवसर प्रदान किया। माँ वीणा वादिनी का, उनके पुजारियों का, बौद्धिक विभूतियों का, शिक्षा मनीषियों का सादर अभिवादन।



काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम  
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।

-जय शंकर प्रसाद

# वे दिन, वे लोग

● प्रोफेसर (डॉ.) जी.सी. पन्त

हिन्दी विभाग, रा.महा. मालधनचौड़, नैनीताल

प्राइमरी पाठशाला हर्षाथल, दशाईथल एवं राजकीय महाकाली इण्टर कॉलेज गंगोलीहाट से क्रमशः प्राथमिक, माध्यमिक एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भारतीय सेना के पढ़ावों से लौटकर जुलाई 1986-87 में पी. एन.जी., पी.जी. कालेज रामनगर में बी.ए. प्रथम वर्ष की कक्षा में प्रवेश लेने हेतु प्रवेश आवेदन पत्र खरीदने की इच्छा से आगमन और प्रथम भेंट निवर्तमान प्रशासनिक अधिकारी श्री शम्भूदत्त छिम्वाल महोदय से, और उनका यह कहना कि बिना टी.सी., सी.सी. के प्रवेश कैसे होगा? बड़ा अजीब सा लगा था। युवा था, अहंकार को भी ठेस लगी, मगर अपने अध्यापकीय जीवन यात्रा में नये विद्यार्थी से जब भी मुझे यह कहना पड़ता है कि बिना टी.सी. एवं सी.सी. के प्रवेश नहीं हो पायेगा। अनायास ही याद आ जाता है। पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज में स्वयं का प्रथम प्रवेश दिवस।

डॉ. आर.पी. उप्रेती कार्यवाहक प्राचार्य महोदय के बाद प्रो. आई.एस. नायक महोदय के हाथों महाविद्यालय की कमान, आठ वादनों की चरणबद्ध पढ़ाई, सम्पूर्ण कक्षाएँ छात्र/छात्राओं से परिपूर्ण, गुरुजन ऐसे कि डॉ. श्रीनाथ पांडे जी की महाविद्यालय में उपस्थिति ठीक 9 बजकर 30 मिनट में, डॉ. डी.के. परेरू, डॉ. बी.एम. गुप्त, डॉ. लता काण्डपाल प्रो. प्रेमा मिवाड़ी, डॉ. इन्दु सक्सेना, डॉ. एम.एम. जोशी, डॉ. सी. एस. मेहता, डॉ. आर.ए. सिंह, डॉ. वशिष्ठ नारायण मिश्र आदि गुरुजन, घण्टी बजी कि नहीं कक्षा के दरवाजे से एक गए तो दूसरे आए। 15 अगस्त, 26 जनवरी राष्ट्रीय महापर्व दिवसों में डॉ. किशन चन्द्र गुरुरानी जी द्वारा विद्यार्थियों के मस्तिष्क को ज्योतित करने वाले व्याख्यान, मेरे द्वारा सहपाठियों के साथ रंगारंग कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण और कार्यक्रम को देखकर अभिभूत प्राचार्य प्रो. आई.एस. नायक महोदय द्वारा मेरठ से हारमोनियम मंगाया जाना सब चलचित्र की तरह मस्तिष्क पटल पर अंकित है क्योंकि इस संस्था के कण-कण से बहुत पुराना परिचय है मेरा।

तब छात्र राजनीति दलगत अर्थात् बैनर तले नहीं थी। जनरल गैदरिंग एवं वार्षिक समारोह के मंच में छात्र/छात्राओं

की वाक्-पटुता एवं प्रतिभा देखने लायक होती थी। अप्रैल माह में विश्वविद्यालय की परीक्षाओं का समापन, मई एवं जून माह में गर्मियों के अवकाश तथा जून मास के अन्त में परीक्षाफल और जुलाई के प्रथम सप्ताह में प्रवेश कार्य शुरू तत्पश्चात कक्षाओं का सुचारू संचालन। ईश्वर की अनुकम्पा पूर्वजों के आशीर्वाद से जिस संस्था का विद्यार्थी था वहीं आज प्राध्यापक हूँ। मेरा रोम-रोम कृतज्ञ है और सदा रहेगा। मैं कुछ भी नहीं था किन्तु बहुत कुछ बना दिया मुझे इस संस्था ने।

एक और अब में फर्क करना चाहता हूँ तो पाता हूँ, पी. एन.जी.पी.जी. कॉलेज तब से लेकर अब तक पूर्ण रूपेण पुष्पित एवम् पल्लवित हुआ है। फर्क यदि आया है तो छात्र संख्या का। तब छात्र संख्या 250 से 400 के करीब थी। जो अब 4000 तक पहुँच गयी है। विद्यार्थी और गुरुजन वैसे ही है जैसे 25-30 वर्ष पूर्व हुआ करते थे। गुरु-शिष्य के बीच दूरी बढ़ी है तो उसका कारण भीड़ की भगदड़ है और कुछ नहीं। इस दूरी के लिए भी व्यवस्था जिम्मेदार है। संतोष की बात यह है कि उत्तराखण्ड राज्य में स्थित उच्च शिक्षा के संस्थानों में सिस्टम द्वारा मचाई गयी अफरा-तफरी के बाद भी इस संस्था पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज की परम्पराओं, विशिष्टताओं की कोई बराबरी नहीं कर सकता है। उत्कृष्ट परीक्षाफल क्रीड़ा एन.सी.सी. एवं एन.एस.एस. जैसी सहगामी क्रियाओं के अच्छे सृजन की सोच रखने वाला संस्था का विद्यार्थी प्रतिष्ठित राजकीय सेवाओं में सफलता प्राप्त कर रहा है। जो यहाँ की गौरवशाली परम्परा रही है और आगे भी जारी रहेगी। उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर इस संस्था के प्रति तन, मन एवं जीवन समर्पित हो ईश्वर से यही कामना करता हूँ। मई 1997 से 22 जून 2009 तक राजकीय महाविद्यालय परिवार (अल्मोड़ा) में 12 वर्ष 1 माह 22 दिन की सेवाएं देने के बाद 23 जून 2009 से 30 जून 2023 तक 14 वर्ष 8 दिन की सेवाएं पी.एन.जी.राज.स्ना.महा. रामनगर में सेवाएं देने के बाद स्थानान्तरण होने के फलस्वरूप 1 जुलाई 2023 से अद्यतन राजकीय महाविद्यालय मालधनचौड़ में कार्यरत हूँ।



# रामनगर : एक ऐतिहासिक शहर (अतीत से वर्तमान का संवाद)

● डॉ. शरद भट्ट  
असि. प्रोफेसर, इतिहास विभाग

उत्तर में हिमालय और तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ, हमारा भारत देश प्राचीन काल से ही एक धर्म प्रधान देश है, यहाँ के प्रत्येक राज्य का प्रत्येक शहर अपनी ऐतिहासिकता की कहानी बयां करता है। हमारी संस्कृति की विशेषता भी यही रही है कि प्राचीन काल से वर्तमान तक यह अपने आप को संजोए हुए है। विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक 'हड़प्पा सभ्यता' में धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जो विशेषताएँ थी, वो सभी विशेषताएँ अब भी हम वर्तमान भारत में पाते हैं। हड़प्पा के समकालीन सभी सभ्यताएँ जैसे मेसोपोटामिया, मिस्र तथा अमेरिका की माया सभ्यता सभी की सांस्कृतिक विशेषताएँ हमें वर्तमान रूप में देखने को नहीं मिलती परन्तु हमारे लिए गर्व की बात है भारत ने हजारों वर्षों की सांस्कृतिक को जीवित रखा है। अतः हम सांस्कृतिक रूप से तो सभी अन्य देशों की अपेक्षा विकसित अवस्था में हैं। इसी सांस्कृति रूप से विकसित भारत देश का अभिन्न अंग है हमारा उत्तराखण्ड। जो भारत के उत्तर में हिमालय की गोद में स्थित है।

हिमालय को स्कंद पुराण में निम्न प्रकार उल्लेखित किया गया है :

**खण्डाःपन्च हिमालयस्य कथिताः नैपालकूर्माचलौ।**

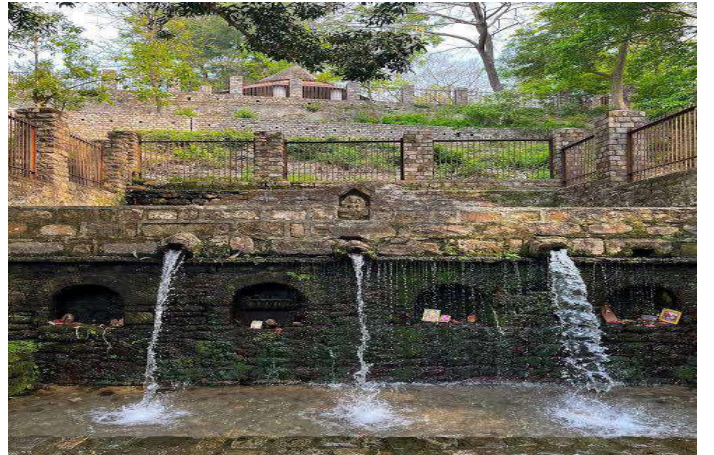
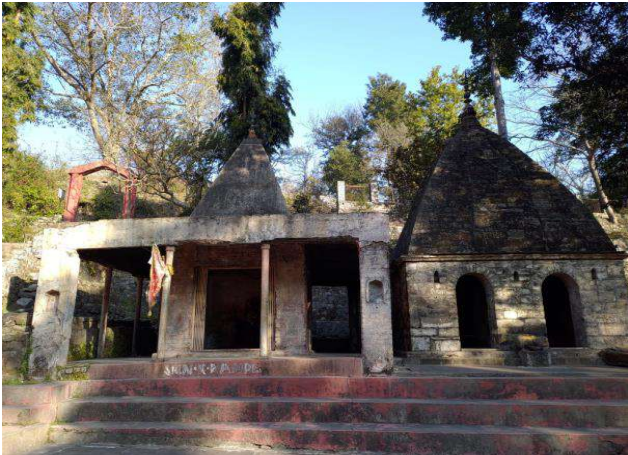
**केदारोऽथ जालन्धरोऽथ रूचिर काश्मीर संज्ञोऽन्तिम।**

अर्थात् हिमालय के 5 खंड हैं नेपाल, कूर्माचल (कुमाऊँ), केदारखण्ड (गढ़वाल), जालंधर (हिमाचल प्रदेश) तथा कश्मीर।

कूर्माचल अर्थात् कुमाऊँ तथा केदारखण्ड अर्थात् गढ़वाल को मिलाकर ही वर्तमान उत्तराखण्ड बना है। उत्तराखण्ड प्राचीन काल से ही सन्यासियों के लिए तपोभूमि रहा है। खश, किरात, नाग, कुलिंद आदि यहाँ की प्राचीनतम जातियां थी।

उत्तराखण्ड में कुमाऊँ के दक्षिण-पश्चिम में कोसी नदी के किनारे वर्तमान रामनगर स्थित है। वर्तमान में रामनगर का महत्व यहां स्थित कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान से है। रामनगर कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान के कारण ही विश्व भर में प्रसिद्ध है परंतु ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर तथा स्थानीय रूप से प्रचलित मान्यताओं का विश्लेषण करने पर आप पाएँगे कि रामनगर क्षेत्र की ऐतिहासिकता हजारों वर्षों पुरानी है। भारत के दो सुप्रसिद्ध महाकाव्यों अर्थात् रामायण तथा महाभारत में भी रामनगर के आस-पास के क्षेत्रों का वर्णन मिलता है। रामनगर की प्रत्येक मंदिर अपनी ऐतिहासिकता का वर्णन करता है। रामनगर को त्रेता युग में अशोक वाटिका, द्वापर युग में विराट नगर के नाम से जाना जाता था।

बद्रीदत्त पांडे की पुस्तक कुमाऊँ के इतिहास के अनुसार महर्षि विश्वामित्र के कहने पर एक बार श्री राम, लक्ष्मण व सीता जी यहाँ आए थे। वन की सुंदरता देख सीता जी इतनी मोहित हो गयी थीं कि उन्होंने श्री राम से कहा कि "बैसाख के महीने में हमें यहाँ रहना चाहिए और कोशिकी (कोसी) में



सीताबनी मंदिर

स्नान करना चाहिए।” वह बैसाख में यहीं रहे जहां पानी के दो झरने निकल आए। दूसरी किंवदंती के अनुसार यहाँ महर्षि वाल्मीकि का आश्रम हुआ करता था। वनवास के दौरान सीता जी यही रहीं। अंत में इसी स्थान पर धरती में समा गई। सीताबनी मन्दिर क्षेत्र अपनी ऐतिहासिकता के कारण पुरातत्व विभाग के अधीन है।

महाभारत के वनपर्व के 110 अध्याय में रामनगर की कोशी नदी का वर्णन आया है। इस अध्याय में ऋषि लोमस युधिष्ठिर से कहते हैं “हे कुरुक्षेत्र, आप भाइयों के साथ यहाँ पर बहती हुई नंदा (अलकनंदा) में स्नान कीजिए। फिर कौशिकी (कोसी) नदी को जाइए। जहाँ विश्वामित्र जी ने घोर तप किया है।” तब सभी पांडव भाई अलकनंदा नदी में नहाकर कोसी नदी पर आए थे। ऐसी मान्यता है कि प्राचीन विराट नगर, जहां राजा विराट का राज्य था, वहीं वर्तमान ढिकुली गांव है। महाभारत के अनुसार, पांडवों ने अपने अज्ञातवास का अंतिम वर्ष राजा विराट के संरक्षण में बिताया था। इसी दौरान उन्होंने रामनगर स्थित इस पवित्र गरल कंठेश्वर महादेव मंदिर में शिवलिंग की स्थापना की। पुरातत्व विभाग ने इसे संरक्षित स्मारक घोषित किया है। मंदिर परिसर और उसके आसपास की खुदाई में पांडव कालीन कई कलाकृतियां, प्रस्तर स्तंभ, मूर्तियां और अलंकृत स्तंभ मिले हैं।

पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि कुमाऊँ की सबसे प्राचीन बस्ती ‘ढिकुली’ के पास थी। जहाँ की सामग्री से वर्तमान रामनगर बसा है। कोशी के किनारे इस जगह में बसी नगरी का नाम वैराटनगर था। यहाँ कुरु राजवंश के राजा राज्य करते थे,

जो प्राचीन इन्द्रप्रस्थ (आधुनिक दिल्ली) के साम्राज्य की छत्रच्छाया में रहते थे। यह वही वैराटनगरी है, जहाँ पांडव गुप्त वनवास में एक साल तक रहे थे।

कुमाऊँ को एक शासन के अंतर्गत लाने का श्रेय कत्यूरी राजवंश को जाता है। ब्रदीदत्त पांडे की पुस्तक **कुमाऊँ का इतिहास** में इनका काल 2500 ईसा पू. से 700 ई. तक माना है। इन्होंने कुरु राज्य से ढिकुली को जीतकर वहां कत्यूरी शासन स्थापित किया तथा ढिकुली को शीतकालीन राजधानी बनाया।

वहीं एक अन्य इतिहासकार डॉक्टर यशवंत सिंह कठोच के अनुसार प्राचीन काल में सम्पूर्ण उत्तराखंड पर कार्तिकेयपुर राजवंश का शासन था तथा इस राजवंश के अवसान के पश्चात कुमाऊँ के कातियुर राजवंश का उदय हुआ। जिन्होंने लगभग 1050 ई. से 1520 ई. तक वैधनाथ से शासन किया।

कुमाऊँ के कातियुर राजवंश के पूर्व में चंद राजवंश का उदय लगभग 1200 ई. के आसपास हुआ फलस्वरूप ढिकुली का क्षेत्र चंद राजवंश के अंतर्गत आ गया। इस क्षेत्र में बीमारी जैसे मलेरिया बहुत होती थी। पहाड़ पर रहने वाले लोग यहां बहुत मुश्किल से रहते थे। देश निकाले की सजा जिसे भी दी जाती थी, उसे इस स्थान पर भेज दिया जाता था। 1790 ई. के बाद कुमाऊँ क्षेत्र पर गोरखा अत्याचारी शासन की स्थापना हुई इसके बाद 1815 ई. में गोरखा शासन का अंत कर ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई तथा कुमाऊँ क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अंतर्गत आ गया। अंग्रेजों ने गोरखा युद्ध के समय ढिकुली (वर्तमान रामनगर) क्षेत्र से होकर ही अल्मोड़ा तक का सफर तय किया था।



गरल कंठेश्वर महादेव

इस क्षेत्र का नाम रामनगर हिन्दू धर्म के अराध्य भगवान राम के नाम पर नहीं बल्कि ब्रिटिशकालीन भारत के अंग्रेज अधिकारी सर हेनरी रैमजे के नाम पर है। कुमाऊँ और गढ़वाल का प्रवेश द्वार कहलाने वाले रामनगर क्षेत्र को बसाने का श्रेय अंग्रेज अधिकारी सर हेनरी रैमजे को जाता है। सन् 1856 ई. से सन् 1884 ई. तक कुमाऊँ कमिश्नर रहे उससे पहले ही सन् 1850-51 से वे रामनगर क्षेत्र में कैम्प लगाया करते थे। 44 साल तक कुमाऊँ में रहने वाले रैमजे 28 साल कुमाऊँ के कमिश्नर रहे इस दौरान उन्होंने इस शहर की बुनियाद रखी।

सर हेनरी रैमजे पर्यावरण प्रेमी भी थे। उन्होंने रामनगर के आस-पास के पर्यावरण को ब्रिटिश साम्राज्यवादी दुष्प्रभाव से भी बचाया था। कालाढूंगी में उत्तर भारत की प्रथम लोहे की भट्टी थी, जिसका निर्माण मेसर डेबिस ने 1858 ई. में किया

था। क्षेत्र के नगरीकरण में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, तथा इससे बहुत से लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। इस भट्टी में पानी की आपूर्ति हेतु एक नहर भी बनाई गई थी। परन्तु इस भट्टी को चलाने के लिए लकड़ी के ईंधन का प्रयोग किया जाता था, जिसके कारण बहुत अधिक मात्रा में पेड़ों का कटान किया जाता था। इन दुष्प्रभाव के कारण उत्तराखण्ड के कमिश्नर हेनरी रैमजे के द्वारा 1878 ई. में इस फैक्ट्री को बंद करवा दिया गया था। लोहे की भट्टियाँ आज भी वही अवस्थित हैं।

रैमजे साहब स्थानीय लोगों में रामजी साहब के नाम से जाने जाते थे और उनका बसाया क्षेत्र भी रामनगर हो गया।

आज भी रामनगर के आस-पास स्थित जगहों से विभिन्न पुरातात्विक अवशेष जैसे पत्थर की विभिन्न मूर्ति, लिंग आकृति, स्तम्भ भाग आदि प्राप्त होते हैं।



कालाढूंगी स्थित उत्तर भारत की प्रथम लोहे की भट्टी



वर्गाकार लघु लिंगम (ढिकुली ग्राम)



सूर्य प्रतिमा अवशेष (ढिकुली ग्राम)



यक्ष-यक्षिणी (ढिकुली ग्राम)



तोरण (ढिकुली ग्राम)



लक्ष्मी नारायण प्रतिमा (गर्जिया मंदिर)

## राष्ट्रीय एकता का महामंत्र

● अमित चौहान

बी.ए. प्रथम वर्ष

**प्रस्तावना :-** भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक अपनी विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह भूमि अनेक भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं का संगम है। इसी विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए हर साल 31 अक्टूबर को भारत के लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल की जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है। सरदार पटेल, जिन्होंने 560 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत किया, राष्ट्रीय एकता के सबसे बड़े प्रतीक हैं।

इस वर्ष की थीम “एक राष्ट्र, एक दृष्टि, एक भारत” है, जो केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली संकल्प है। यह थीम न केवल देश के भौगोलिक और राजनीतिक एकीकरण को दर्शाती है, अपितु एक साझा भविष्य, एक समान लक्ष्य और एक एकजुट पहचान की ओर बढ़ाने के सामूहिक दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करती है। यह निबंध इसी त्रयी राष्ट्र, दृष्टि और भारत के गहन विस्तार को समझाने का प्रयास है।

### एक राष्ट्र : भौगोलिक और राजनीतिक एकता

“एक राष्ट्र” का तात्पर्य भारत की भौगोलिक और राजनीतिक अखंडता से है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत का मानचित्र अत्यंत खंडित था। जहाँ ब्रिटिश प्रांतों के अलावा सैकड़ों छोटी-बड़ी रियासतें थीं। इन रियासतों का स्वतंत्र रहने का निर्णय देश की एकता के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी।

### सरदार पटेल का ऐतिहासिक योगदान :-

सरदार पटेल ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और कूटनीति के बल पर इस चुनौती का सामना किया। उन्हें भारत के लिस्मार्क के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने अपनी अडिग नीतियों से ‘ऑपरेशन पोलो’ जैसे साहसिक कदम उठाकर इन रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कराया। उन्होंने साबित कर दिया कि “भारत केवल जमीनी टुकड़ों का समूह नहीं”, बल्कि एक अविभाज्य और भावात्मक इकाई है। उनका यह कार्य एक राष्ट्र की नींव को मजबूत करने का एक बेमिसाला उदाहरण है।

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

**विविधता में एकता की शक्ति :-** हमारा राष्ट्र विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं व जीवन शैलियों का गुलदस्ता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से अरुणांचल प्रदेश तक हर क्षेत्र की अपनी पहचान है, लेकिन ये सभी मिलकर एक अखंड भारत का निर्माण करती हैं। एक राष्ट्र हमें सिखाता है कि हमारे मतभेद हमें अलग नहीं कर सकते, बल्कि हमें तो एक-दूसरे का सम्मान करते हुए एक साथ चलना है।

**एक दृष्टि :- साझा लक्ष्य और सामूहिक विकास का संकल्प- “एक दृष्टि”** से अभिप्राय है कि देश के प्रत्येक नागरिक, राज्य और संस्थान का लक्ष्य एक समान होना चाहिए। यह एक ऐसा साझा दृष्टिकोण है जो देश को प्रगति और समृद्धि की ओर ले जाने के लिए सभी को एक मंच पर लाता है।

**विकसित भारत की सामूहिक दृष्टि :-** आज भारत की दृष्टि ‘विकसित भारत’ के निर्माण पर केन्द्रित है। इसका अर्थ केवल आर्थिक विकास नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, सामाजिक न्याय और नवाचार के क्षेत्र में विश्वगुरु बनना है। इस दृष्टि को साकार करने के लिए आवश्यक है कि क्षेत्रीय, भाषाई या राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर हर नागरिक राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखे।

**सहभागिता और समावेशी विकास :-** इस दृष्टि को पूरा करने के लिए सबका साथ सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास का मंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि विकास के लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। एक भारत, श्रेष्ठ भारत जैसी पहलें इस दृष्टि को ज़मीन पर उतारने का कार्य करती हैं, जहाँ विभिन्न राज्यों के लोग एक दूसरे की संस्कृति को समझते और अपनाते हैं।

**एक भारत : भविष्य की और बढ़ता हुआ एकजुट भारत:-** “एक भारत” उस अखंड, सशक्त और आत्मविश्वासी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे हम भविष्य में देखना चाहते हैं। यह एक ऐसा भारत है। जहाँ सभी नागरिक समान रूप से राष्ट्र के विकास में भागीदार हैं।

**आधुनिक भारत का सशक्तिकरण :-** एक भारत के निर्माण डिजिटल क्रांति और बेहतर संपर्क माध्यम का बड़ा महत्त्व है। 'G.S.T.' जैसी पहलें "वन नेशन, वन टैक्स" के माध्यम से देश को एक आर्थिक बाजार के रूप में एकीकृत करती हैं। 'आधार' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी योजनाएं नागरिकों को एक समान मंत्र प्रदान करती हैं। ये सभी प्रयास देश को आर्थिक रूप से सशक्त और एकीकृत बनाने की दिशा में उठाए गए कदम हैं।

**नागरिक का कर्तव्य :-** 'एक भारत' का सपना साकार होगा जब हर नागरिक सरदार पटेल के इस कथन को आत्मसात करेगा : "हर नागरिक की यह मुख्य जिम्मेदारी है कि वह महसूस करें कि उसका देश स्वतंत्र है और अपने स्वतंत्र देश की रक्षा करना उसका कर्तव्य है।" हमें देश के प्रतीकों, संविधान और राष्ट्रीय मूल्यों का सम्मान करना चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम अपने कार्यों और विचारों से एकता के बंधन को मजबूत करें, न कि उसे कमजोर।

**उपसंहार :-** राष्ट्रीय एकता दिवस की थीम एक राष्ट्र, एक दृष्टि एक भारत भारतीय नागरिकता के मूल सार को समाहित करती है। यह हमें सरदार पटेल के उस महान कार्य की याद दिलाती है, जिसने इस राष्ट्र को भौगोलिक रूप से एक किया है, और साथ ही, हमें भविष्य के लिए एक साझा करती है।

एक राष्ट्र हमारी विरासत है, एक दृष्टि हमारी अपेक्षा है और एक भारत हमारा गंतव्य। हमें यह समझना होगा कि हमारा धर्म, भाषा या क्षेत्र कोई भी हो, हमारी पहचान सबसे पहले एक भारतीय के रूप में है।

आइए, इस राष्ट्रीय दिवस पर हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा लें कि हम सरदार पटेल के दिखाए मार्ग पर चलेंगे और सभी भेदों को भुलाकर, एक होकर, भारत को विश्व के पटल पर एक सशक्त, समृद्ध और अखंड राष्ट्र के रूप में स्थापित करेंगे। यही हमारे 'लौह पुरुष' को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

यह निबंध त्रयी राष्ट्र, दृष्टि और भारत के गहन अर्थ को विस्तार से समझाने का एक सूक्ष्म प्रयास है।



## हिन्दी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान

● सीमा

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने न केवल सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों को उठाया बल्कि नारी जीवन के विविध पक्षों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

महिलाओं के अनुभवों, संघर्षों और भावनाओं को भी प्रकट किया। महिला रचनाकारों का साहित्य स्त्री-विमर्श, नारी स्वतंत्रता, सामाजिक असमानता, पारिवारिक संरचना, समाज के आधार पर स्त्री-पुरुष संबंधों जैसे विषयों पर केन्द्रित रहा है।

महिला रचनाकार केवल परम्परागत साहित्यिक रूपों को ही चुनौती दे रही है तथा साथ ही नई और प्रयोगात्मक लेखन शैली भी अपना रही है। जिससे हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा और ऊर्जा मिलती है।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों के नारी जीवन के विविध पक्षों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है -

(1) प्रारंभिक दौर (20वीं शताब्दी का आरंभ)- इस दौर में हिन्दी कथा साहित्य में महिलाओं की भागीदारी सीमित थी, लेकिन कुछ महिला लेखिकाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई तथा प्रारंभिक दौर की मुख्य रचनाकारों में सर्वप्रथम सहभागिता प्रदान की जाती है।

(क) महादेवी वर्मा :- इनकी कहानियाँ महिलाओं के संघर्ष और आत्मनिर्भरता को दर्शाती हैं। "शृंखला की कड़ियाँ" जैसी रचनाएँ नारीवादी विचारधारा को मजबूती प्रदान करती हैं।

यह एक छायावादी युग की प्रमुख कवयित्री थीं लेकिन उनकी गद्य रचनाएँ भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

(ख) सुभद्रा कुमारी चौहान:- इन्होंने अपनी कहानियों में समाज सुधार और नारी सशक्तिकरण को प्रमुखता दी। "बेटी की विदाई" और "लक्ष्मीबाई" जैसी रचनाएँ प्रसिद्ध हैं।

(2) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य (1950-1980):-

इस काल में महिला लेखिकाओं ने समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत की और नारी विमर्श को एक नई दिशा दी। इसमें प्रमुखता प्रदान करने वाली लेखिका सर्वप्रथम-

(क) आशा पूर्णा देवी:- समाज में स्त्रियों की स्थिति को लेकर सशक्त लेखन किया। नारी जीवन को जटिलताओं और पारिवारिक संरचना को अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। “प्रथम प्रतिश्रुति”, “वकुल कथा” जैसी रचनाएँ विशेष रूप से चर्चित हैं।

(ख) मन्नु भण्डारी:- “महाभोज”, आपका बंटी” जैसी कृतियों में समाज और परिवार में महिलाओं की स्थिति को बारीकी से उकेरा है। उनकी रचनाएँ मध्यवर्गीय समाज और स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं को दर्शाती हैं।

(ग) कृष्णा सोबती:- “मित्रो मरजानी” जैसी रचना के माध्यम से बोल्लड और आत्मनिर्भर स्त्री की छवि प्रस्तुत की। “जिंदगीनामा” उनकी प्रसिद्ध कृति है। उनके उपन्यासों में स्त्री की आत्मनिर्भरता, संघर्ष और स्वतंत्रता का चित्रण मिलता है।

(घ) कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव एवं अन्य समकालीन पुरुष लेखकों के साथ मिलकर महिला लेखिकाओं ने ‘नई कहानी आन्दोलन’ को भी समृद्ध किया।

(3) समकालीन हिन्दी कथा साहित्य (1980 के बाद):- इस दौर में महिला लेखिकाओं ने समाज की जटिल सच्चाइयों, नारीवाद, दलित विमर्श यौनिकता तथा मनोवैज्ञानिक पहलुओं को अपने लेखन का केन्द्र बनाया।

इस कथन के सहभागी लेखिकाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा जो कि निम्न प्रकार से प्रस्तुत किए जाते हैं।

(क) मैत्रेयी पुष्पा:- ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया “इदनमम”, “चाक” जैसी कृतियाँ हैं। ग्रामीण परिवेश और स्त्री जीवन के संघर्ष को अपनी कहानियों में प्रमुखता दी “आल्मा कबूतरी” जैसे उपन्यास महिलाओं की सामाजिक स्थिति को उजागर करते हैं।

(ख) चित्रा मुद्गल:- “आवाँ” जैसी रचना में सामाजिक और स्त्री विमर्श को गहराई से उकेरा। उन्होंने दलित और श्रमिक वर्ग की महिलाओं की समस्याओं पर लिखा तथा उपन्यास में सामाजिक असमानता को दर्शाया गया है।

(ग) मृदुला गर्ग:- आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों पर बेबाकी से लिखा।

(घ) अनामिका, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, गीतांजलि श्री:- इन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं को और अधिक विस्तृत आयाम दिए।

(ङ) गीता हरिहरन:- उनके लेखन में नारीवादी दृष्टिकोण प्रमुखता से उभरता है।

“इन टाइम ऑफ सीज” और “द थाउजेंड फेसेस ऑफ नाइट” उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं के योगदान के महत्त्वपूर्ण लक्ष्य:-

(1) छायावाद काल से ही हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का जन्म माना जाता है।

(2) हिन्दी साहित्य के महत्त्वपूर्ण रचनाकार महादेवी वर्मा, मन्नु भण्डारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं ने अपने लेखन में स्त्री स्वर को प्रबल रूप से प्रस्तुत किया है।

(3) उदाहरणार्थ- शिवानी जी ने हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू और अंग्रेजी पर अच्छी व मजबूती प्रदान की।

(4) प्रमुख रचनाकार:- राजेन्द्र बाला घोष आधुनिक हिन्दी नव जागरण की पहली महिला कहानीकार थी।

(5) महिलाओं के समाज में स्थान, उनकी स्थिति, अधिकार और आजादी के विषयों पर जोर दिया गया है तथा महिलाओं की समस्याओं को प्रस्तुत कर उनका समाधान स्वयं नारी पात्रों द्वारा करवाने का प्रयास किया।

(6) आठवें दशक- की महिला रचनाकारों में ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, मणिक, मोहनी, मृदुला गर्ग, मुदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, दीप्ति खण्डेलवाल, कुसुम अंचल, इंदू जैन, सुनीता जैन, प्रभा खेतान, सुधा अरोड़ा, क्षमा शर्मा, अर्चना वर्मा, नामिता सिंह, अल्का सरावगी, जया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुप्ता आदि शामिल है।

(7) महिला लेखिकाओं के कार्यों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जा रहा है।

(8) इन लेखिकाओं के कार्यों ने भारतीय को वैश्विक साहित्यिक मंच पर एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

(9) साथ ही मुख्य कविताओं, आलोचकों व अलग-अलग भाषाओं के आधार पर समास, शैली, संवाद व कहानियों के माध्यम से हमें संवेदन से परिचित करवाया है।

(10) उनकी रचनाओं की भाषा सरल, सहज और स्वाभाविक रही है तथा अपने-अपने विचार-धाराओं व भिन्न तत्त्वों के आधार पर जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया है।

**हिन्दी कथा साहित्य में प्रमुख महिला रचनाकारों में से एक श्रीमती मन्नु भण्डारी जी का महत्त्वपूर्ण योगदान-**

मन्नु भंडारी हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कथाकारों में से एक थीं। उनकी रचनाएँ विशेष रूप से नारी-जीवन, मध्यवर्गीय समाज, सामाजिक परिवर्तन और स्त्री स्वतंत्रता के मुद्दों को प्रभारी रूप से उजागर करती हैं।

**(1) जीवन परिचय:-** इनका पूरा नाम महेन्द्र कुमारी भण्डारी (मन्नु भण्डारी) है।

- इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 में भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ।
- इन्होंने स्नातकोत्तर हिन्दी की शिक्षा ग्रहण की।
- यह एक विशिष्ट कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार तथा साथ ही शिक्षिका भी रही।
- इनके पति राजेन्द्र यादव जो कि एक स्वयं प्रसिद्ध साहित्यकार थे।

इनकी मृत्यु 15 नवम्बर 2021 में हुई।

**(2) साहित्यिक परिचय:-**

- **सामाजिक यथार्थ** : उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय समाज, पारिवारिक संघर्ष, स्त्री-जीवन की जटिलताएँ और पुरुषवादी मानसिकता का सजीव चित्रण मिलता है।
- **नारी चेतना**: उन्होंने स्त्री के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और उसके अस्तित्व की लड़ाई को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।
- **सरल भाषा और प्रभावी भाषा**: उनकी भाषा आम बोलचाल की थी, जिससे पाठकों को जुड़ाव महसूस होता था।
- **नवीन प्रयोग**: उन्होंने कहानी, उपन्यास और नाटक तीनों विधाओं में उल्लेखनीय योगदान दिया।

**(3) प्रमुख रचनाएँ :-**

**(क) उपन्यास:-** (1) “आपका बंटी” सन् 1971 में प्रकाशित हुई तथा इस उपन्यास की विषयवस्तु “एक टूटते परिवार की पीड़ा और बच्चे की मानसिकता” को प्रस्तुत किया है।

विशेष: इस उपन्यास को हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास माना जाता है।

**(2) महाभोज:-** सन् 1979 में यह उपन्यास मुख्य रूप से राजनीति और भ्रष्टाचार की पड़ताल से संबंधित उपन्यास है।

**(3) स्वामी:-** सन्.....में “स्वामी” उपन्यास के विषयवस्तु स्त्री-जीवन, विवाह और सामाजिक बंधनों की कहानी को प्रकट किया है।

**(ख) कहानी संग्रह :-**

- (1) “एक प्लेट सैलाब”- प्रमुख कहानियाँ एक प्लेट सैलाब, तीन निगाहों की एक तस्वीर।
- (2) “मैं हार गई” - मैं हार गई, नई नौकरी
- (3) “यही सच है”- यही सच है (इसी पर फिल्म रंजनीगंधा बनी)

**(ग) नाटक -**

- (1) बिना दीवारों का घर - पारिवारिक विघटन।
- (2) महाभोज- राजनीति, सत्ता और भ्रष्टाचार।
- (4) सम्मान और पुरस्कार - मन्नु भंडारी को साहित्यिक विचारधाराओं व हिन्दी में प्रबलता का विस्तार प्रकट करती है जिसके आधार पर उन्हें निम्न साहित्यिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है-
- (1) व्यास सम्मान
- (2) हिन्दी अकादमी पुरस्कार
- (3) साहित्यकार सम्मान
- (4) कथा सम्मान

उनकी प्रसिद्ध कृति ‘आपका बंटी’ में ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं। जहाँ भाषा का प्रयोग अत्यंत संवेदनशील और काव्यात्मक लगता है। उदाहरण के लिए-

“बंटी का बचपन” उसके बचपन से कहीं अलग था। वह हँसना चाहता था, मगर खिलखिला नहीं पाता था। वह रोना चाहता था, मगर आँसू नहीं निकलते थे। माता-पिता की दुनिया में उसकी जगह कहाँ थी? ” इसी तरह ‘यही सच है’ कहानी से भी एक अंश को प्रकट किया है-

“कभी-कभी लगता है,  
हम समय से आगे निकल जाते हैं,  
और कभी-कभी समय हमें पीछे छोड़ देता है।  
रिश्ते भी तो समय की ही तरह होते हैं,  
कभी पास, कभी दूर.....।”

मन्नु भण्डारी की भाषा में सहजता, प्रवाह और भावनाओं की गहराई है, जो उनके गद्य को भी काव्यात्मक बना देती है। उनके कई संवाद और गद्यांश पाठकों के मन में लयबद्ध अनुभूति उत्पन्न करते हैं।

**निष्कर्ष:-** आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में बदलाव लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके लेखन ने महिलाओं के संघर्षों, सपनों और आत्मनिर्भरता को प्रस्तुत कर समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है। महिलाओं की स्वतंत्रता, अस्मिता, प्रेम, विवाह, मातृत्व, नैतिकता तथा आत्मनिर्णय जैसे विषयों पर खुलकर लिखा।



## गजानन माधव मुक्तिबोध

● रोहित खत्री

बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

**जीवन परिचय :** गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर 1917 में तात्कालीन मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित श्योपुर नामक कस्बे में हुआ था उनके पिता का नाम माधव राव व माता का नाम पार्वती था। मुक्तिबोध के पिता पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर पद में कार्यरत थे। पिता की सरकारी नौकरी होने के कारण पिता का तबादला अधिकतर होता रहता था जिसके कारण मुक्तिबोध की पढ़ाई में कई प्रकार की समस्या आती रहती थी। मुक्तिबोध ने अपनी विद्यालय जीवन की शिक्षा तो यून ही पिता के तबादलों के साथ यहां वहां के विद्यालयों से पूर्ण की परन्तु मुक्तिबोध ने अपनी स्नातक की शिक्षा इन्दौर के होल्कर विश्वविद्यालय से बी.ए. में पूर्ण की और इसी क्रम में फिर स्नातकोत्तर की शिक्षा वर्ष 1954 में नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में पूर्ण कर डिग्री प्राप्त की। इन्दौर में स्नातक की शिक्षा प्राप्त करते समय उनकी शान्ताराम नामक व्यक्ति से अच्छी मित्रता हो जाती है। शान्ताराम के साथ घूमने-फिरने व दोस्ती में व्यतीत किया गया समय स्वच्छ रूप से उनके जीवन व लेखनी में भी पड़ता दिखाई देता है। मुक्तिबोध वर्ष 1939 में शान्ता मुक्तिबोध के साथ प्रेम विवाह करते हैं। मुक्तिबोध ने छोटी सी आयु में ही पढ़ाना शुरू कर दिया था। वह बड़नगर के मिडिल स्कूल और वर्ष 1940 में शुजालपुर के शारदा शिक्षा सदन में अध्यापक के रूप में पढ़ाने लगे परन्तु वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के चलते शारदा शिक्षा सदन बन्द हो जाता है। इसके पश्चात वे अलग-अलग स्थानों में कार्य करते रहे परन्तु किसी भी स्थान में वे स्थायी रूप से

अधिक समय तक कार्य नहीं किया करते थे। जिसके कारण उन्हें व परिवार को आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ता था। उन्होंने जीवन में विभिन्न स्थानों व पदों में कार्य किया जिसमें अध्यापक, वायुसेना, पत्रकारिता व सूचना व प्रसारण विभाग में भी कुछ-कुछ समय तक कार्य किया था।

वह वर्ष 1958 में उन्होंने दिग्विजय महाविद्यालय, राजनंदगाँव में प्राध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति होती है। इन सभी के साथ-साथ उन्होंने “वसुधा” और “नया खून” जैसी पत्रिकाओं के सम्पादक के रूप में भी कार्य किया। ये सभी कार्य के चलते वे अपने स्वास्थ्य के प्रति बेहद ही लापरवाह थे। स्वास्थ्य ज्यादा बिगड़ जाने के कारण उन्होंने अपने अन्तिम समय भोपाल के हमीदिया अस्पताल में पूर्ण किया। यहीं पर 11 सितम्बर, 1964 को “गजानन माधव मुक्तिबोध” की मृत्यु हो गई।

### साहित्यिक जीवन-

गजानन माधव मुक्तिबोध का हिन्दी साहित्य में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुक्तिबोध प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता के बहुमूल्य कवि के रूप में जाने जाते हैं। मुक्तिबोध के साहित्य व रचनाओं को सर्वप्रथम वर्ष 1943 में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन ‘अज्ञेय’ के सम्पादन पत्रिका तार सप्तक में छपा गया था। मुक्तिबोध के काम रचनाओं में स्वच्छ रूप से मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनीतिक विचारधारा का दर्शन होता है। उनकी कविता में उन पर मार्क्सवाद की विचारधारा व फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद

का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। जिससे व नई कविता आन्दोलन में और निखर कर प्रमुख कवि के रूप में सामने आते हैं।

गजानन माधव मुक्तिबोध अपने सम्पूर्ण साहित्यिक जीवन में गद्य व पद्य दोनों धारा में अपना सम्पूर्ण योगदान देते हैं। रचनाओं में 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरी भूरी खाक धूल' (कविता संग्रह), 'सतह से उठता आदमी', 'काठ का सपना', 'विपात्र' (कथा साहित्य), 'कामायनी एक पुनर्विचार', 'भारत : इतिहास और संस्कृति', 'समीक्षा की समस्याएँ', 'नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र', 'आखिर रचना क्यों', 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा 'एक साहित्यिक की डायरी' मुक्तिबोध की प्रमुख रचनाएँ थी।

हाँलाकि मुक्तिबोध के जीवन काल में उनका किसी भी प्रकार का कोई भी स्वतन्त्र काम संग्रह नहीं छप पाया था। जिसके पीछे का कारण उनकी सोच या कम उम्र का जीवन भी हो सकता है। उनकी मृत्यु से पहले 'श्रीकान्त वर्मा' जी ने उनकी 'एक साहित्यिक की डायरी' जरूर प्रकाशित की थी। इस रचना का द्वितीय संस्करण उनकी मृत्यु के करीब दो महीने के पश्चात प्रकाशित हुआ था। मुक्तिबोध का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' है। यह रचना मुक्तिबोध की उन कविताओं का प्रतिनिधि काम है जो एक विस्तृत प्रारूप लिए होती है। जिस प्रकार एक कलाकार अपनी पेंटिंग में रंगों को अद्भुत रूप से मिलाकर एक जीवंत चित्र उकेर देता है। इसी प्रकार मुक्तिबोध की रचनाएँ एक विशाल प्रयोजना को पाठक के मन में रंगों की तरह मिल जाती है। और उसको सच्चे जीवन्तता का दर्शन करती है। यह रचनाएँ अधिकांश आधुनिक प्रयोगवादी स्वरूप की हैं जिसका काव्य शिल्प ठोस स्थिर होता है। ये रचनाएँ गहन व कसे हुए ट्रेजिक सम्बन्धों का जाल भी बुनती हैं।

मुक्तिबोध जब कविता या नयी कविता को परिभाषित करते हुए अपना कथन पाठकों के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से बनाते हैं। जो "वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस शक्ति की सम्बेदनात्मक प्रतिक्रिया ही कविता है।" या "नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। नयी कविता का स्वर एक नहीं विविध है" विभिन्न रचनाओं या संस्करण में कुछ अलग है। यदि हम इन

कथनों के माध्यम से उन्हें परखते तो हम पायेंगे कि वे पाठक को समझाना चाहते हैं कि विविधताओं से भरा जीवन है उसको प्रति आत्मचेतस अर्थात् जिसे अपने जीवन का और अपना ज्ञान हो वे उसकी सम्बेदनात्मक व सम्बेदनाओं से युक्त प्रतिक्रिया ही कविता है यह कथन मुक्तिबोध के विषय में पूर्ण जानकारी देती है।

गजानन माधव मुक्तिबोध अपने विचारों व मान्यताओं के मामले में जितने सधे हुए थे, जीवन के मामले में वे उतने ही बेतरतीब थे।

11 सितम्बर, 1964 को जब उनकी मृत्यु हुई, तब उस बेचैनी और तड़प को देखकर मोहम्मद अली 'ताज' ने कहा-

"उम्र-भर जीने का न अन्दाज आया  
जिन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा मैं बाज आया।"



## राष्ट्र की एकता ही है उसका आधार

● प्रियांशु टम्टा  
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

राष्ट्र की एकता ही है उसका आधार  
न थोपो उस पर सांप्रदायिक विचार।  
क्यूँ करते हो भेद ईश्वर के बन्दों में।  
हर मजहब सिखाता है प्रेम बाँटों सब में

क्यूँ करते हो वैचारिक लड़ाई  
बनता है यह भारत माँ के लिए दुखदाई।  
एक भूमि का टुकड़ा नहीं है मेरा देश  
मेरी माँ का है यह सुंदर परिवेश।

इसके उद्धार में ही है अलौकिक प्रकाश  
सबके साथ में ही है सबका विकास।  
एकता ही है अंत दुखों का  
एकता में ही है कल्याण अपनो का।



# हम्रि संस्कृति हम्रि पछाण

● गणेश काण्डपाल

एम.ए. इतिहास तृतीय सेमेस्टर

भले ही आधुनिक समय की रंगों हवा में हम कितने भी रंग जाए परन्तु सत्यता तो यह है कि हमारी अपनी संस्कृति ही हमारी पहचान है। जिस संस्कृति के आधार पर ही नहीं अपितु समूचे विश्व में अपनी पहचान कायम कर पा रहे हैं। वह संस्कृति ही है जिसके आधार पर एक मानव समूह दूसरे मानव समूह से पृथक दिखता है।

इसलिए क्योंकि प्रत्येक संस्कृति में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक तत्व (कला, धर्म, पर्व, उत्सव, संगीत तथा परिधान आदि) विद्यमान होते हैं। सांस्कृतिक तत्वों की अनुक्रमणिका की बात की जाए तो उत्तराखण्ड के लोकचित्र विशिष्ट पहचान बने हुए हैं। कुछ लोकचित्र मांगलिक अवसरों से जुड़े हुए हैं जिनमें ऐपण, छपा चित्र। ज्युंतिका मातृक चित्र आदि लोक चित्र मांगलिक अवसरों पर बनाने की परम्परा विद्यमान है। अपनी अद्वितीय लोक संगीत हेतु उत्तराखण्ड विश्व भर में पहचान बनाए हुए है। गढ़वाल, कुमाऊँ एवं जौनसार की संस्कृति, लोक संगीत को स्वयं में समाहित किए हुए उत्तराखण्ड अनेकता में एकता की मिशाल का उदाहरण है।

शैली, भाषा, वर्ण्य विषय एवं गायन समय आदि के आधार पर राज्य में लोकगीतों को कई प्रकार से बांटा जा सकता है मसलन प्रणय गीत के अन्तर्गत चौफला न्योली, छोपती, झोड़ा, छपेली, चांचरी, झुमैलो, मांगलगीत आदि। दाम्पत्य जीवन के प्रेम संबंधी गीत तथा पौराणिक लोकगाथाओं में जागर उत्तराखण्ड की संस्कृति का अहम भाग है जो परम्परिक वाद्य यंत्र जैसे ढोल, दमाऊँ, बिणाई, हुड़का, डौर, मोछंग, अल्गोजा आदि प्रमुख वाद्ययंत्रों की संगत में गाए जाते हैं। लोकगीतों के क्रम में बसंत ऋतु पर आधारित गढ़रत्न नरेन्द्र सिंह नेगी जी का एक गीत लोकप्रिय है।

“मेरा डांडी कांद्यो का मुलुक जैल्यु  
बसंत ऋतु मा जैई”

तथा कुमाऊँनी गीत “बेडू पाको बारोमासा” गीत अत्यंत लोकप्रिय है। लोकनृत्य की शैली के प्रकारों में उत्तराखण्ड के पारम्परिक नृत्य विधाए विद्यमान हैं जिसमें थड़िया, छोलिया, झौड़ा, सरौनृत्य, जौनसार क्षेत्र का हारूल नृत्य विशिष्ट है।

प्रमुख मेलों की बात की जाए तो नन्दादेवी मेला विश्व पटल पर प्रसिद्धि प्राप्त है इसी क्रम में, चैती मेला (काशीपुर), बिस्सू मेला (उत्तरकाशी), हिलजात्रा उत्सव (पिथौरागढ़) आदि प्रमुख मेले हैं। इसी प्रकार उत्तराखण्ड की एक यात्रा जो गढ़वाल एवं कुमाऊँ के सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। नन्दा राजजात यात्रा यह विश्व की अनोखी पदयात्रा है जो प्रत्येक 12 वर्षों में आयोजित की जाती है। इस प्रकार उत्तराखण्ड एक महान गौरवशाली संस्कृति का प्रणेता है, जिसकी वन्दना गिरीश तिवारी ‘गिर्दा’ ने अपनी कविता के माध्यम से की है।

“उत्तराखण्ड मेरी मातृ भूमि - मातृ भूमि यो मेरी पितृ  
भूमि ओ भूमि तेरी जै जै कारा म्यर हिमाला”



## मौन संघर्ष

● रोमा पाल

बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर

सपने जो थे, धुंधले हुए,  
मजबूत हाथ अब खाली हुए।  
आशाएँ भी हवा में झूलती,  
खाली जेबें दर्द भी बोलती।  
डिग्रियाँ धूल में सिमट गई,  
वादे बिखरकर बूंद बन गई।  
दरवाजे बंद, कोई राह नहीं,  
मन बेचैन, पर चाह नहीं।  
सूरज चमके, पर धुंधला लगे,  
हर सवेरा वही दुःख जगे।  
होंठ खामोश, पर सोच चले,  
मौन युद्ध जो कोई न कहे।  
पर फिर भी उठे एक हल्की सदा,  
जो संघर्ष भी तोड़ न सका।  
तूफान भी एक दिन थमेगा,  
सवेरा फिर नया सजेगा।



# सूचना अधिकार अधिनियम 2005

● अंशिका

बी.ए. प्रथम वर्ष

**संदर्भ:-** भारती संविधान की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को किसी भी विषय पर स्वतंत्र राय बनाए रखने और उसे अन्य लोगों के साथ साझा करने का अधिकार देते हैं, सूचना का अधिकार भारत जैसे बड़े लोकतंत्रों को एकजुट करने के लिए और उनके नागरिक अभिविन्यास विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## सूचना अधिकार अधिनियम, 2005

सूचना का अधिकार (सूचना का अधिकार - आरटीआई) अधिनियम, 2005 भारत सरकार का एक अधिनियम है, जिसमें नागरिकों को सूचना का अधिकार उपलब्ध कराने के लिए लागू किया गया है। भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए भारतीय संसद ने सूचना अधिकार अधिनियम, 2005 लागू किया।

## अधिनियम के मुख्य प्रावधान :-

- इस अधिनियम के तहत भारत का कोई भी नागरिक किसी भी सरकारी अधिकारी से प्राप्त कर सकता है यह सूचना 30 दिनों के भीतर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गयी है।
- इस अधिनियम में यह भी कहा गया है कि सभी सार्वजनिक प्राधिकारियों को अपने कम्प्यूटरों में सुरक्षा प्रदान की जाती है।
- इसके अंतर्गत सभी संवैधानिक संस्थाएं, संसद या राज्य विधानसभाओं के अधिनियमों द्वारा बिशप संस्थाएं और संस्थाएं शामिल हैं।

## आरटीआई की उपलब्धियाँ

**प्रसिद्ध 2 जी ब्रांड :-** यह उच्च पद पर नियुक्त अधिकारियों द्वारा स्थापित शाक्तियों के अनुयायियों का सबसे प्रमुख उदाहरण है। इस घोटाले के कारण भारत सरकार को 1,76,645 करोड़ रूपयों का नुकसान हुआ। उल्लेखनीय है यह बड़ा घोटाला तब सामने आया जब एक आरटीआई कार्यकर्ता ने एक आरटीआई कार्यकर्ता के खिलाफ अधिनियम का उपयोग किया।

**200 कामनवेलथ गेम :-** एक गैर अधिकारी संगठन द्वारा गठित एक आरटीआई से पता चला कि दिल्ली सरकार ने नेशनल गेम्स के लिए दलित समुदाय के कल्याण के लिए फण्ड से 144 करोड़ रूपये निकाले थे। आरटीआई के साथ

यह भी सामने आया कि निकाले गए सिक्कों का प्रयोग जिन भवनों में किया गया था, वे सभी गुणवत्ता वाले कागज वहीँ पर थे।

## क्यों महत्वपूर्ण है सूचना का अधिकार? :-

- यह अधिनियम सरकार के सभी कदमों को आम जनता के समझ जाँच के दायरे में लाता है।
- इससे सरकार और सरकारी विभाग और अधिक जवाबदेह बनते हैं एवं उनके कार्यों में पारदर्शिता आती है।
- यह सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा अनावश्यक गोपनीयता को हटाकर निर्णयन में सुधार करता है।

## आरटीआई के समक्ष चुनौतियाँ

**जागरूकता की कमी :-** एक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि उसमें भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों में से मात्र 15 प्रतिशत ही आरटीआई अधिनियम के बारे में जानते थे। सर्वेक्षण से यह बात भी सामने आई थी कि अधिकतर लोगों को इस बारे में या तो मीडिया से पता चला या फिर किसी अन्य व्यक्ति से जानकारी मिली इसका अर्थ यह हुआ कि आरटीआई संबंधी जागरूकता को लेकर उसकी नोडल एजेंसी का कार्य काफी सीमित है।

**प्रदान की जाने वाली सूचना की खराब गुणवत्ता :-** आरटीआई दाखिल करने वाले 75 प्रतिशत कार्यकर्ता प्राप्त सूचना से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होते। साथ ही कई याचिकाकर्ताओं ने अनावश्यक जानकारी प्राप्त होने की बात भी स्वीकार की है।

**समय पर सूचना प्राप्त न होना :-** अधिनियम में यह प्रावधान किया गया है कि किसी भी सामान्य परिस्थिति में सूचना को 30 दिनों के भीतर प्रदान करना आवश्यक है।

**निष्कर्ष :-** आरटीआई अधिनियम, 2005 को सामाजिक न्याय, पारदर्शिता और जवाब देहिता जैसे उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु लाया था, परन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आरटीआई तंत्र की विफलता के कारण यह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहा है। जिससे प्रशासन में भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के साथ लोगों की भागीदारी भी बढ़ेगी।



# आहार से उपचार

● डॉ. लोतिका अमित  
सहायक प्रो., गृहविज्ञान

आहार को अधिकांशतः भूख शान्त करने का स्रोत माना जाता है परन्तु भोजन का मुख्य कार्य शरीर को ऊर्जा प्रदान करना, नये तन्तुओं का निर्माण तथा पुराने ऊतकों की मरम्मत करना, शारीरिक क्रियाओं पर नियन्त्रण तथा शरीर के लिए आवश्यक यौगिकों का निर्माण करना है। इसके अतिरिक्त रोग की स्थिति अथवा रोग के पश्चात भी स्वास्थ्य लाभ हेतु भोजन की प्रमुख भूमिका रहती है, मनुष्य जब स्वस्थ होता है तो उसे भोजन उसकी दैनिक आवश्यकतानुसार, समस्त पोषक तत्वों से युक्त हो इस बात का ध्यान रखकर दिया जाता है इसके अतिरिक्त वह जिस आयु या अवस्था का हो, जिस प्रकार का शारीरिक श्रम करता है उस अनुसार भोजन/आहार दिया जाता है लेकिन रोग की अवस्था, स्वस्थ अवस्था से भिन्न होती है। रोगावस्था में पोषक तत्वों की मात्रा में कमी या अधिकता द्वारा या पोषक तत्वों को हटा या सम्मिलित करके आहार नियोजन किया जाता है ताकि व्यक्ति रोग युक्त हो सके अथवा रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जायें, अतः इस प्रकार का आहार जो रोगी को रोगावस्था के दौरान अथवा रोग के बाद स्वास्थ्य लाभ हेतु दिया जाता है उसे उपचारात्मक या चिकित्सीय आहार (Therapeutic diet) कहते हैं।

उपचारात्मक आहार एक सामान्य या नियमित आहार का रूपान्तरण या संशोधित रूप होता है जो रोगी की पोषण स्थिति, रोग की गंभीरता, रोगियों की आहार का उपभोग करने की स्थिति और रोगी की चायापचयी आवश्यकताओं के अनुसार नियोजित की जाती है।

रोगी को रोगावस्था में विशेष प्रकार के आहार की आवश्यकता होती है। जिसमें किसी पोषक तत्व को कम किया जाना आवश्यक है तो दूसरी ओर किसी पोषक तत्व की माँग में वृद्धि होने के कारण अधिक मात्रा में सम्मिलित करना आवश्यक होता है। यदि रोग की स्थिति में पोषण पर ध्यान दिया जाये तो रोग में होने वाली दुर्बलता एवं कमजोरी को रोका जा सकता है। अतः रोगी को उचित एवं संतुलित आहार देना आवश्यक है। यदि रोग की अवस्था में उचित पोषण नहीं मिलता तो रोग ठीक होने में अधिक समय लगता है एवं अन्य बीमारियाँ भी हो सकती हैं। अतः भोजन, उपचारात्मक आहार

का कार्य करता है, एवं साधारण भोजन को रोग के अनुसार सुधार कर व्यक्ति शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। इसे ही उपचारात्मक आहार या भोजन द्वारा उपचार कहते हैं। आहार द्वारा रोग निवारण करना ही वास्तव में आहार-उपचार (Diet Therapy) है। अतः रोगी को उपयुक्त पोषण प्रदान करने, उसके रोग को शीघ्र दूर करने एवं रोग की तीव्रता में कमी लाने में आहार उपचार महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है।

विभिन्न रोगों में रोगी की अलग-अलग स्थितियाँ होती हैं। अतः रोग के अनुसार ही सामान्य आहार में कुछ न कुछ परिवर्तन लाना अनिवार्य हो जाता है। ये अनिवार्य परिवर्तन ही उपचारात्मक आहार का मूल-मन्त्र है। निम्न संशोधनों द्वारा सामान्य आहार को उपचारात्मक आहार में परिवर्तित किया जा सकता है-

i) **सादा आहार (Bland Diet)** ऐसा आहार उस रोगीय अवस्था में दिया जाता है जब शरीर में आमाशयिक स्रावों (Gastric juices) को कम करने की आवश्यकता होती है। ग्रेस्ट्रिक स्रावों को स्रावित करने वाले भोज्य पदार्थ इसमें वर्जित रखे जाते हैं जैसे- मिर्च, मसाले आदि। इस प्रकार का आहार अल्सर, पेट से सम्बन्धित बीमारियों, डायरिया और कोलाइटिस की अवस्था में दिया जाता है। इस प्रकार के आहार को रोगी को दिन में कई बार देना पड़ता है जिससे पेट में कुछ न कुछ हमेशा रहे और आमाशय की झिल्ली, आमाशयिक रसों के प्रभाव से बची रहे।

इस प्रकार के आहार में उबली-नरम सब्जियाँ, नरम अनाज, चावल, नर्म व ताजे पके फल, दूध व दूध से बनी चीजें जैसे पनीर, छेना, दही, कस्टर्ड, खीर इत्यादि शामिल है परन्तु मिर्च-मासालों से युक्त भोज्य पदार्थ, छोंके से तैयार चीजें, अचार, चटनी, मुरब्बे, चाय, ठण्डे पेय पदार्थ पूर्णतः वर्जित रखे जाते हैं।

ii) **अधिक कैलोरीयुक्त आहार (High Calorie Diet)**:- इस प्रकार का आहार कई बीमारियों जैसे - ज्वर (Fever), थायराइड ग्रन्थियों की सक्रियता (Hyperthyroidism), तीव्र बीमारी से मुक्त होने के बाद, कुपोषण की स्थिति में स्वास्थ्य लाभ व वजन बढ़ाने के लिए लिया जाता है। आहार से अधिकाधिक ऊर्जा प्राप्त हो इसके लिए आहार में उच्च कार्बोहाईड्रेट व उच्च

वसायुक्त खाद्य पदार्थों को शामिल किया जाता है। इसके लिए सामान्य भोजन के अतिरिक्त ग्लूकोज, शक्कर, गुड़, मिठाइयाँ सभी प्रकार के अनाज, आलू, मक्खन, मलाई, पनीर आदि अधिक मात्रा में सम्मिलित किए जाते हैं।

**iii) कम कैलोरीयुक्त आहार (Low Calorie Diet):-** अधिक वजन वालों के लिए कम कैलोरीयुक्त आहार दिया जाता है मोटापे के अतिरिक्त डायबिटीज, गुर्दे के रोग, हृदय से सम्बन्धित बीमारियों में तथा उच्च रक्तचाप में, पित्ताशय की बीमारी एवं सर्जरी से पूर्व की अवस्था में इस प्रकार का आहार दिया जाता है। कम कैलोरीयुक्त आहार में फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज, दालें और प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ शामिल हैं। फलों में मुख्यतः सेब, केला, संतरा, तरबूज, स्ट्राबेरी, अंगूर आदि सब्जियों में खीरा, टमाटर, गाजर, फूलगोभी, ब्रोकली, पालक, बैंगन, भिंडी, प्याज आदि।

इसके अतिरिक्त कम एवं अधिक प्रोटीन युक्त आहार, कम अथवा अधिक कार्बोयुक्त आहार, कम अथवा अधिक रेशेयुक्त आहार, कम अथवा अधिक वसायुक्त आहार, एवं कम सोडियमयुक्त आहार भी चिकित्सकीय आहार में सम्मिलित किए जाते हैं एवं रोग एवं रोगी की स्थिति के अनुसार भोजन को परिवर्तित किया जाता है।

**iv) विटामिन्स की मात्रा में परिवर्तन :-** विटामिन की कमी से होने वाले रोगों जैसे रतौंधी, स्कर्वी, अस्थिविकृति, बैरी-बैरी, पैलाग्रा आदि रोगों में अधिक विटामिन की आवश्यकता होती है जिनकी पूर्ति हेतु भोज्य पदार्थों की मात्रा जिनमें ये विटामिन भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं उनका सेवन करने से इन विकारों को दूर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सिन्थेटिक विटामिन के द्वारा भी इन रोगों से बचा जा सकता है।

**v) खनिज लवणों की मात्रा में परिवर्तन:-** खनिज लवणों की कमी होने की दशा में खनिज लवणों की मात्रा में परिवर्तन/संशोधन आवश्यक हो जाता है जैसे पोलियो, रिकेट्स, आस्टियोमलेशिया / आस्टियोपोरोसिस आदि रोगों में अधिक कैल्शियम युक्त आहार दिया जाता है। हृदय रोगों, हाइपरटेंशन, कार्डिक फेल्योर आदि रोगों में आहार में सोडियम की मात्रा कम देना आवश्यक हो जाता है सोडियम की मात्रा कम करने के लिए साधारण नमक बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए तथा नमकीन भोज्य पदार्थ, मैदा, बेकिंग पाउडर, सोडा आदि से बने

व्यंजन, आचार आदि पदार्थ आहार में सम्मिलित नहीं किए जाने चाहिए।

**vi) नरम आहार (Soft diet):-** आमाशय से सम्बन्धित रोगों, पाचन सम्बन्धी रोगों में, तीव्र संक्रामक रोगों में और शल्य चिकित्सा उपरान्त कोमल अथवा नरम आहार दिया जाता है। इस प्रकार के आहार में रेशेयुक्त भोज्य पदार्थों की मात्रा कम की जाती है और भोजन को अच्छी प्रकार से पकाकर मुलायम किया जाता है।

इस प्रकार के आहार के अन्तर्गत दलिया, खिचड़ी, ब्रैड, मुलायम रोटी, पकी हुई दाल एवं अगर माँस की आवश्यकता है तो माँस को एकदम महीन टुकड़ों अथवा पीसे हुए रूप में दिया जाना चाहिए। आलू को भी उबाल कर एवं मसल कर देना चाहिए। इसके अतिरिक्त केक, बिस्कुट, खीर, कस्टर्ड, पुडिंग आदि भी दिए जा सकते हैं

**vii) तरल आहार (Liquid diet) :-** पूर्ण तरल आहार प्रायः उन रोगियों को दिया जाता है जो चबाने एवं निगलने में असमर्थ होते हैं। तरल आहार के अन्तर्गत दूध, चाय, फलों का रस, कॉफी, सब्जी का छना पानी, अनाज का पानी आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इसमें वसा को बिल्कुल सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस आहार को देने का उद्देश्य कैलोरी प्रदान करना है और शरीर में पानी की कमी को पूरा करना है।

किसी-किसी रोग की अवस्था में जब रोगी गाढ़ तरल (अर्द्ध तरल आहार) भी लेने की स्थिति में नहीं होता है जैसे- ऑपरेशन के पश्चात् अथवा जब रोगी की हालत गम्भीर हो उल्टी, पेचिश, भूख न लगना आदि स्थिति में जब रोगी ठोस आहार लेने में असमर्थ हो तो पहले 1-2 दिन पेय पदार्थ ही दिए जाते हैं। इस तरल आहार द्वारा 1300-1500 कैलोरी, 45 ग्राम प्रोटीन, 65 ग्राम वसा तथा 150 ग्राम कार्बोज प्राप्त होता है। पूर्ण तरल आहार के अन्तर्गत दूध, चाय, फलों का रस, कॉफी, कार्बोनेटेड पेय पदार्थ, ग्रीन टी, लेमन टी, सूप आदि सम्मिलित किए जाते हैं। इसमें वसा को बिल्कुल सम्मिलित नहीं किया जाता है। इस प्रकार के आहार का उद्देश्य कैलोरी प्रदान करना है और शरीर में पानी की कमी को पूरा करना है।

इस प्रकार के विभिन्न आहारों को विभिन्न रोग अवस्था में प्रदान कर रोग के लक्षणों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। उपचारात्मक आहार द्वारा रोग की स्थिति में कॉफी हद तक सुधार किया जा सकता है।



# रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया (केन्द्रीय बैंक)

● डॉ. ममता भदोला जोशी  
असि. प्रोफेसर (वाणिज्य)

रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना 07 अप्रैल 1935 को प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक संकटों को निपटाने के लिए की गई थी। बैंक की स्थापना 1926 में भारतीय मुद्रा और वित्त पर गठित रॉयल कमीशन की सिफारिशों के आधार पर की गई थी जिसे हिल्टन यंग कमीशन के नाम से भी जाना जाता है।

प्रारम्भ में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ( भारत का केन्द्रीय बैंक ) का केन्द्रीय कार्यालय कोलकाता में स्थापित किया गया था जिसे बाद में ( 1937 में ) मुम्बई स्थानान्तरित कर दिया गया था।

## भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) का राष्ट्रीयकरण:-

वर्ष 1935 में स्थापित भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) प्रारम्भ में एक निजी स्वामित्व वाली इकाई थी, अर्थात् RBI की शेयर पूंजी निजी व्यक्तियों और संस्थानों के स्वामित्व वाले शेयरों में विभाजित थी।

यद्यपि बाद में, भारत सरकार ने 1948 का भारतीय रिजर्व बैंक ( सार्वजनिक स्वामित्व में स्थानांतरण ) अधिनियम पारित किया। इसके प्रावधानों के अनुसार, भारतीय रिजर्व बैंक का स्वामित्व निजी संस्थाओं से सरकार को हस्तांतरित कर दिया गया। इसे 'RBI का राष्ट्रीयकरण' कहा जाता है, जिसने इसे निजी स्वामित्व वाली संस्था से पूर्णतः सरकारी स्वामित्व वाली संस्था में परिवर्तित कर दिया।

वर्ष 1949 में राष्ट्रीयकरण के बाद यह भारत में केन्द्रीय बैंक के रूप में उभरा और अब तकनीकी रूप से यह एक बैंक नहीं रह गया है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया जो भारत का केन्द्रीय बैंक है, बैंकिंग प्रणाली और मौलिक नीति को नियन्त्रित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में मौद्रिक स्थिरता बनाए रखना है। इसके अतिरिक्त यह बैंक नोट निर्गमन करने के साथ-साथ देश की ऋण प्रणाली को नियन्त्रित करता है।

भारतीय रिजर्व बैंक की संरचना एक केन्द्रीय बैंक के रूप में भारत में वित्तीय प्रणाली के संचालन और अधिनियमन के लिए डिजाइन की गई है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का प्रबन्ध

न एक केन्द्रीय निदेशक मंडल द्वारा किया जाता है। जिसमें एक गवर्नर, चार उप गवर्नर, सरकार के दो प्रतिनिधि, दस सरकारी नामित निदेशक और चार निदेशक शामिल होते हैं जो क्षेत्रीय बोर्डों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक का केन्द्रीय कार्यालय (मुम्बई), RBI का मुख्य कार्यालय और मुख्यालय है। यह वह कार्यालय है जहाँ RBI गवर्नर बैठते हैं और पूरे RBI संगठन को नियन्त्रित किया जाता है। RBI के लगभग 22 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो क्षेत्रीय स्तर पर RBI के कार्य को करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कार्यालय ज्यादातर राज्यों की राजधानियों में स्थित है।

## RBI के बारे में मुख्य तथ्य :-

- भारतीय रिजर्व बैंक के प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे।
- भारतीय रिजर्व बैंक के प्रथम भारतीय गवर्नर सी.डी. देशमुख (1943-49) थे।
- डॉ. मनमोहन सिंह भारत के अब तक के एकमात्र ऐसे प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में भी कार्य किया है।
- भारतीय रिजर्व बैंक का प्रतीक चिन्ह एक बाघ और एक खजूर का पेड़ है।
- भारतीय रिजर्व बैंक की 4 पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनियां हैं-
  - (1) जमाएं बीमा और ऋण गारंटी निगम (DICGC)
  - (2) भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड (BRBNMPL)
  - (3) रिजर्व बैंक सूचना प्रौद्योगिकी और सम्बद्ध सेवाएं (IFTAS)
- भारतीय रिजर्व बैंक, भारत का केन्द्रीय बैंक है, जोकि भारतीय वित्तीय प्रणाली में शीर्ष निकाय है।
- यह वित्त मंत्रालय के अधीन है।

- यह एक नियामक निकाय के रूप में कार्य करता है। जो भारतीय बैंकिंग प्रणाली के नियमन के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को नियन्त्रित करने, जारी करने और बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है।

### भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के उद्देश्य:-

इसके कुछ प्रमुख उद्देश्यों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है-

- बैंक नोटों को जारी करने को विनियमित करना।
- मौद्रिक स्थिरता नियन्त्रित करने के लिए मुद्रा मंडल बनाए रखना।
- देश की ऋण और मुद्रा प्रणाली को राष्ट्र के लाभ के लिए संचालित करना।
- विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मूल्य स्थिरता बनाए रखना।

**भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के कार्य:-** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के प्रमुख कार्यों को निम्न 2 शीर्षों के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

- (1) मौद्रिक सम्बन्धी कार्य (Monetary Function)
- (2) सामान्य कार्य

#### (1) मौद्रिक सम्बन्धी कार्य (Monetary Function):-

इसके अन्तर्गत वे कार्य शामिल होते हैं जो अर्थव्यवस्था में मुद्रा और मुद्रा आपूर्ति से सम्बन्धित होते हैं इस श्रेणी के अन्तर्गत प्रमुख कार्यों में शामिल हैं-

- बैंक नोट जारी करना
- सरकार का बैंक
- बैंकों का बैंक
- अंतिम उपाय का ऋणदाता
- विदेशी मुद्रा भंडार के संरक्षण और प्रबन्धक
- ऋण या मुद्रा आपूर्ति का नियन्त्रक

**सामान्य कार्य:-** भारतीय रिजर्व बैंक के सामान्य कार्यों में बैंकिंग प्रणाली के समग्र विनियमन और संबर्धन से सम्बन्धित

कार्य शामिल होते हैं ताकि देश में बैंकिंग प्रणाली के स्वास्थ्य और विकास बनाए रखा जा सके। इस श्रेणी में शामिल प्रमुख कार्यों में निम्नलिखित हैं-

- बैंकों का नियामक
- प्रचारात्मक कार्य

### भारत में मुद्रा नोटों की छपाई और सिक्कों की ढलाई:-

**करेंसी नोट :** भारत में चार प्रेसों में मुद्रा नोट छपे जाते हैं- नासिक ( महाराष्ट्र ), देवास ( मध्य प्रदेश ), मैसूर ( कर्नाटक ) और सालबोनी ( पं. बंगाल )

**नोट:-** इसमें से नासिक और देवास प्रेस भारत सरकार के स्वामित्व में है, जबकि मैसूर और सालबोनी प्रेस RBI के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण लिमिटेड (BRBNML) के स्वामित्व में है।

**सिक्के:-** सिक्के की ढलाई चार टकसालों में की जाती है जो मुम्बई, हैदराबाद, कोलकाता और नोएडा में स्थित हैं।

ये सभी चार टकसाल भारत सरकार के स्वामित्व में हैं।

भारतीय सिक्का अधिनियम 1906 के अनुसार ₹100 तक मूल्य के सिक्के जारी किए जा सकते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 के अनुसार ₹ 10,000 तक के मूल्य के मुद्रा नोट जारी किए जा सकते हैं

**नोट:-** ₹ 1 का नोट एक मात्र ऐसा मुद्राकोष है जिस पर भारत सरकार के वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं ना कि RBI गवर्नर के अन्य सभी नोटों पर RBI गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

**निष्कर्ष:-** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) भारत की आर्थिक स्थिति में एक अनिवार्य भूमिका निभाता है। मौद्रिक स्थिरता, वित्तीय विनियमन और समवेशी विकास के लिए इसकी प्रतिबद्धता राष्ट्र की वित्तीय प्रणाली के लिए एक मजबूत आधार सुनिश्चित करती है। जैसे-जैसे भारत एक उभरते आर्थिक परिदृश्य की ओर बढ़ रहा है, RBI की निरन्तर सतर्कता और अनुकूलन शीलता देश को समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण होगी।



सत्य एक जलते हुए दीपक की भांति है, जो अंधकार में छिपाया नहीं जा सकता है, क्योंकि वह अपना प्रकाश स्वयं लेकर चलता है।  
-एडवर्ड विल्सन

# एक क्लिक पर पढ़ें पंसदीदा किताबें

● डॉ. दीपक खाती

असि. प्रोफेसर वाणिज्य

भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के केन्द्रीय बजट में पढ़ने लिखने के शौकीन लोगों के लिए डिजिटल लाइब्रेरी बनाने की घोषणा की थी, जिससे इच्छुक व्यक्ति एक ही क्लिक पर ऑनलाइन सामग्री का एक्सेस करके अपनी पढ़ाई लिखाई कर ले। डिजिटल लाइब्रेरी में किताबें डिजिटल फॉर्मेट में उपलब्ध होती हैं। दुनिया के किसी भी कोने से इनका उपयोग किया जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी में टेक्स्ट, इमेज, आडियो, वीडियो, डिजिटल दस्तावेज के रूप में किताबें उपलब्ध रहती हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने के लिए इंटरनेट की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की लाइब्रेरी में किताबों या डाक्यूमेन्ट्स को इलेक्ट्रॉनिक फॉर्मेट के माध्यम से स्टोर किया जाता है।

डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने के लिए इंटरनेट की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की लाइब्रेरी में किताबों या डाक्यूमेन्ट्स को इलेक्ट्रॉनिक फॉर्मेट के माध्यम से स्टोर किया जाता है।

डिजिटल लाइब्रेरी शब्द का प्रयोग पहली बार 'नासा' द्वारा सन् 1994 में किया गया था। डिजिटल लाइब्रेरी के संस्थापक के रूप में अमेरिकी लेखक माइकल स्टर्न हार्ट का नाम जाना जाता है। माइकल स्टर्न हार्ट ने इंटरनेट के माध्यम से किताबों को प्राप्त (एक्सेस) करने की व्यवस्था की। यूजर कम्प्यूटर या टेबलेट या मोबाइल का उपयोग करके आर्टिकल, किताबें, इमेज, आडियो-वीडियो फाइल इत्यादि का एक्सेस प्राप्त कर सकता है।

भारत में डिजिटल लाइब्रेरी के रूप में फिलहाल आइ0आइ0टी0 खड़गपुर द्वारा स्थापित 'नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को बेहरतीन माना जाता है। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण आइ0आइ0टी0 खड़गपुर ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के साथ मिलकर किया है। इस लाइब्रेरी में प्राइमरी से लेकर स्नातकोत्तर तक की विभिन्न किताबें लगभग 10 अलग-अलग भाषाओं में उपलब्ध हैं। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में तकनीकी, विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि विषयों के साथ-साथ और भी विभिन्न भाषाओं की

किताबें उपलब्ध हैं। इन किताबों को कंटेंट, स्रोत, विषय या लर्निंग रिसोर्स के आधार पर ढूंढा जा सकता है। उपर्युक्त लाइब्रेरी में कंटेंट पी.पी.टी., ए.टी.एम.एल., पी.डी.एफ., डाक, ई.पी.एस. इत्यादि फॉर्मेट में उपलब्ध होते हैं। डिजिटल लाइब्रेरी में कंटेंट से जुड़े वीडियो एवं अन्य सामग्री एंड्रायड और आई.ओ.एस. डिवाइस के लिए भी उपलब्ध है।

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में उपलब्ध पुस्तकों का निशुल्क उपयोग किया जा सकता है। स्कूली विद्यार्थियों के लिए 'स्कूल' का बटन विशेष रूप से उपलब्ध कराया गया है, जिस पर क्लिक करके विद्यार्थी अपनी जरूरत के हिसाब से सामग्री को एक्सेस कर सकता है। कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थी भी अपनी आवश्यकता के हिसाब से एजुकेशनल कंटेंट को सर्च कर सकते हैं। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में उपर्युक्त सामग्री के साथ-साथ विभिन्न संस्थानों के शोधकर्ताओं की लाखों थीसिस, एवं आडियो व वीडियो लेक्चर भी उपलब्ध हैं।

**नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी (एन.डी.एल.आइ.) को कैसे एक्सेस करें-**

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को एक्सेस करने के लिए सर्वप्रथम ब्राउजर में नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी (एन.डी.एल.आइ.) की वेबसाइट <https://ndl.iitkgp.ac.in/> को लॉगइन करना पड़ता है। हम बिना लॉगइन किए भी नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी को एक्सेस कर सकते हैं। इसके लिए हमें वेबसाइट के टॉप पर हैमबर्गर आइकन के जरिये कंटेंट को ब्राउज करना पड़ेगा। सर्च बार में सीधे किताब का नाम या स्टडी हेतु वांछित टापिक या फिर लेखक का नाम या किसी व्यक्ति विशेष का नाम लिखकर भी संबंधित जानकारी को ढूंढा जा सकता है।

**डिजिटल लाइब्रेरी की अन्य वेबसाइट:-**

प्रोजेक्ट गुटनबर्ग (Gutenberg.org) पर दुनियाभर के लिटरेचर का बड़ा आर्काइव है। यहाँ हजारों की संख्या में निशुल्क किताबें हैं, जिसे ईपब किंडल, प्लेन, टेक्स्ट और एच.टी.एम.एल. फॉर्मेट में एक्सेस कर सकते हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त यूनिवर्सल डिजिटल लाइब्रेरी, डिक्शनरी ऑफ ओपन एक्सेस बुक, ब्रिटिश काउन्सिल ऑनलाइन लाइब्रेरी, दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी सिस्टम तथा

ओ.पी.ए.सी. इत्यादि माध्यम से भी डिजिटल लाइब्रेरी की सुविधा प्राप्त की जा सकती है।

यहाँ आडियो, बुक्स भी उपलब्ध होते हैं। जो स्टूडेंट रिसर्च या पीएच.डी. कर रहे हैं, उनके लिए शोधगंगा (shodhganga.inflibnet.ac.in) भी उपयोगी प्लेटफार्म है। यहाँ पर 431212 थीसिस इलेक्ट्रॉनिक फार्मेट में उपलब्ध हैं। देश के 678 विश्वविद्यालय इससे जुड़े हैं। शोधसिंधु (https://ess.inflibnet.ac.in) भी बेहतर प्लेटफार्म है। यहाँ से 60 लाख ई-बुक्स, ई-जर्नल्स को एक्सेस किया जा सकता है। ई-ज्ञानकोश (https://egyankosh.ac.in) इग्नू की डिजिटल लाइब्रेरी है।

इस प्रकार प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति जो पढ़ने लिखने का शौकीन है, उपर्युक्त वर्णित प्लेटफार्मों में से किसी भी एक प्लेटफार्म का उपयोग करके आवश्यक पढ़ने योग्य वांछित सामग्री को एक्सेस कर अपनी शंकाओं का समाधान कर सकता है। अतः प्रत्येक विद्यार्थी जो आधुनिक संचार साधनों जैसे- मोबाइल, टेबलेट, कम्प्यूटर, लैपटॉप इत्यादि का प्रयोग करता है, तो पठनीय सामग्री भौतिक रूप से उपलब्ध न होने पर भी इलेक्ट्रॉनिक मोड में प्राप्त कर उसका उपयोग कर सकता है और अपने द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है।



## हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग : भक्तिकाल

● डॉ. नीमा राणा

असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

भक्तिकाल की विशेषताओं के कारण इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। यह काल हिन्दी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण काल रहा है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से परिपूर्ण होते हुए भी इसमें भक्ति भावना की ऐसी धारा प्रवाहित हुई कि विद्वानों ने एकमत से काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभाजन में भक्तिकाल का द्वितीय स्थान है। भक्तिकाल का आरम्भ अधिकांश विद्वान सन् 1350 से मानते हैं वहीं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी इसका आरम्भ 1375 से स्वीकारते हैं और इस काल को भक्ति का स्वर्ण काल मानते हैं। क्योंकि इस काल में संत कबीर, जायसी, तुलसी, और सूरदास, इन समकालीन कवियों ने अपनी रचनाओं का निर्माण कर भक्तिकाल की इन रचनाओं को भक्ति के चरम तक पहुँचाया। उपासना की दृष्टि से इस काल के साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है। सगुण और निर्गुण भक्ति, निर्गुण के दो भेद किये गये - ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी धारा वहीं दूसरी ओर सगुण भक्ति धारा के भी दो भाग किये गये। रामाश्रयी शाखा और कृष्णाश्रयी शाखा।

### भक्तिकाल की परिस्थितियाँ

1- राजनीतिक परिस्थितियाँ - हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल तक आते आते भारत के उत्तरी भाग में मुस्लिमों का साम्राज्य हो चुका था। अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए समय-समय

में मुस्लिमों और अफगानों में परस्पर संघर्ष जारी था। इस काल में मुस्लिमों ने हिन्दुओं से सम्बन्ध स्थापित कर अपना शासन दृढ़ करना शुरू किया। दिल्ली में तुकलक वंश, लोधी वंश, बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ का शासन रहा। मुगल काल राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रायः आशान्त और संघर्षमय रहा था। इस समय हिन्दुओं और मुस्लिमों में द्वेष बढ़ गया था। जात-पात, छुआ-छूत, ऊँच-नीच की भावना अत्यधिक बढ़ गयी थी। कबीर, जायसी, तुलसी और सूरदास आदि इन कवियों का न तो सीकरी से काम था और न प्राकृत जन-गुण-गान से सरोकार था। ये भक्ति मार्ग की धारा में निरन्तर बढ़ते जा रहे थे।

**सामाजिक परिस्थितियाँ** - 15वीं शताब्दी तक आते-आते हिन्दु और मुस्लिमों के बीच सामंजस्य की भावना जागृत हो गयी थी। जीवन के कई क्षेत्र में आदान-प्रदान कर रहे थे। कबीर ने इस काल में जाति-पाति के भेद व अन्धविश्वासों का घोर विरोध किया था। खान-पान पर कोई बन्धन नहीं था। 14वीं शताब्दी तक यह बन्धन कड़े नहीं थे। 14वीं शताब्दी के बाद समय के साथ-साथ ये बन्धन अधिक कड़े होते गए।

**धार्मिक परिस्थितियाँ** - भक्तिकाल की धार्मिक परिस्थिति बड़ी सोचनीय थी। समाज में विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों का प्रचलन था इन सभी धर्मों में आपसी समन्वय की भावना नहीं

थी। इसमें वैष्णव धर्म अपनी परम्परा की जड़ें मजबूत कर रहा था। तो बौद्ध का विकृत रूप उभरा था। सूफी धर्म भी अपनी जड़ें मजबूत बना रहा था। शंकराचार्य और कुमारित भट्ट ने वैदिक हिन्दू धर्म का पुनुरुद्धार किया। सुसंस्कृत जनता शंकराचार्य की ओर आकृष्ट हुई। ब्रजयान में चौरासी सिद्ध हुए। इस समय नाथ पंथ भी मजबूत स्थिति में था। नाथ पंथ में गोरखनाथ प्रमुख थे। इन्होंने नाथ सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार किया और उसे आगे बढ़ाया।

**साहित्यिक परिस्थितियां** - भक्तिकाल के कवियों ने अपने विचारों को गद्य में व्यक्त न करके उन्हें छंद-बद्ध रूप में प्रस्तुत किया। इस सम्बन्ध में संस्कृत में टीकाओं, व्याख्याओं की सृष्टि होती गयी। किसी भी नवीन मौलिक उद्भावनाओं से काम नहीं किया गया। सिद्धान्त प्रतिपादन तथा भक्ति प्रचार की भावना उस समय के समस्त साहित्य में काम कर रही थी। कबीर दास, जायसी, तुलसी दास जैसे भावुक कवि भी इस तरह की मनोवृत्ति से अछूते नहीं रहे। इस युग में हिन्दुओं का उच्च वर्ग संस्कृत को अपने आचार विचार और व्यवहार की भाषा में उपयोग कर रहा था। इधर मुस्लिम भी मुगल सत्ता के कारण अपने राज-काज में फारसी भाषा को लागू कर रहे थे। परिणाम स्वरूप इतिहास के अनेक ग्रंथों का निर्माण फारसी भाषा में किया गया। इस काल में गद्य का प्रयोग राजस्थानी भाषा और कुछ ब्रज भाषा में हुआ।

### भक्तिकाल का वर्गीकरण -

भक्तिकाल का वर्गीकरण मुख्य रूप से दो भागों में किया गया है।

- 1- निर्गुण काव्य धारा
- 2- सगुण काव्य धारा

### 1- निर्गुण काव्य धारा का वर्गीकरण

- (1) संत काव्य (ज्ञानाश्रयी शाखा)
- (2) सूफी काव्य (प्रेमाश्रयी शाखा)

### 2- सगुण काव्य धारा-

- (1) राम काव्य धारा - तुलसी दास
- (2) कृष्ण काव्य धारा - सूरदास

**भक्तिकाल की उपलब्धियां** - भक्तिकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि काव्य के द्वारा सामाजिक सुधार करना था। इस काल में समाज में कई तरह के अन्ध विश्वास एवं बाह्य आडम्बर विद्यमान थे। मुस्लिमों के आगमन के कारण भारतीय समाज

में एक नई संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। समाज की राजनीतिक शक्ति, मुस्लिमों के हाथ में थी। जिससे हिन्दुओं की स्थिति बिगड़ती जा रही थी। धार्मिक कट्टरता, रुढ़िवादिता, जातिवाद इत्यादि समस्याएं समाज को दीमक की तरह अन्दर ही अन्दर खाए जा रही थी। ऐसे समय में इस काल के कवियों ने समाज को अपनी कविताओं के माध्यम से कुरीतियों और बाह्य आडम्बरों पर कुठाराघात कर समाज के लोगों को सही रास्ते पर लाने और सामाजिक भेद-भावों को मिटाने का प्रयास किया।

**भक्तिकाल की विशेषताएं** - भक्तिकाल के कवियों ने अपनी भक्ति काव्य के माध्यम से लोगों को सदाचार का पाठ पढ़ाया। तुलसी दास ने इसी काल में रामचरित मानस जैसे महाकाव्य की रचना की। भक्तिकाल के भक्त कवियों की भक्ति को सामाजिक दृष्टि से देखें तो इनके काव्य में समाज में व्याप्त बुराईयों से लोगों को इनसे मुक्त करने की और श्रेष्ठ गुणों में विकसित करने की पुकार सुनाई देती है।

**भक्तिकाल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है** - भक्तिकाल को स्वर्ण युग सिद्ध करने के लिए इसकी उत्कृष्टता की तुलना हिन्दी साहित्य के अन्य कालों से भी करनी होगी।

(1) **आदिकाल और भक्तिकाल** - आदिकाल का काव्य युद्ध प्रधानता लिए हुए था। जिसमें वीर रस और श्रृंगार रस की अतिशयोक्ति हुई है। जितना भक्तिकाल के कवि अपने काव्य में समाज को प्रभावित कर सके उतना आदिकाल का काव्य नहीं। आदिकाल का काव्य आम जन का काव्य नहीं बन पाया।

(2) **रीतिकाल और भक्तिकाल** - रीतिकाल के काव्य में कवियों ने श्रृंगार रस का अधिक प्रयोग किया है। और इस काल के कवि किसी न किसी राजा के राज दरबार की शोभा हुआ करते थे। इसलिए राजा के निकट होने के कारण उनकी अधिकतम कविताएं राजा की प्रशंसा करते हुए रची जाती थी। इनमें से अधिकतर कविताएं काव्य के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं थे। इस दृष्टिकोण से ये काव्य भक्तिकालीन काव्यों के समक्ष नहीं ठहर सकते हैं।

(3) **आधुनिक काल और भक्तिकाल** - आधुनिक काल में बेशक बहुत उच्चकोटि के कवि जैसे सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, मुक्तिबोध इत्यादि श्रेष्ठ कवि हुए हैं परन्तु इनमें से कितने कवियों के काव्यों से भारत का आम जन परिचित होगा?

कहना मुश्किल है। भक्ति काल समाप्त हुए लगभग आज साढ़े तीन सौ वर्षों से भी अधिक का समय बीत चुका है। लेकिन फिर भी रामचरित मानस जैसे महाकाव्य की चौपाईयाँ तथा कबीर, रहीम के दोहे तथा सूर के पद भारतीय जन मानस के जीवन का हिस्सा बने हुए हैं

भक्तिकालीन काव्य की प्रासंगिकता आधुनिक सन्दर्भ में कम नहीं हुई है। काव्य शिल्प और भाव सौन्दर्य की दृष्टि से आधुनिक काल का कोई भी ऐसा महाकाव्य, काव्य नहीं है जो रामचरित मानस के समक्ष ठहरता हो। भक्तिकाल का काव्य

भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टि से अपने आप में उच्च कोटी का साहित्य है। भक्तिकाल के काव्य के बिना हिन्दी साहित्य की समृद्धि की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती है इसलिए कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। उसमें समाज सुधार की पूर्ण क्षमता विद्यमान होती है। 'जो ताकत कलम में होती है वो तलवार में कहीं' के आधार पर साहित्य के पैमाने पर भक्तिकाल का काव्य साहित्य एकदम खरा उतरता है इसी आधार पर भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।



## उच्च शिक्षा और हिन्दी : ज्ञान, संस्कृति और संवेदनशीलता का सेतु

● सुरेश चंद्रा

सहा. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

उच्च शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के विचार, चरित्र और दृष्टिकोण को विकसित करने की सशक्त प्रक्रिया है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करती है, और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ मूल्यबोध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। इस संदर्भ में हिन्दी भाषा का महत्व अत्यंत व्यापक और सार्थक है।

हिन्दी हमारी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय अस्मिता की संवाहक भाषा है। यह केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। उच्च शिक्षा में हिन्दी का अध्ययन विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ता है तथा उन्हें भारतीय चिंतन परंपरा से परिचित कराता है। हिन्दी साहित्य में जीवन के विविध आयामों-मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक यथार्थ, नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना का गहन चित्रण मिलता है। इससे विद्यार्थियों का बौद्धिक ही नहीं, बल्कि भावनात्मक विकास भी होता है।

आज का युग तकनीक और वैश्वीकरण का है। ऐसे समय में हिन्दी का महत्व और भी बढ़ जाता है। आवश्यकता है कि हम हिन्दी को केवल एक विषय के रूप में न देखें, बल्कि इसे ज्ञान-विज्ञान, शोध और नवाचार के माध्यम के रूप में स्वीकार करें। जब विद्यार्थी अपनी भाषा में सोचते

और अभिव्यक्त होते हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने विचारों को अधिक स्पष्टता और प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत कर पाते हैं।

एक प्राध्यापक के रूप में हमारा दायित्व केवल पाठ्यक्रम को पूर्ण करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में जिज्ञासा, सृजनशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। हमें उन्हें यह प्रेरणा देनी चाहिए कि वे हिन्दी भाषा के माध्यम से ज्ञानार्जन करें, शोध करें और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और जागरूक नागरिक का निर्माण है।

महाविद्यालय ज्ञान का वह केन्द्र है जहाँ से विद्यार्थियों के भविष्य को दिशा मिलती है। यदि उच्च शिक्षा में हिन्दी को सशक्त स्थान प्रदान किया जाए, तो यह शिक्षा को अधिक प्रभावी, सहज और जनोन्मुखी बना सकती है। हमें मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि हिन्दी के माध्यम से शिक्षा का स्तर ऊँचा उठे और हमारे विद्यार्थी राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

अंततः हिन्दी केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारे विचारों की आत्मा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी का सशक्त प्रयोग ही शिक्षा को व्यापक, जीवनोपयोगी और मूल्यपरक बना सकता है।



# शिक्षा तथा विद्या दोनों ही हों अध्यापन का उद्देश्य

● डॉ. जया भट्ट

असि. प्रो. इतिहास विभाग

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है- मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली प्रक्रिया का नाम ही शिक्षा है। इस परिभाषा को मापदण्ड मानकर वर्तमान शिक्षा पद्धति को इसकी कसौटी पर कसा जाए तो स्वाभाविक ही प्रश्न उठेगा कि यह वास्तव में 'शिक्षा' है? और यदि नहीं तो क्यों?

प्रश्न का संक्षिप्त प्रतिउत्तर आवश्यक है, वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली अंग्रेजों से विरासत में प्राप्त है। अंग्रेज चले गये परन्तु उनके द्वारा निर्मित शिक्षा-पद्धति ज्यों-कि-त्यों है, अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ईस्ट-इण्डिया कंपनी व ब्रिटिश शासन के लिए क्लर्क तैयार करना था यही कारण है कि उनकी दी हुई शिक्षा पद्धति ने बड़ी मात्रा में बेरोजगारी से आच्छादित कर दिया।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की तुलना यदि प्राचीनकाल में प्रचलित गुरुकुल पद्धति से करते हैं तो जमीन आसमान का फर्क दिखाई देगा। प्राचीनकाल में छात्र गुरुकुल से संपूर्ण विकसित और प्रखरता सम्पन्न व्यक्तित्व लेकर निकलते थे। वहीं आज शिक्षण-संस्थानों में संस्कारों के शिक्षण के नाम पर स्थिति शून्यवत रहती है अतः शिक्षा के दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है।

शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करें तो शिक्षा वह बिन्दु है जिसके उद्देश्यों के केन्द्र में व्यक्ति के विकास का, देश अथवा राष्ट्र के विकास का, सभ्यता के विकसित होने के आधार का पता चलता है। शिक्षा भौतिक ज्ञान है जो मानव के विकास को अवलम्बित करती है। शिक्षा के निश्चित सिद्धान्त होते हैं और शिक्षा के सम्बन्ध में निश्चित नीति निर्धारित की जाती है।

शैक्षिक नीति निर्धारण में सदैव इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विश्व से व्यक्ति का सम्पर्क बना रहे और देश की समस्या को विश्व की समस्या के परिपेक्ष्य में समझा जा सके। देश की सरकार शिक्षा नीति का निर्धारण करती है। यदि विश्व के सम्बन्ध में देखें तो 'यूनेस्को' संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था है तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघ है शिक्षा के सम्बन्ध में "कल्याणकारी" शिक्षा-प्रणाली के निर्माण का पक्षधर है तथा समाज को

विभाजित करने वाले प्रत्येक तत्व को समाप्त कर "समतावादी समाज निर्माण" को उन्होंने पहला उद्देश्य बनाया है। शिक्षा के क्षेत्र में भारत के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण दोष यह है कि प्राचीन संस्कार जो हमारी अस्मिता थे, वो समाप्तप्राय हो गये कुरान व बाईबिल का अध्ययन तो होता रहा सरकार के प्रयासों से सनातन शास्त्र व संस्कार को अध्यापन विषय में सम्मिलित नहीं किया गया परिणामतः दोषपूर्ण शिक्षा नीति ने बेरोजगार इंजीनियर, डॉक्टर व ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, वकीलों की फौज खड़ी कर दी यह 75 प्रतिशत शिक्षा प्रणाली का दोष था।

हम आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विकास पर दृष्टि डालें तो लेखनकला का जन्म क्रान्तिकारी विकास था उसके बाद प्रिंटिंग प्रेस को 15वीं शताब्दी में शिक्षा के विकास में अद्भुत उपलब्धि कहा जा सकता है। अंग्रेजी में शिक्षा को- एजुकेशन कहते हैं यह लैटिन भाषा के 'एजुकेयर' शब्द से बना है, जिसका तात्पर्य है- 'व्यक्ति की क्षमता का जीवन को क्षेप्य बनाने के लिए सदुपयोग।' स्वामी विवेकानन्द ने एजुकेशन की परिभाषा देते हुए कहा है- "शिक्षा मनुष्य की उस पूर्णता का विकास है- जहाँ तक वह पहुँच सकता है।" जान डेवी के शब्दों में- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को ऊँचा उठाना है। मानव जाति को इस योग्य बनाना है कि परस्पर आत्मियता का भाव विकसित हो। शिक्षाविद् बी० रोमांट के अनुसार- शिक्षा विकास का वह क्रम है जिससे व्यक्ति अपने को धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के अनुरूप बना लेता है। साथ ही नैतिक मूल्यों को अपनाता है। किन्तु वर्तमान शिक्षा स्वाभाविक विकास ना रहकर विविध जानकारियों का ढेर समेटने के रूप में रह गई है।

ज्ञान के दो अंग हैं एक शिक्षा, दूसरा विद्या, शिक्षा वह है जो हमारे लौकिक जीवन की सुव्यवस्था के काम आती है। जानकारी बढ़ाती है, अर्थोपार्जन की क्षमता बढ़ाती है, समस्त सरकारी, गैर सरकारी, नौकरियाँ, शिल्पकला व कौशल इत्यादि इसमें आते हैं यह आवश्यक ज्ञान है।

इससे अधिक आवश्यक ज्ञान विद्या है जहाँ शिक्षा के लिए Education, Qualification शब्द उपयोग में आते हैं।

वहीं विद्या के लिए Knowledge, wisdom, Skill शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया जाए तो प्राचीन गुरुकुल पद्धति का सिलेबस जिसमें गणित, विज्ञान, दर्शन, भूगोल, भौतिक, रसायन, आयुर्वेद, महाकाव्य, शास्त्र व शास्त्र के साथ पारलौकिक ज्ञान का अध्ययन समाहित था। अर्थात् ये विद्याध्ययन का सिलेबस था। ये विषय आत्मा के ज्ञान को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। आत्मा के अस्तित्व व उसके भविष्य पर विचार करते हैं। ईसा की प्रथम द्वितीय शताब्दी में खगोल विज्ञानियों ने सूर्य-सिद्धान्त का विद्याध्ययन के मध्य विशद अध्ययन प्रस्तुत किया है। सूर्य सिद्धान्त में आज से 1515 वर्ष पूर्व वराहमिहिर ने अन्य बातों के अतिरिक्त बताया है कि सौर वर्ष 365 दिन, 6 घंटे 12 मिनट और 36.56 सेंकड का होता है इस समय तक यूरोपीय सभ्यता पृथ्वी के आकार का ही पता नहीं लगा पायी थी। आर्य भट्ट ने पृथ्वी का अपनी धुरी के चारों तरफ घूमने का तथ्य उजागर किया था। 628 ई0 गणित ब्रह्मगुप्त ने पहली बार शून्य और उसके संचालन को परिभाषित किया तथा जोड़ व घटाव की प्रक्रिया में शून्य की उपयोगिता निश्चित की। नागार्जुन जो कि बौद्ध भिक्षु थे पारे की भस्म का औषधि के रूप में प्रयोग किया तथा मलेरिया का इलाज ढूँढा। विद्याध्ययन ने भारत में प्राचीन काल में सम्राटों को श्रृंखला से जन्म दिया।

इस पृष्ठभूमि में प्रमुखता से यह बताना आवश्यक है कि शिक्षा व विद्या में अन्तर क्या है विद्या में मैं क्या हूँ? कौन हूँ? मेरा प्रादुर्भाव क्यों हुआ? विश्व का आध्यात्मिक स्वरूप क्या है? योनियाँ क्या हैं? उनके जीवात्मा का अवतरण क्यों व कैसे होता है प्रमुख रूप से विचार किये जाने वाले विषय हैं जब तक उक्त प्रश्नों के उत्तर नहीं ढूँढे जायेंगे मनुष्य विभिन्न प्राणियों के रूप में जन्म लेता रहेगा। इस प्रकार शिक्षा लोकवृत्ति की जानकारी है तो विद्या अंतर्लोकवृत्ति की जानकारी है।

आत्मिक शक्तियों को जगाने के लिए विद्या के ज्ञान की आवश्यकता है जो प्राचीन वेदों के, शास्त्रों के अध्ययन से आता है और शिक्षा उसका सशक्त माध्यम हो सकती है। आत्मिक शक्ति के अभाव में सारे सुख होने पर भी मनुष्य दुख में पड़ा रहता है। इसमें आत्म विद्या के विकास के साथ प्रेम, स्नेह, सौहार्द, सरलता, आत्मियता, दया, करुणा, परोपकार, श्रद्धा, भक्ति, आत्मविश्वास और आत्मबल की अभिवृद्धि होती है।

जहाँ शिक्षा व विद्या दोनों का समावेश होता है शास्त्र कहते हैं ऐसा ज्ञान सार्थक है। शिक्षा के ज्ञान से सांसारिक सफलताएँ अवश्यम्भावी हैं और विद्याभ्यास से आंतरिक गुणों का यथा-प्रेम, दया, करुणा आदि का असंदिग्ध रूप से अवतरण होता है जहाँ ये दोनों बातें मिल जाती है वहीं आनंद है, स्वर्ग है, सार्थकता है। किन्तु विद्या का लक्ष्य आनंद ही नहीं जिज्ञासा है जो आत्म कल्याण का मुख्य द्वार है। जिज्ञासा जीवन को सत्य के लक्ष्य तक पहुँचाने का माध्यम बनती है। सनातन का सत्य ईश्वर है वो निराकार हो या साकार हो। गीता के अध्याय 10 के 10वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है।

**तेषां सततयुक्तानां भाजंता प्रीतिपूर्वकम् ।  
ददामि बुद्धियोगं तं येन मायुपयन्ति ते ॥**

अर्थात् निरंतर श्रद्धा व प्रेमपूर्वक मुझ ईश्वर को भजने वाले लोगों को मैं बुद्धियोग की प्रेरणा देता हूँ, वे इसी के सहारे मुझे प्राप्त कर लेते हैं।

आजादी के उपरान्त के वर्षों में शिक्षा की अभिवृद्धि तो हुई किन्तु विद्या को प्रतिबंधित किया गया 'सेक्युलर' शब्द की गलत परिभाषा रचते हुए भारत के नीति नियंताओं ने धर्म निरपेक्षता को तार्किकता वैज्ञानिक दृष्टि, बुद्धिवाद, आध्यात्मिक मूल्यों की विरोधी संरचना/दृष्टिकोण के रूप में ग्रहण किया। इसने भारतीयता व भारत के उदार व आध्यात्मिक मूल्य जो कि न केवल राष्ट्रीयता बल्कि भारतीय संस्कृति के सार रूप भी थे, को नेपथ्य में ढकेलकर एक तरह से 'शिक्षण-प्रणाली' में बहिष्कृत कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति का पराभाव ही नहीं हुआ वरन् संस्थाओं का उद्देश्य भी छात्रों को मात्र साक्षरता व स्नातक की उपाधि देने तक सीमित रह गया। इसने छात्र की उपलब्धि को सीमित व अधूरा रख दिया। उसकी जानकारी व कुशलता शिक्षा के क्षेत्र में कितनी ही बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो व्यक्तित्व का स्तर ऊँचा नहीं उठ पाता। भारतीय संस्कार से भारतीय तो हैं पर अपनी प्राचीन अस्मिता से इतिहास से, शास्त्र से पूरी तरह अपरिचित था। नई शिक्षा नीति NEP 2020 ने कुछ प्रयास आरम्भ किये हैं तो रोशनी की किरण का प्रवेश तो हुआ है आगे लक्ष्य छात्र-छात्रा को ही साधना होगा। क्योंकि विद्या को मुक्ति का मार्ग भी बताया गया है।



## शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का पारम्परिक स्वरूप

● डॉ. पुनीता कुशवाहा  
एसोसिएट प्रो. हिन्दी

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का प्राचीनता की दृष्टि से जब भी मूल्यांकन किया जाता है तो हिंदू संस्कृति को ही सर्वप्रथम स्थान दिया जाता है। गुणज्ञता के दृष्टिकोण से हिंदू संस्कृति का ही उल्लेख विशिष्टता से किया जाता है और जब व्यापकता, प्रभावशीलता और प्राणी कल्याण की भावना की दृष्टि से देखने का प्रयास किया जाता है, तब भी मुख्य स्थान हिंदू संस्कृति को ही दिया जाता है। भारत के विभिन्न ऋषियों-महर्षियों ने अत्यंत प्राचीन काल से ही विश्व के कोने-कोने में जाकर ईश्वरीय ज्ञान के प्रकाश को फैला कर वहां के निवासियों को अपने जीवन को सुखी सानंद और श्रेष्ठ बनाने का पाठ पढ़ाकर हिंदू संस्कृति के अमर संदेश **कृण्वंतो विश्वमार्यम्** को साकार किया था। इस तथ्य का पूरा परिचय हिंदू संस्कृति के प्रमुख ग्रन्थों में प्राप्त होता है। क्योंकि संसार में यही एकमात्र संस्कृति है, जो समस्त विश्व को ही नहीं, ब्रह्माण्ड को भी **आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम्** और **सर्वे भवंतु सुखिनाः** की भावनाओं को अनंत काल से आप्लावित करती आ रही है। यह भावना सदा सर्वदा से ही विश्व के कल्याण के लिए, मानव के उत्थान के लिए प्राणियों में सद्भावना के लिए चिंतन का कार्य करती आ रही है। हिन्दू, संस्कृति में यह संस्कार जन्म काल से ही जीवन घुट्टी के साथ पिलाए जाते रहे हैं। यह सब संस्कार इसे पर्वतराज हिमालय से, सतत प्रवाहिनी सरिताओं से, प्राची में उगते सूर्य से, भारत माता के चरणों को प्रक्षालित करती अनंत जल राशि से युक्त महासागर की उताल तरंगों से मानव कल्याण के ज्ञान से युक्त वेदों से, शास्त्रों से, और पुराणों से तथा रामायण, महाभारत और गीता जैसे महान ग्रंथों से मिले हैं। यह सर्वज्ञात हैं, कि जैसा व्यक्तित्व गुण, स्वभाव, संस्कार प्रदाता का होगा उसकी स्पष्ट छाप उसके द्वारा दिए गए संस्कारों पर पड़ती है। हिंदू समाज ने अपनी संस्कृति की विशेषताओं के आधार पर भारत को विश्व गुरु के पद पर अधिष्ठित कराया था और श्रेष्ठतम ज्ञान, संस्कृति और से युक्त अपने ग्रंथों को विश्व के कोने-कोने में शिक्षा और ज्ञान का दीप जलाया था और भारत को श्रेष्ठतम स्थान पर

पहुंचाया था। हिंदू देश विश्व का सबसे प्राचीनतम देश है तथा हिंदू संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। हिंदुओं का सबसे पूज्य ग्रंथ ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है, जो संस्कृत भाषा में लिखा है। स्पष्ट है, कि विश्व की सर्वाधिक प्राचीन भाषा संस्कृत ही इस हिंदू देश धर्म और समाज की मुख्य भाषा रही होगी। संस्कृत भाषा हिंदू संस्कृति की वाहिका है, इसमें श्रेष्ठतम ज्ञान से युक्त विश्व के प्रथम ग्रंथ ही नहीं अन्य साहित्य भी इतने बड़े परिमाण में हैं कि उनका उल्लेख करना असंभव नहीं किंतु कठिन अवश्य है। देववाणी संस्कृत एक पूर्ण भाषा है और वह ऐसी भाषा है जिसमें ना तो शब्दों का अभाव है, ना अभिव्यक्ति का। व्याकरण के नियमों में ऐसी व्यवस्थाएं हैं, कि चाहे जितने भी शब्दों का निर्माण कर लीजिए नए शब्दों के निर्माण के लिए व्यवस्था में कमी नहीं होगी। संस्कृत में भारत की धार्मिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि मानव जीवन की हर विधा से संबंधित साहित्य उपलब्ध है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी को सार्वदेशिक प्रचार-प्रसार से पूर्व संस्कृत में ही एक सूत्र में बांध रखा है।

भारत में प्राचीन काल की शिक्षा पद्धति गुरु-शिष्य परंपरा की द्योतक रही है। वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत ब्रह्मचर्य आश्रम में बालक गुरु के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त करने के लिए वन में निवास करते थे तथा गुरु शिष्य परम्परा के मध्य श्रवण- ग्रहण द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार की परंपरा थी। जिसमें शिष्यों की मेधा शक्ति का तीक्ष्ण होना सर्वाधिक प्राथमिकता थी। विश्व के प्रथम प्राचीनतम विश्वविद्यालय तक्षशिला में गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत अनेक देशों के विद्यार्थी विद्याअध्ययन के लिए भारत आया करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में भी इसी परंपरा का निर्वहन होता था। इसके माध्यम से विद्यार्थी व्यक्तित्व और ज्ञान संपदा की दृष्टि से स्वयं कुछ उपार्जित करके योग्य बनने के लिए उससे विरासत में कुछ संस्कार और जानकारी भी प्राप्त किया करता था तथा इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही प्राचीन काल से गुरु-शिष्य परंपरा की व्यवस्था की जाती रही है। शिक्षा जीवन का शाश्वत मूल्य है। मानवीय चेतना

जिन दो प्रकार के मूल्यों की परिधि में पल्लवित होती है, उनमें कुछ शाश्वत होते हैं और कुछ परिवर्तनशील। शिक्षा को जीवन का शाश्वत मूल्य कहा जा सकता है, क्योंकि कोई भी अज्ञानी अथवा अशिक्षित व्यक्ति अपने जीवन को विकासशील नहीं बना सकता। ज्ञान की अनिवार्यता हर युग में रही है इसीलिए शिक्षा को हर युग में मूल्य एवं महत्व प्राप्त होता रहा है। ज्ञान और आचरण में सामंजस्य बनाकर विवेक के प्रयोग से ही ज्ञान की सार्थकता है जो ज्ञान और आचरण में तथा बुद्धि और विवेक में सामंजस्य प्रस्तुत कर सके, उसे ही सच्चे अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है। इसी कारण हिंदू संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। भारत में गुरु परंपरा से प्राप्त ज्ञान को ही प्रामाणिक ज्ञान माना जाता है। गुरु परंपरा भगवान आशुतोष शंकर से प्राप्त होकर अपने गुरु तक मानी जाती है।

**सदाशिव समारंभाम् शंकराचार्य मध्यमाम्।  
अस्मदाचार्य-पर्यन्ताम् वन्दे गुरु परम्परा ॥**

गुरु का मार्गदर्शन मिलने पर ही व्यक्ति जीवन के वास्तविक पद को खोज पाता है। गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान ही उसके पद को प्रकाशमान बनाता है और गुरु का उपदेश ही व्यक्ति को उस पथ पर आनंद और उल्लास से परिचित कराकर जीवन लक्ष्य को प्राप्त कराता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हिंदू संस्कृति के निर्माता नियंत्रक और नियामक ऋषियों, महर्षियों ने बताया है, कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का उद्देश्य विवेक को जागृत करने और व्यक्तित्व को विकसित बनाने के लिए होना चाहिए। सच्चे अर्थों में वास्तविक हिंदू धर्म वही है जिसमें वेद, उपनिषद, शास्त्र और पुराण की आधार भूमि पर गीता के योग, कर्म और ज्ञान की त्रिवेणी, गौतम की दया और करुणा, महावीर का स्पादवाद, शंकर का अद्वैत, रामानुज की भक्ति, गोरख का संयम, चैतन्य की तन्मयता, मीरा का प्रेम कबीर का ज्ञान, तुलसी की अनन्यता, सूर का सखत्व, रसखान की लगन, नानक का एकेश्वरवाद, दयानंद का आर्य संगठन आदि सब एक साथ ही विद्यमान हो। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भावी पीढ़ी को राष्ट्रभक्त बनाने की प्रेरणा दें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का उद्देश्य विवेक को जागृत करने और व्यक्तित्व को विकसित बनाने के लिए होना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है, कि हिंदू समाज के सभी अंगों को समता, ममता और वैचारिक एकता के आधार पर संगठित कर हिंदू संस्कृति का पुनरुत्थान

करें। भावी पीढ़ी को संस्कार युक्त बनाकर अपने भारत की उन्नति में सराहनीय योगदान दे पाएंगे और भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित कर पाएंगे।



## क्षण भंगुर जीवन

● डॉ. पुनीता कुशवाहा  
एसोसिएट प्रोफेसर- हिन्दी

मुट्ठी से सरकती रेत की तरह, खिसकता जा रहा समय।  
निरुद्देश्य होता बहुमूल्य जीवन, व्यर्थ हो रहा है व्यय ॥

कामनाओं, अभिलाषाओं, स्वार्थ में, फंसा, आज का मानव।  
मेरा तेरा पन करता, नहीं देख पाता कालरूपी दानव ॥

हर क्षण जीवन के साथ, परछाईं जैसी चलती मृत्यु है।  
कब अपने आगोश में ले ले, छल करती जैसे शत्रु है ॥

जीवन कितना है अमूल्य, खोकर अपना, इसकी कीमत जानी है।  
मानव जीवन में आ कर ही, रिशतों की अहमियत पहचानी है ॥

गीता का तो सार यही है, जीवन छल है, मृत्यु यथार्थ है।  
जग में आकर सत्कर्म करें, यह जीवन ही परमार्थ है ॥

माया मोह का बंधन तोड़कर, उड़ जाता पंछी है।  
जो क्षण भंगुर जीवन का सार जान ले, वही बड़ा सत्संगी है ॥

मुट्ठी से सरकती रेत की तरह, खिसकता जा रहा समय।  
निरुद्देश्य होता बहुमूल्य जीवन, व्यर्थ हो रहा है व्यय ॥

व्यर्थ हो रहा है व्यय,  
व्यर्थ हो रहा है व्यय ॥



# संगीत

**संगीत छात्रवृत्ति-** संगीत मानव जाति की सार्वभौमिक भाषा है, संचार के लिए दुनिया में असंख्य भाषाएँ हैं परन्तु संगीत में शामिल विभिन्न सांस्कृतिक पहलू तथा अभिव्यक्तियों की असीम संभावनाएँ इसे संवाद के लिए एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को जोड़ती है। संगीत के प्रति प्रबल अभिरूचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए कभी-कभी आर्थिक बाधा के कारण इस क्षेत्र में अपने सपनों को साकार करना मुश्किल कार्य हो जाता है।

संगीत के प्रति जुनून रखने वाले भारतीय छात्रों के लिए, अपने सपनों को साकार करना कभी-कभी वित्तीय बाधाओं के कारण बाधित हो सकता है। हालाँकि, ऐसी कई संगीत छात्रवृत्तियाँ उपलब्ध हैं जो इच्छुक संगीतकारों को इन बाधाओं को दूर करने और उनकी प्रतिभा को निखारने में मदद कर सकती हैं। इस लेख में, हम भारतीय छात्रों के लिए कुछ शीर्ष संगीत छात्रवृत्तियों का पता लगाएंगे, जो पात्रता मानदंड, पुरस्कार और छात्रवृत्ति प्रदाताओं के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। यह व्यापक मार्गदर्शिका संगीत के क्षेत्र में रोमांचक अवसरों को अनलॉक करने के लिए एक रोडमैप के रूप में काम करेगी, चाहे पाठक कॉलेज का छात्र हो या स्कूल का।

शास्त्रीय संगीत का अध्ययन करने वाले भारतीय छात्रों के लिए कई छात्रवृत्तियाँ उपलब्ध हैं, जिनमें ICMA छात्रवृत्ति कार्यक्रम, मणि मान फेलोशिप और सिटी NCPA छात्रवृत्ति शामिल हैं।

## A. आईसीएमए छात्रवृत्ति कार्यक्रम

18 से 25 वर्ष की आयु के छात्रों के लिए खुला है।

आवेदकों को किसी गुरु से सीखना चाहिए जो उनकी अनुशंसा करेगा। आवेदकों के पास कम से कम पांच साल का पूर्व प्रशिक्षण होना चाहिए। आवेदकों को निरंतर प्रयास और उत्कृष्टता प्रदर्शित करनी होगी। आवेदकों को त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। आवेदकों को अपने परिवार की आय प्रदान करनी होगी।

## B. मणि मान फेलोशिप

यह छात्रवृत्ति हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिए संस्कृति फाउंडेशन द्वारा प्रदान की जाती है। छात्रवृत्ति रुपये के लायक है। 100,000 और दो किशोरों में भुगतान किया जाता है।

**C. युवा संगीतकारों के लिए सिटी एनसीपीए छात्रवृत्ति-** यह छात्रवृत्ति हिंदुस्तानी संगीत में अग्रिम प्रशिक्षण के लिए है।

*अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25*

छात्रवृत्ति रुपये के लायक है। दो साल के लिए 10,000 प्रति माह। यह छात्रवृत्ति ख्याल/ध्रुपद में स्वर प्रशिक्षण और बांसुरी, हारमोनियम, वायलिन, सितार और सरोद जैसे मधुर वाद्ययंत्रों के लिए है।

**D. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)** लता मंगेशकर नृत्य और संगीत छात्रवृत्ति योजना भी प्रदान करती है। सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना (सीटीएसएसएस) सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) ने 1982 में सीटीएसएसएस कार्यक्रम शुरू किया।

सीटीएसएसएस एक राष्ट्रीय स्तर का छात्रवृत्ति कार्यक्रम है जो सांस्कृतिक क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण के लिए 10-14 आयु वर्ग के प्रतिभाशाली बच्चों को लक्षित करता है।

कार्यक्रम में पारंपरिक संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्प और साहित्यिक गतिविधियों जैसे विभिन्न सांस्कृतिक विषयों को शामिल किया गया है।

प्रतिवर्ष कुल 650 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनमें से 375 सामान्य छात्रवृत्तियाँ हैं। चयन प्रक्रिया में दो भाग होते हैं: आवेदन फाइल के आधार पर शॉर्टलिस्टिंग और एक साक्षात्कार।

## पात्रता-

आवेदक भारतीय नागरिक होना चाहिए। उनकी आयु 10 से 14 वर्ष के बीच होनी चाहिए। उन्हें किसी मान्यता प्राप्त संस्थान में एक छात्र के रूप में नामांकित होना चाहिए या अभ्यास करने वाले कलाकारों के परिवार से होना चाहिए।

## फायदे-

प्रत्येक चयनित विद्वान को 3,600 रुपये का मासिक वजीफा मिलता है। संगीत शिक्षक/संस्थान को ट्यूशन फीस के रूप में 9,000 रुपये की अतिरिक्त राशि दी जाती है।

## कलाकृति फेलोशिप-

संस्कृति फाउंडेशन, एक पंजीकृत सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट, भारतीय शास्त्रीय नर्तकियों के लिए एक विशेष फेलोशिप कार्यक्रम प्रदान करता है।

छात्रवृत्ति का उद्देश्य नर्तकियों को प्रोत्साहित करना और प्रदर्शन कला के क्षेत्र को बढ़ावा देना है।

चयनित अध्येताओं को संस्कृति फाउंडेशन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने की आवश्यकता होती है, जो फेलोशिप अवधि के दौरान अध्येताओं के लिए काम के नियमित प्रवाह

को निर्धारित और तय करता है। आवेदकों को 2-पेज का सीवी और परियोजनाओं और प्रदर्शन सहित अपने पिछले कार्यों के नमूने जमा करने होंगे। उल्लेखनीय पूर्व साधियों में कथक कलाकार मोनिसा नायक और श्रीमती शामिल हैं। इप्सिता चटर्जी।

#### पात्रता-

यह कार्यक्रम 25 से 40 वर्ष की आयु के सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुला है। आवेदकों के पास भारतीय शास्त्रीय नृत्य में कम से कम 10 साल का प्रशिक्षण होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, फेलोशिप के लिए पात्र होने के लिए उम्मीदवारों को मान्यता प्राप्त मंचों पर 2-3 एकल प्रदर्शन देना चाहिए।

#### फायदे-

फेलोशिप की अवधि 10 महीने है, जिसके दौरान कलाकार को दो किशतों में 50,000 रुपये का अनुदान मिलता है।

संस्कृति फाउंडेशन द्वारा माधोबी चटर्जी मेमोरियल फेलोशिप संस्कृति फाउंडेशन की माधोबी चटर्जी मेमोरियल फेलोशिप भारतीय शास्त्रीय नर्तकों और संगीतकारों को भारतीय कला रूपों की उन्नति में योगदान करने का एक असाधारण अवसर प्रदान करती है। आवेदकों को 2-पेज का सीवी और परियोजनाओं और प्रदर्शन सहित अपने पिछले कार्यों के नमूने जमा करने होंगे। उल्लेखनीय पूर्व साधियों में गायिका संजुक्ता बिस्वास, श्री ओंकार दादरकर और ओडिसी नृत्यांगना श्रीमती शामिल हैं। शाश्वती गराई घोष।

#### कैरियर मूल्यांकन परीक्षण पात्रता

यह कार्यक्रम भारतीय शास्त्रीय संगीत (मुखर या वाद्य) और नृत्य (रूप या कोरियोग्राफी) की किसी भी शैली में सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुला है। आवेदकों को अपने संबंधित क्षेत्र में एक निश्चित संख्या में वर्षों तक प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, फेलोशिप के लिए पात्र होने के लिए उम्मीदवारों को मान्यता प्राप्त मंचों पर 2-3 एकल प्रदर्शन देना होगा।

#### फायदे

फेलोशिप प्राप्तकर्ताओं को कुल 1,00,000 रुपये का अनुदान देती है, जो दो किशतों में प्रदान किया जाता है।

#### फायदे - राग फ़ैलोशिप

इंडियनरागा द्वारा शुरू की गई रागा फ़ैलोशिप, इंडियनरागा द्वारा समर्थित प्रमुख कार्यक्रमों में शामिल होने वाले वरिष्ठ कलाकारों के लिए एक प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करती है। यह फ़ैलोशिप सभी आयु समूहों और शैलियों के कलाकारों के लिए खुली है।

चयनित अध्येताओं को अपने कलात्मक कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से इंडियनरागा क्रिएटिव पैनल या नामित विशेषज्ञों से सलाह मिलती है।

#### पात्रता

फेलोशिप के लिए आवेदन करने के लिए कोई विशिष्ट मानदंड नहीं हैं। हालाँकि, जैसा कि इंडियनरागा वेबसाइट पर बताया गया है, इंडियनरागा जैम/शो में भाग लेने से अतिरिक्त लाभ मिलता है।

#### फायदे

चयनित अध्येताओं को विशाल ग्राहक आधार के साथ इंडियनरागा के यूट्यूब चैनल पर प्रदर्शित किया जाएगा। उन्हें प्रतिष्ठित लाइव कॉन्सर्ट में प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाएगा, जिनमें से कई भुगतान किए गए प्रदर्शन हैं। पिछले इंडियनरागा कलाकारों ने संयुक्त राष्ट्र महासभा, भारतीय नौसेना और विश्व सरकार शिखर सम्मेलन जैसे प्रतिष्ठित प्लेटफार्मों पर प्रदर्शन किया है।

#### आईसीएमए छात्रवृत्ति कार्यक्रम

महेश काले द्वारा स्थापित भारतीय शास्त्रीय संगीत और कला (आईसीएमए) छात्रवृत्ति, प्रदर्शन कला, विशेष रूप से संगीत और नृत्य में करियर बनाने वाले उभरते कलाकारों का समर्थन करती है। छात्रवृत्ति योग्यता और वित्तीय आवश्यकता दोनों पर आधारित है। वार्षिक पात्रता मूल्यांकन के साथ, व्यक्ति की आवश्यकता के आधार पर छात्रवृत्ति की अवधि 1 से 6 वर्ष तक हो सकती है।

#### पात्रता

आवेदकों को गंभीर नर्तक और संगीतकार होना चाहिए, शौकिया नहीं। आयु सीमा 18 से 25 वर्ष है। आवेदकों को न्यूनतम 5 वर्ष की प्रशिक्षण अवधि वाले शिक्षक (गुरु) से सीखना अनिवार्य है। छात्रवृत्ति के लिए पात्रता बनाए रखने के लिए नियमित प्रगति रिपोर्ट प्रदान की जानी चाहिए।

#### फायदे

प्रत्येक विद्वान को प्रति वर्ष अधिकतम 1,200 अमेरिकी डॉलर मिलते हैं, जो तिमाही आधार पर वितरित किया जाता है।

#### Music Scholarships – Important Links

| Scholarships  | Important Links   |
|---|---|
| Kalakriti Fellowship  | <a href="http://www.sanskritifoundation.org/Kalakriti-Fellowship.htm">http://www.sanskritifoundation.org/Kalakriti-Fellowship.htm</a>       |
| Madhobi Chatterji Memorial Fellowship by Sanskriti Foundation | <a href="http://www.sanskritifoundation.org/Kalakriti-Fellowship.htm">http://www.sanskritifoundation.org/Kalakriti-Fellowship.htm</a>       |
| Raga Fellowship   | <a href="https://indianraga.com/fellowship/#1571055411676-47cda7b2-c257">https://indianraga.com/fellowship/#1571055411676-47cda7b2-c257</a> |
| ICMA Scholarship Program                                      | <a href="http://www.icmafoundation.org/icma-scholarship-program.html">http://www.icmafoundation.org/icma-scholarship-program.html</a>       |

## देवभूमि उत्तराखण्ड

● कैलाश चन्द्र

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

उत्तर की ऊँचाई पर बसा, यह राज्य महान,  
हिमालय की गोद में सजा, देवभूमि की शान।  
हर ओर फैली हरियाली, शुद्ध हवा बारह मास,  
गंगा यमुना के संग में, सजी ये धरती खास।

केदार और बद्री की पावन भूमि पर ये बेला,  
जहाँ भक्तों का सदा लगा रहता मेला।  
माँ नन्दा और बाबा केदार की महिमा अपरंपार,  
उत्तराखण्ड की भूमि, आस्था का संसार।

हवा में गूँजे कुमाऊँनी और गढ़वाली गीत,  
लोकसंगीत की धुनें यहाँ, सबके मन को मीत।  
छोलिया का नृत्य और रणभेरी की आवाज,  
लोक संस्कारों का यहाँ हर जगह राज।

पिथौरागढ़ की ऊँचाई, मसूरी का नजारा,  
नैनीताल की झीलों में बसा है सपनों का इशारा  
देहरादून की घाटी, ऋषिकेश का संगम,  
हर कदम पर मिलता है प्रकृति का संग।

यहाँ की संस्कृति में सादगी का है वास,  
पहनावे में झलकता पहाड़ी अंदाज बहुत खास।  
सरल, सीधे लोग और दिल में प्रेम का भाव,  
उत्तराखण्ड की मिट्टी में छिपा अद्भुत सा प्रभाव।

उत्तराखण्ड की धरती का हर कण कहे,  
देवभूमि की महिमा से सजी ये भूमि रहे।  
इसकी सुंदरता और संस्कारों का मान,  
उत्तराखण्ड राज्य है भारत के स्वर्ग समान।।



## मन की व्यथा

● नवल किशोर जोशी

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

मन कहीं अकेले में बैठकर  
इस जीवन में खुद को तलाश रहा था  
मन में उठ रहे प्रश्नों का जवाब  
जीवन के हर पल में बदल रहा था।  
कहीं बचपन की मीठी यादें थी  
तो कहीं जीवन संघर्षों से जुड़ा था  
कहीं पर खुशी से झूमते मिले खुद को  
तो कहीं पर मन बड़ा उदास था।  
आज भी जब पीछे देखता हूँ  
वो बचकानी यादें ताजा हो जाती हैं  
शायद हर एक मन के अंदर  
अपनी एक अनोखी कहानी है।  
जीवन के हर पल में हम कहीं खोते जा रहे थे  
कुछ सीमित की चाह में असीमित  
अनुभवों का भूलते जा रहे थे  
चाहते नहीं थे कभी बदलना  
लेकिन फिर भी बदलते जा रहे थे।  
इतना कुछ बदल जाने पर  
क्या कभी किसी ने खुद से पूछा होगा  
तुम ठीक तो हो ना..... ?  
तुम तुम ही हो ना..... ?  
इन प्रश्नों का कोई सटिक उत्तर तो न मिला  
क्योंकि हर पहलू में खुद को बदलते देखा है  
उम्र बढ़ने के साथ बहुत कुछ सीख तो गए  
लेकिन बहुत कुछ सीखना अभी भी बाकी है।  
जीवन में बदलाव जरूरी है  
इसलिए शायद कभी ये सवाल खुद से नहीं किए  
बस जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गई  
हम भी बढ़े होते चले गए।  
ठीक है कि नहीं ये तो पता नहीं मुझे  
लेकिन बदल जरूर गए हैं  
शायद इसी बदलाव की वजह से  
आजकल बहुत कुछ सीखने-समझने लगे हैं।



## अभिव्यक्ति

● डॉ. रीता तिवारी  
सहायक प्राध्यापक हिन्दी

कला, साहित्य, संगीत  
योग व्यायाम, ज्ञान-विज्ञान  
प्रत्येक व्यक्ति का स्वाभिमान  
स्वयं पर आश्रित जीवन,  
स्वयं-भू शिव को मान,  
मन-मस्तिष्क पर  
अंकित प्रश्न।

पूछता स्वयं से  
किस ओर चला,  
व निर्जन।

जीवन के एक छोर से,  
अपनी परिधि की ओर,  
अनन्त जीवन के मार्ग  
पर प्रशस्त।

लिए अनेक शब्दों के  
प्रश्न चिन्ह।  
अव्यक्त जीवन को  
व्यक्त कर नई पहचान,  
बना, स्वयं की  
अभिव्यक्ति को कर  
प्रदर्शित।

एक सम्पूर्ण व्यक्ति की अदृश्य  
शक्ति, जिसने रचा नया इतिहास,  
हास-परिहास, व्यंग्य को तज,  
करता प्रयत्न नित निज।

निर्जन उसका जीवन,  
सत्य के समक्ष,  
है वह प्रत्यक्ष।

व्यक्ति की अभिव्यक्ति  
ही है उसकी अदृश्य  
शक्ति।



## एहसास

● शीतल  
एम.एस.सी. II<sup>nd</sup> सेमेस्टर

बिन बोले ही कुछ बोलना,  
वाणी से भावों को तोलना।  
नेत्रों से मन को टटोलना,  
प्रभु चिंतन में खुद को घोलना।  
एक अहसास ही तो है.....

भव्य बंधनों में बँध जाना,  
जीवन पर्यन्त गृहस्थी में बस जाना।  
कष्ट उठा कर भी हँस जाना,  
एक माँ का सर्वस्व समर्पण।  
एक अहसास ही तो है.....

प्रतिस्पर्धा, उत्थान, पतन,  
संस्कृति, सम्मान, नमन।  
भक्ति, श्रद्धा और भजन,  
सत्य, स्मृति और सृजन।  
एक अहसास ही तो है.....

मृत्यु का भय कर्मों का फल,  
आँखों का जल, मन का निर्मल।  
खुशी कभी दुःख, जीने का चाव,  
प्रेम का गीत, घृणा का भाव।  
एक अहसास ही तो है....

यदि जो है अदृश्य जब तक,  
उसे पूजा जाता है तब तक।  
यदि यही रहस्य है शायद,  
संसार अस्तित्वमय का।  
तो इस भावावेश को शत-शत नमन!

गर न हो कायम अहसास कीर्ति,  
ने होगा मोह न होगी प्रीति।  
शीतल, सादगी मिथ्या होगी तृप्ति,  
होगी केवल भौतिक, पार्थिव सृष्टि।  
एक अहसास ही तो है....



## मेरी अभिलाषा

● ममता डंगवाल  
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

आज अपने बारे में लिखना चाहती हूँ,  
कैसी हूँ, खुद ही नहीं समझ पाती हूँ।

कभी बड़ी-बड़ी परेशानियां भी सुलझा देती हूँ।  
कभी खुद को ही परेशानी में डाल देती हूँ,  
कभी छोटी-छोटी बातों पर भी रो जाती हूँ।  
कभी बड़ी बात भी हंसकर टाल देती हूँ।  
हाँ, हर किसी को नहीं भाती हूँ,  
कैसी हूँ, खुद ही नहीं समझ पाती हूँ।

सुंदरता के मामले में थोड़ी कच्ची हूँ,  
लगाती बड़ी हूँ, लेकिन दिल से बच्ची हूँ।  
हर कोई पसंद नहीं करता मुझे,  
पर कुछ लोगों के लिए बहुत अच्छी हूँ।  
खुद को खुद ही सताती हूँ  
कैसी हूँ, खुद ही नहीं समझ पाती हूँ।

आँखों में कुछ सवाल नहीं है,  
लम्बे मेरे बाल नहीं हैं।  
चेहरा कुछ साफ नहीं है,  
गोरे मेरे गाल नहीं हैं।  
पर हमेशा दिल से मुस्कराती हूँ।  
कैसी हूँ, खुद ही नहीं समझ पाती हूँ।

जिन्दगी में अभी बहुत कुछ बाकी है।  
खुद को पसंद हूँ, इतना काफी है।



## नासमझी

● कविता मनराल  
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

आपको मोमबत्ती का मोम कहूँ,  
या कैल्शियम कार्बोनेट से बना लाइम स्टोन कहूँ।  
समझ नहीं आता आपको कौन सा ऐसा पदार्थ कहूँ,  
ओ मेरे बाजू आपकी तारीफ में ऐसा क्या कहूँ।

आपको पेनिसिलीन कहूँ,  
या संक्रमण से बचाने वाला टेट्रासाइक्लिन कहूँ।  
समझ नहीं आता आपका कौन सा ऐसा एंटीबायोटिक कहूँ,  
ओ मेरे बाजू आपकी तारीफ में ऐसा क्या कहूँ।

आपकी आँखों को बाज की नज़र कहूँ,  
या साक्षात त्रिकालदर्शी कहूँ।  
समझ नहीं आता आपको कौन सा ऐसा दूरबिन कहूँ,  
ओ मेरे बाजू आपकी तारीफ में ऐसा क्या कहूँ।

आपको दिए का प्रकाश कहूँ,  
या अंधेरे में लालटेन की रोशनी कहूँ।  
समझ नहीं आता, आपको कौनसा ऐसा एलईडी कहूँ,  
ओ मेरे बाजू आपकी तारीफ में ऐसा क्या कहूँ।

आपके गुस्से को ज्वालामुखी कहूँ,  
या आपके लाड़ को चासनी की मिठास कहूँ।  
समझ से परे है कि अपनी इस नासमझी को क्या कहूँ,  
ओ मेरे बाजू आपकी तारीफ में ऐसा क्या कहूँ।



फूल चुनकर एकत्र करने के लिए मत ठहरो, आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में निरन्तर फूल खिलते रहेंगे।

-रवीन्द्रनाथटैगोर

## मौन संघर्ष - 2

● डौली

बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर

सपनों की गठरी कंधे पे डाली,  
ज्ञान की जोत आज फिर जला ली।  
बनना था शिक्षक हमें, पर राहे कठिन थी,  
पर हौंसलों ने आज फिर हिम्मत संभाली।

कभी का Curriculum भार उठाया,  
कभी Lesson Plan से मन घबराया।  
Class में खड़े होकर हमने सीखा,  
कैसे घर मन को ज्ञान सिखाया।

Pedagogy के पन्ने उलटे,  
Psychology के सूत्र समझे।  
Child development की बातें जानी,  
हर बच्चे की सोच को पकड़े।

Exams का Pressure भी झेला,  
Internship में खुद को परखा।  
कभी छात्रों की मुस्कान से जीते,  
कभी discipline में खुद को रखा।

आज संघर्ष के पथ से निकले,  
कल भविष्य संवारेंगे हम।  
ज्ञान की लौ जलाकर हर दिल में,  
नव निर्माण कर डालेंगे हम।

सर्द हवाएँ जब लहराती हैं,  
नई उमंग संग लहराती हैं।  
जनवरी की ठंड सुबाहों में,  
सपने फिर से जग जाती हैं।

ओस की बूंदों सा है लक्ष्य हमारा,  
जो चमकता हर मुश्किल किनारा।  
हिम की चादर ढक ले राहें,  
पर कदम नहीं ये रुकने वाले।

सर्दी की ठिठुरन से सीख लें हम,  
संघर्ष में भी न हो कोई गम।  
धुंध भले ही छाए गगन में,  
सूरज फिर भी चमके मन में।

जनवरी कहती हौंसला रखो,  
धैर्य से सपनों को पंख दो।  
सर्द हवाएँ भी रूक न पाएंगी।  
मेहनत की लौ जलाएंगे।

संघर्ष की ठंडी रातों के बाद,  
सफलता की धूप खिलेगी।  
जनवरी की इन हवाओं में,  
एक नई कहानी लिखेगी।



महात्मा गाँधी-

**शहादत दिवस : 30 जनवरी**

● सपना आर्या  
बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

गाँधी जी की पुण्यतिथि है आज,  
सच की आवाज़, अहिंसा का राज।  
जिन्होंने अंग्रेजों से भारत को छुड़ाया,  
सत्य के मार्ग पर हम सभी को चलाया।

नफ़रत को नकारा, प्रेम को अपनाया।  
हर दिल में सत्य का दीप जलाया।  
हाथों में थी खादी, मन में प्रेम,  
उन्होंने दिखाया था,

एक बेहतर भारत का सपना फिर से।  
हम शहीदों को नमन करते हैं,  
गाँधी जी के सिद्धांतों को अपनाते हैं।  
नफ़रत से दूर, प्रेम की राह पर,  
हम उनके कदमों पर चलते हैं सदा।

गाँधी जी का सपना, हमारा लक्ष्य बने,  
हर दिल में शांति और प्रेम का हो बसेरा।  
आज हम शपथ लें, उनकी राह पर चलें,  
गाँधी जी का सपना हमारा लक्ष्य बनें,  
गाँधी जी की धरोहर को संजोते चलें।



# कामयाबी का रास्ता

● पूजा मौलेखी  
स्नातक प्रथम वर्ष

मतलब भरी इस दुनिया में,  
संघर्ष को भी लाना है।  
तू चिंगारी जला जुनून की,  
इसी आग से दुश्मनों का गुरुर जलाना है।

जिन्दगी का दूसरा नाम ही संघर्ष ह  
इस संघर्ष से क्या डरना।  
लड़ना है तो खुद से लड़,  
इस दुनिया से क्या लड़ना।

ये दुनिया तुझे नाकाम देखना चाहती है,  
इस दुनिया से मत लड़।  
तू कामयाबी का हथियार उठा,  
इस दुनिया की बोलती बन्द कर।

आँखों में नींद होगी मगर सोना नहीं,  
ये वक्त कीमती है इसे खोना नहीं।  
हार तो बार-बार होगी मोड़ पर,  
बैठकर अपनी हार पर रोना नहीं।

हारकर जस तू जीत का मनाना,  
अपनी हार को जीत में बदल जाना।  
यू मंजिलें किसी की राह देखती नहीं,  
तेरे सपने बड़े हैं, तू अंगारों पर चलके जाना।

अपने पथ पर तू डटकर चल,  
इस दुनिया से हटकर चल।  
ये दुनिया तुझे भीड़ बना देगी,  
तू खुद को इतिहास के पन्नों में रखकर चल।

दुनिया की बातों से कभी टूटना नहीं,  
किसी के आगे कभी झुकना नहीं।  
अगले ही मोड़ पर तेरी मंजिल होगी,  
बस तू पथ पर रुकना नहीं।

तेरे कपड़ों से जो जज करते हैं तुझे,  
उनकी औकात उन्हें दिखानी है।  
जो हँसते हैं तेरी हार पर,  
कल उनसे भी ताली बजवानी है।

तू रख जुनून जीतने का,  
मुश्किलों ने हर मोड़ पर आना है।  
और याद रखना उन माँ-बाप का चेहरा,  
जिन्होंने आज तेरे लिए भूखे पेट सो जाना है।



## दिल की बात

मेजर नवीन पोखरियाल

पूर्व छात्र ( भारतीय सेना से सेवानिवृत्त )

कहना चाहता हूँ तुमसे अपने दिल की बात,  
मगर तुम्हारे पास आकर कुछ और कह जाता हूँ।  
तुमको देखकर अपने आप को ही भूल जाता हूँ,  
फिर दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

कभी एकदम सुनसान गलियों में निकल जाता हूँ,  
शायद तुम मिल जाओगी किसी गली से निकलकर।  
सचमुच मिल जाती हो, निगाहें दो-चार भी होती हैं,  
मगर दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

कई बहाने ढूँढ लेता हूँ तुम्हारे घर आने के लिये,  
तुम्हारे घर आ जाता हूँ, तुमसे मिल भी लेता हूँ।  
मगर एकटक होकर देखने लग जाते हैं दोनों,  
और दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

अब तो आ भी जाओ मेरे सूने जीवन में,  
कब तक दबा पाओगी दिल की बात।  
समय की रफ्तार देखकर तो चलो,  
वरना दिल की बात दिल में ही रह जायेगी।



## कविता

● अलीशा

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

जब पहला पग पड़ा विद्यालय में,  
तब मैं कोरा पन्ना था।

मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके,  
एक अच्छा इन्सान बनना था।

साथ दिया मेरे शिक्षकों ने,  
और सिखाई हर नई बात मुझे।

अपनी लिखी कुछ पंक्तियों में,  
मैं नमन करूंगी आज उन्हें।

कि तेरे उपकारों को ऐ अध्यापक,  
हम जन्मों तक ना भूलेंगे।

याद आयेगी बहुत तुम्हारी,  
जब कामयाबी का झूला झूलेंगे।

दृढ संकल्प लेना सिखाते हो,  
हमें संस्कारों का महत्व सिखाते।

भटके हुए कर रही को,  
सफलता का मार्ग दिखाते हो।

नज़र सब पर एक समान हो,  
ना कभी शिष्यों में भेदभाव कभी।

किसी नादान से गलती हो जाय,  
तो सीख देकर सिखाते हैं।

हम में छुपे गुणों को तराशकर,  
हम पर हुनर का रंग चढ़ाते हैं।

हर शिक्षक खुद में एक संस्था,  
जो देश को आगे बढ़ाते हैं।

मेरा भारत शिक्षा की उड़ान,  
मेरा भारत महान उम्मीद के साथ



## सच्चा पत्रकार

● अल्लमस

बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

हम करते हैं कलम की ताकत से वार,  
वो इस्तेमाल करते हैं चाकू, बंदूक और औजार।

हमारा मकसद सच को दिखाना,  
उनका मकसद सच को छिपाना।

जहाँ गैर कानूनी काम वहाँ हमारे पाँव,  
इसलिए बार-बार हमें ही मिलते घाव।

वैसे तो मीडिया है भारत का चौथा स्तंभ,  
पर पत्रकारों को न्याय मिलने में होता है विलम्ब।

आजकल कम ही मिलते सच्चे पत्रकार,  
क्योंकि ज्यादातर होते नेताओं के चाटुकार।

आजकल पत्रकारिता का स्तर गिर रहा नीचे,  
आओ हम पत्रकार मिलकर इसे खींचे।

नेता, अभिनेता सबको मिलती है सुरक्षा,  
पर हम पत्रकारों की कौन करेगा रक्षा।

अत्याचारों के अत्याचार के खिलाफ, हम आवाज उठाते हैं,  
इसीलिए हर बार हमें यह अत्याचारी मिलकर सताते हैं।

हमारा काम भ्रष्टाचारों को भ्रष्ट करना,  
उनका काम हम जैसों को नष्ट करना।

उनका सच आ जाए तो बन जावे सनकी,  
इसीलिये तो जान से मारने की देने लग जाते धमकी।

हमारा काम सच की खबर पहुँचाना,  
उनका काम हमारे मुँह को बन्द करवाना।

अब उन लोगों को कौन समझाए,  
कि सच कभी छिपता नहीं और सच्चा पत्रकार कभी बिकता नहीं।।



## टॉपर की पीड़ा

● अल्तमस

बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

आज अपनी कहानी सुनाता हूँ,  
अपने बारे में कुछ बताता हूँ।  
बचपन से ही कहते हैं मुझे किताबी कीड़ा,  
पर कोई ना समझ सका मेरे दिल की पीड़ा।  
पढ़ाई के लिए रातों की नींद गवाई,  
दो दिन पढ़ाई न करी तो सवाल करने पूरी दुनिया आई।  
संघर्ष के वक्त किसी ने मेरा दुःख ना बाटा,  
जब संघर्ष कामयाब हुआ तो लग गया बधाइयों का तांता।

आज भी मदद करने कोई न आता,  
“मैं तुम्हारे साथ हूँ” ये बोलकर हर कोई चला जाता।  
घूमना-फिरना, खाना-पीना सब छोड़ा था मैंने,  
रिस्ते-नाते, दोस्ती सबसे मुँह मोड़ा था मैंने,  
मेरे उम्र के लोग जब करते थे मस्ती।

आँखों में सपना था कि एक दिन, बनाऊँगा अपनी हस्ती,  
आज वो सपना तो पूरा हो गया।  
पर वो मासूम इंसान कहीं खो गया,  
जिंदा है वा मासूम इंसान, जरूरत उसे जगाने की।

जागने की कोशिश कर रहा हूँ तो, क्या जरूरत सवाल उठाने की।  
आज मिलता हूँ किसी से तो, पहला सवाल यही होता है।  
“पढ़ाई कर रहे हो” मेरी पढ़ाई पर बवाल यही होता है,  
अब गुस्सा आता है इन बातों से।

अब थक गया हूँ उन अँधेरी रातों से,  
कुछ दिन जी लिया सुकून से, अब फिर से उन रातों में जाना पड़ेगा।  
किताबों के साथ जोड़ लिया है रिश्ता, अब उसे भी निभाना पड़ेगा।  
हर कोई समझता है कि दिन भर, करता होगा पढ़ाई।

पर कोई नहीं जानता कि मन करता है, कभी करूँ किसी से लड़ाई।  
आज सोचता हूँ कि काश कोई तो दोस्त होता,  
जिसके कंधे पर सर रखकर मैं रोता।  
खैर इन सब बातों से दुनिया को क्या वास्ता,  
हर कोई बधाई देकर नाप लेता अपना रास्ता।

(मेरी सच्ची घटना पर आधारित)



## बचपन

● अंबर छिम्वाल

बी.कॉम, षष्ठ सेमेस्टर

एक वक्त वो भी हुआ करता था,  
जब जीवन तनाव मुक्त रहा करता था।  
न ही किसी से अपेक्षाएँ होती,  
और न ज्यादा प्रश्नों में दिल खोया रहता था ॥  
बेशुमार यादों और नादानियों से,  
ये वक्त छुपा हुआ रहता था।  
निश्चल भावों और चंचलताओं से,  
ये बचपन भरा रहता था।

खुशियों का खज़ाना हुआ करता था,  
आँखों में अलग ही स्नेह रहता था।  
बिना किसी चिन्ता के,  
वह बचपन हमारा, बीता करता था ॥  
न अत्यधिक समझ हुआ करती थी,  
न ही कोई लालसा हुआ करती थी।  
अलग विचारों का संगम,  
वह बचपन हुआ करता था ॥

न ही खुद के उन प्रश्नों में,  
ये मन खोया हुआ रहता था।  
न ही उस व्यंग मुस्कान द्वारा,  
खुद से ही झूठ बोलना पड़ता था ॥  
तब आँखों के वे अश्रु,  
आज के उन आँसुओं की तरह नहीं थे।  
न ही आज की तरह,  
खुद को हर कठिन समय में,  
मज़बूत दिखाना पड़ता था ॥

एक अलग ही शोर खोजा करते तब,  
मगर....शान्ति में भी,  
एक अलग ही शोर गूँजा करता है अब।  
शोर पहले भी था और अब भी है।  
बस आज वे भाव और;  
वह मनोदशा बेहद ही विपरीत है ॥

उस बचपन में, बड़े होने की चाह थी।  
और बड़े होने पर,  
एक बार फिर से  
उस बचपन में जाने की चाह है ॥



## माँ की पुकार

● डॉ. भगवती पनेरू  
पूर्व प्रवक्ता हिन्दी

ओ बेटा! ओ बेटा! ओ नाती! ओ पोती!  
जरा सुन तो, जरा सुन तो!!  
देखा मुड़कर पीछे मैंने,  
धरती माँ की वेवश आँखें,  
भरी हुई जो अश्रु बिंदु से!  
किया नमन और पूछा उनसे,  
कातर क्यों है दृष्टि तुम्हारी?  
बोली मय्या, देखो मुझको,  
रूप कुरूप किया है तुमने,  
पोलीथिन ही पोलीथिन से पाट दिया सब तन-मन मेरा;  
मुख-नासिका बंद हो रहे,  
हाथ पैर सब पटे हुए हैं!!  
साँस नहीं ले पाती हूँ मैं,  
दम - सा घुटता है अब मेरा!  
सुनो ना अब तुम देर लगाओ, सब मिलकर के हाथ बढ़ाओ!!  
रंग-बिरंगे फूलों वाली,  
साड़ी हरी मुझे पहनाओ!  
पोलीथिन के ढेर हटाओ, कपड़े के थैले घर लाओ!!  
अपनी धरती माँ को स्वच्छ बनाओ।  
पोलीथिन के ढेर हटाओ, कपड़े के थैले घर लाओ!!  
पोलीथिन के ढेर हटाओ, कपड़े के थैले घर लाओ!!



## मंजिल तक

● श्रीमती मीना जोशी  
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग

कुछ खोना, रोना फिर पाना,  
जीवन पथ है बढ़ते जाना।  
जो मिला अधूरी राहों में,  
फिर बात वही दोहरा जाना।  
तुम कौन कहाँ से आये हो,  
किसका संदेश लाये हो।  
फिर वहीं अधूरा सा उत्तर,  
मैं पथिक मुझे बढ़ते जाना।  
मैं रूका अगर संसार रूका,  
मैं जागा तो जग जाग उठा।  
ये बात समझ में तब आयी,  
जब बीते दिन देते ताना।  
मेरी राहों में कांटे थे,  
कर्मों ने मुझको बाँटे थे।  
फिर हुआ वहीं सब जग जाना,  
जब सीख लिया बढ़ते जाना।  
जब राह बढ़ी मंजिल देखी,  
मंजिल ने मेरी राह तकती।  
मैं बढ़ी और भी तेजी से,  
वो पाया जिसको पाना था।  
तुम भी आगे बढ़ते जाओ,  
कुछ दे जाओ कुछ ले जाओ।  
जीवन का बन्ध यहीं जाना,  
मरने के बाद भी जाना।  
जीवन पथ पर बढ़ते जाना।



| निर्णय लेते समय, लक्ष्य का चयन करते समय या किसी से संबंध जोड़ते समय, यदि हम हृदय और मस्तिष्क  
| का समन्वय करना सीख लें तो उसका परिणाम सदैव सकारात्मक तथा आनन्द प्रदायक ही आएगा।

## घसियारिन

● मोहित सिंह नेगी  
शोधार्थी, हिन्दी

घसियारिनों के गीत लग गया है ,  
चौमास कोहरे से ढकी हैं चोटियां ।  
पहाड़ी झरने बहा कर ले जा रहे हैं पत्थर ।  
नम जमीन पर पेड़ों नीचे उग आए हैं,  
जंगली कुकुरमुत्ते और लेंगड़े ।  
घुटनों तक उग आई है घास ,  
दूर से सुनाई दे रहे हैं घसियारिनों के बाजूबन्द गीत ।  
गीत नहीं, ये गीत नहीं हो सकते,  
ये हैं, उनकी अंतरात्मा का रुदन ।  
उनके दिलों में जमा दुख जो गीत बनकर फूट रहा है,  
बाहर जैसे फूट रहे हैं पहाड़ी झरने ।  
चारों ओर ।  
वे उलाहना दे रही हैं अपने उस पिता को,  
कि उसको क्यों ब्याहा गया ।  
इस मुल्क जहाँ काम से टूटी जाती है कमर,  
जहां घास के लिये भटकना पड़ता है मीलों ।  
वे उलाहना दे रही हैं अपने उस भाई को,  
जो इस बार नहीं आया भिटौली लेकर उसके पास ।  
और उसकी सास इस बात पर देती रही उसे उलाहने,  
वे काटते हुए घास और गाते हुए गीत ।  
देखती है पल-पल में राह कहीं,  
कोई मैती आये लेने उसे और,  
वो घास काटने में व्यस्त उसे देख ही न पाए ।  
दोपहर हो गयी है घसियारिनें जा रहीं हैं,  
घर की ओर लिए घास के बोझ ।  
एकदम शांत जैसे गाकर बाजूबन्द उतर गया हो मन का बोझ ।  
दूर एक गधेरे में एक घसियारिन अब भी गा रही है,  
बाजूबंद आवाज़ तेज़ है ।  
शायद उसका दुःख हो और प्रगाढ़ ।  
शाम हो गयी है, जंगल भी खाली हो गया है,  
मगर अब भी गूँज रहे हैं वहाँ बाजूबन्द ।

कई सदियों पहले से आज तक के गाये हुए,  
चोटियों पर घाटियों में गधेरो में ।  
पहाड़ी जंगली सब्जी-  
गढ़वाल (उत्तराखण्ड) में घसियारिनों द्वारा गया जाने वाला गीत,  
चैत्र में मायके से आये उपहार व पकवान ।

## कविता - 2

जब कभी जाओ पहाड़ों पर तो,  
तुमको दूर से दिखाई देगी पहाड़ों पर घास काटती हुई स्त्री ।  
वो सम्भल कर रख रही होगी चट्टानों पर पाँव,  
और पत्थरों को पैर से हिलाकर ।  
मज़बूती जांच करते बढ़ा रही होगी कदम ।  
उसे होगा गिरने का भय और,  
गिरकर मरने का भय ।  
और मरने का भय इसलिए कि उसके बाद कौन लाएगा,  
कलोरी गाय को घास ।  
कौन दुहेगा मायके से मिली भैंस,  
दूसरे के दरवाजों पर डोलेंगे उसके भूखे बच्चे ।  
समय पर दवा न मिलने से कैसे ठीक होंगे,  
उसके बीमार ससुर और,  
इन सबको कैसे संभालेगी उसकी सास ।  
लेकिन इस सब से अनजान,  
कि अगर वो मर भी गयी पहाड़ से फिसलकर,  
तो कुछ दिन में ही दूसरा ब्याह कर लेगा उसका पति ।  
कलोरी गाय भी व्याने पर बेच दी जायेगी,  
मायके से मिली भैंस भी देती रहेगी दूध ।  
ससुर को भी दे देगा कोई न कोई दवा,  
और कुछ दिनों में बच्चे भी हो जाएंगे बड़े ।  
और फिर इन्हीं पहाड़ों पर,  
घास काटने आएंगी उनकी बहुएं ।  
और वे भी जाँचेंगी पैरों से हिलाकर पत्थरों की मज़बूती ।

## अधोहस्ताक्षरी

अपने को अधोहस्ताक्षरी लिखने वाले होते हैं पदासीन,  
जनसामान्य तो लिखता है स्वयं को प्रार्थी।  
अधोहस्ताक्षरी कहेंगे, सुनिश्चित करें!  
पालन करें! ऐसा करें! वैसा करें  
और प्रार्थी वे कहेंगे कृपा करें!  
आभारी रहेंगे! आपके आज्ञाकारी!  
अधोहस्ताक्षरी करेंगे अपने वे हस्ताक्षर।  
जो न उनके पासपोर्ट में हैं न बैंक अकाउंट में  
न स्कूल के रेकॉर्ड में,  
यहाँ तक कि उनके बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में भी।  
होंगे उनके नकली हस्ताक्षर और,  
अगर उन्होंने कर दिए इनीशियल,  
तो फिर पहचान हो जाएगी और गोपनीय।  
जब कभी प्रार्थी बन जाते हैं अधोहस्ताक्षरी,  
तो वे भी बदल देते हैं हस्ताक्षर।

## कविता - 4

दया से जूझना,  
अपनी असमर्थता में पड़ा रह सकता है।  
व्यक्ति कई दिन;  
अपनी बीमारी से जूझ सकता है।  
व्यक्ति कई मास;  
अपनी नाकामयाबी पर रो सकता है।  
व्यक्ति कई साल;  
मगर कितना भयानक होता है,  
किसी व्यक्ति का किसी की दया से जूझना।  
ये दर्द असहनीय होता है,  
किसी बीमारी में उभरते और,  
फूटते फोड़ों से भी अधिक,  
विकलांगपन से भी अधिक,  
और यहाँ तक कि व्यक्ति के कई,  
असफल प्रयासों के बाद  
समाज के दिये तानों से भी अधिक।  
जब व्यक्ति जूझता है दया से तो,  
चीरते हुए उसका वक्षस्थल दर्द जाता है उसकी आत्मा तक।



## दिल की बात

● नवीन पोखरियाल  
पूर्व छात्र

कहना चाहता हूँ तुमसे अपने दिल की बात,  
मगर तुम्हारे पास आकर कुछ और कह जाता हूँ।  
तुमको देखकर अपने आप को ही भूल जाता हूँ,  
फिर दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

कभी एकदम सुनसान गलियों में निकल जाता हूँ,  
शायद तुम मिल जाओगी किसी गली से निकलकर।  
सचमुच मिल जाती हो, निगाहें दो-चार भी होती हैं,  
मगर दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

कई बहाने ढूँँ लेता हूँ तुम्हारे घर आने के लिये,  
तुम्हारे घर आ जाता हूँ, तुमसे मिल भी लेता हूँ।  
मगर एकटक होकर देखने लग जाते हैं दोनों,  
और दिल की बात दिल में ही रह जाती है।

अब तो आ भी जाओ मेरे सूने जीवन में,  
कब तक दबा पाओगी दिल की बात।  
समय की रफ्तार देखकर तो चलो,  
वरना दिल की बात दिल ही में रह जायेगी।



## बैरागि

● निखिलेश उपाध्याय  
बी.ए. सन् 1979

पौन आब पुरवाइ हो या हो पछाइ..  
मकणि जै के सर्की, आब उ हिलाइ;  
झड़ झेल, घाम तात, ऐगे आब निडाइ..  
चै रयूं अगास कणिं, उचकै आपणिं कपाइ;  
फल, फूल, पतेल, जिंनगी भरीक कमाइ..  
कसक कस है गयूं, सब भुमियैकि रज्याइ;  
निझरक ठड़ी छौं, नि चैन कैकी दिनाइ..  
हौनम तापि लिया, मकैं दियो फरकाइ॥



आज़ाद परिंदे की तरह गगन को चूमा करते थे,  
एक वक्त था जब हम भी शाम में घूमा करते थे।

छह बजे क्रिकेट खेल जब घर जाना होता था,  
जाने से पहले ही घूमने निकल आना होता था।  
जोर-जोर से बोला करते थे गलियारों में,  
कभी गंभीर बातें होतीं, कभी गलियाना होता था।  
निकल पड़ता था घर से, दूध की बाल्टी हाथ लिए,  
अकेला नहीं, दो और मित्र अपने साथ लिए।  
हँसी-मज़ाक का वो माहौल सच में बहुत निराला था,  
कैसे कहूँ कि हमने वो सब पल बर्बाद किए ?  
बहुत याद आते हैं वो पल, शामें अब फीकी हैं,  
एक मित्र-मंडली सामने से जाती दिखी है।  
सोचता हूँ, ये हरकतें तो हम भी किया करते थे,  
हमें देख कर ही तो इन्होंने यह घुमक्कड़ी सीखी है।

किसी की परवाह न कर मदमस्त झूमा करते थे,  
एक वक्त था जब हम भी शाम में घूमा करते थे।  
चलती राह पर मिलते थे गाँव वाले और रिश्तेदार,  
संस्कारों से भरपूर, कहते थे सबको नमस्कार।  
गाँव के बड़े-बूढ़ों से हमारी अच्छी पटती थी,  
खुल के करते मौज, न मिलती थी कभी फटकार।  
अब चाहूँ शामें व्यर्थ करना, पर करूँ किसके संग ?  
किसी को बुलावा भेजूँ, तो बोले, “कर दिया समय भंग”।  
एक मित्र तो बेचारा व्यस्त है अध्ययन आदि में,  
एक मित्र को लग गया, मृगनयनी कन्याओं का रंग।  
वो सुनहरा दौर बीते कल में ही छूट गया,  
कौन है वो जो हमारे सुनहरे पल लूट गया ?  
शायद कोई नहीं; यह सिर्फ समय का चक्र है,  
कल बचपने पर था, आज जवानी की ओर घूम गया।

अंगीठी जला मच्छरों के लिए धूमा करते थे,  
एक वक्त था जब हम भी शाम में घूमा करते।

## विवाह नहीं करना

ऋतु प्रेम की आई रे, हैं सभी लोग प्रसन्न,  
मुझको न ये भाए, अति कठिन लागे जीवन।  
प्रस्ताव विवाह का आया है एक मेरे आँगन,  
सखियाँ मुझ से पूछतीं, व्याकुल काहे मन ?

आ कर मुझ से कहती हैं, वर तेरा अति विद्वान,  
निपुण कलाओं में बहुत सी, है बड़ा ही चरित्रवान।  
धन दौलत वाला भी है, शहर में हैं दो बड़े मकान,  
अवसर है ये, उम्र न देख, बढ़ेगा तेरे पिता का मान।

दो पुत्री हैं वो ब्याह चुके, जाने सब भली-भाँति,  
नहीं मिलेगा इससे बेहतर तुझे जीवनसाथी।  
एक दिन तो होनी है, इतनी भी कठिन नहीं शादी,  
लौ सा है मुख उसका, बन जा तू उसकी बाती।

प्रेम शब्द न जानूँ, कच्ची अभी है उम्र सखी,  
क्या करूँगी किताबों का, जो मैंने संभाल रखी ?  
बंधन में इस बंध कर हो जाऊँगी मैं दुःखी,  
इनका क्या कह देंगे, ब्याह हुआ, कन्या सुखी।

दृढ़ निश्चय और लगन से मुझको अभी पढ़ना है,  
ये ही तो कुछ वर्ष हैं, सफलता की ओर बढ़ना है।  
कहूँ अरज़ मेरी इनसे तो कहते, ‘इसको लड़ना है’,  
दीदियाँ तो मान गई पर मुझे विवाह न करना है।



# आज जो पीछे हटी तो..

● डॉ. सीमा अग्रवाल

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग  
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद, उ०प्र०

आज जो पीछे हटी तो,  
लक्ष्य फिर कैसे वरेगी ?  
लक्ष्य च्युत गर हो गयी तो,  
चाँद पर पग क्या धरेगी ?

हौंसलों को पंख देखकर  
छू सुता, अब मुक्त अंबर ।  
कह रहा क्या कौन उसको,  
सोचता क्या कुछ दिगंबर ?

बात जो सबकी सुनी तो,  
हानि अपनी ही करेगी ।  
मोह तज इन आभरण का,  
ये महज तन के लिए हैं ।

ज्ञान की नव कंदराएँ,  
खुल रही तेरे लिए हैं ।  
चूम लेगी भाल दुनिया,  
पाँव जब भू पर धरेगी ।

चल रहे हैं मेघ हरदम,  
चाँद काँधे पर टिकाए ।  
स्वेद-जल से सींच जग को,  
बीहड़ों में गुल खिलाए ।

खुद अगर दुख में रही तो,  
कष्ट क्या जग के हरेगी ?  
खोज ला हर गुप्त धन वह,  
जो बना तेरे लिए है ।

प्रार्थना है ईश से,  
शुभ कामना तेरे लिए है ।  
जान दे जो जिंदगी पर,  
जिंदगी उसको वरेगी ।

खुश रहे हर हाल में तो,  
रंज मन से दूर होंगे ।  
धीरता धारित हृदय में,  
क्षण सुखद भरपूर होंगे ।

मानसर में गुल खिलेंगे,  
हर कदम खुशबू झरेगी ।  
आज जो पीछे हटी तो,  
लक्ष्य कह कैसे वरेगी ?



## पढ़ो लिखो आगे बढ़ो

पढ़ो लिखो आगे बढ़ो,  
सोपान प्रगति के चढ़ो ।  
कमजोरियों के अपनी,  
दोष न औरों पर मढ़ो ।

रंग स्याह ये मजहबी,  
न हों तुम्हारे खून में ।  
कर्म, वत्स! ऐसे करो,  
हो जिंदगी सुकून में ।

घुस रीढ़ में समाज की,  
जो बढ़ रहीं कुरीतियाँ ।  
उन्हें मिटाने को तुम्हीं,  
बनो महा विभूतियाँ ।

जीवन उपयोगी बने,  
नियम सदा ऐसे गढ़ो ।  
बद आसुरी प्रवृत्तियाँ,  
नित तुम्हें भरमाएँगी ।

स्वार्थ-लोभ-मद की गलत,  
लत तुम्हें लगवाएँगी ।  
भ्रष्टताएँ अवनति के,  
गर्त तक ले जाएँगी ।

परंपराएँ मुँहचढ़ी,  
यद्यपि मुँह चिढ़ाएँगी ।  
असत्य कुमार्ग पर चले,  
पाठ नित सत्य के पढ़ो ।

पढ़ो लिखो आगे बढ़ो ।  
सोपान प्रगति के चढ़ो ।



## इच्छाशक्ति

● शीतल

एम.एस.सी. II<sup>nd</sup> सेमेस्टर

क्षमता अनंत मन अंतर में,  
मापन का कोई यंत्र नहीं,  
मानव क्षमता प्रसार सिंधु सी,  
मिलता जिसका कोई अंत नहीं।

रणधीर धरा पर धर्म में,  
कर्मभूमि पर किये कर्म में,  
मातृभूमि पर किये समर्पण में,  
विजयी हुआ हर प्रयोजन में।

कहीं देह को अंगार बनाया है,  
कहीं बुद्धि को धार बनाया है,  
मानव की यह असीम शक्ति,  
वाह! प्रकृति की क्या अद्वैत काया है।

साधना से सिद्धि तक निर्विकार,  
वीरता से प्रसिद्धि तक होकर सकार,  
मोक्ष से परमात्मा तक एकाकार,  
तपस्या से आत्मा तक साक्षात्कार।

जीवन को निर्वाण बनाकर,  
स्वयं को शून्य समाधि कर गया,  
अध्यात्म से तर्क विद्या तक,  
सर्व गंतव्य संभव कर गया।

दृढ़ इच्छाशक्ति से हर मर्ज से लड़ गया,  
मृत्यु के मुख से भी जीवित तर गया,  
यह सिद्ध कर असंभव कुछ भी नहीं,  
व्योम तारा गमन संभव कर गया।

संकल्प लिए दृढ़ निश्चय मन में,  
लक्ष्य पूर्ण कर चलता चल सभी,  
मानव क्षमता प्रसार सिंधु सी,  
मिलता जिसका कोई अंत नहीं।



## मासूमियत

● रुचि जोशी

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

मासूमियत प्यारी हुआ करती थी तब,  
बच्चे हुआ करते थे हम जब।  
किसी भी तुक-बेतुक बात को सच मान लेना,  
आकाश में चलते तारे को देख खुशी से चिल्ला जाना।

जाते हैं हम जहाँ-जहाँ,  
चाँद-सूरज आ जाते हैं कैसे वहाँ।  
क्या ये भी हमारे संग चलते हैं,  
चलो इनसे आगे बढ़ते हैं।

वो देखो पेड़ भी हम संग दौड़ रहे हैं,  
क्या वो भी अपना ठिकाना छोड़ रहे हैं।  
कहकर बुलाते थे हम चाँद को चन्दा मामा,  
पर घर तो कभी आए नहीं ये।

न पता हमें इनका ठिकाना,  
जब घूमते हैं हम, सब कुछ गोल-गोल नजर आता है।  
जैसे हम हैं रुकते, वैसे ही सब कुछ रुक जाता है।  
बेचारे हम नहीं सी जान,  
रहते थे इतने सारे सवाल्लों से परेशान।

पूछते थे सवाल ये किसी से हम जब,  
हँसकर टाल देते थे सब, कहकर बच्चों तुम्हारे सवाल हैं नादान।  
आज हुए हम जब बड़े हैं,  
दूर हुई सारी जिज्ञासा है।  
फिर भी आज जीवन उस प्यारी सी मासूमियत का प्यासा है।



अगर तुम्हें अपने मन के अनुकूल काम ना मिले तो जो कार्य तुम्हें मिले उसी में मन लगाने का प्रयास करो; क्योंकि कार्य करने से व्यक्ति कुछ-न-कुछ अवश्य सीखता है।

# संस्कृत अनुभाग

## सुभाषितानि

● इरम नाज

बी.ए. तृतीय वर्ष (षष्ठ सेमेस्टर)

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्नं सुभाषितम्।

मूढैः पाषाणखण्डेषु, रत्नासंज्ञा विधीयते ॥

पृथ्वी पर तीन रत्न हैं- पानी, भोजन, अच्छी वाणी (लेकिन) मूर्ख पत्थर के टुकड़ों को रत्न मानते हैं और समझते हैं।

सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रविः।

सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

सत्य से धारण की जा रही है- पृथ्वी। सत्य से तप रहा है- सूर्य और सत्य से वायु बहती है। सब कुछ सत्य पर प्रतिष्ठित है।

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।

विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुधरा ॥

दान, तप, वीरता, विज्ञान, विनम्रता और नीति (के विषय में) हैरान नहीं होना चाहिए (क्योंकि) पृथ्वी अनेक रत्नों वाली है। (रत्नों से भरी है।) अर्थात् पृथ्वी विविध रत्नों से भरपूर है।

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम्।

सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥

सज्जन लोगों के साथ ही बैठना चाहिए। सज्जन लोगों की ही संगति करनी चाहिए। सज्जन लोगों के साथ ही विवाद और मित्रता करनी चाहिए। (दोस्ती और दुश्मनी) असज्जन (बुरे लोगों) के साथ नहीं करना चाहिए। अर्थात् कोई भी व्यवहार नहीं करना चाहिए।

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥

धन और धान्य (अनाज) को खर्च करने में, विद्या को अर्जित करने में, भोजन और आपसी व्यवहार में लज्जा संकोच को त्यागने वाला सुखी रहता है।

क्षमावशीकृतिलोके क्षमया किं न साध्यते।

शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः ॥

क्षमा से संसार को वश में किया जा सकता है, क्षमा से क्या सिद्ध नहीं होता। जिसके हाथ में शान्ति रूपी तलवार है, बुरा व्यक्ति (दुर्जन) उसका क्या विगाड़ सकता है। अर्थात् शान्ति समस्त समस्याओं के समाधान का मार्ग है।



## विद्या - सदाचारयोर्महत्त्वम्

● जीतेन्द्र रावत

बी.ए. (षष्ठ सेमेस्टर)

**विद्यायाः महत्त्वम्-** अस्मिन् संसारे विद्या एव सर्वप्रधानं धनम् अस्ति। विद्याधनं चौरोऽपि चोरयितुं न शक्नोति। नृपः अपहर्तुं न शक्नोति। अन्यधनं भ्रात्रा विभज्यते, किन्तु विद्याधनं भ्रात्रा विभाजयितुं न शक्यते। धनं दानेन अपक्षीयते, किन्तु विद्यादानेन वर्धते। उक्तं च-

न चौरहार्यं न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।  
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधन-प्रधानम् ॥

विद्याः बहुविधाः भवन्ति यथा साहित्यं, सङ्गीतम्, कला, विज्ञानम् इति। विद्या तु निरन्तरम् अभ्यासेन परिश्रमेण वा प्राप्तुं शक्यते। विद्यया मानवस्य बुद्धिविकासः सम्भवति। विद्या विनयं प्रयच्छति, विनयात् पात्रता (योग्यता) वर्धते, पात्रतातः धनं प्राप्यते, धनतः धर्मं लभते, धर्मलाभाच्च सुखावाप्तिः क्रमशः सम्भाव्यते। विद्यायाः कोषः अद्वितीयो भवति।

आचारः परमो धर्मः आचारः परमं तपः।

आचारः परमं ज्ञानमाचारात् किं न साध्यते।

विद्या ददाति विनयं, विनायाद्याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥

साम्प्रतं सर्वत्र शस्त्राणां स्पर्द्धा वर्द्धते, अत एव मानवजीवनं संकटापन्नं विनाशोन्मुखं च सर्वत्र दरीदृश्यते। अतः ज्ञानस्य उपयोगः मानवकल्याणाय एव भवेद्, एतदर्थं गम्भीरतया विवेचनीयम्।

विद्यया मनुष्यस्य सम्मानं भवति। विद्वान् मनुष्यः सर्वत्र सम्मानं लभते। विद्याबलेनैव महर्षयः अमृतस्वरूपं भवन्ति अमरपदवीं वा प्राप्नुवन्ति। उक्तं च - विद्ययाऽमृतमश्नुते। सा विद्या या विमुक्तये।

**सदाचारः -** सताम् आचारः सदाचारः कथ्यते। सज्जनाः यद् आचरन्ति तदेव आचरणं सज्जनानाम् सदाचारः कथ्यते। सदाचरणम् एकम् अलौकिकं गुणोऽस्ति। समाजे सदाचारस्य व्यवहरणम् अनिवार्यम् अस्ति। सदाचारः मानवस्य अलौकिकं विभूषणं वर्तते। मूर्खाणाम् एव जीवनं सदाचारविहीनं भवति।

सदाचारी सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकम् आचरति। यः सत्यं वदति, नित्यं पितरौ अभिवादयति, गुरुजनानाम् आदरं करोति, परोपकारं च करोति, तस्य आयुः निरन्तरं वर्धते।

सदाचारस्य महत्त्वं सर्वेषु धर्मेषु समानरूपेण स्वीकृतम् अस्ति। अतः मानवतायाः विकासाय सर्वैः सदाचारः प्रयत्नपूर्वकं पालनीयः रक्षणीयश्च।



## संस्कृत भाषा का महत्व

● कृ. तान्या  
बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर

संस्कृत भाषा भारत की ही नहीं अपितु विश्व की सभी भाषाओं में प्राचीन भाषा है। संस्कृत भारत की अन्य भाषाओं का मूल स्रोत है। यह विश्व की एक विचित्र भाषा है। प्राचीन काल में यही भाषा भारत देश की राष्ट्रभाषा थी। 'सम्यक् कृतम इति संस्कृतम' इस व्युत्पत्ति से इस भाषा का नाम और महत्व स्पष्ट होता है। इसी भाषा में ही विश्व प्रसिद्ध वेद लिखे गये हैं। यह भाषा सर्वथा दोष रहित, परिष्कृत और श्रेष्ठ है। इसी कारण यह देवभाषा, सुरभारती, अमरभारती, गीर्वाणवाणी इत्यादि नाम से कही जाती है।

उपनिषद्, स्मृतिग्रन्थ, श्रीमद्भगवद्गीता, पुराणादि ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे गये हैं। संस्कृत भारतीय संस्कृति का सुन्दर शरीर है। यह भाषा वैदिक भाषा से निकाली हुई है। वैदिक भाषा संस्कृत भाषा का ही प्राचीन रूप है। विद्यमान सभी साहित्यों में इस भाषा का साहित्य सुन्दर, विशाल, सर्वश्रेष्ठ और सम्पन्न है। इस भाषा का साहित्य दो प्रकार सक उपलब्ध होता है।

1- वैदिक 2- लौकिक

भारत की सभी भाषाएँ स्पष्ट रूप से संस्कृत से ही निकली हुई हैं, भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण में तो इस भाषा का महत्व अत्यधिक ही है, भाषा वैज्ञानिकों के द्वारा विश्व के प्राचीन भाषाओं से इसका प्रगाढ़ सम्बन्ध स्वीकार किया गया है। भारत का सांस्कृतिक जीवन संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। विश्व की किसी भी भाषा का साहित्य, संस्कृत से अछूता नहीं है। इसीलिए संस्कृत भाषा का गौरव आचार्य श्रेष्ठ दण्डी ने इस प्रकार स्पष्ट किया है।

संस्कृत साहित्य, नव प्रकार के रसों से विभूषित है। और रीति, गुण, अलंकार आदि से अलंकृत है। इसका व्याकरण किस विद्वान को मोहित नहीं करता है। यहाँ गद्य पद्य में भाव बोध और लालित्य स्थान-स्थान पर प्रकट होता है। चरित्र-निर्माण की जैसी शिक्षा अथवा प्रेरणा संस्कृत साहित्य प्रदान करता है वैसी प्रेरणा अन्य साहित्य नहीं देता है।



## हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव वैदिक साहित्य

● कृ. तान्या  
बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर

इस निबन्ध में हिन्दी-साहित्य (1400-1600 ई.) पर संस्कृत-साहित्य के प्रभाव की खोज की गई है परन्तु जब हम संस्कृत साहित्य की बात करते हैं। तो उससे वैदिक साहित्य को पृथक् समझ कर नहीं, वरन उसे वैदिक साहित्य का ही एक सिल-सिला मान कर। मैकडोनल एवं विण्टरनिज आदि विद्वान् जो वैदिक साहित्य को संस्कृत साहित्य से भिन्न मानते हैं। संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखते समय उसे छोड़ नहीं देते। इसका एक मात्र कारण है संस्कृत के सम्बन्ध में वैदिक साहित्य की अनिवार्यता, दोनों का परस्परिक सम्बन्ध मूल और दक्ष सा है। मूल के बिना वृक्ष की शाखाओं की कल्पना केवल भ्रम है। हमें यह मान्य है कि व्याकरण ने भाषा को परिशुद्ध किया और इसी से व्याकरण नियंत्रित भाषा संस्कृत कहलाई परन्तु जिस भाषा का परिशोध हुआ उसे एक साथ कैसे भुलाया जा सकता है। पाणिनि के व्याकरण ने भाषा को परिशोध हुआ, परन्तु रंग-भंग में शाखा में वैदिक साहित्य का महत्वपूर्ण कार्य है।

विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य (वाङ्मय) में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्व है यह महत्व अनेक कारणों और दृष्टियों से है भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की संपूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से आज उपलब्ध है।



# स्कन्दपुराणानुसार मानसखण्डान्तर्गत नन्दादेवी का माहात्म्य एवं पौराणिकता

● डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल  
असि० प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)

उत्तराखण्ड को 'देवभूमि' भी कहा जाता है। यह भारत के उत्तरी भाग में अवस्थित राज्य है। यह अपने धार्मिक महत्व, पौराणिक महत्व, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं समृद्ध संस्कृति के लिए विश्वविख्यात है।

उत्तराखण्ड का देवभूमित्व इसलिए है क्योंकि यहाँ बट्टीनाथ, केदारनाथ गंगोत्री, यमुनोत्री आदि सहित चार धाम, प्राचीन मन्दिर और तीर्थ स्थलों की भूमि (घर) है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद्भारतं नाम, भारती यत्र सन्ततिः।। (विष्णुपुराण)

उत्तराखण्ड "उत्तरी भाग/क्षेत्र अर्थ में प्रयुक्त है। प्राचीन हिन्दूग्रन्थों में पुराणादि (स्कन्दपुराण) में केदारखण्ड (वर्तमान गढ़वाल) और मानसखण्ड (कुमाऊँ) के रूप में जानते हैं।

केदारखण्ड को वर्तमान में "गढ़वाल क्षेत्र" के नाम से जानते हैं। यहाँ अनेक पौराणिक मन्दिर स्थित हैं, जैसे- चार धाम (बट्टीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री) पंचकेदार आदि विशेष प्रसिद्ध हैं- ये भगवान शिव को समर्पित हैं और महाभारत कालिक हैं। (1-केदारनाथ 2-महामहेश्वर 3- तुंगनाथ 4- रूद्रनाथ 5- कल्कलेश्वर (सर्वप्राचीन)। हरिद्वार में स्थित तीन शक्तिपीठ- 1- मनसादेवी 2- चण्डीदेवी 3-मायादेवी।

2- कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय क्षेत्रों को कैलाश मानसरोवर की भूमि मानकर इसे मानसखण्ड कहते हैं।

● मानस खण्ड कुमाऊँ का पौराणिक नाम ● मानसखण्ड स्कन्दपुराण का एक भाग। इसमें कुमाऊ मण्डल के धार्मिक एवं पौराणिक महत्व वर्णन के साथ मन्दिरों का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया गया है।

● मानस खण्ड में विविध प्राचीन मन्दिर और तीर्थ स्थल आदि स्थित हैं, जो इस क्षेत्र की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं-

कुमाऊँ के छः जनपदों के पौराणिक मन्दिर-

1- नैनीताल - गोलज्यू मन्दिर, नैनादेवी मन्दिर, गर्जिया देवी मन्दिर, कैंचीधाम, हनुमान मन्दिर।

2- अल्मोड़ा जनपद के पौराणिक मन्दिर - चितई गोलज्यू

मन्दिर, जागेश्वर महादेव, कटारमल सूर्यदेव मन्दिर, कसार देवी मन्दिर, नन्दादेवी मन्दिर। मानसखण्ड के 21वें खण्ड में इसकी भौगोलिक सीमा निर्धारित है। चन्द्रराजाओं द्वारा जीर्णोद्धार एवं अमाध्याराज्ञा शालीवाहन द्वारा निर्माण।

3- पिथौरागढ़ जनपद के पौराणिक मन्दिर- पातालभुवनेश्वर, हाटकालिका मन्दिर, बेरीनाग मन्दिर, मलेनाथ, थालकेदार मन्दिर।

4- बागेश्वर जनपद के पौराणिक मन्दिर -व्याघ्रेश्वर बागनाथ महादेव, बैजनाथ (गोमती -गरुण) बट्टीसंगम, (कामदेव के पतन के बाद पार्वती से विवाह करने जाते समय गणेश पूजन), कोटभ्रामरी मन्दिर।

5- चम्पावत जनपद के पौराणिक मन्दिर - पाताल रूद्रेश्वर गुफा, गोलज्यू मन्दिर, गोरलचौड़ मैदान, पूर्णागिरी मन्दिर, बाराही मन्दिर, देवीधुरा, रीठा साहिब, बालेश्वर।

6- ऊधमसिंह नगर जनपद के पौराणिक मन्दिर- चैतीधाम मन्दिर, अटरिया देवी मन्दिर और नानकमत्ता साहिब।

● उत्तराखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदर्शिता के फलस्वरूप गढ़वाल के धामों की तर्ज पर "मानस खण्ड" मन्दिर माला मिशन के तहत 22 अप्रैल 2024 को उक्त मन्दिरों को धार्मिक, पर्यटन एवं तीर्थयात्रा हेतु विकसित हेतु घोषणा है।

(इत्यादि 16 मन्दिर, मन्दिर माला मिशन के तहत विकाशील हैं)।

ऋषियों ने महर्षि वेदव्यास जी के मानसाखण्ड के वृत्तान्त श्रवण के अवसर पर नन्दादेवी का वृत्तान्त श्रवण किया।

मुनियों के कहने पर व्यास जी ने उत्तर दिया कि हे मुनिवरो नन्द पर्वत से आरम्भ कर पश्चिम नेपाल के "काकगिरि" पर्वत तक "मानसखण्ड" प्रसृत है-

नन्दपर्वतमारभ्य यावत् काकगिरिः स्मृतः।

तावद्वै मानसः खण्डः ख्यायते मुनिभिर्द्विजाः॥

(स्कन्द.मा.-03, अध्याय 22 श्लोक-3)

विद्वानों ने महाहिमालय को पश्चिमाभिमुख बतलाया है उसके दक्षिण दिशा में “नन्दगिरि” है। “नन्दगिरि” पर्वत पर देवों द्वारा पूजित “नन्दादेवी” विराजमान हैं। इनके दर्शन मात्र से ही मनुष्य ऐश्वर्यवान् एवं भाग्यशाली हो जाते हैं। इस भूमण्डल पर “नन्दा देवी” के समान वरदायिनी एवं शुभफलदात्री अन्य कोई भी देवी-देव नहीं हैं-

पश्चिमाभिमुखः साक्षात् हिमाद्रिः ख्यायते बुधैः (04)  
तस्य दक्षिणभागे वै नाम्ना नन्दगिरिः स्मृतः।  
तत्र नन्दा महादेवी पूज्यते त्रिदशैरपि।  
नास्ति नन्दासमा देवी भूतले वरदा शुभा।

(स्कन्द मा. (05)

आगे व्यास जी कहते हैं कि हे व्रतपरायण मुनियों। वह देवी “नन्दगोप” के घर में जन्मग्रहण किया। कंस ने शिलापृष्ठ पर उन्हें पटका, तभी वह आकाशमार्ग से पुण्यात्मा नन्द पर्वत पर पहुँच गयीं। तभी से देवताओं ने भी उनकी पूजा-अर्चना की। नन्दा देवी की पूजा कर मनुष्य पापमुक्त हो जाते हैं। नन्दा क्षेत्र के समान कोई अन्य पवित्र और फलदायक, अश्वमेघ यज्ञ के समान क्षेत्र नहीं है। नन्दादेवी पर ही मेनका नाम की ब्राह्मणी ने योगमाया (नन्दादेवी) की कृपा से स्वर्ग प्राप्त किया-

“नन्दगोपगृहे देवी अवतीर्य न संशयः।  
कंसेन पोथिता पुण्या शिलापृष्ठे यतव्रताः ॥ 07  
जगामाकाशमार्गेण पुण्यं सा नन्दपर्वतम्।  
ततः प्रभृति वै विप्राः पूज्यन्ते त्रिदशैरपि ॥  
“नन्दां सम्पूज्य मनुजाः पातकान् वितरन्ति हि।  
नन्दाक्षेत्रसमं क्षेत्रं न पश्यामि द्विजोत्तमाः ॥  
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं भवति दर्शनात्।  
तस्मात् कोऽन्यतमो विप्राः क्षेत्रोऽस्ति भुवमण्डले ॥  
यत्रैका ब्राह्मणी काचित् मेनका नाम नामतः।  
सम्पूज्य योगमायां तां पुंश्चली सा दिवंगता ॥

(स्क.मा.08-11)

ऋषियों ने व्यास जी से पुनः जिज्ञासा की - वह पुंश्चली ब्राह्मणी किस प्रकार धर्म में प्रवृत्त होकर ‘नन्दा’ को जाना। उसने किस विधि-विधान से ‘नन्दा देवी’ का पूजन किया।

महर्षि वेदव्यास जी ने उत्तर दिया कि- प्राचीनकाल में सत्य युग के प्रारम्भ में “पुलस्त्य वंश में उत्पन्ना ब्राह्मणी मेनका” नाम से विख्यात हुई। वह रूपवती एवं विशालाक्षी भी थी। उसका पालन-पोषण पिता ने किया। युवती होने पर

पिता द्वारा अत्रि-कुलोत्पन्न “सन्तन” नामक ब्राह्मणश्रेष्ठ के साथ उसका विवाह किया गया। कुछ दिन बाद पत्नी को घर पर छोड़कर “वह” “सरयू तट” पर स्नानार्थ जाने पर दैववश एक “नाके” मगरमच्छ ने जल के अन्दर खींच लिया। पतिव्रता मेनका ने वज्रपात के सदृश पतिमरण को जानकर सती होने का निश्चय किया। किन्तु गर्भवती होने पर वैदिक विद्वानों ने रोका। वह “दसवें महीने” देवपुत्र के समान पुत्र को जन्म दिया। मेनका ने अपने पुत्र का पालन-पोषण किया। कल्पवृक्ष के समान ब्राह्मण रूपधारी भीरू (वनेचर) ने हिमालय तट पर चिरकाल तक रमण किया।

ब्राह्मण प्रतिदिन नन्दा देवी की पूजा करता था और पर्वतवासिनी जगन्माता नन्दा उस बनेचर को प्रतिदिन “स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करती थी”।

पुरा कृतयुगस्यादौ पुलस्त्यस्य कुलोद्भवा।  
बभूव ब्राह्मणी काचिन्मेन का नाम कामतः ॥  
ददौ विप्राय - चाग्राय अत्रिगोत्रोद्भवाय च।  
सुतृप्ताय सुयोग्याय सन्तनाख्याय वै द्विजाः ॥  
निमज्जय ततः पुर्व्या सरयूं ब्राह्मणोत्तमः।  
गृहीत्वा जलमध्यं वै मकरः प्रविवेश ॥  
रमे च सुचिरंकालं स्वर्णभूषणभूषितः।  
प्रत्यहं पूजयामास स नन्दां ब्राह्मणीपतिः ॥  
तस्मै नन्दा महादेवी स्वर्णभारं दिने-दिने।  
ददौ तुभ्यं जगद्वात्री नन्दपर्वतवासिनी ॥  
प्रातोत्थाय व्रजन्तं तं नीत्वा गन्धाक्षतादिकम्।

(स्क0मा0 13-39)

मेनका ने बनेचर से पूछा कि तुम गन्ध-पुष्पादि लेकर प्रतिदिन कहाँ जाते हो और बदले में स्वर्णादि लाते हो। बनेचर ने कहा कि- भद्रे! पुण्यस्थल नन्दपर्वत पर भुवनेश्वरी नन्दा निवास करती है। मैं गन्ध-अक्षत-पुष्पादि पूजन सामग्री से नन्दा की पूजा करता हूँ उससे प्रसन्न होकर वह प्रतिदिन स्वर्ण राशि प्रदान करती है। मेनका द्वारा पूजा-विधान पूछने पर पूर्ववत् बताया बनेचर ने “इतो यो दृश्यते भद्रे पुण्यो नन्दगिरीः शुभ

तत्र नन्दा महादेवी जागर्ति भुवनेश्वरी।  
पूजयामि महाभागां नन्दां पर्वतवासिनीम् ॥  
संप्रसन्ना महाभागा स्वर्णभारं दिने-दिने।  
प्रयच्छति न सन्देहः सत्यं ते व्याहृतं मया ॥

(स्क0मा0 43-45)

भील (वनेचर) ने मेनका से कहा कि मेनके! नन्द पर्वत पर दो शिखरों के बीच में “नन्दासर” है, वहाँ स्नान करके “नन्दिकेश” महादेव का पूजन करना, उसके बाद “नन्दादेवी” पूजा करने से प्रसन्न होकर लौकिक एवं पारलौकिक फल देती हैं-

योऽसौ नन्दगिरिः साक्षात् मया चयातो हि मेनके ।  
तत्र शिखरयोर्मध्ये पुण्ये नन्दासरः स्मृतः ॥  
निमज्ज्य विधिवत्तत्र नन्दिकेशं हरं ब्रजेत् ।  
नन्दिकेशं हरं तत्र सम्पूज्य विधिपूर्वकम् ॥  
ततोऽधिरुस्य शिष्टं नन्दां सम्पूज्य मेनके ।  
ऐहिकामुष्मिकं चैव फलं पुण्यं प्रयच्छति ॥

(स्क०मा० 47-51)

व्यास जी ने ऋषियों से कहा कि मेनका ने नन्दादेवी का प्रभाव जानकर पापों के निवारण हेतु नन्दासरोवर में स्नान के पश्चात् नन्दिकेश की पूजा करने लगी। प्रार्थना करती हे नारायणि! हिमालयकल्प मुझ अधर्मी पुंश्चली के पापों को दूर करो-

पुंश्चल्याधर्म हि नार्याः पातकान् में विनाशय ।  
इति देवी महामायां प्रार्थयन्ती यतव्रता । (स्क० मा० 55)  
मृत्यु के पश्चात् मेनका को यमलोक ले जाने पर नन्दा ने काली को कहा कि यमराज उसे आज ही ले जाये।

नन्दा की बात मानकर काली यमराज के पास जाकर भयंकर रूपधारण कर मेनका को मुक्त करने को कहा-

ततः काली महामाया भवानीवचनं शुभम् । प्रगृह्य प्रपया  
तव यत्र वै स महातपः ॥ (स्क०मा० 60)

यमराज ने काली से कहा भद्रे! पतिव्रता स्त्रियों के लिए देवलोक वास नियत और पापी पुंश्चली स्त्रियों का यमलोक वास है। पतिव्रतानां नारीणां वासो वै देवमण्डले। पुंश्चलीनां चवासो निवासः कल्पितः पुरा ॥ (स्क०मा० 64-65)

यम की वाणी सुनकर काली पुनः बोली-यमराज! नन्दासरोवर, नन्दपर्वत पर भगवान विष्णु उनके ऊपर विराजमान

नन्दा देवी (पूजन) का फल तुम्हें अज्ञात है। अर्थात् ब्रह्महत्यादि पापों से भी निवृत्त होकर ‘नन्दादेवी’ के पूजन एवं भजन करने से मुक्ति सम्भव हो जाती है।

“नन्दासरस्य माहात्म्यं त्वया न ज्ञायते यम!

तथैव पर्वते पुण्ये देवी पूजनजं फलम् ॥ (स्क०मा० 68)

ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते यत्र वै जनः।

यत्र पर्वतरूपेण साक्षाद्वेवो जनार्दनः ॥ (स्क०मा० 69-71)

महर्षि वेदव्यास जी ने कहा- ऋषियों! जंजीरों से जकड़ी

मेनका को काली से मुक्त कराकर पर्वत पर काली के स्पर्श होते ही मेनका दिव्यरूप धारण कर लक्ष्मी समान शोभित हुई। तब त्रिशूलधारिणी कालिका ने उसको साथ लेकर नन्दा के पास गई और विमान चढ़ाकर स्वर्ग प्राप्त कराया। आज भी मेनका अप्सराओं से सेवित स्वर्गमण्डल पर दृष्टिगोचर होती है-

इत्युक्त्वा तं तदा काली गृहीत्वा मेनकां ततः।

लौहपाशैर्निबद्धां तां विमुच्य प्रययौ गिरिम् ॥ (72)

ततस्तां मेनकां देवीं ददौ स्वर्गगतिं शुभाम्।

अधिरुह्य विमानाग्रे सेविता नायिकागणैः।

(स्क०मा० 72, 75)

कुछ समय बाद भील (वनेचर) ने भी महामाया की कृपा से शिवसायुज्य प्राप्त किया।

ऐश्वर्यमतुलं चात्र भुक्त्वा भोगान् यथेप्सिताम्।

जगामान्ते शिवपुरं महामाया प्रसादतः ॥ (स्क०मा० 77)

महर्षि व्यास ऋषियों से कहते हैं कि- नन्दाख्यान श्रवण आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, सुख और सम्पत्ति वर्धक है। इस पवित्र एवं श्रेष्ठ नन्दामाहात्म्य का पाठक, श्रोता जन भुक्ति और मुक्ति पाते हैं- आयुरारोग्यमैश्वर्यं सुखसम्पद्विवर्धनम्।

“य इदं परमं पुण्यं नन्दामाहात्म्यमुत्तमम्।

शृणुयाद् वा पठेद्वापि भुक्तिं मुक्तिं विन्दति ॥

(स्क०मा० 79)



उस शरीर का क्या मूल्य, जिसमें जीवन न हो; उस जीवन का क्या मूल्य, जिसमें ज्ञान न हो,  
और उस ज्ञान का क्या मूल्य, जिसका उपयोग न हो।

# English Section

# No Fail Policy And Its Impact

● Dr. Gurpreet Singh

Asst. Prof., Dept. of Psychology

The “No fail policy,” also referred to as the “no detention policy,” was introduced in India under the Right to Education Act (RTE) of 2009. This policy mandates that no child should be held back or failed in any grade up until the end of elementary education (up to Class 8). The intention behind this approach is to reduce stress and anxiety associated with examinations, promote continuous learning, and ensure that children have access to education without the fear of failure.

Absence of failure is not good thing. We have now instilled in the minds of students that they are superior in every way because they cannot be failed. Students are being misled to believe that they have cracked some secret code for success and are invincible. So till class VIII even if they can barely spell or write they keep passing and suddenly next year reality kicks. Their young minds are not ready to deal with this sudden jolt of reality and it leads to adverse effects, which may scar them for life.

A “no fail” policy, often implemented in educational settings, aims to create an environment where students are encouraged to engage with the material without the fear of failing. This approach can have several positive impacts on learning and student development:

## Positive Impacts of a No Fail Policy

### 1. Encourages Risk – Taking and Exploration :

Students are more likely to take intellectual risks, explore new ideas, and engage in creative thinking when they know that their efforts won't result in failure. This can lead to greater innovation and problem-solving skills.

### 2. Reduces Anxiety :

A no fail policy can help diminish test anxiety and stress associated with high-stakes assessments. When students feel less pressure about grades, they may be able to focus more on learning rather than worrying about their performance.

### 3. Promotes Persistence:

Knowing that they won't be penalized for failure encourages students to persist through challenges and setbacks. This resilience is crucial not just for academic success but also for personal growth.

### 4. Fosters a Growth Mindset:

A no fail approach aligns with fostering a growth mindset – the belief that abilities can improve over time through effort and practice. Students learn that mistakes are part of the learning process rather than definitive endpoints.

### 5. Enhances Engagement :

Students may become more engaged in their education when they feel safe from penalty for failing tasks

or exams – they can focus on understanding content deeply rather than just aiming for a passing grade.

### 6. Individualized Learning Opportunities :

With a no fail policy, educators can tailor instruction based on each student's specific needs without the rigid classification of “pass” or “fail.” This allows teachers to provide additional support where necessary.

### 7. Improves Relationships Between Educators and Students :

When students feel supported by their teachers – who emphasize learning over grading – relationships tend to improve, creating a more positive classroom environment conducive to collaboration.

### 8. Encourages Lifelong Learning :

By normalizing the idea that making mistakes is part of the educational journey, students are likely to develop an appreciation for lifelong learning beyond school walls as well; this attitude encourages continuous self-improvement throughout life.

### 9. Inclusivity :

It creates an inclusive atmosphere where all learners feel valued regardless of their starting point or pace; this is especially beneficial for those who struggle academically due to the perhaps differences in background knowledge or cognitive processing styles!

### 10. Collaborative Learning Opportunities :

When assessing isn't solely tied up within competitive frameworks, collaborative projects often arise as peers work together towards shared goals fostering teamwork skills among participants enhancing social competencies vital later down job markets too!

## Negative Impacts of a No Fail Policy

A “no fail” policy, can have several negative psychological effects on students, as students may not feel the need to strive for excellence if they are guaranteed to pass regardless of their performance; however, it can also potentially reduce anxiety and stress related to academic failure, particularly for struggling students, allowing them to focus more on learning without the pressure of failing. The “no fail policy,” while designed to promote inclusivity and reduce stress among students, has faced criticism and highlighted several potential negative impacts. Here are some of the primary concerns associated with the implementation of this policy:

### 1. Complacency and Lack of Motivation :

Without the fear of failing or being held back, some students may not feel compelled to engage deeply with their studies. This can lead to a mindset where effort is

not prioritized. Students might settle for minimal effort, leading to a lack of challenge in their learning experiences.

## 2. Quality of Education :

The absence of traditional examinations could result in lower academic standards if teachers feel pressured to promote every student regardless of performance. Critics argue that allowing students to progress without meeting certain benchmarks diminishes educational rigor and undermines accountability within schools' curricula. If passing becomes too lenient, it risks watering down essential skills required for future success both academically – and professionally – after graduating into larger societal frameworks beyond school walls later down life paths chosen ahead.

## 3. Transitioning Difficulties :

When students eventually face more rigorous evaluations after Class 8 (such as board exams), they might struggle with anxiety and stress after years without high-stakes assessments. Students who have been promoted without facing challenges may find it difficult to cope when they start encountering competitive educational environments later on. Ultimately lead to adjust mental issues.

## 4. Neglecting Individual Needs and Struggling Students Left Behind :

While all students are promoted, those who fall behind academically might not receive adequate support tailored to their needs, leading them further away from core competencies.

## 5. Lack of Remedial Support :

In an environment focused on promotion rather than remediation or intervention strategies for struggling learners could lead these individuals feeling lost within large classrooms lacking individualized attention necessary for academic growth.

## 6. Teacher Perspectives and Workload :

Educators may experience increased pressure as they attempt to manage diverse learning levels within classrooms without a clear mechanism for accountability through traditional assessments.

## 7. Social Implications :

As some peers advance academically while others do not achieve mastery despite being promoted together, feelings like shame or embarrassment could arise among certain groups increasing social divides based solely on academic capabilities over time instead fostering unity amongst classmates encouraging teamwork collaboration building essential life skills too towards success beyond academics.

The no-fail policy in India, while aimed at fostering a more supportive educational environment, has multifaceted effects on the mental health of adolescents. On one hand,

it helps reduce exam related stress and promotes continuous learning; on the other hand, it may inadvertently lead to complacency and social pressures that can affect students' mental well-being.

To fully harness the benefits of this policy while mitigating its downsides, it's essential for educators and policymakers to implement robust support systems that identify students struggling or emotionally. Regular assessments that focus not just on knowledge but also on skills development can help in this regard. Educators should foster an environment where effort is valued over grades to encourage resilience among students. Teaching coping strategies for failure and emphasizing lifelong learning can help students better manage setbacks.

Expanding access to counseling services within schools is crucial for supporting adolescents' emotional needs. These resources should be made available not only during crises but as part of regular school life. Raising awareness among parents about importance of balanced academic expectations can lessen external pressures placed on children regarding performance in subsequent classes or board examinations. Encouraging participation in extracurricular activities helps develop skills beyond academics, which contributes positively to self-esteem and overall mental health.

## Conclusion

While implementing a no-fail policy does raise questions regarding accountability and standards, its positive impacts on student well-being, engagement, persistence in learning processes far outbalance potential downsides if done thoughtfully. Thus ensuring balance between motivation focused practices alongside maintaining rigorous expectations while nurturing holistic growth remains critical during such implementations moving forward within educational landscapes today while the no-fail policy was established with good intentions aimed at creating an inclusive environment for learning, its execution has uncovered various challenges that need addressing comprehensively – both through enhanced support systems targeting individual learners' needs alongside maintaining rigorous standards ensuring equal opportunities across educational landscapes present today! Thus balancing emotional well-being alongside effective teaching methodologies will remain key elements driving future discussions surrounding improvements required within India's education system moving forward sustainably benefiting generations yet-to-be. Balancing academic expectations with emotional support will be vital as India continues navigating these challenges within its education system.



**Happiness is the only good, reason the only torch justice the only worship, humanity the only religion and love the only priest.**

**-R.L. Lingersoll**

# Concept of Urban Gardens in India

● Dr. Siraj Ahmad

Asst. Prof., Dept. of Geography

Urban gardening system in India have been gaining popularity in recent years due to increasing urbanization, rising awareness of sustainability and the need for fresh, homegrown food. Various models of urban gardens are being developed in cities, adapting to space limitations and resource constraints. Urban garden is a garden which is established in urban areas where people grow vegetables, fruits and flowers. These gardens are generally in residential areas, offices, public places or rooftops. The purpose of urban gardens is to make the environment green and local food production. It aims to promote and provide opportunities for people to engage through gardening. It is used to transform vacant lots, improve the environment and provide fresh and organic foods to urban residents.

Urban Garden is a garden space in cities or densely populated areas where individuals or communities grow plants, vegetables, fruits or flowers. Urban gardens are often small in scale and make use of limited space such as rooftop, balconies, backyard or vacant lots. They can serve multiple purposes, including providing fresh produce, promoting environmental sustainability and fostering community interaction. Urban gardens can take many forms, such as rooftop gardens, vertical gardens, hydroponic setups and even indoor gardens.

## Key Features of Urban Garden

### 1. Limited Space Utilization

Urban Gardens maximize the use of small spaces, often incorporating vertical gardening, container gardening and raised beds. It often utilizes rooftops, balconies and small plots in community areas.

### 2. Sustainable Practices

These gardens often focus on sustainable practices like composting, organic farming, rainwater harvesting and the use of organic fertilizers and pesticides. It is using recycled materials to reduce the environmental footprint.

### 3. Environmental Benefits

Urban gardens help reduce the urban heat island effect, improve air quality and support biodiversity by attracting pollinators like bees and birds.

### 4. Food Security

In many urban areas, these gardens provide fresh, healthy and affordable food to residents, addressing issues like food deserts.

### 5. Mental and Physical Well-being

Gardening in urban spaces provides residents with the opportunity to connect with nature, reduce stress and engage in physical activity.

### 6. Space Optimization

Urban gardens make efficient use of limited space through techniques like vertical gardening, rooftop gardens and raised beds to grow plants in small or unconventional areas.

### 7. Community Involvement

Many urban gardens, especially community gardens are designed for collective use, encouraging collaboration among residents, promoting shared responsibility and fostering social bonds. In this process neighbors come together to share responsibilities, resources and harvests, fostering a sense of community.

### 8. Local Food Production

Urban Gardens provide fresh, local produce, helping to combat food insecurity and reduce dependence on store-bought or imported food, especially in areas known as food deserts.

### 9. Green Infrastructure

These gardens contribute to green urban spaces, helping to mitigate heat islands, improve air quality and enhance biodiversity by attracting pollinators like bees, butterflies and birds.

### 10. Water Efficiency

Due to limited resources, urban gardens often use water-efficient systems, including drip irrigation, greywater systems, or hydroponics, to minimize water usage.

### 11. Educational Opportunities

Urban gardens serve as educational spaces for learning and teaching centres where people can gain knowledge about sustainable agriculture, nutrition, horticulture skill and environmental awareness particularly in schools or community programs.

### 12. Health and Well-being

Gardening offers physical exercise, reduces stress and creates a therapeutic environment for urban dwellers, contributing to improved mental and physical health.

### 13. Aesthetic and Recreational Value

Urban gardens enhance the beauty of city spaces and provide recreational spots for residents to relax and unwind amidst greenery.

### 14. Diverse Plant Selection

Urban gardens often features a mix of ornamental plants, edible herbs, vegetables, and fruits catering to both aesthetic appeal and food production.

### 15. Pollinator Habitats

Urban gardens can support local biodiversity by providing habitats for pollinators like bees, butterflies and birds in an otherwise concrete-dominated environment.

#### 16. Green Space for Well-being

These gardens contribute to the mental and physical health of residents, offering a peaceful retreat, reducing stress and promoting physical activity.

#### 17. Innovative Design

Urban Gardens often include creative design solutions like vertical gardening, hydroponics, container gardening and raised beds to optimize the use of space.

#### 18. Edible Plants

Many urban gardens focus on growing vegetables, herbs and fruits providing fresh produce for the gardeners.

#### 19. Green Infrastructure

Many urban gardens incorporate recycled or repurposed materials for planters, composting bins and structures.

#### 20. Use of Recycled Materials

Many urban gardens incorporate recycled or repurposed materials for planters, composting bins and structures.

#### 21. Social and Educational Aspect

They serve as platforms for learning about sustainable gardening, healthy living and environmental stewardship.

These features make urban gardens valuable assets for enhancing the quality of life in densely populated areas. It is an essential aspect of modern city life, balancing environmental and social needs in urban settings.

### Types of Urban Gardens

1. **Rooftop Gardens:** Many urban homes and apartments are transforming unused rooftops into green spaces. People grow vegetables, herbs and flowers on rooftops to make the most of limited space.
2. **Terrace Gardening:** These are Popular in cities like Bangalore, Mumbai, Delhi and Chennai. Families and individuals grow vegetables and herbs on their terraces in containers, post or raised beds. Terrace gardening often includes drip irrigation or self-watering systems to optimize water use. Common Crops are Tomatoes, spinach, mint, chilies, coriander and other small vegetable.
3. **Community Gardens:** Public parks, vacant lots or shared urban spaces. Local groups or NGOs collaborate to create shared gardening spaces. These spaces are used by people who don't have private gardening spaces and serve as hubs for community interaction.

4. **Vertical Gardens:** This is space-saving solutions. Especially useful in cities with limited land. Vertical gardening uses walls, balconies or vertical structures to grow plants in layers or on trellises. In this method people uses pots, hydroponic systems, or vertical shelves to grow a wide range of crops like herbs, lettuce, spinach and ornamental plants.
5. **Hydroponics and Aquaponics:** These soilless farming techniques are gaining traction in Indian cities like Mumbai, Delhi and Bangalore. Hydroponics uses nutrient-rich water to grow plants, while aquaponics integrates fish farming with plant growth.
6. **Balcony Gardening:** Residents grow plants in pots or containers on balconies. Typically, ornamental plants, small herbs and vegetables like chili, coriander and tomatoes. This type of garden enhances the aesthetic value of living spaces, purifies air and offers fresh produce in small spaces.
7. **Government and NGO Initiatives:** Several Indian cities have started prompting urban farming. For example, in Kerala local authorities and the government are encouraging rooftop farming. Indian cities are promoting urban gardening through various initiatives programs like "My Plant, My Pride" in Pune and rooftop garden schemes in Delhi encourage residents to adopt sustainable gardening practices.

Organizations like 'Uttarakhand Environment Protection and Pollution Control Board', "Safe Harvest" and 'Urban Leaves' are working to promote urban gardening through training and awareness programs. Some state governments offer subsidies for rooftop farming kits, organic seeds and fertilizers.

8. **Organic Urban Farming:** Urban gardeners in India increasingly adopt organic farming techniques to avoid chemicals and promote healthy food production. Many urban dwellers are now using composting to turn kitchen waste into nutrient-rich fertilizer for their gardens, contributing to sustainable waste management.
9. **School and Educational Gardens:** Several schools and colleges in cities like Delhi, Hyderabad and Kolkata are setting up urban gardens on campus to teach students about sustainability and food production.
10. **Kitchen Gardens (Home Gardens):** Many urban families are setting up small kitchen gardens on their balconies, terraces or backyards to grow herbs, vegetables and medicinal plants.
11. **Smart Gardens:** New age urban gardening in India is incorporating IoT (Internet of Things) and smart systems to monitor plants health, soil moisture and irrigation.

#### **Benefits of Urban Gardening in India:**

**Environmental Impact:** Urban gardens helps to reduce pollution, recycle organic waste, conserve water and promote biodiversity in cities.

Access to fresh, organic produce improves health and reduce reliance on chemical-laden vegetables from markets.

### **Community and Social Impact**

Strengthens community ties, promote local food systems, and provides recreational and educational spaces.

Urban gardening in India is increasingly seen as a way to combat urban food insecurity, promote sustainability and improve the quality of life in densely populated cities. With support from government initiative, NGOs and local communities, this movement is gradually becomes an integral part of urban living in the country.

### **Challenges of Urban Garden in India**

Certainly, Urban gardening in India, especially in densely populated cities, face several challenges. Some of the common problem encountered by urban gardeners are lack of knowledge and awareness, limited space for gardening, difficulties in availability of seeds and plants, water scarcity in many Indian cities, contaminated soil or lacking in nutrients in urban areas, pollution and bad air quality in Urban areas. Some buildings may not be structurally suitable for large terrace gardens. Weight-bearing capacity, drainage systems, and safety considerations need to be addressed. Urban microclimates can vary significantly due to concrete surfaces, buildings and pollution. Gardeners must adapt to local conditions and choose plants accordingly. Setting up an urban garden requires initial investment in containers, soil, seeds and tools.

Despite these challenges, urban gardening offers numerous benefits, including fresh produce, improved mental well-being and environmental sustainability. As more people recognize these advantages, urban gardening is becoming a popular practice in India.

#### **1. Increasing demand for green spaces**

With urbanization and population growth, the demand for green areas is increasing rapidly. Urban gardens help in providing a cool and clean environment to the cities.

#### **2. Role for struggle against climate change**

Gardens improve air quality by absorbing carbon dioxide, which helps reduce the effects of climate change.

#### **3. Development of community spaces**

These gardens are becoming meeting and social gathering places for local communities, thereby increasing social cohesion.

#### **4. Promotion of biodiversity**

Urban gardens provide habitat for local flora and fauna and encourage biodiversity.

### **5. Sustainable Development**

Gardens can be made more sustainable by implementing measures like waste management, water conservation and sustainable use of energy.

### **Conclusion: Urban Terrace Gardening in India**

Urban terrace gardening is a growing trend in India, driven by several factors. Here's a concise conclusion highlighting its significance:

- 1. Healthy Living and Sustainability:** Urban terrace gardening allows city dwellers to grow their own fresh produce, ensuring access to safe and organic food. It reduces dependency on external sources and harmful chemicals.
- 2. Creating Green Spaces:** In congested urban areas, terrace gardens provide much needed green spaces. They improve aesthetics, reduce temperatures, filter air, and offer a therapeutic environment.
- 3. Biodiversity and Wildlife Conservation:** Terrace gardens attract birds, butterflies, and beneficial insects, contributing to biodiversity and wildlife conservation.
- 4. Resilience and Food Security:** Urban gardening empowers individuals to address food security by growing their food locally. It reduces reliance on long supply chains and makes cities more resilient.
- 5. Environmental Impact:** Terrace gardening reduces the carbon footprint by promoting local food production and minimizing transportation distances.
- 6. Empowering City Dwellers:** Terrace gardening gives people a sense of satisfaction and joy, connecting them to nature and their food source.

In summary, urban terrace gardening is not only about plants; it's about fostering a healthier, more sustainable lifestyle for urban residents. So, whether you have a small balcony or a spacious rooftop, consider starting your own urban garden – it's step toward a greener, more self-reliant future. The future of urban gardens looks positive provided they are properly developed and managed. Conservation of these gardens not only provides environmental benefits but also contributes to the health and well-being of society. Partnership and coordination of government schemes is necessary.

Thus, we see that there is a shortage of open and vacant spaces in urban areas like cities, metros and big cities, hence the concept of urban garden or terrace gardening is very good, it can also keep the environment alive. In less space, some flowering plants, grass and environment and air can be kept pure in some quantity. Some amount of greenery can be seen, although it is a bit expensive to do also happens.



# Emotional Maturity and Stress Management Among Adolescents

● Dr. Kusumn Gupta

Asst. Prof., Dept. of Psychology

Emotions are great motivating forces throughout the span of human life; affecting aspirations, actions and thoughts of an individual. Adolescence is a period when the behavior getting influenced highly by the emotions. As emotions do play central role in the life of an individual, one is expected to have higher emotional maturity in order to lead a effective life. It is also true that our behavior is constantly influenced by the emotional maturity level that we possess. Sound emotional maturity is important for success in life and it is quite essential to possess a well-balanced personality. An emotionally mature person can utilize his/her energy properly for his family, teachers, friends and society. An emotion is an effective experience that accompanies stirred up mental and psychological states and shows itself in his overt behavior. Emotion is considered to be a magic word that makes human life more dynamic and makes him a multi-colored shell on the shore of sea of society. Emotions have strong link with urges, needs and interests. For many students who got admitted into the university, living home for the first time is a very exciting experience because they no longer have a responsible adult watching over them and have shifted away from reliance on guardianship and the oversight of an adult in decision-making to independence. However, for some students, the transition is a significant life-changing even with an initial shock that can generate a lot of stress for them. This transition has a unique set of challenges and stresses.

In the present scenario the youth are facing difficulties which are giving rise to many problems such as frustration, anxiety, stress, tension and emotional imbalance in day to day life. We as humans are constantly striving to establish a satisfactory relationship with our environment. Parents are an essential part of their shields environment. Therefore, in order to faster caring, responsible and strong children, adults need to have a positive view of them and serve as a role model for their children. In order to succeed in life, children need to gain confidence in their abilities so that they can do things on their own. Parents can lead the way in providing experiences that can enhance children view of themselves. Parents can build self-esteem in their children and themselves in order to improve the quality of

life thus strengthening family relationships. Healthy emotional development culminates into 'emotional maturity'. Failures, suicidal attempts, poor achievements among students are serious problems faced by educationists, teachers, parents and administrators in the present. These failures are the result of high levels of stress, anxiety or due to lack of emotional maturity. Emotional maturity has a significant impact over stress level of adolescents. An emotionally mature person knows how to adjust in a social environment and how to tackle different situations effectively with a positive attitude. Thus, emotional maturity leads to low level of stress among adolescents.

Today's adolescents are facing many personal societal and environmental pressures resulting in stress. The time of entering the college or university after leaving school may be a crucial time and level of stress may be high due to various factors like facing new situations, transition from school to college etc. Emotional maturity is the outcome of growth and development. Emotional maturity becomes important in the behavior of individual as emotionally mature individual can handle stress very well. It is not only the effective determinant of personality pattern but it also helps to control the growth of adolescents' development, all dimensions of emotional maturity i.e. emotional stability, emotional progression, social adjustment, personality integration and independence are negatively correlated with stress. It indicates that when emotional maturity increases stress decreases and when emotional maturity decreases stress increases. A person who is able to keep his emotions under control, who is able to broke delay and to suffer without self-pity, might still be emotionally stunned and childish. An emotionally matured child has to make effective judgment with himself, members of his family his peers in the school, society and culture. Furthermore, attention has also to be given to identifying strategies of stress management, it will be beneficial in reducing blood pressure, heart disease, digestive troubles and many more physical ailments such as improving sleep, mental health, cognition and libido.



**Few will have the greatness to bend history itself but each of us can work to change, a small position of events and in the total of all, these acts will be written.**

**-R.F. Kennedy**

# Artificial Intelligence And Human Behaviour

● Prof. Aneeta Joshi  
Dept. of Psychology

Artificial intelligence (AI) generally refers to any human-like behavior displayed by a machine or system. Computers are trained to "mimic" human behavior using a wealth of historical data on comparable behavior in the most basic type of artificial intelligence. This can involve anything from performing complex tasks in a manufacturing facility to recognizing the differences between a cat and a bird. Even though artificial intelligence (AI) first made it possible for computers to play games like checkers against people, it is now a commonplace aspect of our daily lives. We have AI solutions for quality control, video analytics, speech-to-text (natural language processing), autonomous driving and healthcare, manufacturing, financial services and entertainment.

## Historical Development of artificial intelligence -

Prior to 1949, computers could carry out commands, but because they were unable to store these commands, they were unable to recall what they had done. In his 1950 paper "Computing Machinery and Intelligence," Alan Turing covered the topic of creating and testing intelligent machines. The Dartmouth Summer Research Project on Artificial Intelligence (DSPRAI) hosted the first AI program five years later. For the following few decades, AI research was sparked by this incident. Computers improved in speed, availability, and affordability between 1957 and 1974. Artificial intelligence (AI) saw a comeback in the 1980s, and machine learning algorithms continued to progress with the creation of the algorithmic toolkit and more funding. John Hopfield and David Rumelhart made it possible for computers to learn from experience by introducing "deep learning" techniques. Edward Feigenbaum created "expert systems" to mimic human decision-making.

## AI AND BEHAVIOUR MODIFICATION -

AI has improved human behaviour in day to day life to a great extent. It can be discussed as follows.

**Effective Communication** : Through the use of technologies like chatbots and virtual assistants, which enable quick and affective interaction, artificial intelligence has completely changed communication. These technologies increase overall communication efficiency by improving accessibility for people with disabilities and offering round-the-clock customer service.

**Social Media and Networking** : AI algorithms power social media platforms, enabling users to connect with others, share experiences, and stay informed about global

events. These algorithms personalize content, fostering engagement and community building.

**Creation of new Jobs and Efficiency** : AI has the potential to create new job opportunities in fields such as AI development, data analysis, and cyber security. Additionally, AI can enhance workplace efficiency by automating repetitive tasks, allowing employees to focus on more complex and creative activities.

**Better Decision-Making** : AI systems can help with decision-making by processing large amounts of data. AI's predictive capabilities aid in operational optimization and the reduction of human error in sectors such as finance, healthcare and logistics.

**Improved Predictive Analysis** : AI's capacity to evaluate sizable datasets enables more precise forecasts and well-informed choices. AI systems in healthcare can forecast patient outcomes and disease outbreaks, which improves treatment strategies and resource allocation.

**Personalization** : AI technologies enable the personalization of services and products. From online shopping recommendations to personalized learning experiences, AI tailors offerings to individual preference, enhancing user satisfaction and engagement.

**Enhanced Security** : AI technologies improve security by detecting and preventing cyber threats. Machine learning algorithms can identify patterns of malicious activity, enabling rapid response to potential breaches and safeguarding sensitive information.

**Data Management** : AI assists in managing and organizing large volumes of data, ensuring data integrity and accessibility. This capability is crucial in fields like healthcare, where accurate and timely data management can improve patient outcomes.

**Consent and Autonomy** : Respecting user consent and autonomy is essential in AI applications. Individuals have control over their data and fully informed about how it is used. Ethical AI practices prioritize user rights and freedoms.

**AI IN THE FIELD OF ENHANCING MENTAL HEALTH** : In psychology, artificial intelligence (AI) has advanced significantly, changing our understanding of human behavior and mental health. Here are a few applications of AI :

**Virtual Therapy and Suicide Prevention** : AI - driven

chatbots serve as virtual therapists, offering people mental health advice. These chatbots are able to converse, provide assistance, and help users deal with emotional difficulties. To find people who might be at risk for suicide, machine learning algorithms examine data from social media. AI can notify mental health providers to step in and offer prompt assistance by tracking online posts and trends.

**Cognitive Testing and Brain Imaging :** By examining response patterns, AI can improve cognitive tests. For instance, it can identify minute alterations in memory or focus over time, supporting the early detection of cognitive disorders. Artificial intelligence (AI) algorithms examine brain imaging data, including MRI or fMRI scans, to spot anomalies, monitor the course of diseases, and help diagnose illnesses like schizophrenia or Alzheimer's.

**AI-based decision support systems :** These systems aid in the precise diagnosis of mental illnesses and the planning of treatment. To suggest individualized treatment

options, these systems take into account a variety of data, such as symptoms, medical history, and genetic information. AI is able to customize treatment regimens according to each patient's requirements. It can enhance results and optimize therapeutic interventions by examining patient data, preferences, and responses.

**Conclusion :** Changes in privacy, decision-making, employment, and social interactions are just a few of the many ways artificial intelligence is influencing human behavior. Artificial intelligence (AI) has many benefits, such as improved decision-making, communication, and productivity, but it also has significant disadvantages, including job loss, privacy concerns and ethical dilemmas. To solve these problems, a well-rounded approach that promotes transparency, accountability, and equitable access to AI technologies is required. Maximizing AI's potential and reducing its risks as it advances require an understanding of its behavioral effects.



---

## Emotional Intelligence and Improved Interpersonal Skills: Strengthening Bonds and Improving Interaction

● Dr. Dev Ashish

Asst. Prof. Deptt. of Psychology

### Introduction

The ability to identify, comprehend and, control one's own emotions as well as those of others is known as emotional intelligence (EI). It is essential for improving interpersonal skills, which can result in more solid relationships, greater communication, and an all-around increase in wellbeing. This essay will examine the link between improved interpersonal skills and emotional intelligence (EI), emphasizing the advantages of developing EI for interactions in both the personal and professional spheres.

### Understanding Emotional Intelligence

There are five essential elements that make up emotional intelligence:

- **Self-awareness:** The capacity to recognize and comprehend one's feelings and how they influence one's ideas and behavior
- **Self-regulation:** The capacity to correctly and successfully control one's emotions.
- **Motivation:** The will to accomplish objectives and endure in the face of difficulties.
- **Empathy:** The ability to comprehend and experience another person's emotions.

- **Social skills:** The capacities to cooperate with others, communicate clearly, and establish and preserve wholesome relationships.

### Emotional Intelligence and Interpersonal Skills

Building healthy connections and improving communication require improved interpersonal skills, which can be developed through emotional intelligence development. Emotional intelligence is intimately linked to several important interpersonal skills, such as:

- **Active listening:** People with emotional intelligence are able to listen to others with empathy and attention, which promotes mutual respect and understanding.
- **Conflict resolution:** People with high EI are able to approach disagreements amicably and the desire to find a solution, fosters successful conflict resolution and preserves interpersonal peace.
- **Assertiveness:** People with emotional intelligence are able to respectfully and assertively communicate their wants and opinions without coming across as hostile or submissive.

- **Emotional support:** Individuals with strong empathy and social skills can provide emotional support to friends, family, and colleagues, helping to create a supportive and nurturing environment.

### **Emotional Intelligence and Personal Relationships**

Cultivating emotional intelligence can have a significant impact on the quality of personal relationships, promoting deeper connections, and enhanced communication. By developing EI, individuals can:

- **Foster empathy and understanding:** Emotionally intelligent individuals can empathize with the feelings and experiences of others, fostering a sense of connection and understanding in their relationships.
- **Enhance communication:** Developing emotional intelligence can help individuals communicate their emotions, thoughts, and needs more effectively, reducing misunderstandings and promoting open dialogue.
- **Strengthen emotional bonds:** Emotionally intelligent individuals can support the personal growth of their loved ones, encouraging them to pursue their goals and aspirations, and fostering a sense of mutual support and encouragement.

### **Emotional Intelligence and Professional Relationships**

Emotional intelligence can also play a crucial role in the development of better interpersonal skills in the workplace, contributing to a healthier and more productive work environment. By fostering EI in the workplace, employees and organizations can:

- **Develop effective communication skills:** Emotionally intelligent employees can communicate their needs, concerns, and boundaries more effectively, reducing misunderstandings and potential stressors.
- **Enhance teamwork and collaboration:** EI promotes positive workplace relationships, enabling employees to collaborate effectively and support one another in achieving their goals.
- **Foster emotional support:** Emotionally intelligent leaders can provide emotional support and resources for their team members, helping to alleviate stress and promote a positive work environment.
- **Manage conflicts effectively:** Emotionally intelligent individuals can approach conflicts with empathy and understanding, promoting effective conflict resolution and maintaining harmony in the workplace.

### **Emotional Intelligence and Interpersonal Skills for Personal Growth**

Developing emotional intelligence can contribute to personal growth and self-improvement, as better interpersonal skills enable individuals to build and maintain stronger relationships and enhance communication. Emotionally intelligent individuals are more likely to:

**Embrace challenges:** Emotionally intelligent individuals can view challenges as opportunities for growth, rather than threats to their self-esteem, promoting a growth mindset and a love for learning.

**Develop self-awareness and self-reflection:** Cultivating emotional intelligence can encourage individuals to engage in self-awareness and self-reflection, promoting continuous growth and self-improvement.

**Cultivate meaningful relationships:** Emotional intelligence can help individuals build and maintain strong, supportive relationships, providing them with the emotional resources necessary to navigate stress and pursue personal growth.

### **Emotional Intelligence and Interpersonal Skills for Mental Health**

Emotional intelligence is also crucial for maintaining and improving mental health. Developing better interpersonal skills through emotional intelligence can help individuals prevent and manage mental health issues, such as anxiety, depression and loneliness. By providing effective communication and emotional regulation strategies, emotional intelligence promotes overall mental well-being.

### **Emotional Intelligence and Interpersonal skills for Physical Health**

Cultivating emotional intelligence can have positive implications for physical health, as effective interpersonal skills can contribute to the prevention and management of stress-related health issues. Emotionally intelligent individuals are more likely to:

- **Engage in healthy lifestyle habits:** Emotionally intelligent individuals may be more likely to prioritize self-care, engage in regular physical activity, maintain a balanced diet, and get sufficient sleep, all of which can help combat the negative effects of stress on physical health.
- **Seek appropriate medical care:** Emotionally intelligent individuals can recognize when they need professional help and are more likely to seek appropriate medical care when experiencing stress-related health issues.
- **Manage chronic conditions:** Developing emotional intelligence can help individuals better manage chronic health conditions that may be exacerbated by stress, such as hypertension, diabetes, and heart disease.

## Emotional Intelligence and Interpersonal Skills for Parenting

Parents can benefit from developing emotional intelligence to manage stress and support their children effectively. By cultivating EI, parents can:

- **Model advanced interpersonal skills:** Parents who demonstrate self-awareness, empathy, and effective communication can provide a positive example for their children to emulate, promoting healthy interpersonal skills within the family.
- **Provide emotional support:** Emotionally intelligent parents can recognize and validate their children's emotions, providing guidance on managing stress and fostering resilience.
- **Foster a nurturing home environment:** Parents who prioritize emotional intelligence can create a home environment that values open communication, empathy, and understanding, reducing stress and promoting overall well-being for the entire family.

## Emotional Intelligence and Interpersonal Skills in Education

Emotional intelligence can play a crucial role in the development of interpersonal skills for both students and educators. By incorporating emotional intelligence into the educational system, schools can:

- **Provide students with interpersonal skills:** Integrating emotional intelligence into the curriculum can equip students with the tools necessary to build strong relationships, communicate effectively, and collaborate with their peers.
- **Foster a supportive learning environment:** Emotionally intelligent educators can create a nurturing and inclusive learning environment that fosters open communication and empathy, reducing stress for both students and teachers.
- **Enhance teacher well-being:** Providing professional development opportunities for teachers to enhance

their emotional intelligence can promote better interpersonal skills and prevent burnout, contributing to a healthier and more effective educational system.

## Emotional Intelligence and Interpersonal Skills in Community Building

Developing emotional intelligence can have a significant impact on community building and social cohesion. Emotionally intelligent individuals can contribute to the development of strong, supportive communities by:

- **Engaging in community activities:** Emotionally intelligent individuals are more likely to participate in and contribute to community activities, fostering a sense of connection and belonging.
- **Promoting empathy and understanding:** Emotionally intelligent individuals can empathize with the experiences and perspectives of others within their community, promoting a sense of understanding and shared values.
- **Encouraging collaboration and cooperation:** Emotional intelligence can help individuals work effectively with others in their community, fostering collaboration and cooperation towards shared goals.
- **Facilitating conflict resolution:** Emotionally intelligent individuals can approach conflicts within their community with empathy and understanding, promoting effective conflict resolution and maintaining harmony among community members.

## Conclusion

To sum up, emotional intelligence is a potent instrument for improving interpersonal abilities, which can result in more solid bonds, greater communication, and an all-around increase in wellbeing. People and groups may make the world a more encouraging, compassionate, and interconnected place by cultivating emotional intelligence in their personal, professional, educational, and communal contexts.



**“Don’t feel bitter that people remember you only when they need you. Feel privileged that you are like a CANDLE you come to their mind when theyre in the dark”**

# Impact of Social Media on Mental Health

● Shubham Rawat  
B.Com (III) Sem

Social media has become an important part of our daily lives, influencing how we communicate, share information and interact with others. While it gives many benefits, its impact on mental health cannot be overlooked.







Firstly social media platforms often promotes unrealistic standards of beauty and success leading to feeling of inadequacy and low self esteem.

Moreover the addiction of social media can disrupt sleep patterns and exarbrates stress levels. This needs to constant checks notification and updates leads to decrease productivity and increase feeling of isolation.

Social media always shows a fake prespective of people around us and makes people feel undervalued themselves and their self steem and moreover the high valuation of shoff verds in social media.

Majority of population are using the social media in a very high daily usage of time. These are highly addicted to such grounds of social media and invest their whole day in the web.

## Social Media Influence on Indians

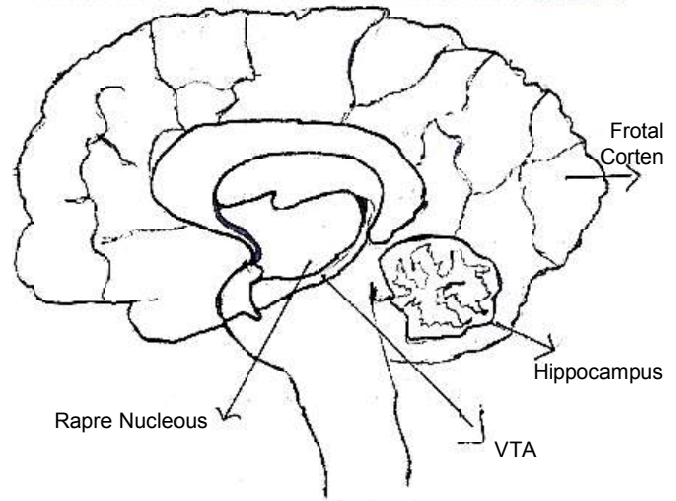
In youth, the most common social media sites and application are - Instagram , Facebook , You Tube , Whatsapp , Snapchat , Telegram .

The yong individuals of India of age 12-45 years are using such most addictive applications and wasting their mental stability. The most of the youth of India has use these applications on entertainment purpose rather than using them as messaging apps. These social media applications may increase fellings of anxiety and depression. Specially in teens and young adults. The addictive nature of social media activates the brains reward. Centre by releasing dopamine. This is a feel good chemical linked to pleasure activities.

The individuals are giving their whole days by using such social media applications and giving the entire part of their daily life to these applications. This can ijazurate the feeling of inadequacy anniety and depression. Which longerly leads to mental health problems.

## Dopamine release in Brain by using addictive social media

In Psychalogy, the human brain has many nerves, canals, cells, tissues in it, while a person is using social media, the Dopamine hormone secreates from VTA organ and spreads to the brain and transfers the 'feel good



**chemical'** in the mind. It creates person to reuse the social media and get such kind of feeling and after some times it becomes an addiction and the social media addict daily use such applications for getting these hormones.

## Addiction of Social Media Destroying Mental Health

I have seen a strong link between heavy usage of social media and increased risk of depression, anxiety, lonliness, self harm, and even suicidal thoughts. Social media promotes negative experiences, even if you know that images you're viewing on social media are menipulative they are still make you feel insecure about how you look and what's going in your own life, were all aware that other people tends to share just the highlights of their life rearly the low points that they everyone enperiences. But that dosen't lesson those feelings of distractions. When you are scrolling through an friends photos or reading their exciting new achievements of life.

Facebook and Instagram seems to powerup feelings that other are having more fun or living better lives then yours. The idea that you're missing out on certain things can impact your self-esteem and anxiety and fuel even social media use, much like an addiction even greater social media use, and gives you more interaction of using of such addictive applications.

## Manipulation of Thoughts By Social Media Impact To Mental Damage

Social media creates an environment in which we are constantly comparing ourselves to others. Our brains pay close attention to information about, the way social media works, through its typically algorithm, is to record your

browsing habits, the kind of stuff, mix with adventures, and then throw all of that stuff back to you through your search or home page . Let's say if most of post are self made and social media has distracted from dealing with the real world. We spend as much as 8 hours a day updating on our profiles and status of facebook consuming social media. We are manipulated so much that generally we found it hard to resist the temptation of have deseptively by creating an online presence, that so different to our real life identity and tendency in many of us creating an online personality drift. Young people has become so obsessed with checking now many followers they behave on twitter, instagram, posting message to gain more friends.

### **Some Mental Health Benefits Of Social Media**

I have seen some sort of people having such health benefits of using social media. and have an positive impact on mental health. When use responsibly. Firstly we get daily news of belonging of our feed of content quickly and regularly, the news of such stuff will provided to the user by instagram reels, Whatsapp forwards, Facbook posts, Youtube recommendations to the person by conecting to the world of social networking sides. It gives stress relief that can help people feel better and develop health relationship with others which can reduce stress. Social media connecting people with others, build support networks and maintain relationship. It spreads awareness to about health benefits and guidance of changing lifestyle and change in life of such different way of providing information.

Social media can be a platform for people to celebrate their personal growth and increase their self- esteem. It can help people a sense of belonging and reduce fuling of lowliness and isolation. Which make people feel around their relatives and loved ones.

**Conclusion** - After the course of Covid-19 period, users of almost all generations increase their time spend on social media. Reduced social media usage has been associated with improvement of lowliness feeling and overall well being. Avoid checking phones or going online in the hours of the morning or just before bed to save energy and avoid developing the habits of using social media in excess amount of time.



## **National Unity Day**

● **Harshita Nainwal**  
B.A. I Sem.

National Unity Day is also Known as 'Rashtriya Ekta Diwas' is Celebrated on 31st October every year memorize Sardar Vallabhbhai Patel who always believed in the Unity of the Country.

The First National Unity day is Celebrated on 31st October 2014 and the motive to Celebrate this Wonderful day was to after tribute to the efforts made by the great Sardar Vallabhbhai Patel to unity India.

In 2014, Prime Minister Narendra Modi inaugwated the day to unite the Country which was the motive of the great politician and freedom fighter Sardar Vallabhhahi Patel. 31st October is the birthday the National Unity Day started greeting Celebrated.

It Marks the birth anniversary of Sardar Vallabhbhai Patel the "Iron Man of India" and Recognizes his Monumental Contribution to Uniting Over 560 Princely States into a Single nation.

The day serves as a reminder of the values of Unity, integrity, and solidarity that are essential for a diverse Country like India.

It strengthens the spirit of Unity and brotherhood among citizens and reinforces the idea that India's strength lies in its ability to embrace its diversity.

The Celebrations, which often include events like the "Run for Unity" Promote the concept of "Unity in Diversity" emphasizing that the nation's strength come from a shared constitutional identity despite its many different cultures, languages and religions.



**You know you're in love when you can't fall asleep because reality is finally better than your dreams**

**Dr. Seuss**

# Mindful Eating

● Dr. Lotiha Amit  
Home Science

Mindful eating means paying full attention to what you are eating and noticing the taste, smell and texture of your food. It helps you enjoy your food more and be aware of how much you are eating. Mindful eating is not a diet, Mindful eating is about the way we eat, not what we eat.

Being mindful is about focusing your attention and awareness on the present moment to help disconnect from habitual, unsatisfying and harmful habits and behaviours. Mindful eating is the opposite of mindless eating.

**Need of Mindful Eating :** Research shows that mindful eating may help people control binge eating and overeating, sometimes people enjoy food & feel satisfied whenever and what ever they eat without knowing the actual hunger. But mindful eating practices helps them to feel more in touch with actual hunger and body's satiety signals.

## Common Contributors of Mindless Eating :

- 1) Not recognising the difference between hungry and non-hungry eating.
- 2) Not stopping to listen to what your body signals are telling you.
- 3) Confusing hunger & thirst.
- 4) Allowing yourself to get too hungry and or eating too fast.
- 5) Eating in response to emotions.
- 6) Eating to overcome boredom or tiredness.
- 7) Eating in case you get hungry at a later stage.

The mindful eating approach employs strategies which encourage awareness of the senses while eating. These strategies include :

- Keeping a mindful journal / diary to note what you eat.
- Slowing down while eating.
- Focusing on eating (not watching television or reading)
- And mindful food shopping & preparation.

**Mindful Eating Techniques :** These mindful eating techniques can help reduce the likelihood of binge eating these include -

- 1) Eating small or moderate amounts of food every 2-3 hours.
- 2) Before eating ask yourself what type of food / drink you want.
- 3) Set a nice place to eat and arranging food nicely on the plate. Don't eat standing or walking.
- 4) Eat slowly, paying attention to the smell, taste, sound, texture and look of the food.

- 5) Every few minutes check in with your hunger signals.
- 6) Stop eating just before you feel full and wait 10-20 minutes before eating more food if you are still hungry.
- 7) Enjoy your meal. If you don't enjoy you will never be satisfied.
- 8) Don't skip meals.

## Recommended Reading :

- 1) Five good minutes in your body - Jeffrey Brantley.
- 2) Eating mindfully - Susan Albers.
- 3) Eat, drink and be mindful (Susan Albers)

[ Tips, activities and checklists to help you start a mindful eating program, evaluate your progress and discover a healthier and richer relationship with food.]

Source :- From Internet

## Uncovering the Secrets of the past: The Magic of Carbon Dating

● Mansi Bisht  
B.Sc. IV<sup>th</sup> Sem (P,C,M.)

Imagine being able to unravel the mysteries of ancient civilizations. To discover the secrets of long-lost cultures, and to uncover the hidden stories of our collective past. Welcome to the fascinating world of carbon dating!

This ingenious technique allows us to determine the age of organic materials, such as wood, bones, and fabrics, with remarkable accuracy. But have you ever wondered how it works? It's quite simple, really. All living things absorb a tiny amount of radioactive carbon-14 (<sup>14</sup>C) from the atmosphere and food chain. When they die, the <sup>14</sup>C begins to decay at a steady rate. By measuring the remaining <sup>14</sup>C in an organic sample, scientists can calculate the time elapsed since it was last alive.

From uncovering the secrets of ancient Egyptian mummies to tracing the migration patterns of our ancestors, carbon dating has revolutionized our understanding of human history. It's helped us to reconstruct the past with unprecedented precision, revealing the intricate tapestry of human experience that binds us all together. By uncovering the secrets of our collective past, carbon dating has given us a deeper understanding of who we are and where we come from.



# Smile is a Universal Language

● Khasti Arya  
B.A. - 4th SEM

A smile is universal that unites us all. It is a simple, powerful tool for building connections and spreading positivity. Whether we are communicating with a friend, a colleague, or a stranger, a smile has the potential to transcend cultural differences and create a bond the words alone cannot. In a world that can sometimes feel divided, a smile reminds us that we are all part of the same human experience, capable of understanding one another, regardless of when we came from or what language we speak.

So, the next time you see someone, share a smile. It's a gesture that speaks louder than words and makes the world a little brighter. The beauty of a smile lies in its ability to communicate emotions without the need for any translation. Whether we are happy, excited, or even nervous, a smile conveys a warmth that when we smile, we send out positive energy and that energy is contagious. A smile can brighten someone's day. Make them feel seen and appreciated, and even build trust.

When we laugh from the heart, we not only bring a smile to our face but also spread our inner happiness to the world. Laughter is a power that not only lightens our heart but also fills the entire world with new hope and light. When we laugh with joy those around us are also influenced by that happiness, as if the entire universe is laughing with us through a smile. This laughter creates a vibration that touches every heart and a sweet smile spreads to every corner of the world. It is an impact that radiates from within us touching every person around us, and filling their life with color, therefore, when we laugh, we make the whole world a part of our joy.

## TYPES OF SMILE

- Genuine smile (Duchenne smile)
- Polite smile
- Nervous smile
- Flirtatious smile
- Sarcastic smile
- Contemptuous smile
- Sleepy smile
- Cunning smile
- Evil smile
- Amused smile
- Pity smile
- Wicked smile
- Gloating smile
- Shy smile
- Relieved smile
- Jealous smile
- Uncomfortable smile
- Hysterical smile

जब हम हंसते हैं, तो हमारे साथ पूरा ब्रह्मांड हंसता है,  
और जब हम रोते हैं तो अकेले ही रोते हैं।

The universe motivates us to laugh if want us to be happy and share happiness, Being happy increases a person's value, A person who laughs and smiles look very beautiful and attractive.



## "Democracy in India" Are we Really Democratic ?

● Altamas  
B.A. - 4th SEM

India is considered as the world's largest Democracy, but are we really Democratic ? We live in a country whose population is approx 150 crore and each person has fundamental rights and right to vote. But are we really enjoying these rights ? Democracy is a system of government where the citizens holds the power directly or by the elected representatives. Democracy is responsible for protecting individual rights and freedom and promotes social justice and equality. In India, a woman or a girl does not feel safe. In India, Justice is underestimated, election are not conducted fairly. Our childrens are not getting proper education. We does not get proper medical facilities. And if we talk about these issues, we are considered as a Traitor. Let us understand the challenges faced by Indian

Democracy. On 20th May 2024, during the 5th phase of our Lok Sabha elections. Simantini Dhura, an award winning documentary film maker from south Bombay reached the polling booth but she was told that she can't vote because a person Keval Shah declared her dead but Simantini does not know who was Keval ? The Election Commission of India deleted her name from voter list without following the proper procedure. Not only her, several people from muslim community and other communities were not able to cast their votes because of this problem.

The citizens of our nation does not get proper facilities of health and education. The private schools and hospitals where facilities are available enforce people to pay high

amount of fees. The condition of government school are worsening day by day. In Uttarakhand's high primary school, Biruva Binaola teachers came to school after drinking alcohol. Also in Munsyari, Uttarakhand the students pull the trolley themselves and then go to school sitting in it as there is no bridge over the river. The Medical conditions are worsening day by day. On 11 February 2024, an eight years old girl was referred to Haldwani from Ramnager government hospital as there is a lack of facilities in Ramnagar. The girl does not get ambulance on time . After 2 hours of suffering, the ambulance comes and the MT of ambulance uses indecent language with the girl's family. We also see the poor medical facilities during the pandemic.

In India, getting justice is like walking on a path with no ending but a lot of obstacles. The famous RG Kar college rape case of a female trainee doctor, who was brutally raped and murdered in her work place gets justice after 5 month of fighting for the justice but what kind of justice does she get ? The Rapist Sanjay Roy sentenced to life

imprisonment only. Also, we Indians face inequality in every sector because of Caste, Religion etc. We faces inequality in religious places such as Mahakumbh also.

So, how we can say that we live in a democratic country where people cast vote on the basis of religion or some people who have the right to vote are not able to vote. What kind of Democracy we have where we don't get right of proper education and medical facilities? In India, we are afraid of getting justice as it is a long path and it required so many efforts to get justice which is also not valuable.

To save our country's democracy we all have to stand up together. We have to choose our leaders on the basis of development not on the basis of religion. The government we choose should not be a tyrannical. The government will have to provide the facilities of education and medical care. The justice should be easier in any democratic nation. Remember one thing before vote that we are voting to empower the democracy.



## Impact of Social Media on Mental Health

● Miskaat Sabbag  
M.A. Sociology (I) Sem

**INTRODUCTION** :- During the early, 2000, social media has evolved from small sites like **Myspace & Friendster** . It then took off with the **rise of Facebook in 2004** and with the rise of smartphones. Now, over 4.7 billion people use apps like Instagram, twitter, Snapchat etc, but concerns about mental health and privacy have emerged along with its growth.

> "Mental health refers to emotional, psychological & social well-being" as defined by **India's 2017 Mental Health Act**. The area of mental health is deeply affected by social media since it has both positive support and negative impact of anxiety & depression development.

### **POSITIVE IMPACT :**

**1) SOCIAL CONNECTIVITY AND EMOTIONAL SUPPORT :** The biggest achievement of social media is how it brings people together who feel lonely. Many platforms have become a vital tool for those are suffering from mental health issues like depression. Online support groups provide huge population with safe sphere to discuss about what they are feeling & dealing with and seek advice & company. According to the 2023 report of Pew Research Center, approx 72% of adult Americans take advantage of such social sites. The proportion of 21 to 29 years olds

using social media comes closer to about 90%.

**2) AWARENESS AND EDUCATION :** Platforms like Instagram, Twitter play a crucial role in spreading awareness about mental health issues. Campaigns like # World Mental Health Day, encourage the discussion on mental health issues, reduce humiliation & accessing resources throu activities ensure that a large portion of population is educated on the matter, promoting the seeking of help & provision of support to one's mental health.

**3) ACCESS TO MENTAL HEALTH RESOURCES :** Nowadays, it is easier for individuals to access mental health resources due to the rise of telemedicine & mental health apps like Pharmeasy, Talkspace, Practo etc. in India offers the online therapy sessions & making bigger support for mental health illness during the tough time of COVID - 19 pandemic.

In W.H.O. report of 2020, it was observed that digital therapy is beneficial, especially in India where the population is wide and limited access to traditional mental health services.

**NEGATIVE IMPACTS :** Although social media brings positive outcomes but the negative influence causes to the mental health of youths are lost. It is always found that active use of social networks is associated with the

**Be nice to people on your way up because you might meet them on your way down.**

**-Alexander Dumas**

presence of such diseases like depression, anxiety and low self esteem. In a report released by NIMHANS of India in 2023, it is mentioned that huge engagement in the use of social media is related to sleep disorders, anxiety & even loneliness among the youth.

**1) YOUTH'S CONFIDENCE AFFECTED BY SOCIAL MEDIA :** Social media culture of comparison is one of its biggest issues as platforms like Instagram encourage people to present idealised version of their lives which makes other people feel worse about themselves relative to what they see. This phenomenon hits the Indian young adults and adolescent hard, as they feel compelled to copy the influencers and meet unattainable standards of success and beauty. A 2022 report by the Indian Psychiatric Society said that increased use of social media increases body dissatisfaction, low self-confidence and even eating disorder among Indian youth.

**2) CYBER BULLYING AND HARASSMENT :** The adverse impact of social media is cyberbullying. "The Internet and Mobile Association of India (IAMAI) report in 2023, says that 37% of Indian teenagers have suffered some type of online bullying, All this harassment can cause depression, anxiety, on even results in suicide. The impact that cyberbullying can have on an individual's mental health has become a recent news story, particularly in relation to

high profile cases involving young Indian celebrities.

**3) ANXIETY AND FEAR OF MISSING-OUT (FOMO) :** The worst thing happened on social media is that growing youth can see the everyon(s) highs which creates FOMO among the people. Feeling what it means to be inadequate especially among young adults in India due to this feeling to keep up. According to a 2022 survey by the Centre for Study of Developing Societies (CSDS), around 60% of urban Indian Youth said they felt anxious or continue to feel left-out after seeing posts of social gatherings or lifestyle events.

**SOLUTION AND INTERVENTIONS :** To tackle these mental health issues, India has started initiatives such as the National Mental Health Programme. And experts ask for more aggressive content regulation, and NGOs, influencers, schools and companies should sensitize the use of social media.

**CONCLUSION :** If we want to challenge these two concerns, advanced media literacy education, and best use of the platform, are needed. India has been growing like crazy in terms of social media, so we as citizens have to keep ourselves in check, breathe in all the positives and negatives of what is around us so that whatever we have in our heads remains intellectually healthy.



## 24 UK [G] BN NCC ALMORA

Experience of Youth Exchange Program (Kazakhstan) 2025

● **Anjali Goswami**  
B.Sc. V SEM

I am Anjali Goswami, a student of P.N.G. Govt. P.G. College, Ramnagar and a proud cadet of 24 UK Girls BN NCC Almora. NCC gave me the golden opportunity to represent our nation in the Republic of Kazakhstan through the Youth Exchange Program 2025, after a rigorous selection procedure. It was a matter of immense pride & honor for me to wear the Indian flag on my chest & stand as a proud representative of India.

I sincerely thank NCC, our Commanding Officer, ANO maam & Sir, my seniors, buddies & my institution for constantly motivating me, showing me the right faith & supporting me throughout the journey.

Since the day I joined NCC, I have participated in various, camps that shaped me into a disciplined cadet. In 2025, I participated in the Republic Day camp through the events YEP and cultural programmes. The selection process of YEP involved written test, drill test, group

discussion & interview. On the basis of merit, I was chosen to represent India in Kazakhstan.

During the YEP, we explored Kazakhstan where we visited the Samal Park, Zhaster Park. Irtysh river, mount Razakh, enjoyed shopping in malls & street shopping & got to experience yacht ride. Interacting with Kazakh cadets, officers & citizens, gave me a deeper understanding of their rich culture & tradition. Representing India on an International platform made me realize the responsibility we hold as youth in showcasing the strength & culture of our country.

I return with memories, experiences & friends' tips that I will cherish forever. Most importantly, I return with a stronger determination to serve my nation. My message to every youth is : Join NCC, embrace discipline and be ready to take on opportunities that let you serve India with pride.

JAI HIND

**Be the change that you wish to see in the world.**

**- Mahatma Gandhi**

# Natural Resources of Jim Corbett National Park

● Gosiya

Research Scholar

**Introduction** – Jim Corbett National Park, nestled in the foothills of the Himalayas, is not just a haven for wildlife enthusiasts but also a treasure trove of natural resources. The park's diverse ecosystem comprises dense forests, grasslands, and rivers that support an incredible variety of flora and fauna. This abundance is essential for maintaining ecological balance and sustaining local communities. The lush forests are home to valuable timber species such as Sal, Teak, and Sandalwood, which provide vital resources for construction and traditional crafts. Moreover, the park's rich biodiversity supports various medicinal plants used in indigenous healing practices. These natural resources are crucial not only for conservation efforts but also for promoting sustainable tourism that benefits both the environment and local economies.

Jim Corbett National Park, nestled in the heart of Uttarakhand, India, is a treasure trove of natural resources that play a crucial role in maintaining the ecological balance of the region. Established in 1936 as Hailey National Park, it was renamed to honor the legendary hunter-turned-conservationist Jim Corbett. This national park covers an impressive area of approximately 520 square kilometers and is home to a rich diversity of flora and fauna.

The park's natural resources include lush forests primarily composed of sal trees, diverse grasslands, and shimmering rivers. These habitats support various wildlife species, including the majestic Bengal tiger, Asian elephants, leopards, and numerous bird species. The waters from the Ramganga River not only provide hydration for these animals but also sustain the surrounding vegetation. Moreover, Jim Corbett's rich biodiversity contributes to its vibrant ecosystem services. For instance, forests play a vital role in carbon sequestration while preventing soil erosion. They also support local communities through sustainable tourism and provide resources such as medicinal plants that are invaluable to traditional practices. Natural resources are the foundation of our planet's ecosystems and the backbone of human civilization. These invaluable assets, which include water, minerals, forests, and fossil fuels, play a crucial role in

our daily lives and economic development. Understanding the significance of natural resources is essential for fostering sustainable practices that ensure their availability for future generations.

As we delve into the intricacies of natural resources, it becomes clear that they are not merely commodities to be exploited; they are vital components of our environment that require careful stewardship. The introduction of innovative technologies and sustainable management practices can help us utilize these resources more efficiently while minimizing environmental impact. Embracing this mindset is not just beneficial – it is imperative for securing a prosperous future on our planet. The conversation around natural resources must shift towards sustainability and conservation to balance human needs with ecological integrity.

Jim Corbett National Park is more than just a sanctuary for wildlife; it is a vital reservoir of natural resources that supports not only animal life but also human communities. By recognizing its significance and committing to its conservation, we can ensure that this precious resource continues to thrive for generations to come. Protecting Jim Corbett means safeguarding our planet's heritage while promoting ecological sustainability – a cause worth championing by everyone who values nature's splendor. The natural resources of Jim Corbett National Park are integral to its ecological integrity and cultural heritage. By recognizing their value and implementing responsible management practices, we can ensure that this magnificent forest continues to thrive for generations to come. Embracing sustainable stewardship will allow us to enjoy its beauty while preserving its vital resources – a win-win for nature and humanity alike. We can say it in other words, the natural resources of Jim Corbett National Park are integral to its ecological integrity and highlight the importance of preserving such environments. By safeguarding these resources, we ensure not only the survival of numerous species but also contribute to our own well-being through ecosystem services that benefit local communities and beyond. Protecting Jim Corbett means cherishing nature's bounty for future generations to experience and enjoy.



**A room without books is like a body without a soul.**

**- Marcus Tullius Cicero**

# Myth-Busting with Chemistry: Separating Fact from Fiction

● Isha Chuphal  
B.Sc. IV<sup>th</sup> Sem

Chemistry is all around us, influencing everything from the food we eat to the air we breathe. However, many misconceptions about chemical substances and reactions persist. By applying scientific principles, we can debunk some of the most common myths with chemistry.

## Myth 1 : Natural is Always Better

A widespread belief is that “natural” products are inherently safer than synthetic ones. However, chemistry tells us that toxicity depends on the dose, not the source. For example, cyanide can be found in apple seeds, while synthetic medicines can be life-saving. The key is understanding the properties of substances rather than their origins.

## Myth 2: Microwaves Destroy Nutrients in Food

Contrary to the belief that microwaving food strips it of nutrients, research shows that microwaving often preserves nutrients better than boiling or frying. Since microwaves heat food quickly and with minimal water, fewer vitamins and minerals are lost.

## Myth 3 : You Can Detox Your Body with Juices or Supplements

The concept of “detoxing” with special drinks or diets is popular, but our bodies are already equipped with efficient detoxification systems. The liver and kidneys work constantly to remove toxins, and no chemical evidence supports the notion that juices or supplements enhance this process.

## My 4: MSG is Dangerous

Monosodium glutamate (MDG) is often blamed for headaches and other ailments. However, numerous scientific studies have found no significant link between moderate MSG consumption and health issues. It is simply a flavor enhancer, naturally found in foods like tomatoes and cheese.

Chemistry empowers us to question misleading claims and make informed choices. By understanding the science behind everyday phenomena, we can debunk myths and appreciate the fascinating role chemistry plays in our lives.



---

## Impact of Social Media on Mental Health

● Kajal Joshi  
B.Sc (V) Sem

Social media has become deeply woven into the fabric of Modern life, shaping how people interact, share information and build their identities. It has a great impact on everyone's life because people find the satisfaction they cannot get in real life through social media.

Social Media is useful to some extent, but it also has a negative impact on people's mental health. Prolonged exposure to social media can lead to various mental health issues such as anxiety, depression and low self esteem.

### Positive Impact of Social Media on Mental Health -

Social media's positive contribution to Mental health include connecting individuals, empowerment through shared experiences, a platform for community support and raising awareness.

### Social Media as a platform for Community Support -

It can provide a sense of community and support, especially for people who may feel isolated or marginalized.

People experiencing unique mental health challenges can

find their support groups where they can share their experiences, coping strategies and feel understood.

**Empowerment through shared experiences** - In recent years, social media has become an invaluable space for people to share their experiences particularly in the realm of Mental Health from sharing personal stories about struggles with anxiety and depression to discussing about overcoming trauma and self-care strategies, social media allows users to connect over shared experiences in a way that it will create a feeling of understanding, **Support and Empowerment** .

The collective sharing creates a sense of community validation, strength, understanding which can have a profound impact on individuals mental health in a positive way.

By sharing personal experiences people feel a sense of belonging and can boost self-esteem and challenge stigma.

**Negative Impact of Social Media on Mental Health-**

Excess use of Social media can have a negative impact on your life and your health mental health.

Social media show filtered things, they only show 'peoples' lives in such a way that others feel compelled to indulge in them.

After seeing all those filtered, carefully curated images that potray an often unrealistic level of happiness, people start doubting themself and start suffocating within themselves. People slowly destroy their mental health by thinking about their filtered life.

People just starts idealizing others, their ways and they forget their own self- worth. Idealizing others and Undermining self worth on social media can have a great negative impact on mental health. Social Media encourages comparasion and it is very easy to fall into the trap of looking others lives through filters, carefully curated images that potray an often unrealistic level of happiness, success or beauty. This can lead to- anxiety, lowered self - Esteem, Body Image Issues Increased FOMO (fear of missing out). Seeing others perfect lives can lead to Increased Anxiety and Depression because their perfect lives can make you feel that you're falling behind or missing out. You may start believing that others are happier or more successful than you, even though what's shown online rarely reflects the full picture.

Body Image issues are another significant mental health concern that is generated by social media. Social media platforms that are Immensely used feature content that

elevates beauty standards that are unrealistic. Seeing that content people start becoming conscios about their body image. The relentless, exposure to perfect bodies can cause individuals, particularly young women, to feel insecure about their own physical appearance.

Studies have linked body dissatisfaction generated by social media comparasion to various mental health issues, Including body dysmorphia, eating disorders etc.

Fear of Missing out (FOMO) is a very unique form of psychological distress that is caused by social media. FOMO occurs when people see others achievements, enjoying with friends and develop a feeling of missing out, which can lead to feeling of loneliness, jealousy and even social anxiety. FOMO can also drive compulsive checking behaviours, where individuals feel need to constantly monitor their social media feeds, creating a cycle of dependency and reinforcing feelings of Inadequacy.

The amount of time spent on social media, how often its used, and the no. of platforms used are all factors that can contribute to Mental health problems.

The biggest reason that people accepts social media as a reaslistic world and this causes them to suffer.

So social media should be avoied as much as can be done and people should start accepting the truth of real life. This will help them to create a peaceful and stress free life.



## Uncovering the Secrets of the Past: The Magic of Carbon Dating

● Mansi Bisht

B.Sc. IV<sup>th</sup> Sem (P.C.M.)

Imagine being able to unravel the mysteries of ancient civilizations, to discover the secrets of long-lost cultures, and to uncover the hidden stories of our collective past. Welcome to the fascinating world of carbon dating!

This ingenious technique allows us to determine the age of organic materials, such as wood, bones, and fabrics, with remarkable accuracy. But have you ever wondered how it works? It's quite simple, really. All living things absorb a tiny amount of radioactive carbon-14 (<sup>14</sup>C) from the atmosphere and food chain. When they die, the <sup>14</sup>C begins to decay at a steady rate. By measuring the remaining

<sup>14</sup>C in an organic sample, scientists can calculate the time elapsed since it was last alive.

From uncovering the secrets of ancient Egyptian mummies to tracing the migration patterns of our ancestors, carbon dating has revolutionized our understanding of human history. It's helped us to reconstruct the past with unprecedented precision, revealing the intricate tapestry of human experience that binds us all together. By uncovering the secrets of our collective past, carbon dating has given us a deeper understanding of who we are and where we come from.



**To things are infinite: the universe and human stupidity; and I'm not sure about the universe.**

**- Albert Einstein**

# Artificial Intelligence's Current Trends and Applications in Chemistry

● **Dr. Manoj Kumar Nailwal**  
Department of Chemistry

Artificial intelligence (AI) is a machine that copies human cognitive abilities, such as learning and problem-solving. It covers many approaches, including machine learning, deep learning and natural language processing, among others. Currently, artificial intelligence is making inroads into specialized sectors like law, sciences, healthcare, and more. One area poised to gain significantly from the advancements in AI is Chemistry, which involves the synthesis, analysis and transformation of matter at the atomic and molecular levels. This offers a wealth of advanced data for intelligent analysis by artificial intelligence systems.

Artificial intelligence is already influencing various aspects of chemistry, including pharmaceuticals, materials science, chemical engineering and other chemistry sub-domains. These are some of the most prominent trends.

## Enhancing Computational Chemistry

The simplest application of AI is in tools like the AI chemistry solver, which helps students in school and universities. Computational chemistry uses the power of supercomputers to study molecular systems in a virtual environment. AI's exploration of chemical space is revealing novel functional materials, catalysts and more. This approach enables computational chemists to efficiently tackle molecular design challenges involving billions of potential candidates. Deep Mind and other startups are advancing the boundaries of AI-driven computational chemistry.

## Accelerating Drug Discovery

The process of discovering potential medication involves the identification, synthesis, and testing of thousands of compounds. This lengthy trial and error journey can take 10 to 15 years before a drug is available on the market. Artificial Intelligence has the capability to speed up and improve multiple phases of this process, including.

- AI systems can efficiently screen billions of molecular structures and reduce them to the most promising candidates for further investigation.
- Machine learning techniques can predict molecular bioactivity, toxicity, solubility, and other pharmacological characteristics.

- AI tools can analyze molecular structures and recommend ideal synthesis pathways using commercially accessible starting materials.
- Generative artificial intelligence models can create molecular graphs with desired therapeutic effects without reference to an existing database in de-novo drug design.

With the assistance of such artificial intelligence, medical chemists can avoid time-consuming, unfavorable compound testing. It allows them to concentrate their research on the most practical pharmacological candidates. Notable AI startups such as Exscientia, Insitro and BenchSci are at the forefront of AI-enhanced drug discovery.

## Optimizing Materials Design

In the development of materials such as alloys, composites and catalysts, materials scientists often depend on traditional trial and error methods, which can be expensive and inefficient. AI algorithms can effectively explore the materials design space and predict the best combinations of components and preparation techniques. Machine learning models can also predict how changes in composition, structure or processing conditions will affect the material behavior. It allows materials scientists to lower laboratory expenses and speed up the development of innovative materials.

## Enhancing Chemical Manufacturing

The chemicals manufacturing sector manages complex, multi-step processes on a large scales. AI technology facilitates the real-time monitoring of process parameters, predicts potential deviations and implements corrective measurements without human intervention. This advancement boosts process efficiency, support proactive maintenance, identifies disruptions and optimizing production scheduling.

## The Road Ahead

The previously mentioned applications likely represent just the beginning. Artificial Intelligence is still largely untapped in tackling many complex issues within the field of chemistry. As algorithms evolve to become more sophisticated and specially designed for chemical application, broader implementation is on the horizon. Here are some promising directions for the future.

## Lab Automation

Chemistry research typically includes routine laboratory tasks such as compound synthesis, characterization tests and reactor setups. By automating these repetitive manual processes with robotics and Internet of things devices, the efficiency of Research and Development can be significantly enhanced. Startups like *Transcriptic*, *Emerald Cloud Lab*, *Strateos* and *synthace* are leading the way in developing AI-driven remote and automated laboratory solutions.

## Improved Data Infrastructure

A large amount of data accumulated from decades of chemistry research is still confined to lab notebooks or publications, and is non-machine-readable. The absence of standardized and FAIR data practices further complicates the potential for data reuse. The development of improved data platforms, standards and analytics tools will allow AI models to extract deeper insights from the wealth of existing knowledge. Efforts such as chemical translation services are beginning to address the challenges associated with chemistry data.

## Multimodal AI

Humans experience the world through a combination of senses that work together. Similarly, AI models that integrate various data types- such as text, images, audio, and sensor data, can achieve a deeper understanding of chemical problems. The use of multimodal techniques that blend insights from simulations, experiments and human expertise is becoming increasingly popular. This hybrid form of AI has the potential to extend capabilities beyond what either humans or models can achieve alone.

## Chemical Language Models

By analyzing vast amounts of specialized text, transformers and other natural language processing models are gaining knowledge in specific domains like medicine and law. Similarly, delving into decades of

chemical literature could enable AI models to develop an intuitive understanding of chemical concepts. However, the unique equations and molecular diagrams in chemistry pose particular challenges for language models. Startups such as AI Molecular are developing promising early stage custom chemical language models known as Chemformer.

## Quantum Machine Learning

Using quantum mechanical phenomenon, quantum computing offers the potential for significant performance enhancements. The combination of quantum hardware with quantum machine learning methods could greatly progress sophisticated chemical artificial intelligence and molecular simulations. Key players driving this emerging field of quantum chemistry 2.0 include IBM, Google, Rigetti, and Rahko. While commercial applications are not yet a reality, significant advancements are being made in this cutting-edge area.

## Conclusion

The 21<sup>st</sup> century is expected to usher in advancement in materials and molecular transformation, driven by technologies such as artificial intelligence, robotics, quantum computing, and synthetic biology. Chemistry will be at the forefront of this transformation. Enhanced simulations, extensive data analysis, and AI-driven automation will amplify human creativity in the field of chemistry, leading to the development of tailored materials, targeted therapies and sustainable practices that surpass current limitations.

Recognizing the full potential of artificial intelligence in the field of chemistry will inevitably face challenges related to trust, transparency, skill gaps, and access restrictions. However, by implementing appropriate policies and forming strategic partnerships, these challenges can be tackled, ensuring that the advantages of AI are realized not only for society but also for the advancement of scientific research.



**I'm selfish, impatient and a little insecure.**

**I make mistakes, I am out of control and at times hard to handle. But if you can't handle me at my worst, then you sure as hell don't deserve me at my best.**

**- Marilyn Monroe**

# The Role of Pharmaceutical Chemistry in Medicine

● Prof. Jagmohan Singh Negi  
Department of Chemistry

Pharmaceutical chemistry is a pivotal field that bridges the gap between chemistry and medicine, playing a crucial role in the discovery, development and manufacture of life-saving drugs. This interdisciplinary science encompasses various branches of chemistry, biology, pharmacology and even computational sciences, aiming to design and synthesize new pharmaceutical compounds that can treat, cure or prevent diseases.

## Foundations of pharmaceutical chemistry

At its core, pharmaceutical chemistry focuses on understanding the chemical compounds that can alter biological processes, particularly those involved in disease progression and health maintenance. This branch of chemistry delves into the molecular mechanisms of drug action, the structure - Activity Relationships (SAR) and the optimization of pharmacokinetic properties to ensure efficacy and safety in clinical use. Designing effective molecules Medicinal chemistry, a subset of pharmaceutical chemistry, focuses on the design and synthesis of biologically active compounds. Using principles of organic chemistry, medicinal chemists modify molecular structures to enhance potency, improve pharmacokinetic properties such as absorption and metabolism and reduce toxicity. Computational tools and techniques like molecular modeling the QSAR (Quantitative Structure-Activity Relationship) play a crucial role in predicting and optimizing drug candidates before they enter preclinical testing.

## Drug discovery and development

The journey of a drug from initial concept to market availability is a complex and lengthy process that involves multiple stages of research and development. Pharmaceutical chemists are involved right from the beginning, where they collaborate with medicinal chemists, biologists and pharmacologists to identify potential drug targets and design molecules that can interact selectively with these targets. Once identified, lead compounds undergo iterative modification through medicinal chemistry—a branch of pharmaceutical chemistry that focuses on optimizing drug potency, selectivity and pharmacokinetic properties. Structure-Activity Relationship (SAR) studies guide these modifications, helping chemists understand how changes in molecular structure affect drug efficacy and safety. Understanding drug action Pharmacology, closely related to pharmaceutical chemistry, explores how drugs interact with biological systems. It examines how drugs are Absorbed, Distributed, Metabolized and Excreted (ADME) within the body, as well as their mechanisms of action at the molecular and cellular levels. This knowledge is essential for pharmaceutical chemists

to fine-tune drug properties for optimal therapeutic outcomes. Pharmaceutical industry is highly regulated to ensure that drugs meet stringent safety and efficacy standards before they reach patients. Pharmaceutical chemists work closely with regulatory affairs specialists to compile comprehensive data on drug development, conduct preclinical and clinical trials according to regulatory guidelines and submit applications for drug approval to health authorities such as the FDA (Food and Drug Administration) in the United States or the EMA (European Medicines Agency) in Europe. Recent advancements in pharmaceutical chemistry include the rise of biopharmaceuticals, such as monoclonal antibodies and therapeutic proteins, which offer targeted therapies for complex diseases like cancer and autoimmune disorders. Nanotechnology is also revolutionizing drug delivery systems, enabling more precise targeting of drugs to specific tissues or cells while minimizing side effects. Quality control Ensuring the safety, efficacy and quality of pharmaceutical products requires rigorous analytical testing. Analytical chemistry techniques such as spectroscopy, chromatography and mass spectrometry are used to characterize drug compounds, assess purity levels, detect impurities and monitor stability throughout the manufacturing process and shelf life. Quality control measures are essential throughout the drug development process and during commercial manufacturing. Regulatory agencies, such as the Food and Drug Administration (FDA) in the United States and the European Medicines Agency (EMA), enforce stringent standards to protect public health and ensure that pharmaceutical products meet established safety and efficacy criteria.

## Challenges and future directions

Despite significant progress, pharmaceutical chemistry faces several challenges, including the rise of drug resistance, the need for more personalized medicine approaches and the high cost and time investment in drug development. Future directions in the field may involve harnessing artificial intelligence and machine learning to accelerate drug discovery, exploring new modalities like gene therapies and addressing global health disparities through access to affordable medicines. Ethical considerations are paramount in pharmaceutical chemistry, particularly concerning patient safety, informed consent and equitable access to medications. Researches and industry professionals must navigate complex regulatory landscapes and uphold ethical standards to ensure the responsible development and distribution of pharmaceutical products.



**विभागीय गतिविधियाँ**  
**(Report of Departments)**

## गणित विभाग

1989 में अस्तित्व में आए इस विभाग का प्रारम्भ स्नातक की कक्षाओं के साथ हुआ। 2002 से स्नातकोत्तर गणित की कक्षाएं भी प्रारम्भ होने के साथ ही शोधकार्य हेतु मार्ग प्रशस्त हो गया। वर्तमान में विभाग विद्यार्थियों को बी.एस.सी., बी.ए., एम.एस.सी., एम.ए., पीएच.डी. पाठ्यक्रम प्रदान कर रहा है। वर्तमान में विभाग में प्राध्यापकों के तीन पद सृजित हैं। वर्तमान में 300 से अधिक विद्यार्थियों एवं 5 शोधार्थियों द्वारा इन पाठ्यक्रमों का लाभ उठाया जा रहा है। विभाग द्वारा स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिये गणित के आधुनिक विषयों पर प्रत्येक वर्ष विभागीय सेमिनार का आयोजन किया जाता है।

प्राध्यापकों द्वारा 2023 से 2025 की अवधि के दौरान विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर के शोधपत्र प्रकाशन, पुस्तक लेखन, सेमिनार, वेबिनार, कार्यशाला, प्यूचर लीडरशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि अनेक कार्यक्रमों में केवल प्रतिभाग ही नहीं किया वरन् सफलतापूर्वक संपन्न किये। विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष अन्य शिक्षणेत्तर गतिविधियों में प्रतिभागिता बढ़ाने के लिए गणित परिषद् का गठन किया जाता है।

### वर्ष 2023-24

**अध्यक्ष** - कमल जोशी, एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।  
**उपाध्यक्ष** - गुंजन सती एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।  
**सचिव** - प्रिया छिमवाल, बी.एस.सी. तृतीय वर्ष।  
**सह सचिव** - मनीशा जखमोला, बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।  
**कोषाध्यक्ष** - आकांक्षा बिष्ट, बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।

### वर्ष 2024-25

**अध्यक्ष** - दीपांशी अग्रवाल, एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।  
**उपाध्यक्ष** - लक्षिता बिष्ट, एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।  
**सचिव** - आशा, बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर।  
**सह सचिव** - सचिन रावत, बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।  
**कोषाध्यक्ष** - सोनी गोस्वामी, बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।

### परीक्षाफल

2023 में कुल 31 विद्यार्थियों में से 24 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। जिसमें साधना सिद्दकी 8.8 CGPA के साथ सर्वोच्च स्थान पर रही।

2024 में कुल 16 विद्यार्थियों में से 13 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। जिसमें कमल जोशी 8.7 CGPA के साथ सर्वोच्च स्थान पर रहा।

### गतिविधियाँ

1- 27 जुलाई, 2023 को गुरु दिवस व्याख्यानमाला की द्वितीय श्रृंखला में ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता जाने माने गणितज्ञ सूरजमल विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कुमाऊं विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर होशियार सिंह धामी जी द्वारा “21वीं सदी में चुनौतियों से निपटने में सक्षम है एस टी ई एम शिक्षा” विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। आयोजित व्याख्यानमाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को स्मार्ट ही नहीं अपितु सृजनशीलता के साथ नई नवाचारी शिक्षण-अधिगम पद्धति, के विकास की ओर प्रोत्साहित करना था।

2- 29 अगस्त, 2024 को गुरु दिवस व्याख्यानमाला की तृतीय श्रृंखला के इक्कीसवें ऑनलाईन व्याख्यान का आयोजन किया गया। आयोजित व्याख्यानमाला का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सृजनशीलता के साथ नवाचारी शिक्षण-अधिगम पद्धति के विकास की ओर प्रेरित करना था। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी के प्रो. दीपक कुमार तिवारी ने “हाइड्रोडायनामिक्स (जलगतिकी) और प्रकृति में इसकी अस्थिरता” विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

विभाग के प्राध्यापक विभाग के अतिरिक्त महाविद्यालय के अनेक दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन करते हैं।

डॉ. प्रमोद जोशी द्वारा महाविद्यालय में विभाग प्रभारी, गणित विभाग के साथ-साथ निर्देशक आई.क्यू.ए.सी. एवं समन्वयक नैक जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्वों का भी तत्परता के साथ निर्वहन किया जाता है।

विभाग के प्राध्यापक डॉ. पवन टम्टा, नोडल अधिकारी AISHE द्वारा वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 हेतु DCF II को सफलता पूर्वक समय से AISHE पोर्टल पर आपलोड किया गया।

विभाग के प्राध्यापक डॉ. मुकेश चन्द्र द्वारा समर्थ पोर्टल पर सदस्य रूप में अपना योगदान प्रदान किया जाता है।

डॉ. प्रमोद जोशी

## रसायन विज्ञान विभाग

सत्र : 2023-24 :

### व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर के रसायन विज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य शीर्षक ग्रीन सॉल्वेंट, मैडिसिनल प्लांट्स इन उत्तराखण्ड और नैनो केमेस्ट्री रहा। कार्यक्रम में महाविद्यालय के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया। सभी विद्यार्थियों ने अपना पावर पॉइंट प्रजेंटेशन प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम. सी. पाण्डे ने विद्यार्थियों की प्रजेंटेशन की अत्यंत सराहना की और भविष्य में इसे सेमिनार का रूप देने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने उत्तराखण्ड के औषधीय पौधों पर अपने विचार रखे। रसायन विज्ञान विभाग प्रभारी प्रो. जगमोहन सिंह नेगी ने विद्यार्थियों के कार्य को प्रोत्साहित करते हुए ग्रीन सॉल्वेंट पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्राध्यापिका डॉ. नवभा जोशी ने सभी विद्यार्थियों की प्रेजेंटेशन का जजमेंट करते हुए मेडिसिनल प्लांट के बारे में विद्यार्थियों को व्याख्यान दिया एवं उसके विजेताओं की घोषणा की। विभाग के प्राध्यापक डॉ. मनोज कुमार नैलवाल ने नैनो केमेस्ट्री के बारे में अपने विचार रखते हुए सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। परिषदीय कार्यक्रम में एम. एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर के अंकित ध्यानी प्रथम, बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर की आशा द्वितीय एवं बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर की प्रीति यादव तथा अपेक्षा बिष्ट तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम में प्रयोगशाला सहायक नन्दन सिंह रौतेला, दिनेश चन्द्र पाण्डे, राम सिंह एवं प्रकाश चन्द्र उपस्थित रहे। इसके उपरान्त विभाग प्रभारी प्रो. जगमोहन सिंह नेगी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों को महाविद्यालय प्रांगण एवं बॉटनिकल गार्डन के मेडिसिन प्लांट के बारे में चर्चा की।

आज दिनांक 04-06-2024 को रसायन विज्ञान परिषद् का गठन विभाग प्रभारी प्रो. जगमोहन सिंह नेगी की अध्यक्षता में किया गया। इसमें निम्न पदाधिकारियों को नामित किया गया है।

अध्यक्ष - सूरज, एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

उपाध्यक्ष - अंकित, एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

सचिव - श्रिया त्रिपाठी, बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

महासचिव - रजनी, बी.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर

कोषाध्यक्ष - मैधा नेगी, बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

परिषद् का गठन करते समय संयोजक व सह-संयोजक की उपस्थिति रही।

सत्र : 2024-25

### रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित की गई प्रतियोगिताएँ-

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर के रसायन विज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा एक व्याख्यान और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर एस.एस. मौर्य द्वारा किया गया। व्याख्यान प्रतियोगिता में रजनी रावत प्रथम, अंकित ध्यानी द्वितीय एवं निकिता जीना तृतीय स्थान पर रहीं। साथ ही पोस्टर प्रतियोगिता में अपेक्षा बिष्ट प्रथम, कल्पना रावत, वर्षा तिवारी संयुक्त रूप से द्वितीय एवं पायल तृतीय स्थान पर रहीं। निर्णायक मंडल की भूमिका में डॉ. ऋचा पुनेठा एवं डॉ. रागिनी गुप्ता रहीं। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे विजेता प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्यार्थियों को निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जगमोहन सिंह नेगी, प्रोफेसर लव कुश, प्रोफेसर प्रमोद जोशी, डॉ. सुमन कुमार, डॉ. सुभाष पोखरियाल, डॉ. मनोज नैलवाल, डॉ. नवभा जोशी आदि उपस्थित रहे।

आज दिनांक 22-10-2024 को रसायन विज्ञान परिषद् का गठन विभाग प्रभारी प्रो. जगमोहन सिंह नेगी की अध्यक्षता में किया गया। इसमें निम्न पदाधिकारियों को नामित किया गया है।

अध्यक्ष - निकिता जीना, एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।

उपाध्यक्ष - अंकुल सिंह, एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।

सचिव - रजनी रावत, बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर।

उपसचिव - कोमल कुमारी, बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर।

कोषाध्यक्ष - उन्नति सती, बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर।

परिषद् का गठन करते समय संयोजक व सह संयोजक भी उपस्थित रहे।

प्रो. जगमोहन सिंह नेगी  
संयोजक एवं प्रभारी  
रसायन विज्ञान विभाग

# Department of Physics

**Courses Running in the department : B.Sc., M.Sc. & Ph.D. Programmes**

**Departmental Staff (Post sanctioned)**

Assistant Professor 03

Lab Assistant 02

Lab Attendant 02

Department of Physics. P.N.G. Govt. (P.G.) College Ramnagar (Nainital) is one of the leading Department in research and teaching. Since its inception in 1989, the faculty of Physics Department has made significant contributions to the subjects as well as to interdisciplinary areas. Currently the Department offers Ph.D. programmes in addition of three years undergraduate and Two years Post graduate programmes.

The departments have well-equipped laboratories for UG and PG students and rich library which have collection of many good text books. Many rare and excellent reference books by foreign authors. Sometimes reputed Professors/scientists are invited to deliver lectures in Department for the benefit of the students as well as faculty. The faculties of the department are well connected with other National Universities/ Research Institutes.

The department of Physics, P.N.G. Govt. (P.G.) College Ramnagar (Nainital) has been also developing and working on e-learning facilities for Graduate, Postgraduate, research students and faculty members. Initially college has subscribed National library and information services (**N-LIST**) for the e-resources in which research students and faculty members are activated. Due to covid-19 pandemic increasing interest in e learning mode become necessary for students therefore college is also availing facility of National Digital Library of India (**NDLI**) (**Sponsored and mentored by Ministry of education, Government of India**). **NDLI has approved P.N.G. Govt. P.G. College as a CLUB member.**

For the session 2023-24 and 2024-25 following were the achievements of Physics Department:

**Online lecture:** online lecture entitled “**Magnetic Memory and Data storage Technology**” held on 04 January 2024 by Dr. Bhagwati Prasad Joshi, Indian Institute of Science (IISc), Bangalore. (**Convener, Dr. Subhash Chandra Pokhriyal**)

**National workshop:** national workshop entitled “**Hands on Physics Experiments through demonstration and concepts of Physics**” held on 16-17 March 2024 sponsored

by Uttarakhand Science Education and Research Centre (USERC), Dehradun, Govt. of Uttarakhand (Convener, Dr. Subhash Chandra Pokhriyal)

**Carreer counselling:** Awareness programme for Joint Admission Test For Masters (JAM 2024) held on 20 September 2024 conducted by IIT, Delhi (**Convener, Dr. Subhash Chandra Pokhriyal**).

**Science Exhibition:** Science Exhibition entitled “**Techfest 2025**” held on **6 May 2025**.

**USET/GATE/JAM exams:** i. Mr. Deepanshu Sati qualified JAM and selected in IIT, Delhi for Mater Degree.

ii. Mr. Manish Negi has qualified GATE and U-SET and selected in UGC-DAE CSR, Indore for Ph.D.

iii. Bhumika Bisht has qualified GATE.

Ph.D.: Three students are enrolled for Ph.D. in the department of physics

i. Mr. Krishna Pal Negi (Supervisor Dr. Subhash Chandra Pokhriyal)

ii. Mr. Saurabh Pande (Supervisor Dr. Subhash Chandra Pokhriyal)

iii. Mrs. Bhumika Bisht (Supervisor Dr. Subhash Chandra Pokhriyal)

**Scientific Research Project Carried Out**

A scientific research project entitled “Comprehensive study for radonuclide contents and radon concentrations in soil and spring water along Main Central Thrust in Garhwal Himalaya, India” Sponsored by **UCOST**, Govt. of Uttarakhand carried out at Department of physics from July 2022 to July 2024. (**Principal Investigator Dr. Subhash Chandra Pokhriyal**)

**Research Papers Published:**

1. Health risk implications due to uranium content in drinking water sources from the tectonically active zone of Garhwal Himalaya, India, Krishna Pal Singh, Subhash Chandra, Abhishek Joshi, Shubham Sharma, Vikrant Thakur, Ganesh Prasad, Rohit Mehra, R.C. Ramola, Applied Radiation and Isotopes, 221 (2025) 111804. (**Published from Hungry**)

2. Measurement of natural radionuclides and health risk assessment in soil sample of the Main Central Thrust region in Garhwal Himalay, India, Krishna Pal Singh, Subhash Chandra, Mukesh Prasad, Pooja Panwar, Abhishek Joshi, Shubham Sharma, Sanjeev Kimothi,

Ganesh Prasad, Rohit Mehra, R.C. Ramola, Environmental Monitoring and Assessment (2025) 197-128. **(Published from Switzerland)**

3. Estimation of background radiation in the indoor air in geo-sensitive zones of the Garhwal Himalaya, India. Ganesh Prasad, Krishna Pal Singh, Sanjeev Kimothi, Subhash Chandra, R.C. Ramola, Journal of Radio analytical and Nuclear Chemistry 333:3219-3227 (2024). **(Published from Hungry)**
4. Estimation of radiation dose due to ingestion of radon in water samples of Garhwal Himalaya, India, Krishna Pal Singh, Subhash Chandra, Mukesh Prasad,

Abhishek Joshi. Ganesh Prasad and R.C. Ramola Journal of Radioanalytical and Nuclear Chemistry (2024) 333:2867-2879. **(Published from Hungry)**

5. Measurement of Radon concentration in soil gas and radon exhalation rate from soil samples along and across the Main Central Thrust of Garhwal Himalaya, India, Krishna Pal Singh, Subhash Chandra, Pooja Panwar, Abhishek Joshi, Ganesh Prasad, G.S. Gusain and R.C. Ramola Environmental Geochemistry and health (2023) 45:8771-8786. **(Published from Netherlands)**



## Department of Botany

Department of Botany, PNG Govt. P.G. College, Ramnagar was established in 1989 with commencement of B.Sc classes and later it was upgraded to P.G. level in 2002.

Every year "Vanaspati Vigyan Parishad" is constituted at the departmental level with students as office bearers which organises different types of academic activities like debate, quiz, poster and essay writing competition on contemporary botanical issues.

Research activity is also going on in the department and presently 06 research scholars are working in the field of Plant Ecology, Plant Pathology, Pteridophyta and Bryology under the supervision of Dr. S.S Maurya, Dr. P.C Paliwal and Dr. Richa Punetha respectively. M.Sc IV sem students are exposed towards research by submitting dissertation on the allotted topics at the end of session which is presented orally and duly evaluated by the experts appointed by the university. The students are consistently doing well in the examination with a satisfactory result at UG (more than 80%) and P.G. (more than 90%) levels.

Department of Botany organised a single day local excursion for M.Sc IV semester students in which all teachers and students participated on 18 th March 2025. In the educational trip students were very excited and they participated enthusiastically. Students conducted practical experiments for sampling with the help of quadrat and also collected litter for further experiment in lab. They also visited adjoining crop fields for observation and collection of infected plants. Students collected infected wheat, sugarcane, potato and cruciferous plants for further study in lab.

Vanaspati Vigyan Parishad organised an essay competition on a very relevant topic "FOREST FIRE AND

ITS IMPACT ON BIODIVERSITY [2023-2024] in botany department and winners of the event were :

- |                          |               |
|--------------------------|---------------|
| 1) Shabenoor             | B.Sc IV sem.  |
| 2) Yashshvi Dhondiyal    | B.Sc III sem. |
| 3) Uttam Chandra Nailwal | B.Sc II sem.  |

### Constitution of Departmental council for session [2023-2024].

|                 |                    |               |
|-----------------|--------------------|---------------|
| President       | Ikra fatima        | M.Sc III Sem  |
| Vice-President  | Vimal Kumar        | M.Sc I Sem    |
| Secretary       | Yashasvi Dhondiyal | B.Sc III Year |
| Joint-secretary | Amit Arya          | B.Sc III Sem  |
| Treasurer       | Preeti Yadav       | B.Sc II Sem   |

### Constitution of Departmental council for session [2023-2024].

|                 |                 |              |
|-----------------|-----------------|--------------|
| President       | Lata Nailwal    | M.Sc III Sem |
| Vice-President  | Vishakha Pandey | M.Sc I Sem   |
| Secretary       | Deepa Mehra     | B.Sc V Sem   |
| Joint-secretary | Ankush Kumar    | B.Sc III Sem |
| Treasurer       | Ansh Sachdeva   | B.Sc I Sem   |

The Botany department organised 3rd session of the lecture series "**Guru Diwas Vyakhyan Mala**" as an attempt to filip easy exchange of innovative ideas and experienced approach. The topic of Vyakhyan Mala was "**Man and Naturs.**" This lecture series was organised on 22 Aug.2024.

The chief speaker was Prof. Govind S.Rajveer. Former Principal and Professor of Botany, Govt.P.G. College Agastyamuni Rudraprayag (Uttarakhand).



# Department of Zoology

It is a matter of great joy that PNG Government Postgraduate College is celebrating its golden jubilee year in 2025. The department of zoology was established in 1989 to teach undergraduate courses. The postgraduate in zoology was upgraded in the year 2002 to meet the aspirations of the students.

The department is aspiring to be an excellence center of zoology education in the forthcoming years. At present there are 3 faculty posts sanctioned and only 2 faculty are stationed. Recently, Department has equipped its laboratory with modern infrastructure like biochemistry analyzer, electrophoresis unit, laminar air flow and incubators to perform practical as per NEP-2020 syllabi.

In order to promote knowledge, faculty members are actively engaged in teaching with all the available resources for its best uses. Faculty members are also participated in various training and published research papers in the journals of national and international repute during the academic year 2023-24 and 2024-25.

The department is thriving to create a niche in the college by actively engaging the students through academic and co-curricular activities to inculcate scientific temperament and brotherhood.

The departmental council acts as a bridge between faculty members and students. The departmental council organizes various student centric activities which helps in carrying forward the legacy of the department. The fresher's

welcome and senior student's farewell remains an integral tradition of the department.

**2023-24**

## Faculty members

1. Dr. Bhawana Pant, PhD [KU], Assistant Professor & In-Charge
2. Dr. Shankar Mondal, Assistant Professor, PhD [AIIMS]
3. Dr. Ragini Gupta, PhD [KU] [MSc, Gold Medalist] Assistant Professor [Guest]

## Student Council

1. **President:** Abishek Jakhmola
2. **Vice President:** Reshma
3. **Secretary:** Bharti Pathak
4. **Treasurer:** Nisha Bisht

**2024-25**

## Faculty members

1. Dr. Shankar Mondal, PhD [AIIMS], Assistant Professor & In-Charge
2. Dr. Ragini Gupta, PhD [KU] [MSc, Gold Medalist] Assistant Professor [Guest]

## Student Council

1. **President:** Reshma
2. **Vice President:** Priya Pant
3. **Secretary:** Shabenoor
4. **Treasurer:** Yachna Bora

**Dr. Shankar Mondal**  
Head of Dept.

## हिन्दी विभाग

**सत्र: 2023-24**

महाविद्यालय के हिंदी विभाग में विभागीय परिषद् के गठन एवं आयोजित कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत् है-

दिनांक 12-09-2023 को विभाग द्वारा हिंदी परिषद् का गठन किया गया, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए-

- अध्यक्ष - नीलम मनराल, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।  
उपाध्यक्ष - संजय उपाध्याय, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।  
सचिव - नेहा पाण्डे, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।  
उप सचिव - रितेश कुमार, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।  
कोषाध्यक्ष - गीतांजलि उप्रेती, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

दिनांक 24-08-2023 को हिंदी विभाग एवं महाविद्यालय के कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में गुरु दिवस व्याख्यान माला की द्वितीय श्रृंखला के अंतर्गत अंतिम व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. हरीश चन्द्र पाठक प्राचार्य ओंकारानंद सरस्वती राजकीय महाविद्यालय देवप्रयाग थे, उक्त व्याख्यान माला का शीर्षक 'हिंदी फिल्म गीत में प्रकृति चित्रण' था। मुख्य वक्ता द्वारा उक्त विषय पर बेहद रोमांचकारी रूप में अपने अनुभव को हम सबके समक्ष इस प्रकार साझा किया गया कि प्रकृति मानवीय जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए दूसरे का पूर्व होने का कार्य करती हैं एवं हिंदी फिल्म गीतों का प्रकृति के साथ एवं विविध पक्षों के

साथ मानवीकरण करते हुए असीम सुख का अनुभव कराती है। व्याख्यान माला में महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय ने अपने आशीष वचनों से छात्रों को उत्प्रेरित किया एवं विभाग प्रभारी/संयोजक डॉ. ललित मोहन, सह संयोजक डॉ. सुरेश चन्द्र, डॉ. दुर्गा तिवारी, डॉ. रीता तिवारी तथा करियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, डॉ. दीपक खाती और डॉ. प्रकाश बिष्ट का उक्त कार्यक्रम के आयोजन में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में महाविद्यालय के विभिन्न प्राध्यापकों सहित अनेक छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

दिनांक 14 सितम्बर 2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक 'तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ' था। भाषण प्रतियोगिता में महाविद्यालय के हिंदी के अतिरिक्त विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया और तकनीकी क्षेत्र में हिंदी भाषा के महत्त्व, प्रचार-प्रसार आदि के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गये।

उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त समय-समय पर छात्र-छात्राओं के पाठ्यक्रमों के संबंधित आंतरिक सत्रीय क्रियाकलापों एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

#### सत्र: 2024-25

दिनांक 23-09-2024 को हिन्दी परिषद् का गठन किया गया। जिसके चयनित पदाधिकारी निम्नवत् हैं-

- अध्यक्ष - सुश्री भारती पाठक, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- उपाध्यक्ष - सुश्री पद्मा, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- सचिव - श्री कैलाश चंद्र, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।
- उप सचिव - श्री रितेश कुमार, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- कोषाध्यक्ष - सुश्री प्रियंका आर्या, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

31 जुलाई 2024 को हिंदी जगत के "कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद" की जयंती के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग और अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई।

5 सितम्बर 2024 शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग की ओर से "गुरु दिवस व्याख्यान-माला" की चतुर्थ शृंखला का शुभारंभ किया गया। जिसमें प्रोफेसर गिरीश चंद्र पंत द्वारा भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि "गोस्वामी तुलसीदास का समन्वयवाद" शीर्षक

पर एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

14 सितम्बर 2024 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य पर हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत 28-09-2024 "प्रतियोगी परीक्षाओं में हिंदी का योगदान" विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया-

- प्रथम स्थान- जितेन्द्र, पंचम सेमेस्टर।
- द्वितीय स्थान- रोहित खत्री, पंचम सेमेस्टर।
- तृतीय स्थान- कैलाश नैनवाल, तृतीय सेमेस्टर।
- सांत्वना - कुमारी दीप्ति लोहला, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।

इसी क्रम में पोस्टर/चार्ट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसका विषय "हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग : भक्ति काल रखा गया"। जिसमें विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया-

- प्रथम स्थान - कुमारी मोनिका, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- द्वितीय स्थान - कुमारी भारती पाठक, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- तृतीय स्थान - कुमारी दीप्ति लोहला, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- सांत्वना - श्री रोहित खत्री, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।

8 मार्च 2025 विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में "हिंदी कथा साहित्य में महिला रचनाकारों का योगदान" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिनमें विजेता प्रतिभागियों के नाम निम्नवत् हैं-

- प्रथम स्थान- सीमा, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर।
- द्वितीय स्थान- दीप्ति लोहला, एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर।
- तृतीय स्थान- तहमीना, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर।

#### शोधार्थियों का विवरण-

डॉ. पुनीता कुशवाहा के निर्देशन में चार शोधार्थी शोधरत हैं-

- 1- श्री सुरेंद्र जोशी, 2- श्री आनंद सिंह, 3- श्री गिरीश शुक्ला, 4- मीना देवी।

डॉ. ललित मोहन के निर्देशन में पांच शोधार्थी शोधरत हैं-

- 1- श्री सुरेश चन्द्रा, 2- सुश्री दीपा रानी, 3- श्री रक्षित कुमार, 4- सुश्री प्रतिभा लोदियाल, 5- श्री सुनील कुमार

डॉ. नीमा राणा के निर्देशन में चार शोधार्थी शोधरत हैं-

- 1- श्री अभिषेक, 2- श्री अभिषेक कुमार, 3- सुश्री दीक्षा सैनी, 4- श्री मोहित सिंह।

डॉ. पुनीता कुशवाहा,  
प्रभारी, हिन्दी विभाग

# Department of English

## Progress Report

### Academic Years: 2023–24 & 2024–25

The Department of English at P.N.G. Government PG College, Ramnagar, has continued its journey of academic excellence, creative exploration, and student empowerment over the past two academic years. With a focus on enhancing communication skills, literary engagement, and research aptitude, the department has successfully organized a range of activities that reflect its commitment to holistic education and intellectual growth.

### Academic Year 2023–24: Building Confidence Through Language

The academic year 2023–24 was marked by a series of thoughtfully curated events aimed at strengthening students' foundational skills in reading, writing, and public speaking. These activities were designed to foster a love for literature, improve linguistic proficiency, and build self-confidence.

#### Book Reading & Poetry Recitation Sessions

The department organized regular book reading and poetry recitation sessions throughout the year. These sessions provided students with a platform to explore literary texts, express their interpretations, and develop a deeper appreciation for the written word.

- Students read excerpts from authors such as Lord Byron, John Keats, Jane Austen, Ruskin Bond, Rabindranath Tagore, and Maya Angelou, followed by group discussions.
- Poetry recitation events encouraged students to perform original compositions as well as classic poems, enhancing their presentation and vocal skills.
- These sessions created a vibrant literary atmosphere and helped students connect emotionally and intellectually with literature.

#### Public Speaking Workshops

Recognizing the importance of effective communication, the department conducted public speaking workshops aimed at improving students' articulation, confidence, and stage presence.

- Topics included "Structuring a Speech," "Voice Modulation," and "Overcoming Stage Fright."
- Students participated in mock presentations, debates, and extempore rounds, receiving constructive feedback from faculty members.
- The workshops were well-received and contributed significantly to students' personal and academic development.

#### Guru Diwas Vyakhyan Mala – Fourth Lecture

In collaboration with the Career Counselling Cell, the department hosted the fourth lecture of the "Guru Diwas Vyakhyan Mala" series.

- The keynote speaker was Dr. Archana Tyagi, a renowned academic and communication expert.
- Her lecture, titled "*How to Write and Speak Simple and Powerful English*," was attended by over 100 students and faculty members.
- Dr. Tyagi emphasized clarity, simplicity, and authenticity in language use, offering practical strategies for effective communication.
- The session was interactive and inspiring, leaving a lasting impact on attendees and reinforcing the department's mission to promote accessible and impactful English usage.

### Academic Year 2024–25: Expanding Horizons and Deepening Skills

Building on the success of the previous year, the Department of English expanded its scope in 2024–25 to include personality development, advanced public speaking, and research methodology. These initiatives were aimed at preparing students for academic pursuits, professional challenges, and personal growth.

#### Book Reading & Poetry Recitation

The department continued its tradition of literary engagement through monthly book reading circles and poetry recitation events.

- Students explored themes such as identity, nature, and resistance in literature, with selections from Indian English poets and global authors.
- A special session on "Poetry of the Hills" celebrated regional voices and highlighted the cultural richness of Uttarakhand.
- These events fostered creativity, critical thinking, and a sense of community among students.

#### Workshops on Personality Development & Public Speaking

To equip students with essential life skills, the department organized workshops on personality development and public speaking.

- The personality development sessions focused on self-awareness, goal setting, emotional intelligence, and interpersonal communication.
- Public speaking modules included advanced techniques such as persuasive speaking, storytelling, and handling Q&A sessions.

#### Research Workshop – "How to Do Research in English"

Understanding the growing importance of research in higher education, the department hosted a workshop titled "*How to Do Research in English*."

- The workshop covered key aspects such as research design, literature review, citation styles, and academic writing.

- Faculty members guided students through the process of formulating research questions, identifying credible sources, and structuring research papers.
- Undergraduate students were encouraged to present their research proposals and received mentorship for their academic research projects.
- The workshop was a significant step toward cultivating a research-oriented mindset among students.

### Outcomes & Reflections

The activities conducted over these two years have had a meaningful impact on students and the department as a whole:

- **Improved Communication Skills:** Students demonstrated enhanced fluency, articulation, and confidence in academic and public settings.
- **Literary Engagement:** Participation in reading and recitation sessions deepened students' understanding of literature and encouraged creative expression.
- **Professional Readiness:** Workshops on personality development and public speaking prepared students for interviews, presentations, and workplace interactions.
- **Research Orientation:** The research workshop sparked interest in academic inquiry and laid the foundation for future scholarly pursuits.

## संस्कृत विभागीय परिषद्

सत्र- 2023-24 एवं 2024-25

सत्र 2023-24 में छात्र-छात्राओं की सर्वसम्मति से संस्कृत विभागीय परिषद् का गठन कर अनेक पदों पर चयनित पदाधिकारियों का वर्णन अधोवर्णित है-

|                        |                 |
|------------------------|-----------------|
| 1- जीतेन्द्र सिंह रावत | अध्यक्ष         |
| 2- प्रियंका बिष्ट      | उपाध्यक्ष       |
| 3- प्रियंका बंगारी     | कोषाध्यक्ष      |
| 4- इरमनाज              | सचिव            |
| 5- दीपक कुमार          | कक्षा प्रतिनिधि |
| 6- हर्षवर्धन पन्त      | कक्षा प्रतिनिधि |

पी.एन.जी. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर के करियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के तत्वावधान में संस्कृत विभाग द्वारा दिनांक 30 मई 2024 को गुरुदिवस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत तृतीय श्रृंखला का 14वाँ व्याख्यान आयोजित किया गया।

विषय - वैदिक विज्ञान के विविध आयाम

कार्यक्रम निदेशक- प्रो. एम.सी. पाण्डे (प्राचार्य) कार्यक्रम सचिव- डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल, मुख्यवक्ता- प्रो. मनोज मिश्र रहे।

योग विभागीय गुरुदिवस व्याख्यानमाला आयोजित की गई।

सत्र 2023-24 में संस्कृत विभागीय प्राध्यापक डॉ. मूलचन्द्र की उपलब्धियाँ -

- (1) कार्यशाला में प्रतिभागिता - 02
- (2) अतिथि वक्तव्य - 02
- (3) संयोजक/समन्वयक/प्रतिभागिता - 03
- (4) लोकसभा सामान्य निर्वाचन, सेक्टर मजिस्ट्रेट

(5) विविध राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय/शोध संगठितियों में शोध पत्र वाचन- 02

(6) संस्कृत सेवा सम्मान

(7) बुक चैप्टर प्रकाशन- 01

(8) डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल के निर्देशन में शोध छात्र - 01 पंजीकृत

### सत्र - 2024-25

(1) संस्कृत विभागीय परिषद् के तत्वावधान में व्याख्यान का आयोजन। दिनांक 09 मई 2025, विषय- "भारतीय ज्ञान परम्परा (वैदिक वाङ्मय के विशेष परिप्रेक्ष्य में) अध्यक्ष - प्रो. एम.सी. पाण्डे मुख्यवक्ता - डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र (पूर्व, प्राचार्य, राज. इण्टर कालेज, रामनगर) संयोजक - डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल (प्रभारी, संस्कृत विभाग)

(2) गुरुदिवस व्याख्यानमाला, श्रृंखला- 04 व्याख्यान सं.-09 दिनांक 03 अप्रैल 2025, विषय- 'भारतीय संस्कृत ज्ञानपरम्परा' (स्मृतियों के विशेष परिप्रेक्ष्य में) अध्यक्ष - प्रो. एम.सी. पाण्डे (प्राचार्य) मुख्य अतिथि- प्रो. पवन कुमार, परीक्षा नियन्त्रक, मुख्यवक्ता - प्रो. भगवत् शरण शुक्ल, विभागाध्यक्षचर, व्याकरण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

(3) कार्यशाला/पुनश्चर्या आदि पाठ्यक्रमों में प्रतिभागिता- 01

(4) कार्यक्रमों में संयोजक/समन्वयक आदि 03

(5) यू.जी.सी. केयर लिस्टेड पत्रिका में प्रकाशन- 01

## संगीत विभाग

सत्र: 2023-24

संगीत विभाग वर्तमान में स्नातक स्तर पर संचालित है। वर्तमान में विभाग में 02 नियमित प्राध्यापक कार्यरत हैं, जिनमें एक कार्योचित है। विभाग द्वारा प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में विभागीय परिषद् का विद्यार्थियों द्वारा गठन किया जाता है, जिसका सत्रानुसार विवरण इस प्रकार है-

**विभागीय परिषद् कार्यकारिणी, सत्र- 2023-24**

संगीत विभाग के स्नातक प्रथम, तृतीय, स्नातक पंचम सेमेस्टर एवम् स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा संगीत की विभागीय परिषद् का गठन किया गया। उपरोक्त कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा परिषदीय पदाधिकारियों का चुनाव उपरोक्त क्रम में किया गया। अध्यक्ष पद पर मो. आसिफ (स्नातक तृतीय वर्ष), उपाध्यक्ष कविता (स्नातक तृतीय सेमेस्टर), सचिव पद पर ज्योति रावत (स्नातक तृतीय सेमेस्टर), उपसचिव अमित राज (स्नातक प्रथम सेमेस्टर), कोषाध्यक्ष दीपक कुमार (स्नातक प्रथम सेमेस्टर) रहे।

**परिषदीय क्रियाकलाप** - संगीत विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान में संगीत के विद्यार्थियों द्वारा विभाग में सुगम संगीत (भजन/गज़ल) गायन प्रतियोगिता एवं संगीत ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी, जिनके परिणाम निम्नवत् रहे।

**सुगम संगीत गायन प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पर अमित राज बस्वनाल, द्वितीय स्थान पर दीपक कुमार, तृतीय स्थान पर ज्योति रावत एवं भास्कर विजयी रहे। विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

**गुरुदिवस व्याख्यानमाला (तृतीय चरण) - 24 अप्रैल, 2024** को संगीत विभाग एवं कैरियर काउंसिलिंग सैल के द्वारा आयोजित गुरु दिवस व्याख्यान माला में मुख्य वक्ता के रूप में जगत तारण महिला डिग्री कॉलेज, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) से डॉ. नम्रता देब द्वारा “**भारतीय संगीत में रस की निष्पत्ति द्वारा आनन्द की प्राप्ति**” विषय पर ज्ञानवर्धक एवं विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया गया। उनके द्वारा रस-भाव संप्रेषण द्वारा संगीत का सौन्दर्यात्मक संवर्धन विषय पर सुन्दर एवं विस्तृत व्याख्यान दिया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान-प्रदर्शन में राग-ध्यान परम्परा पर प्रकाश डालते हुए राग तोड़ी और राग भैरव की पारम्परिक उत्कृष्ट बंदिशों (गीत) का गायन कर रस भाव को स्पष्ट और सरल रीति से प्रस्तुत किया।

संगीत विभाग प्रभारी डॉ. शिप्रा पन्त द्वारा इस सत्र में 01 राष्ट्रीय एवं 01 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग किया गया तथा यू.जी.

सी. केयर लिस्टेज जर्नल में शोध-पत्र शीर्षक “**भारतीय शास्त्रीय संगीत के नवोन्मेष में संचार माध्यम और प्रौद्योगिकी का योगदान**”, “**नादोपासना और योग का अन्तःसम्बन्ध**” आदि प्रस्तुत किए गए।

**विभागीय परिषद् कार्यकारिणी; सत्र: 2024-25**

संगीत विभाग के स्नातक प्रथम सेमेस्टर, स्नातक तृतीय सेमेस्टर एवं स्नातक पंचम सेमेस्टर के विद्यार्थियों के द्वारा संगीत की विभागीय परिषद् का गठन किया गया। तीनों कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा परिषदीय पदाधिकारियों का चुनाव उपरोक्त क्रम में किया गया। अध्यक्ष पद पर कविता (स्नातक पंचम सेमेस्टर), उपाध्यक्ष पद पर ज्योति रावत (स्नातक पंचम सेमेस्टर), सचिव पद पर दीपक कुमार (स्नातक तृतीय सेमेस्टर), उपसचिव पद पर साक्षी (स्नातक प्रथम सेमेस्टर) एवं कोषाध्यक्ष पद पर हिमांशी खण्डूरी (स्नातक प्रथम सेमेस्टर) निर्वाचित हुए।

**परिषदीय क्रियाकलाप-**

संगीत विभागीय परिषद् के तत्त्वावधान में संगीत के विद्यार्थियों द्वारा विभाग में संगीत गायन प्रतियोगिता (लोक संगीत एवम् भजन गायन प्रतियोगिता) के परिणाम इस प्रकार रहे-

**लोक संगीत एवं भजन गायन प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान अमित कुमार एवं ज्योति रावत, द्वितीय स्थान पर प्रियांशु एवं दीपक कुमार एवं तृतीय स्थान पर संयुक्त रूप से अंजू एवं कविता विजयी रहे। गौरव उपाध्याय को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

संगीत विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा महाविद्यालय के महत्त्वपूर्ण अवसरों तथा राष्ट्रीय सेवा योजना, होली-रंगोत्सव, सेमिनार/संगोष्ठी आदि में सक्रिय सहभागिता की गई।

● 01 राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग किया गया तथा संगीत विभाग प्रभारी डॉ. शिप्रा पन्त द्वारा इस सत्र में यू.जी.सी., एम.एम.टी.सी. द्वारा प्रायोजित पुनश्चर्या कार्यक्रम Humanities. Fine Arts, Liberal Arts And Teacher Education में सफलतापूर्वक प्रतिभाग किया गया।

● 3 दिसम्बर, 2024 को संगीत विभाग में कैरियर काउंसिलिंग प्रकोष्ठ के संयोजन में विद्यार्थियों के कैरियर सम्बन्धी प्रश्नों का समाधान करने एवं मार्गदर्शन करने हेतु एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी से एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. महेश चन्द्र पाण्डे द्वारा ‘**संगीत विषय में रोजगार के अवसर**’ पर अतिथि वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया गया।

डॉ. शिप्रा पन्त, विभाग प्रभारी

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

# अर्थशास्त्र विभाग

सत्र: 2023-24

दिनांक 11-01-2024 को अर्थशास्त्र विभागीय परिषद् का गठन हुआ, जिसके पदाधिकारी निम्नवत् रहे-

- 1- अध्यक्ष - राजकुमार, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- 2- उपाध्यक्ष - गरिमा भट्ट, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- 3- सचिव - आकांक्षी, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।
- 4- सहसचिव - संगीता रावत, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- 5- कोषाध्यक्ष - साक्षी छिम्वाल, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

सत्र 2023-24 में विभागीय परिषद् के अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पोस्टर प्रतियोगिता में शोराब अली प्रथम, मीना घुघतियाल द्वितीय एवं लता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता में राजकुमार ने प्रथम, मौ. जुबैद ने द्वितीय तथा ज्योति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सत्र 2023-24 में विभाग में दो छात्राओं ने UGC - NET की परीक्षा उत्तीर्ण की-

1. कुमुद चौधरी (शोध छात्रा)
2. आकांक्षा (एम.ए. छात्रा)

इस सत्र में प्रो. (डॉ.) अनुमिता अग्रवाल की निम्नलिखित उपलब्धियाँ रही-

- SAVASS (Journal of social Science) में शोधपत्र का प्रकाशन।
- शोध समर्थ (Research Journal of Commerce Management & Economics) में शोधपत्र का प्रकाशन
- “भारत का सामाजिक एवं आर्थिक उद्भव” नामक शीर्षक पुस्तक का सम्पादन किया।
- विभिन्न संगोष्ठियों में Resource Person के रूप में व्याख्यान दिया।
- कई शोधपत्र, विभिन्न शोध पत्रिकाओं तथा सम्पादकीय पुस्तकों में प्रकाशित हुए।
- इस सत्र में डॉ. कृष्णा भारती की निम्नलिखित उपलब्धियाँ रहीं-
- Journal व Edited book में शोध पत्र का प्रकाशन
- NCC में कैप्टन रैंक हेतु OTA Gwalior में Refresher Course में प्रतिभाग।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित वेबिनार में अतिथि वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया।
- भारत सरकार की योजना नई रोशनी पर आयोजित वेबिनार Webinar में मुख्य चेयरपर्सन के रूप में प्रतिभाग किया।
- 03 राष्ट्रीय व 02 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पेपर प्रस्तुत किया।

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

सत्र: 2024-25

दिनांक 18-10-2024 को अर्थशास्त्र विभागीय परिषद् का गठन हुआ। जिसके पदाधिकारी निम्नवत् रहे-

- 1- अध्यक्ष - लता।
- 2- उपाध्यक्ष - दीपक।
- 3- सचिव - कामाक्षी अधिकारी।
- 4- सह सचिव - हिमानी चौहान।
- 5- कोषाध्यक्ष - पूजा जोशी।

सत्र- 2024-25 में विभागीय परिषद् के अन्तर्गत पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पोस्टर प्रतियोगिता में हिमांशी गुप्ता प्रथम, फैजाइला रहमान द्वितीय, अमित पाल तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता में लता ने प्रथम, हर्षिता चन्दोला ने द्वितीय एवं पूजा जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस सत्र में प्रो. (डॉ.) अनुमिता अग्रवाल की निम्नलिखित उपलब्धियाँ रही-

- 1) Nurturing future leadership Prog. Org by IIM Kashipur- 16/12/2024 - 20/12/2024 तक प्रतिभागिता।
- 2) Resource Person at Webinar -
- 3) Research Paper Presentation in 03 Conferences.
- 4) Research Paper Published in 02 Journals.
- 5) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस में मुख्य वक्ता में प्रतिभाग। इस सत्र में डॉ. कृष्णा भारती की निम्नलिखित उपलब्धियाँ रही-
- 1) Journal व Edited book में शोध पत्र का प्रकाशन
- 2) 03 राष्ट्रीय व 01 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पेपर प्रस्तुत किया।

इस सत्र में डॉ. रश्मि आर्या की निम्नलिखित उपलब्धियाँ रहीं-

- 1) NEP Orientation & Sensitization Programme on 07/10/2024 to 17/10/2024 में Online प्रतिभाग।
- 2) Research Paper Published 01 in Journal.
- 3) राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता - 2024, 27-08-2024 से 31-08-2024 में निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में प्रतिभाग।
- 4) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस में प्रतिभाग।

## भूगोल विभाग

सत्र: 2023-24

भूगोल विभाग में 03 प्राध्यापक कार्यरत हैं। भूगोल विषय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं का शिक्षण किया जाता है। 04 शोधार्थी डॉ. अनुराग श्रीवास्तव तथा 04 शोधार्थी डॉ. डी.एन. जोशी के निर्देशन में शोध कर रहे हैं। सत्र 2023-24 में डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने 01 तथा डॉ. डी.एन. जोशी ने 04 शोध पत्र प्रकाशित कराये। डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने एक सप्ताह का देवभूमि उद्यमिता योजना का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

### चार्ट प्रतियोगिता

दिनांक 27 जनवरी 2024 को स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों की चार्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कु. अमीषा, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर प्रथम स्थान पर, कु. खप्ती आर्य, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर द्वितीय स्थान तथा कु. मानसी पाण्डे, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर तृतीय स्थान पर रही। इस अवसर पर डॉ. डी.एन. जोशी ने छात्र-छात्राओं को भूगोल विषय में चार्ट और मॉडल के महत्त्व बताये। निर्णायक मंडल में पी.सी. पालीवाल और डॉ. कृष्णा भारती रहे। प्राचार्य महोदय प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने सभी विजयी छात्र-छात्राओं को बधाई देते हुए इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग करने का आह्वान किया।

### भूगोल विभागीय परिषद् का गठन सत्र 2023-24

भूगोल विभाग की सत्र 2023-24 की भूगोल विभागीय परिषद् का गठन 27-01-2024 को किया गया। विभागीय परिषद् के अध्यक्ष पद पर कु. अमीषा, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष पद पर कु. ज्योति, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, सचिव पद पर शेखर बिष्ट, बी.ए. तृतीय वर्ष, संयुक्त सचिव पद पर उबेद सैफी, बी. ए. तृतीय सेमेस्टर और कोषाध्यक्ष पद पर अलतमस, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर निर्वाचित हुए। प्राचार्य महोदय प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने समस्त चयनित विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनायें दी। उन्होंने समस्त विद्यार्थियों से विभागीय गतिविधियों में पूर्ण मनोयोग से प्रतिभाग करने की बात कही। भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. डी.एन. जोशी जी ने भूगोल परिषद् के उद्देश्यों को बताते हुए शैक्षिक उन्नयन व व्यक्तित्व विकास हेतु सम्बोधित किया। निर्वाचित छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

इसमें 75 प्रतिशत उपस्थिति, प्लास्टिक उन्मूलन, प्रकृति संरक्षण तथा जल संरक्षण के विषय में भी विचार विमर्श हुआ।

### जी.आई.एस. और रिमोट सेंसिंग वर्कशॉप

31-05-2024 को भूगोल विभाग एवं कैरियर काउंसलिंग सेल के तत्वावधान में 1 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने कार्यक्रम में जी.आई.एस. और रिमोट सेंसिंग के बारे में छात्र-छात्राओं को अवगत कराया। इसके अध्ययन की संस्थाओं, पाठ्यक्रमों तथा शुल्क के विषय में जानकारी प्रदान की। कार्टोग्राफिक तकनीकों के विषय में भी जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन विभाग प्रभारी डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने किया। डॉ. डी.एन. जोशी ने इससे सम्बन्धित पाठ्यक्रमों और तकनीकों के विषय में बताया। डॉ. सिराज अहमद ने एस. एस.जे. परिसर में संचालित जी.आई.एस. पाठ्यक्रमों के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम में 60 छात्र-छात्रायें उपस्थित रहे।

### गुरुदिवस व्याख्यानमाला

कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ द्वारा संचालित गुरुदिवस व्याख्यानमाला की तृतीय श्रृंखला में भूगोल विभाग के द्वारा ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक "भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना की संकल्पना" रहा। मुख्यवक्ता जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया उत्तर प्रदेश के पूर्व एकेडेमिक डायरेक्टर व विख्यात भूगोलविद् डॉ. गणेश कुमार पाठक ने भारतीय संस्कृति और पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों, भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना को परिभाषित करते हुए, इसके विविध पक्षों को उजागर किया। उन्होंने भारतीय वाङ्मय में वेदों, उपनिषदों एवं पुराणों में पर्यावरणीय जागरूकता एवं उसके महत्त्व को प्रदर्शित कर, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर चिंता व्यक्त की। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम निदेशक, प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने व्याख्यानमाला की संकल्पना पर विचार व्यक्त कर किया। कार्यक्रम के सह आयोजक डॉ. डी. एन. जोशी ने स्वागत व्याख्यानमाला की विषयवस्तु को प्रस्तुत किया। कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने सभी को धन्यवाद प्रेषित किया। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों तथा आयोजक महाविद्यालय के प्राचार्य एवं प्राध्यापक सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में डॉ. दीपक खाती और प्रकाश बिष्ट जी ने विशेष सहयोग दिया।

## सत्र: 2024-25

वर्तमान में विभाग में 09 शोधार्थी शोध में संलग्न हैं- 04 डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, 04 डॉ. डी.एन. जोशी तथा 01 शोधार्थी डॉ. सिराज अहमद के निर्देशन में शोध कर रहे हैं। एक शोध छात्रा रश्मि का लोक सेवा आयोग उत्तराखण्ड के माध्यम से वर्ष 2024 में राजकीय महाविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर चयन हुआ है। सत्र 2024-25 में डॉ. सिराज अहमद ने 08, डॉ. डी.एन. जोशी ने 01 शोध पत्र प्रकाशित कराये। डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने इस सत्र में 03 शार्ट टर्म कोर्स में प्रतिभाग किया।

### मानव वन्यजीव सह-अस्तित्व विषय पर भाषण प्रतियोगिता

दिनांक 05 अक्टूबर 2024 को महाविद्यालय में भूगोल विभाग व ईको टूरिज्म विभाग ने वाइल्ड लाइफ आर्ट गैलरी ट्रस्ट रिंगोड़ा के संयुक्त तत्वाधान में 'वन्य प्राणी सप्ताह' के अन्तर्गत 'मानव वन्य जीव सह-अस्तित्व' शीर्षक पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने की। वाइल्ड लाइफ आर्ट गैलरी के संस्थापक दीप रजवार ने छात्र-छात्राओं को वन्य जीव संरक्षण में मानव की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। पक्षी विशेषज्ञ राजेश भट्ट ने प्राकृतिक सम्पदाओं को संरक्षित कर मानव वन्य जीव सह-अस्तित्व पर चर्चा की। प्रकृतिवाद एवं पर्यावरण प्रेमी इमरान खान ने आधुनिक मानव की कार्यशैली एवं वन्य जीवन की दशा पर चिंता व्यक्त की। प्रतियोगिता में 21 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इसमें प्रथम स्थान पर आकांक्षा रावत, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर, द्वितीय स्थान पर अंजलि गोस्वामी, बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर और तृतीय स्थान अल्लतमस, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर ने प्राप्त किया। सभी विजयी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका प्रकृतिविद राजेश भट्ट, इमरान खान एवं संजय छिम्वाल ने निभाई। कार्यक्रम, विभाग प्रभारी डॉ. सिराज अहमद के निर्देशन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने भी छात्र-छात्राओं को कॉर्बेट टाइगर रिजर्व से सम्बन्धित जानकारियाँ प्रदान की। भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. डी.एन. जोशी ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत कर कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

### भूगोल विभाग के विद्यार्थियों का शैक्षिक भ्रमण-

दिनांक 07-10-2024 को महाविद्यालय के भूगोल विभाग के पंचम सेमेस्टर के विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण हेतु कॉर्बेट नेशनल पार्क के धनगढ़ी में स्थित कॉर्बेट म्यूजियम ले जाया गया।

इस भ्रमण दल को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

विभागाध्यक्ष डॉ. सिराज अहमद के निर्देशन में इस भ्रमण का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने कॉर्बेट नेशनल पार्क के मुख्य प्रवेश द्वार पर अवस्थित कॉर्बेट संग्रहालय में विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों एवं वन्य जीवों के विषय में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की। भूगोल के प्राध्यापक डॉ. डी.एन. जोशी जी ने वन पारिस्थितिकी, पर्यावरण अवनयन, मानव वन्य जीव संघर्ष एवं मानव वन्यजीव सह-अस्तित्व के सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्रदान की। भूगोल के अन्य प्राध्यापक डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने भौगोलिक आंकड़ों, वन सांख्यिकी एवं वन कानूनों के विषय में विद्यार्थियों को जागरूक किया। विभागाध्यक्ष भूगोल डॉ. सिराज अहमद ने बढ़ते अनियंत्रित पर्यटन के कारण कॉर्बेट पार्क की पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभावों के विषय में बताया एवं इस हेतु सस्टेनेबल टूरिज्म की आवश्यकता पर बल दिया। इस भ्रमण दल में लैब असिस्टेंट नितिन विद्या एवं लैब अटेंडेंट भगत बिष्ट का भी विशेष सहयोग रहा।

### भूगोल विभागीय परिषद् का गठन सत्र 2024-25

भूगोल विभाग की सत्र 2024-25 की भूगोल विभागीय परिषद् का गठन 19 अक्टूबर 2024 को किया गया। परिषद् के अध्यक्ष पद पर आकाश कुमार, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष पद पर शेखर बिष्ट, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर, सचिव पद पर उबेद सैफी, बी.ए. पंचम सेमेस्टर, संयुक्त सचिव पद पर खष्टी आर्या, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर और कोषाध्यक्ष पद पर अनुज कुमार, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर निर्वाचित हुए। कार्यक्रम में प्रभारी प्राचार्य प्रो. एस.एस. मौर्या जी ने छात्र-छात्राओं को शुभकामनायें दी तथा उनसे अधिकाधिक शोध कार्यों और प्रोजेक्टों पर कार्य करने का आह्वान किया। डॉ. डी.एन. जोशी ने कार्यक्रम का संचालन किया। छात्र-छात्राओं ने स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक उन्मूलन, प्रकृति संरक्षण, जल संवर्धन एवं मद्य निषेध हेतु कार्य करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विभाग प्रभारी डॉ. सिराज अहमद, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. जोशी तथा प्रयोगशाला सहायक नितिन विद्या तथा लैब परिचर भगत सिंह उपस्थित रहे।

### गुरुदिवस व्याख्यानमाला चतुर्थ संस्करण व्याख्यान-

महाविद्यालय में दिनांक 26-12-2025 को करियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ द्वारा संचालित गुरुदिवस व्याख्यानमाला के चतुर्थ संस्करण के चौथे व्याख्यान का आयोजन भूगोल विभाग

द्वारा किया गया। व्याख्यान का शीर्षक 'हिमालय में सतत विकास की ओर बढ़ते हुए चुनौतियाँ एवं संभावनायें' रहा। कार्यक्रम निदेशक, प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने सतत विकास की अवधारणा पर विचार व्यक्त किये तथा वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता को समझाया। व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता प्रो. पी.सी. तिवारी जी रहे। जो कुमाऊँ यूनिवर्सिटी नैनीताल के पूर्व विभागाध्यक्ष ICSSR के SENIOR FELLOW और IGU-CHAIR के VICE CHAIR थे। प्रो. तिवारी जी ने सतत विकास की अवधारणा को समझाते हुए हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, पर्वतों की महत्ता, पर्वतीय क्षेत्रों के विकास, पर्यावरणीय संतुलन, वैश्विक समस्याओं सहित उत्तराखंड के वनावरण तथा उत्तराखंड हिमालय में बढ़ते नगरीकरण के दुष्प्रभावों पर गहन चर्चा की। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं भूगोल विभाग प्रभारी डॉ.

सिराज अहमद ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. डी.एन. जोशी ने किया। आयोजन समिति में करियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयोजक एवं भूगोल के असिस्टेंट प्रोफेसर, सह आयोजन सचिव डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, सह संयोजक डॉ. लोतिका अमित एवं डॉ. प्रकाश सिंह बिष्ट का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में अन्य महाविद्यालयों के प्राचार्य तथा प्राध्यापक भी सम्मिलित हुए। रामनगर महाविद्यालय से प्रो. एस.एस. मौर्य, डॉ. पुनीता कुशवाहा, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. दीपक खाती, डॉ. कृष्णा भारती, डॉ. नीमा राणा तथा अन्य प्राध्यापक एवं प्राध्यापिकायें उपस्थित रहे।

डॉ. सिराज अहमद  
प्रभारी, भूगोल विभाग

## समाजशास्त्र विभाग

आख्या 2023 से 2025 तक

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र विषय संचालित है, वर्तमान समय में विभाग में 04 पदों के सापेक्ष 04 प्राध्यापक कार्यरत हैं। विभाग के द्वारा अकादमिक गतिविधियों के अर्न्तगत कक्षाओं का पाठ्यक्रमानुसार नियमित पठन-पाठन के साथ-साथ पाठ्यक्रम सहगामी/शिक्षणोत्तर गतिविधियों/रचानात्मक कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।

आख्यागत अन्तराल में विभाग द्वारा आयोजित किये गये मुख्य अकादमिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों/गतिविधियों का विवरण-

- अकादमिक पोस्टर प्रतियोगिता/मॉडल प्रदर्शन
- निबन्ध क्वीज वाद-विवाद भाषण प्रतियोगिता
- समाजशास्त्र में भविष्य निर्माण की सम्भानाएँ- महाविद्यालय स्तरीय सेमिनार मुख्य वक्ता प्रोफेसर ए0पी0 सिंह, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय मांसी, अल्मोड़ा

### गुरु दिवस व्याख्यान माला

- शीर्षक- सामाजिक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उत्तराखण्ड में सामाजिक समरसता, पर्यटन, पर्यावरण- मुख्य सन्दर्भदाता - प्रो0 भगवान सिंह बिष्ट, सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल।

- सरकार की सामाजिक विकास नितियों: विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम मुख्य सन्दर्भदाता- श्री अशोक कुमार पाण्डे, मुख्य विकास अधिकारी नैनीताल।

### शोध गतिविधियाँ

- डॉ0 हेमन्त कुमार- शोध उपाधि प्राप्त सन 2025
- गरिमा देव- शोधरत छात्रा
- वैशाली- शोधरत छात्रा
- उषारानी- शोधरत छात्रा

### कैरियर प्लेसमेंट

1. डॉ0 गरिमा देव- सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र, उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड।
2. डॉ0 अंजली- सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र, उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड।
3. डॉ0 शौकीन- सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र, उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड।
4. डॉ0 हेमन्त कुमार- सहायक प्रोफेसर (संविदा) समाजशास्त्र, उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड।



## मनोविज्ञान विभाग

सत्र: 2023-25

महाविद्यालय में मनोविज्ञान विभाग की स्थापना वर्ष 1980 में लाभ सिंह (भूतपूर्व प्राचार्य) द्वारा की गयी थी। वर्तमान समय में मनोविज्ञान विभाग में प्राध्यापक के कुल चार पद स्वीकृत हैं जिन पर डॉ. कुसुम गुप्ता, विभाग प्रभारी, प्रो. अनीता जोशी, डॉ. देव आशीष एवं डॉ. गुरप्रीत सिंह कार्यरत हैं।

सत्र: 2023-24 में मनोविज्ञान विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष - उज्ज्वल खुल्बे, उपाध्यक्ष - कमला, सचिव- आस्था पौड़ियाल, संयुक्त सचिव- अनमोल कौर एवं कोषाध्यक्ष - हुजैफा साबरी चुने गए। इस वर्ष मनोविज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा दिनांक 28 नवम्बर, 2023 को "मानसिक स्वास्थ्य एवं निर्देशन तथा परामर्श" विषयक स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर सम्यक् रूप से पोस्टर प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसमें सभी संकाय के छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की। प्रतियोगिता में प्रथम - हर्षिता पाण्डे, द्वितीय- अनमोल कौर, तृतीय - पूजा आर्या तथा सांत्वना पुरस्कार दिव्या तिवारी को दिया गया।

दिनांक 07 दिसम्बर 2023 को पी.एन.जी.राज.स्ना. महाविद्यालय, रामनगर नैनीताल के मनोविज्ञान विभाग द्वारा गुरु दिवस व्याख्यान माला की तृतीय श्रृंखला के छठे व्याख्यान के क्रम में "वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। आयोजित व्याख्यान में मुख्य अतिथि प्रो. आर.एस. गिरी द्वारा वर्तमान समय में महिलाओं के द्वारा सामना की जा रही प्रमुख मनोसामाजिक समस्याएँ जैसे - PTSD (अभिघातजन्य तनाव विकार), लिंग आधारित हिंसा, कार्य जीवन संतुलन, प्रजनन संबंधी चिंताएँ, आर्थिक असमानताएँ, कार्यस्थल में समान अवसर इत्यादि के निदान एवं उपचार पर गहन विमर्श प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 31 मार्च, 2024 को मनोविज्ञान विभाग के प्रभारी प्रो. आर.डी. सिंह के सेवानिवृत्त होने पर महाविद्यालय परिवार की ओर से भावभीनी विदाई दी गई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई।

**विभागीय उपलब्धियाँ :-**

- 1) सोनाली काण्डपाल ने यू-सेट परीक्षा उत्तीर्ण की।
- 2) शोधार्थी विवेक आर्या का दिल्ली यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान के पद पर नियुक्ति।
- 3) कनक पाण्डे ने गेट परीक्षा उत्तीर्ण की।

4) अनामिका चौहान ने शोध उपाधि (Ph.D.) प्राप्त की।

सत्र: 2024-25

सत्र: 2024-25 में मनोविज्ञान विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष - कमला, उपाध्यक्ष- पूजा आर्या, सचिव- अनमोल कौर, संयुक्त सचिव- मानसी पाण्डे एवं कोषाध्यक्ष- हर्षिता जोशी चुनी गई।

मनोविज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा दिनांक 05 अक्टूबर 2024 को तनाव प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तनाव के स्वरूप एवं तनाव प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों पर चर्चा की गई और छात्र/छात्राओं को तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास कराया गया। उक्त कार्यशाला में छात्र/छात्राओं ने काफी मनोयोग से सहभागिता की।

दिनांक 21 अक्टूबर 2024 को विभागीय परिषद् द्वारा निबंध प्रतियोगिता आयोजन के संबंध में सभी संकाय (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) के छात्र/छात्राओं के लिये सूचना प्रसारित की गई, जिसका शीर्षक "मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव" रहा। दिनांक 09 जनवरी, 2025 को विजयी छात्र/छात्राओं को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.ए.सी. पाण्डे द्वारा प्रतीक चिह्न देकर पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम- मिस्कात सब्बाग, द्वितीय- काजल जोशी एवं तृतीय शुभम रावत रहे।

**विभागीय उपलब्धियाँ:-**

- 1) सेनाली काण्डपाल - एस.एस.जे. कैम्पस पिथौरागढ़ में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति।
- 2) मोहन चन्द्र - एस.एस.जे. कैम्पस चम्पावत में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति।
- 3) लक्ष्मण सिंह - रयात बाहरा यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति।
- 4) अज़रा - एच.एन.बी. गढ़वाल यूनिवर्सिटी, श्रीनगर में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति।
- 5) विवेक आर्या - लोक सेवा आयोग, उत्तराखण्ड द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर चयनित।
- 6) दीपक कुमार - रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी बरेली में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति।
- 7) कनक पाण्डे - नैट परीक्षा उत्तीर्ण की।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान विभाग में शोध कार्य हेतु कुल 06 शोधार्थी पंजीकृत हैं।

## गृहविज्ञान विभाग

**सत्र: 2023-24**

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर के गृह विज्ञान विभाग में स्नातक स्तर पर स्वीकृत बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में क्रमशः 28, 08, 22 विद्यार्थी अध्ययनरत रहे। इस सत्र हेतु विभागीय परिषद् का गठन दिनांक 27-12-2023 को किया गया, जिसमें अध्यक्ष- कु. सिमरन भाटिया, तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष- कु. दिव्या, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर, सचिव- कु. आमना नाज़, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर, उप सचिव- कु. कनिका, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर एवं कक्षा प्रतिनिधि के लिए कु. कोमल एवं कु. मनप्रीत क्रमशः बी.ए. तृतीय सेमेस्टर व बी.ए. तृतीय वर्ष का चयन किया गया।

विभागीय परिषद् के तत्वावधान में दिनांक 18-03-2024 को हस्तशिल्प प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा अनुपयुक्त सामग्री का प्रयोग करके उपयोगी वस्तुओं का निर्माण किया गया। इस प्रतियोगिता में डॉ. अल्का राजौरिया तथा डॉ. कृष्णा भारती निर्णायक रहे। प्रतियोगिता में कु. अंजली ने प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान कु. आमना नाज़ तथा तृतीय स्थान कु. दिव्या ने प्राप्त किया। निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों ने समस्त प्रतियोगियों की हस्त शिल्प निर्मित वस्तुओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

विभागीय परिषद् के तत्वावधान में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शीर्षक 'गृहविज्ञान विषय की सामाजिक जीवन में उपयोगिता' रहा। इसमें प्रतिभागियों ने गृह सज्जा हेतु आवश्यक कला तत्त्वों, पोषण, कुपोषण को दूर करने के उपाय, संचार प्रक्रिया, प्रसार साधन, श्रव्य-दृश्य सामग्री की उपयोगिता आदि शीर्षकों पर पोस्टर निर्मित किए। निर्णायक मंडल में रा.महा. कोटाबाग की गृहविज्ञान विभाग प्रभारी असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुनीता बिष्ट एवं डॉ. ममता भदोला जोशी (वाणिज्य विभाग) ने किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कु. दिव्या, द्वितीय स्थान पर कु. सिमरन भाटिया तथा तृतीय स्थान पर कु. कोमल विजयी घोषित हुई।

गृह विज्ञान विभाग द्वारा कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के माध्यम से गुरुदिवस व्याख्यानमाला के तृतीय चरण के अन्तर्गत "आहार प्रबन्धन से किया जा सकता है मोटापे को दूर" विषय पर ऑनलाईन व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पन्तनगर के कॉलेज ऑफ कम्प्यूनिटी साइंस के खाद्य एवं पोषण विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो (डॉ.) अर्चना कुशवाहा ने अपने व्याख्यान में शरीर के मोटापे

तथा इससे जुड़ी हुई स्वास्थ्य जटिलताओं के विषय में विस्तृत चर्चा की।

**सत्र: 2024-25**

पी.एन.जी.रा.स्ना.महा. रामनगर के गृहविज्ञान विभाग में स्नातक कक्षाओं का संचालन हो रहा है, जिसमें बी.ए. प्रथम सेमेस्टर में 38, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर में 13 एवं बी.ए. पंचम सेमेस्टर में 07 विद्यार्थी पंजीकृत हुए। इस सत्र हेतु विभागीय परिषद् का गठन दिनांक 05-10-2024 को किया गया, जिसमें-

अध्यक्ष - कु. दिव्या, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।

उपाध्यक्ष - कु. आमना नाज़, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।

सचिव - कु. कोमल, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।

उपसचिव - कु. अफ़साना, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

कोषाध्यक्ष- कु. तौसिबा, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

एवं कक्षा प्रतिनिधि बी.ए. प्रथम सेमेस्टर कु. मोनिका।

बी.ए. तृतीय सेमेस्टर कु. भावना।

बी.ए. पंचम सेमेस्टर हेतु कु. कनिका सहित निम्नांकित का चयन किया गया।

विभागीय परिषद् के तत्वावधान में दिनांक 7-10-2024 को गढ़-भोज दिवस के अवसर पर पारम्परिक व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों द्वारा उत्तराखण्ड के पारम्परिक व्यंजन जैसे - भट्ट का चुड़कानी, खीरे का रायता, आलू के गुटके, कद्दू के पत्तों की सब्जी, सिवई की खीर आदि व्यंजनों को निर्णायक मण्डल द्वारा अवलोकित किया गया।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ महाविद्यालय संरक्षक प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। इसमें निर्णायक मण्डल में डॉ. शिप्रा पन्त, संगीत विभाग, डॉ. अल्का राजौरिया, समाजशास्त्र विभाग, एवं डॉ. रिचा पुनेठा, वनस्पति विज्ञान विभाग रही। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कु. भावना, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान पर कु. पिंकी, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर एवं तृतीय स्थान पर कु. समरीन, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर एवं सान्त्वना पुरस्कार कु. अफ़साना, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर ने प्राप्त किया। सभी सदस्यों ने समस्त प्रतियोगियों के द्वारा प्रस्तुत व्यंजनों की सराहना की। गृह विज्ञान विभागीय परिषद् द्वारा द्वितीय प्रतियोगिता, सेलेड ड्रेसिंग एवं अनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित सजावटी सामग्री प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रतियोगियों द्वारा विभिन्न प्रकार से सलाद सजाने का प्रयास किया गया, प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा।

प्रथम स्थान - अफ़साना, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

द्वितीय स्थान - पूनम, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

तृतीय स्थान - गुंजन बधानी, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।

अनुपयोगी वस्तुओं से बजावटी सामग्री बनाने की प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा अनुपयोगी सामग्री से कई उपयोगी वस्तुएँ जैसे- Wall hanging, decorative piece, wall scenery and Pen/Pencil stand आदि बनाए। इस प्रतियोगिता में निम्न विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम - शिवांगी, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।

द्वितीय - उर्वशी, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।

तृतीय - वेदिका, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।

उक्त कार्यक्रम में कोटाबाग महाविद्यालय की गृह विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. सुनीता बिष्ट, विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहीं, उन्होंने भी प्रतियोगियों के प्रयास की प्रशंसा की।

महाविद्यालय के कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ एवं गृह विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अतिथि वक्ता डॉ. सुनीता बिष्ट, विभाग प्रभारी गृहविज्ञान, राज.महा.वि. कोटाबाग द्वारा व्याख्यान दिया गया। उक्त व्याख्यान का विषय था "गृह विज्ञान विषय में रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की संभावनाएँ"।

व्याख्यान में विषय विशेषज्ञ द्वारा गृह विज्ञान विषय एवं उससे सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों एवं रोजगार के अवसरों पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत कर छात्र-छात्राओं को विषय (गृह विज्ञान) सम्बन्धित रोजगारों से अवगत कराया गया एवं भविष्य में इस विषय के उपयोगों के विभिन्न पहलुओं से साक्षात्कार कराया गया ताकि विद्यार्थी उपर्युक्त विषय की महत्ता को जानें एवं अन्य छात्र-छात्राओं को इसकी जानकारी साझा कर सकें।

विभाग प्रभारी, डॉ. लोतिका अमित द्वारा 02 अन्तर्राष्ट्रीय एवं 01 राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभागिता दी गई एवं शोध पत्र प्रस्तुत किए। शोध पत्र Artificial Intelligence Technology in Public health and Nutrition, शीर्षक से Artificial Intelligence: A modern Approach in different fields पुस्तक में प्रकाशित हुआ है।

इसके अतिरिक्त डॉ. लोतिका अमित वर्तमान में 05 छात्र-छात्राओं को शोध निर्देशन प्रदान कर रही हैं इसके अतिरिक्त International Journal of Home - Science में 01 शोध-पत्र प्रकाशित हुआ।

डॉ. लोतिका अमित  
विभाग प्रभारी, गृह विज्ञान

## इतिहास विभाग

सत्र: 2023-24

विद्यार्थियों में अतीत के प्रति जिज्ञासु, तार्किक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए प्रयत्नशील इतिहास विभाग के सुधी शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम के शिक्षण के माध्यम से, वरन पाठ्येतर गतिविधियों के माध्यम से भी विद्यार्थियों के मध्य रचनात्मक व बौद्धिक विमर्श को प्रोत्साहित करते हैं। इसी क्रम में (1) इतिहास विभाग द्वारा 22 दिसम्बर 2023 को 'इतिहास समग्र विकास व संभावनाएँ' विषय पर इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् प्रोफेसर विश्वमोहन पाण्डे के अकादमिक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

(2) गुरु दिवस व्याख्यान माला-श्रृंखला-3 के अर्तगत 22 फरवरी 2024 को इतिहास विभाग द्वारा प्रोफेसर बी.एम. पाण्डे के 'Human condition : A way out and the role of History' विषय पर सारगर्भित ऑन लाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों व शिक्षकों की समुचित भागीदारी रही।

वर्ष 2024 माह जनवरी, दिनांक 23 को इतिहास विभाग के स्नातक व स्नातकोत्तर विद्यार्थियों द्वारा बहुमत से सत्र 2023-24 हेतु इतिहास परिषद् का गठन कर निम्नांकित विद्यार्थियों का चयन

परिषद् के विभिन्न उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु किया गया:-

अध्यक्ष : सुश्री हरप्रीत कौर , एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर।

उपाध्यक्ष : श्री नितेश शर्मा, एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर।

सचिव : श्री करन अधिकारी, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर।

उपसचिव : सुश्री पूजा मेहरा, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर।

विभागीय परिषद् के सहयोग से इतिहास विभाग द्वारा 27 अप्रैल 2024 को महाविद्यालय स्तर की 'भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की जरूरत' पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त संकायों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। निम्नांकित प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में उनके प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कृत किया गया।

प्रथम स्थान - सौम्या, बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर।

द्वितीय स्थान - गौरव खुल्बे, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर।

तृतीय स्थान - प्रियांशु तिवारी, बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर।

सांत्वना पुरस्कार - सुनील सैनी, बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर।

इतिहास विभाग द्वारा शैक्षणिक व शोध गतिविधियों को प्रमुखता से प्रोत्साहित करने का ही परिणाम था कि-

(1) विभाग के दो विद्यार्थियों (i) कु. प्रियंका शर्मा व (ii)

श्री तरून कुमार ने क्रमशः अक्टूबर 2023 में आयोजित UGC-NET, JRF तथा जून, 2024 में आयोजित UGC-NET की प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण की।

(2) डॉ. शरद भट्ट (प्रभारी, इतिहास विभाग) के निर्देशन में शोधरत छात्र श्री चरन सिंह को '19-20वीं सदी के इतिहास में दलितों की भूमिका' विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु 11-08-2023 को कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल द्वारा डाक्टरेट (शोध उपाधि) की उपाधि प्रदान की गयी। जबकि, इतिहास की प्राध्यापिका डॉ. जया भट्ट के निर्देशन में शोधरत छात्र श्री गणेश जोशी के 'कुमाऊँ की सांस्कृतिक परम्पराओं के ऐतिहासिक अध्ययन' पर प्रस्तुत शोधकार्य को दिनांक 08 मई 2023 को शोध उपाधि प्रदान की गई।

(3) सत्र 2023-24 में इतिहास विषय में स्नातक स्तर पर उत्तीर्ण विद्यार्थियों का प्रतिशत 92% रहा जबकि स्नातकोत्तर स्तर पर उत्तीर्ण प्रतिशत 97% रहा, जिसमें कि परीक्षा में सहभाग करने वाले कुल 30 विद्यार्थियों में से 23 विद्यार्थियों ने 60% या उससे अधिक अंक प्राप्त किये।

इतिहास विभाग में कार्यरत अध्यापक डॉ. शरद भट्ट व डॉ. जया भट्ट द्वारा वर्ष 2023-24 में 04 राष्ट्रीय सेमिनारों व 02 अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग कर शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। साथ ही उनके द्वारा लिखित 04 शोध पत्रों का प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ। वर्तमान में इतिहास विभाग में 04 छात्र/छात्राएँ श्रीमती दीपिका रौतेला, कु. प्रियंका शर्मा, श्रीमती सुमन बिष्ट तथा श्री गजेन्द्र सिंह शोध छात्र/छात्रा के रूप में कार्यरत हैं।

### सत्र: 2024-25

छात्र-छात्राओं में अतीत के प्रति तार्किक व रचनात्मक बोध तथा स्थानीय इतिहास के प्रति संवेदनशील व जिज्ञासु दृष्टि के अभिवर्द्धन के लिए सतत प्रयत्नशील इतिहास विभाग के सुधी प्राध्यापकों डॉ. शरद भट्ट, डॉ. जया भट्ट व डॉ. नरेश कुमार ने इतिहास विभाग के विद्यार्थियों के सहयोग से सत्र 2024-25 हेतु सितम्बर माह में इतिहास परिषद् का गठन किया। उपस्थित विद्यार्थियों ने बहुमत से इतिहास परिषद् के विभिन्न दायित्वों की पूर्ति हेतु निम्नांकित छात्र/छात्राओं का निर्वाचन किया :

- 1- अध्यक्ष : सुश्री गुरमिंदर कौर, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर।
- 2- उपाध्यक्ष : श्री समीर अहमद, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- 3- सचिव : श्री रोहित खत्री, बी.ए. पंचम सेमेस्टर।
- 4- उपसचिव छात्र : श्री अहमद रजा, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।
- 5- उपसचिव छात्रा : सुश्री पूजा मेहरा, बी.ए. तृतीय सेमेस्टर।

इतिहास परिषद् के सहयोग से इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं रचनात्मक संवर्द्धन हेतु दिनांक 18 अक्टूबर 2024 को महाविद्यालयीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया, जिसका विषय था - 'क्या भारत का विभाजन अनिवार्य था'? प्रतियोगिता में निम्नांकित सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया :

- प्रथम पुरस्कार- श्री अहमद रजा, बी.ए. प्रथम सेमेस्टर।  
द्वितीय पुरस्कार- प्रियंका गरजोला, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।  
तृतीय पुरस्कार- अमनप्रीत कौर, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।  
सांत्वना पुरस्कार- तृप्ति पपनै, एम.ए. प्रथम सेमेस्टर।

महाविद्यालय में बौद्धिक विमर्श व शैक्षणिक गुणवत्ता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संचालित गुरुदिवस व्याख्यान माला श्रृंखला-4 के अंतर्गत इतिहास विभाग द्वारा "इतिहास के मायने और उसकी दुविधा" विषय पर प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे के विद्वत्तापूर्ण व ज्ञानवर्द्धक ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया।

ऐतिहासिक विषयों पर अतिथि व्याख्यान आयोजित करने की अपनी परम्परा के क्रम में इतिहास विभाग द्वारा 25 फरवरी 2025 को 'इतिहास सबका और सभी के लिए' (History of all and History for all) विषय पर इतिहास के विद्वान् प्रोफेसर विश्वमोहन पाण्डे के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इतिहास विषय के शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु इतिहास विभाग द्वारा कक्षाओं में पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों पर वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी (क्विज) गतिविधियों को संचालित करने के साथ-साथ, आंतरिक मूल्यांकन हेतु सत्रीय अभ्यास कार्य व विशेषतः स्नातकोत्तर स्तर पर, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन (PPT) के माध्यम से विषय प्रस्तुति का नियमित रूप से आयोजन किया गया।

सत्र 2024-25 में इतिहास विभाग के प्राध्यापकों द्वारा 03 राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों व 04 अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों में शोध पत्रों के प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ 02 शोध पत्रों का प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन भी किया गया।

वर्तमान में इतिहास विभाग में 03 शोध छात्राएँ- श्रीमती दीपिका रौतेला, श्रीमती सुमन बिष्ट व कु. प्रियंका शर्मा डॉ. शरद भट्ट के निर्देशन में तथा 01 शोध छात्र- श्री गजेन्द्र सिंह डॉ. जया भट्ट के निर्देशन में शोधकार्यरत हैं।

डॉ. शरद भट्ट  
प्रभारी, इतिहास विभाग

## वाणिज्य विभाग

सत्र : 2023-24 एवं 2024-25

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) में वाणिज्य संकाय सन् 1985 में प्रारम्भ हुआ। सत्र 1985-86 में स्नातक स्तर पर बी.कॉम. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ हुए। स्नातक स्तर पर बी.कॉम. प्रारम्भ होने के चार वर्ष पश्चात् सन् 1989-90 में स्नातकोत्तर स्तर पर एम.कॉम. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ किये गये। वाणिज्य संकाय में वर्तमान में पाँच पद स्वीकृत हैं, जिसमें वर्तमान में डॉ. दीपक खाती, असिस्टेन्ट प्रोफेसर विभाग प्रभारी वाणिज्य; डॉ. ममता भदोला जोशी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डॉ. विजय कुमार, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, डॉ. भानु प्रताप दुर्गापाल, संविदा प्रवक्ता एवं श्री हेम चन्द्र भट्ट, संविदा प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं।

### सत्र : 2023-24

सत्र 2023-24 में वाणिज्य संकाय में स्नातक प्रथम सेमेस्टर में 375 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया तथा स्नातकोत्तर स्तर पर 43 विद्यार्थियों ने स्नातकोत्तर स्तर प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश लिया। सत्र में कुल 926 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया, जिनमें से स्नातक स्तर पर 846 विद्यार्थी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 80 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। उपरोक्त अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 12 विद्यार्थियों को छोड़कर समस्त विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। स्नातक स्तर पर उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 97 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 100 प्रतिशत रहा।

सत्र 2023-24 में वाणिज्य विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन वाणिज्य विभाग की प्राध्यापिका डॉ. ममता भदोला जोशी के नेतृत्व में किया गया। सत्र 2023-24 में विभागीय परिषद् में निम्नांकित विद्यार्थियों को विभिन्न पदों पर विद्यार्थियों द्वारा चयनित किया गया-

|              |   |
|--------------|---|
| अध्यक्ष -    | श्री धीरज रावत, एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर।   |
| उपाध्यक्ष -  | कृ. ममता बोहरा, एम.कॉम. प्रथम सेमेस्टर।   |
| सचिव -       | श्री राजन सिंह, बी.कॉम. तृतीय वर्ष।       |
| उप सचिव -    | कृ. खुशी छिम्वाल, बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर। |
| कोषाध्यक्ष - | श्री अंकित पाल, बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर।   |

सत्र 2023-24 में वाणिज्य संकाय द्वारा विभागीय परिषद् के तत्वावधान में 'आधुनिक युग में ई-बैंकिंग' (E-Banking in modern

era) विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कुल 135 विद्यार्थियों ने अपने निबन्ध वाणिज्य विभाग में जमा किये। प्रतियोगिता के लिये प्राप्त निबन्धों को विभाग द्वारा डॉ. सुमन कुमार की अध्यक्षता में गठित चार सदस्यीय समिति द्वारा मूल्यांकित किया गया। समिति द्वारा मूल्यांकन के पश्चात् एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर की कु. सुरभी तिवारी ने प्रथम, एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर के श्री धीरज अग्रवाल ने द्वितीय, एवं बी.कॉम. तृतीय वर्ष के श्री राजन सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विभागीय परिषद् के तत्वाधान में परिषद् द्वारा 'डिजिटल मार्केटिंग' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसका मूल्यांकन करने के पश्चात् एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर की कु. भावना रावत, एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर की कु. महिमा बिष्ट एवं एम.कॉम. प्रथम सेमेस्टर की कु. महिमा बोरा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। उपरोक्त दोनों प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे एवं विभाग के प्राध्यापकों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

वाणिज्य विभाग द्वारा 22 सितम्बर 2023 को गुरु दिवस व्याख्यान माला के तृतीय संस्करण के अन्तर्गत ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय के करियर काउंसलिंग सेल के माध्यम से किया गया। गुरु दिवस व्याख्यान माला महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में उपयोगी व्यावहारिक ज्ञान को प्रदान करना है। गुरु दिवस व्याख्यान माला के तृतीय संस्करण के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यान शीर्षक "हिमालयी राज्यों में पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ" रहा। व्याख्यान माला में मुख्य वक्ता के रूप में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय के संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अतुल जोशी रहे। व्याख्यान माला में प्रो. जोशी ने हिमालयी क्षेत्र के कुल नौ राज्यों में पर्यटन एवं स्थानीय परम्पराओं के विषय में विस्तृत जानकारी सांझा की और राज्यों की भिन्न-भिन्न प्रकार की खूबियों जैसे- सिक्किम की बड़ी इलायची, दार्जिलिंग की चाय के पहले ज्योग्राफिकल इंडिकेशन टैग के विषयों में बताया। प्रो. जोशी ने उत्तराखण्ड एवं अन्य हिमालयी राज्यों में

चलाये जा रहे होम स्टे योजना को गृह प्रवास का नाम देकर संबोधित किया। प्रो. जोशी ने कहा कि आज पर्वतीय राज्यों से बड़ी संख्या में युवा मैदानी क्षेत्र की ओर पलायन कर रहे हैं, जिसे रोकने में पर्यटन रोजगार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सत्र 2023-24 में वाणिज्य संकाय के प्राध्यापकों द्वारा 8 संगोष्ठियों में प्रतिभाग कर शोध पत्रों का वाचन किया।

### सत्र : 2024-25

सत्र 2024-25 में वाणिज्य संकाय में स्नातक प्रथम सेमेस्टर में 311 विद्यार्थियों ने स्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश लिया तथा स्नातकोत्तर स्तर पर 42 विद्यार्थियों ने स्नातकोत्तर स्तर पर प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश लिया। सत्र में कुल 868 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया, जिनमें से स्नातक स्तर पर 787 विद्यार्थी एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 81 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। उपरोक्त अध्ययनरत विद्यार्थियों में से समस्त विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। स्नातक स्तर पर उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 96 प्रतिशत एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 100 प्रतिशत रहा।

सत्र 2024-25 में वाणिज्य विभाग द्वारा विभागीय परिषद् का गठन वाणिज्य विभाग की प्राध्यापिका डॉ. ममता भदोला जोशी एवं डॉ. विजय कुमार के संयुक्त नेतृत्व में किया गया। सत्र 2024-25 में विभागीय परिषद् में निम्नांकित विद्यार्थियों को विभिन्न पदों पर विद्यार्थियों द्वारा चयनित किया गया-

- अध्यक्ष - श्री लोकेश गोस्वामी, एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर।
- उपाध्यक्ष - श्री मानस मित्रल, एम.कॉम. प्रथम सेमेस्टर।
- सचिव - श्री लोकेश बिष्ट, बी.कॉम. पंचम सेमेस्टर।
- उप सचिव - श्री शुभम रावत, बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर।
- कोषाध्यक्ष - श्री शिवराज सिंह भाकुनी, बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर।

सत्र 2024-25 में वाणिज्य संकाय द्वारा विभागीय परिषद् के तत्त्वाधान में 'बच्चों एवं विद्यार्थियों के विकास में निवेश : सतत आर्थिक विकास की नींव' (Investment in Children and student's development: The foundation of sustained economic growth) शीर्षक पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस निबन्ध प्रतियोगिता में विभिन्न संकायों के 60 विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। उपरोक्त प्रतियोगिता में प्राप्त निबन्धों का मूल्यांकन डॉ. सुमन कुमार जी की अध्यक्षता में गठित 3 सदस्यीय समिति द्वारा किया गया। मूल्यांकन कार्य की

समाप्ति पर कु. सौम्या, बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर को प्रथम, कु. हर्षिता चन्दोला, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर को द्वितीय एवं कु. विशाखा पाण्डे, एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। वाणिज्य संकाय के बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर के छात्र श्री अजय पाण्डे को निबन्ध प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

उत्तराखण्ड शासन एवं नेशनल स्टाक एक्सचेंज के संयुक्त तत्त्वाधान में संचालित प्रोजेक्ट गौरव के अन्तर्गत वाणिज्य संकाय के लगभग 120 विद्यार्थियों को दिनांक 13 अगस्त 2024 से 17 अगस्त 2024 तक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा क्षेत्र में युवाओं को कौशल प्रदान करना है। यह परियोजना उत्तराखण्ड शासन द्वारा राज्य के उच्च शिक्षण संस्थाओं में चलायी जा रही है। इसके तहत तीन स्तरों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किये गये हैं। प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षणार्थियों को 30 घण्टे का प्रशिक्षण कार्यक्रम दिया जाता है। यह प्रशिक्षण सेबी द्वारा अधिकृत व्यक्तियों द्वारा प्रदान किया जाता है। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर में उपरोक्त प्रशिक्षण डॉ. अंकुर भटनागर द्वारा प्रदान किया गया।

दिनांक 19 दिसम्बर 2024 को वाणिज्य विभाग द्वारा गुरु दिवस व्याख्यान माला के चतुर्थ संस्करण के अन्तर्गत तृतीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। गुरु दिवस व्याख्यान माला के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यान का शीर्षक "शिक्षा से आनन्द की ओर" रहा। चतुर्थ संस्करण के तृतीय व्याख्यान का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य एवं व्याख्यान माला के निदेशक प्रो. एम. सी. पाण्डे जी द्वारा शिक्षा से आनंद कैसे पाया जा सकता है, के विषय में अपने विचार साझा किए और बताया कि वाणिज्य विषय के अध्ययन से आनंद बहुत ही आसानी से प्राप्त किया जा सकता है लेकिन इसके लिए विद्यार्थियों को उस कार्य को मन लगाकर करना पड़ेगा जिससे उन्हें भविष्य में लाभ प्राप्त हो। प्रो. पाण्डे ने बताया कि पूर्ण मनोयोग से किया गया कार्य अंतर्मन को आनंद की ओर ले जाता है। प्रोफेसर पाण्डे ने कहा कि वास्तविक शिक्षा वह होती है जो हमें एक अच्छा और खुशहाल जीवन जीना सिखाती है। व्याख्यान माला के मुख्य वक्ता दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर विजय कुमार श्रोतिय ने शिक्षा से आनंद कैसे प्राप्त करें विषय पर अपने व्यावहारिक अनुभव साझा किए। प्रोफेसर विजय कुमार ने कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य खुश रहना होना चाहिए और प्रत्येक

इंसान को अपना जीवन 'सच्चिदानंद' और 'अप्य दीपो भव' की भावना से जीना चाहिए। प्रो. विजय कुमार ने कहा कि आज के समय में वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को स्वयं अपने विवेक से अपने आप को सकारात्मक राह में ले जा सके। प्रो. श्रोत्रिय ने आनंद प्राप्त करने के लिए आज की एकल जीवन पसंद करने वाली पीढ़ी से आग्रह करते हुए कहा कि समाज में एकजुटता के साथ रहने अर्थात् अविभाजित परिवार में रहने से व्यक्ति एकल परिवार के स्थान पर अधिक आनंदमय जीवन व्यतीत करता है। प्रो. विजय कुमार ने ज्ञान एवं आनंद, ज्ञान और साक्षर, तथा ज्ञान और प्रज्ञान (विजडम) के मध्य अंतर को सामान्य व्यावहारिक उदाहरण के माध्यम से समझाया। प्रो. विजय कुमार श्रोत्रिय ने व्यावहारिक, आर्थिक एवं वाणिज्यिक शिक्षा से बेहतर करियर संभावनाएं, वित्तीय साक्षरता कौशल विकसित करने एवं बेहतर वित्तीय निर्णय लेने इत्यादि के द्वारा जीवन को आनंदमय बनाने के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा की। अंत में प्रो. श्रोत्रिय ने कहा कि शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है, जो व्यक्तियों को सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान कौशल और अवसर प्रदान करके, उन्हें खुश, स्वस्थ और अधिक पूर्ण जीवन जीने में मदद करने में सहायता करता है।

वाणिज्य विभाग के डॉ. दीपक खाती ने वाणिज्यिक शिक्षा के विभिन्न आयामों को समझाते हुए कहा कि किसी भी एक आयाम का गहन अध्ययन कर निपुणता प्राप्त करने वाला विद्यार्थी, संसार में अपने लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर आनंद की प्राप्ति कर सकता है।

वाणिज्य विभाग द्वारा दिनांक 28 फरवरी 2025 को विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य की राह को आसान बनाने हेतु विषय पर एक ऑनलाइन बेविनार का आयोजन किया गया। जिसमें प्लूटस एजुकेशन द्वारा 'हाई पेअंग जॉब्स इन बिग 4 और मल्टीनेशनल कम्पनियों में स्थान कैसे पाएं' विषय पर विद्यार्थियों को व्यापक जानकारी प्रदान की। ऑनलाइन बेविनार की मुख्य वक्ता ए.सी. सी.ए. की फैकल्टी खुशी गैरा ने विद्यार्थियों को प्रोफेशनल योग्यता की महत्ता को समझाते हुए करियर संवारने के लिये उपयोगी मार्गदर्शन दिया। बेविनार में योग्यता को प्राप्त कर महानगरों और प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कम्पनियों में रोजगार प्राप्त करने के विषय में क्या करना चाहिये विषय पर विद्यार्थियों की जिज्ञासा का समाधान किया। उपरोक्त बेविनार में वाणिज्य संकाय के 197 विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

उत्तराखण्ड शासन एवं नेशनल स्टाक एक्सचेंज के संयुक्त तत्वावधान में संचालित प्रोजेक्ट गौरव के अन्तर्गत द्वितीय बैच के लिये वाणिज्य संकाय के लगभग 60 विद्यार्थियों को दिनांक 25 फरवरी 2025 से 1 मार्च 2025 तक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। द्वितीय बैच में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये वाणिज्य संकाय के 130 विद्यार्थियों द्वारा पंजीकरण कराया गया। द्वितीय बैच को प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य डॉ. अंकुर भटनागर द्वारा किया गया।

सत्र 2024-25 में एम.कॉम. उत्तीर्ण छात्रा कु. बबीता शर्मा ने नैट परीक्षा उत्तीर्ण की।

डॉ. दीपक खाती  
प्रभारी, वाणिज्य विभाग

## पुस्तकालय एवं वाचनालय

“अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएं हैं, उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।”

“सद्ग्रंथ ऐसे शिक्षक हैं, जो बिना बेंत मारे और कटु शब्द कहे, हमें ऊंची शिक्षा प्रदान करते हैं।”

—श्री राम शर्मा आचार्य

“वे व्यक्ति कभी अकेले नहीं रहते हैं, जिनके साथी श्रेष्ठ विचार होते हैं,”

—सर फिलिप सिडनी

"A reader lives a thousand lives before he dies." -Unknown

अच्छी पुस्तकें सच्चा मित्र होती हैं। ये पुस्तकें सभी वर्गों के

कल्याण हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर राष्ट्रोत्थान में सहायक होती हैं।

वर्तमान समय में महाविद्यालय में भौतिक रूप से पुस्तकें अध्ययन कार्य के उपयोगार्थ पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

|                                   |        |
|-----------------------------------|--------|
| 1. उपलब्ध पुस्तकों की संख्या      | 45,360 |
| 2. रुसा की पुस्तकों की संख्या     | 14,854 |
| 3. पर्यावरण की पुस्तकों की संख्या | 1,955  |

**कुल पुस्तकों की संख्या 62,169**

गत वर्ष 200 पुस्तकें क्रय की गई हैं। महाविद्यालय का

पुस्तकालय उत्तराखण्ड सरकार द्वारा संचालित E-Granthalaya, तथा One State One Subscription से जुड़ा हुआ है। साथ ही महाविद्यालय के पुस्तकालय में 30 Journals का Online Subscription भी उपलब्ध है।

जनवरी 2021 में पुस्तकालय से पृथक वाचनालय की स्थापना हुई। जिनमें 380 Journals, अन्य अध्ययन सामग्री तथा व्याख्यान भी सम्मिलित हैं। जो Online link के माध्यम से वाचनालय में पढ़े जा सकते हैं। वाचनालय में विद्यार्थियों के लिए कंप्यूटर तथा नेट की व्यवस्था उपलब्ध है।

Online link :

1. principalpngrmr@yahoo.com.in

2. library.pngrmr@gmail.com

3. e.journals.pngrmr@gmail.com

महाविद्यालय के वाचनालय में निम्नलिखित समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं अध्ययन हेतु उपलब्ध हैं-

**समाचार पत्र-** अमर उजाला, उत्तर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमृत विचार, आज, Times of India

**पत्रिकाएँ-** हिमालय हुंकार, न्यू इंडिया समाचार, आदिल कुशलि (कुमाऊँनी मासिक)

**प्रो. अनुमिता अग्रवाल**, संयोजिका पुस्तकालय  
**एवं डॉ. जया भट्ट**, संयोजिका वाचनालय

## स्ववित्तपोषित बी.एड. विभाग

**सत्र: 2023-24**

- 8 मार्च 2023 को 'महिला दिवस' पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें बी.एड. के दोनों सत्र में 30 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
- 22 अप्रैल 2023 को 'पृथ्वी दिवस' पर विद्यार्थियों द्वारा लघु नाटिकाओं एवं अन्य माध्यमों द्वारा प्रेरक संदेश दिए गए।
- 10 मई 2023 को आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत "Tribal Freedom Fighters" पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- बी.एड. सत्र 2021-23 एवं 2022-24 को शैक्षिक भ्रमण के लिए 21 जून 2023 से 25 जून 2023 तक अयोध्या-वाराणसी-प्रयागराज ले जाया गया।
- 5 सितम्बर 2023 को 'शिक्षक दिवस' पर विद्यार्थियों द्वारा विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।
- 12 अगस्त 2023 को 'एण्टी रैगिंग डे' के अवसर पर महाविद्यालय में आयोजित पोस्टर, स्लोगन एवं निबंध प्रतियोगिताओं में बी.एड. के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- अक्टूबर 2023 बी.एड. विभाग द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।
- दिसंबर 2023 से फरवरी 2024 तक सत्र 2022-24 के (विद्यार्थियों द्वारा) छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं का शिक्षण अभ्यास (इंटरनेशिप) अटल उत्कृष्ट कन्या इंटर कॉलेज रामनगर में सम्पन्न कराया गया।
- 23 दिसंबर 2023 को जी.जी.आई.सी. रामनगर में योगाचार्य डॉ. नितिन ढेमणे के द्वारा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं विद्यालय की छात्राओं को योगाभ्यास करने के साथ-साथ उन्हें योग का महत्त्व भी बताया।
- 1 मार्च 2024 को तृतीय सेमेस्टर के छात्रों द्वारा कैंपस का सौंदर्यीकरण किया गया।
- 7 मार्च 2024 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर विविध कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण किया गया।
- 14 मार्च 2024 को तृतीय सेमेस्टर के छात्रों द्वारा अनुपयोगी सामग्री से उपयोग वस्तुओं का निर्माण करने का सफल प्रयास किया गया।
- 15 मार्च 2024 को बागवानी एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो कई उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल रहा।
- 16 मार्च 2024 को तल्ला सल्ट महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.एम. पाण्डेय द्वारा प्रेरक व्याख्यान से छात्रों का उत्साह वर्धन किया गया।
- 17 मार्च 2024 को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

**उपलब्धियाँ -**

- केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थी - 20
- उत्तराखण्ड शिक्षक पात्रता परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थी - 20

3. शिक्षक, प्राथमिक में चयन - 01
4. एल.टी. प्रवक्ता में चयन - 03
5. बैंक Management Trainee in JMG-Scale -I में चयन - 01

**सत्र : 2024-25**

27 मई 2024 - बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन।

3 जून 2024 - पोस्टर मेंकिंग एवं स्लोगन राइटिंग में विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग

4 जून 2024-योग एवं हेल्दी फ्रूट हैबिट्स पर कार्यशाला का आयोजन।

5 जून 2024 - पर्यावरण दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों जैसे वृक्षारोपण एवं कैंपस सौन्दर्यीकरण में विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

इंटरर्नशिप के अंतर्गत तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने स्वतंत्रता दिवस एवं गांधी जयंती के अवसर पर जी.आई.सी. रामनगर में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ-साथ स्वच्छता अभियान में भी भाग लिया।

9 नवम्बर 2024 - उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस पर लघु नाटिका का आयोजन। जिसका शीर्षक था-

1. उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की यादें।
2. उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की कहानियाँ।

13 नवम्बर 2024 - राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर निबंध

प्रतियोगिता का आयोजन। शीर्षक रहा-

1. सामाजिक असमानताओं को दूर करने में शिक्षा की भूमिका।
2. शिक्षा पर डिजिटलीकरण का प्रभाव।
3. कौशल आधारित शिक्षा का महत्त्व।
4. ग्रामीण क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचने की चुनौतियाँ।
5. 15 नवम्बर 2024 - रंगोली एवं ऐपण प्रतियोगिता का आयोजन।

6. 25 नवम्बर 2024 - संविधान दिवस की पूर्व संध्या पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन।

विषय - संविधान की मुख्य विशेषताएँ।

मौलिक अधिकार और कर्तव्य।

7. 21 दिसम्बर 2024 - प्रथम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं द्वारा स्टोरी बोर्ड के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए गए।

थीम - "आवर राइट्स, आवर फ्यूचर, राइट नाउ"

महाविद्यालय के बी.एड. विभाग में दिसम्बर माह में बी.एड. विभागीय परिषद् का गठन किया गया, जिसमें निम्न विद्यार्थियों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया गया-

**अध्यक्ष** - नरेश चन्द्र

**सचिव** - ध्रुव विश्वकर्मा

**उपाध्यक्ष**- नवल किशोर जोशी

**कोषाध्यक्ष** - तनुश्री

**छात्रा प्रतिनिधि**- नीतू गोस्वामी

**छात्र प्रतिनिधि**-तनिष्क कुमार

**सांस्कृतिक सचिव**- रुचि जोशी

## आई.क्यू.ए.सी. प्रकोष्ठ

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर का गठन वर्ष 2012 में हुआ था। तब से लगातार आई.क्यू.ए.सी. संस्थान की विभिन्न शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों के साथ साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और एक शिक्षार्थी केन्द्रित अनुकूल वातावरण निर्माण में सतत प्रयासरत है। आई.क्यू.ए.सी. समाज के विभिन्न वर्गों के लिए शैक्षणिक कार्यक्रमों की समान पहुँच और सामर्थ्य के साथ साथ शिक्षण तथा सीखने के आधुनिक तरीकों का अनुकूलन और एकीकरण की दिशा में भी प्रयासरत है। महाविद्यालय की आई.क्यू.ए.सी. इकाई द्वारा वर्ष 2004 में प्रथम चरण, वर्ष 2015 में द्वितीय चरण तथा वर्ष 2021 में तृतीय चरण हेतु महाविद्यालय को नैक द्वारा प्रत्यायित

करवाया गया। आई.क्यू.ए.सी. की वर्ष 2023 से 2025 तक की गयी कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं-

1. संस्था की विभिन्न गतिविधियों में वृद्धि और समन्वय सुनिश्चित करने के साथ ही सभी अच्छी प्रथाओं जैसे ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया, नई शिक्षा नीति, सी.बी.सी.एस., हरित परिसर, अन्य संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन, व्याख्यानमाला, महाविद्यालय वेबसाइट पर डिजिटल सामग्री की उपलब्धता, हेल्प डेस्क, आदि को संस्थागत बनाने का प्रयास किया गया।
2. वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (AQAR) 2021-22 दिनांक 03-10-2023 को सफलतापूर्वक नैक पोर्टल पर प्रस्तुत किया गया।

3. वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (AQAR) 2022-23 दिनांक: 15-05-2024 को सफलतापूर्वक नैक पोर्टल पर भेजा गया।
4. वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (AQAR) 2023-24 दिनांक: 27-01-2025 को सफलतापूर्वक नैक पोर्टल पर स्थानान्तरित किया गया।
5. वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (AQAR) 2024-25 का कार्य प्रगति पर है। शीघ्र ही इसे नैक पोर्टल पर जमा कर दिया जायेगा।
6. आई.क्यू.ए.सी. द्वारा चतुर्थ चरण का नैक प्रत्यायन वर्ष 2026 में कराया जायेगा। वर्तमान में महाविद्यालय की आई.क्यू.ए.

सी. समिति अधोवर्णित है

1. डॉ. प्रमोद जोशी, समन्वयक/निदेशक
2. प्रो. अनीता जोशी, सह समन्वयक
3. डॉ. शरद भट्ट, सदस्य
4. डॉ. शंकर मण्डल, सदस्य
5. डॉ. योगेश चन्द्र, सदस्य
6. डॉ. प्रकाश चन्द्र पालीवाल, सदस्य
7. डॉ. दीपक खाती, सदस्य
8. डॉ. सुभाष पोखरियाल, सदस्य
9. डॉ. देव आशीष, सदस्य

डॉ. प्रमोद जोशी

समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.

## सांस्कृतिक प्रकोष्ठ

### सत्र 2023-24

राजकीय स्नातकोत्तर, रामनगर में सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अन्तर्गत प्रियांशु तिवारी अध्यक्ष एवम् कविता सांस्कृतिक सचिव के रूप में निर्वाचित हुई।

**होली मिलन बैठक** - सांस्कृतिक परिषद् के द्वारा संगीत विभाग एवम् स्टाफ क्लब के सहयोग से 22 मार्च, 2024 को होली मिलन बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम में समस्त प्राध्यापकवर्ग एवम् शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस बैठक में सामूहिक रूप से पारम्परिक होली गीतों का सभी के द्वारा सुमधुर गायन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ गणेश वन्दना 'सिद्धि को दाता विघ्न विनाशन' गाकर किया गया। तत्पश्चात् पारम्परिक होली गीत जल कैस भरूँ यमुना गहरी, मोहन गिरधारी हँसी-हँसी दे गयो गारी, मथुरा में खेलें एक घड़ी, होली खेलें रघुवीरा अवध में, गई-गई रे असुर तेरी नार मंदोदरी, सजना होली आई है, मलत मलत नैना लाल भए, झुकि आयो शहर में व्योपारी आदि का सभी के द्वारा गायन किया गया। बैठक के अन्त में प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे द्वारा सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ दी गई।

### सत्र 2024-25

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर में सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अन्तर्गत ज्योति रावत अध्यक्ष एवम् प्रियांशु सांस्कृतिक सचिव के रूप में निर्वाचित हुए।

**होली मिलन बैठक**:- 17 मार्च, 2025 को प्रत्येक वर्ष की भांति सांस्कृतिक परिषद् के द्वारा संगीत विभाग एवम् स्टाफ क्लब के सहयोग से होली मिलन बैठक का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। सर्वप्रथम पुष्प वर्षा द्वारा सभी प्राध्यापकों एवम् शिक्षणेत्तर कर्मचारियों द्वारा होली पर्व का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् गणेश वन्दना तुम सिद्धि करो महाराज के गायन द्वारा बैठक का शुभारम्भ किया गया शिव के मन माही बसे काशी, मृगनयनी को चार नवल रसिया, ऐसो अनारी चुन गयो फाड़ी, मोरे कान्हा जो आए पलट के आदि होलियों के गायन पश्चात् राजकीय डिग्री कॉलेज, मालधनचौड़ महाविद्यालय, से आए डॉ. जी.सी. पन्त द्वारा होली 'वसुदेव की गोद कन्हैया है' का मधुर गायन किया गया जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया और समस्त महाविद्यालय परिवार द्वारा अन्त में एक वृत्त बनाकर हुड़के की थाप पर खड़ी होली गायन किया गया।

**सांस्कृतिक प्रतियोगिता संगीतायन** :- 09 अप्रैल, 2025 को महाविद्यालय की सांस्कृतिक परिषद् ने विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक कार्यक्रम एवम् प्रतियोगिता 'संगीतायन' का आयोजन किया। संगीतायन के अन्तर्गत समूह-नृत्य, एकल नृत्य, कविता पाठ, शास्त्रीय संगीत गायन, लोक गीत गायन, एकल नृत्य एवम् बॉलीवुड गीत गायन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई, जिनमें

विभिन्न छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। प्रतियोगिताओं के मध्य में मनोरंजन के लिए विद्यार्थियों ने सोशियल मीडिया के हमारे समाज पर दुष्प्रभाव को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया और इससे बचने के उपायों पर भी चर्चा की। इसके अतिरिक्त विभिन्न संकायों से जुड़े विद्यार्थियों द्वारा गज़ल, नृत्य एवम् गीत आदि की सांस्कृतिक कार्यक्रम में विशेष प्रस्तुतियाँ भी दी गईं। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. एम.सी. पाण्डे ने सभी छात्र-छात्राओं के उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा की और विजयी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रमाण-पत्र एवम् पुरस्कार वितरित किए। निर्णायक मण्डल के निर्णय के आधार पर समूह-नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर महक ग्रुप, द्वितीय स्थान पर ज्योति ग्रुप एवम् तृतीय स्थान तनिष्का ग्रुप ने प्राप्त किया। बॉलीवुड गीत गायन प्रतियोगिता में ज्योति प्रथम, अमित चन्द्र द्वितीय एवम् तृतीय स्थान कविता ने प्राप्त किया। शास्त्रीय संगीत गायन प्रतियोगिता में ज्योति प्रथम, कविता द्वितीय एवम् साक्षी तृतीय

स्थान पर रहे। एकल नृत्य में सुमित द्वारा दी गई प्रस्तुति की विशेष प्रशंसा हुई, जोकि उत्तराखण्ड की जागर शैली पर आधारित थी, इस प्रस्तुति में प्रथम स्थान कृतिका द्वितीय स्थान एवम् अंजू तृतीय स्थान पर रहीं। कविता पाठ प्रतियोगिता में रश्मि खंडूरी प्रथम, अर्पिता त्रिपाठी द्वितीय एवं कोमल फर्त्याल तृतीय स्थान पर रही। लोक गीत गायन प्रतियोगिता में भास्कर प्रथम, सुनीता द्वितीय और रश्मि खंडूरी तृतीय स्थान पर रहे। सांस्कृतिक परिषद् की संयोजिका डॉ. शिप्रा पन्त एवं सदस्य डॉ. अल्का राजौरिया, डॉ. डी.एन. जोशी, डॉ. कृष्णा भारती और डॉ. अजय कुमार द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. डी.एन. जोशी एवं डॉ. अल्का राजौरिया द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम में संगीत विभाग से डॉ. इन्दु आर्या, तबला वादक श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ी एवं समस्त सांस्कृतिक समिति का विशेष सहयोग रहा और विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

डॉ. शिप्रा पन्त  
संयोजक

## नमामि गंगे विभाग

2024-25

नमामि गंगे एवं अर्थ गंगा परियोजना के अन्तर्गत महाविद्यालय में विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गयी, जिनमें छात्र/छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया-

- 1- 1/10/2024 - 07/10/2024 तक वन्य प्राणी सप्ताह मनाया गया।
- 2- 2/10/2024 को गाँधी जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय में छात्र/छात्राओं ने एवं महाविद्यालय परिवार के समस्त स्टाफ ने 2 घण्टे का स्वच्छता, एवं श्रमदान कार्य किया।
- 3- 04/10/2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना एवं नमामि गंगे के संयुक्त तत्वाधान में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया।
- 5- 20/02/2025 को नमामि गंगे एवं अर्थगंगा परियोजना के तहत महाविद्यालय के समस्त स्टाफ एवं छात्र/छात्राओं ने गंगा

नदी तथा उसकी सहायक नदियों को स्वच्छ रखने एवं प्लास्टिक उन्मूलन की शपथ ली।

- 6- 16/03/2025 - 30/03/2025 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया, जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर की स्वच्छता, कोसी नदी बैराज की सफाई, सीवेज ड्रीटमेन्ट प्लांट का भ्रमण, चित्रकला, भाषण, निबंध प्रतियोगिता, जनजागरूकता अभियान, भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता, सार्वजनिक स्थलों की सफाई, करनपुर इण्टर कॉलेज कानिया के छात्रों के मध्य चित्रकला प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, एक छात्र-एक पौधा श्रम दान इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें छात्र-छात्राओं ने उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया।



जहां विचार नहीं वहां कार्य नहीं। अतः मस्तिष्क को उच्च विचारों से, उच्च आदर्शों से भर दो। उन्हें दिन-रात अपने साथ रखो और तब उसमें से महान कार्य निष्पन्न होगा।

-विवेकानन्द

## एंटी ड्रग सेल

निदेशक उच्च शिक्षा के शासनादेशानुसार पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर एंटी ड्रग सेल संयोजक डॉ. जया भट्ट ने स्कूलों में जाकर कम उम्र में ही बच्चों को नशे के दुष्प्रभाव से अवगत कराना उचित समझा और इसके लिए सर्वप्रथम 31 जनवरी 2024 को महाविद्यालय संरक्षक प्राचार्य महोदय से अनुमति प्राप्त कर योगाचार्य डॉ. नितिन ढोमणे के साथ सेंट जोसेफ कॉन्वेंट स्कूल पीरूमदारा, रामनगर में अपना प्रथम नशा मुक्ति जन जागरूकता अभियान चलाया। जिसमें 'व्याख्यान व व्यायाम' के माध्यम से नशे की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया तथा प्रश्नोत्तर के माध्यम से बच्चों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया। इसमें कक्षा 6 से कक्षा 9 तक के विद्यार्थी सम्मिलित थे। छात्र-छात्राओं के प्रत्येक माह एक अथवा दो कार्यक्रम निर्धारित हैं। एंटी ड्रग रामनगर के गणमान्य नागरिक अधिकारी तथा प्राध्यापकगण सदस्य हैं। जन जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत एमपी हिंदू इंटर कॉलेज में छात्र-छात्राओं के मध्य आत्मबल में वृद्धि करके नशे की समस्या के समाधान पर पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से व योगाचार्य डॉ. नितिन ढोमणे जी के द्वारा विशेष योग प्रशिक्षण कार्यक्रम 'सुपर ब्रेन योगा' के माध्यम से पुनः आत्मबल में वृद्धि और लक्ष्य प्राप्ति को केन्द्र में रखकर कार्यक्रम किया गया था। एक अन्य कार्यक्रम में नगर पालिका से भी महाविद्यालय को डोर-टू -डोर सर्विस में नशा मुक्ति गीत,

प्रजापिता ब्रह्मकुमारी संस्था की डॉ. दामिनी का गाया हुआ... परिवर्तन की राह पर... नशा मुक्ति के प्रचार हेतु स्वीकृत कर लिया गया है। नशामुक्ति के सन्दर्भ में दो कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं- प्रथम कार्यशाला 20 फरवरी को समाज कल्याण विभाग द्वारा की गई, जिसमें नशे से संबंधित जन जागरूकता अभियान के लिए प्रशिक्षण कार्य छात्रों, नगर पार्श्वों व प्राध्यापकगण को प्रशिक्षित किया गया। जिसमें शिक्षक, पार्श्व और छात्र-छात्राओं को मिलाकर 70 के लगभग लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दूसरी, कार्यशाला महाविद्यालय के एंटी ड्रग सेल के द्वारा की गई, जिसका विषय 'नशा मुक्त उत्तराखण्ड चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' इसमें पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से नशे के संबंध में जन जागरूकता पर गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया। इसमें चार विद्यार्थियों के द्वारा उत्कृष्ट सुझाव दिए जाने पर उन्हें पुरस्कृत किया गया। अब महाविद्यालय पूर्णतः नशा मुक्त परिसर बन चुका है। एंटी ड्रग सेल के अन्तर्गत किए गए उत्कृष्ट कार्यों के दृष्टिगत नोडल अधिकारी डॉ. जया भट्ट को केंद्रीय संचार ब्यूरो, नैनीताल के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में 'उत्कृष्टता सम्मान' प्रदान किया गया।

डॉ. जया भट्ट  
नोडल अधिकारी, एंटी ड्रग सेल

## आंतरिक शिकायत समिति एवं महिला उत्पीड़न परिवेदना निवारण और छात्रा कल्याण समिति

सत्र 2024-25

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) में प्राचार्य जी की अध्यक्षता एवं आदेश के अनुपालन में महिला उत्पीड़न परिवेदना निवारण एवं छात्रा कल्याण समिति का गठन शासन द्वारा प्राप्त निर्देशों के अनुसार किया गया। इस समिति का प्रतिवर्ष पुनर्गठन किया जाता है। जिसमें छात्राओं की भागीदारी होती है। वर्तमान सत्र में इस समिति में 10 सदस्य हैं, जिनमें से एक सदस्य वाह्य तथा दो सदस्य संयोजक द्वारा नामित पी.जी. अथवा शोध छात्र-छात्रा चयनित किए जाते हैं। समिति के सदस्यों द्वारा समिति की कार्य प्रणाली, नियमों और महिला सुरक्षा प्रावधानों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया जाता है।

सन् 2024-25 में समिति के द्वारा छात्राओं के स्वास्थ्य, पोषण तथा मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता के लिए संगोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन किया गया। समिति महिला कार्मिकों और छात्राओं की सुरक्षा एवं उचित वातावरण प्रदान करने के लिए निरंतर

प्रयासरत रहती है। वर्तमान सत्र 2024-25 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2025 को महाविद्यालय के सभागार में "सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यालय (नैनीताल)" के अंतर्गत "केंद्रीय संचार ब्यूरो" के सहयोग से छात्राओं के हित में कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय की महिला प्राध्यापिकाओं द्वारा छात्राओं की सुरक्षा से संबंधित व्याख्यान दिए। इस अवसर पर कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि पी.डब्ल्यू.डी. आइकॉन ब्रांड एंबेसडर सुश्री कविता बिष्ट मैडम ने अपने दुखद संस्मरण से अवगत कराया, जिसमें उन्होंने 2 फरवरी सन् 2008 की सुबह दिल्ली में एसिड अटैक के दंश को झेलते हुए अपनी दोनों आंखें और एक कान सदा के लिए खो दिया था। इस अवसर पर मैडम कविता बिष्ट ने छात्राओं के लिए विषम परिस्थिति में हार न मानने का प्रेरणादायी एवं सारगर्भित भाषण दिया।

डॉ. पुनीता कुशवाहा  
संयोजिका

अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

## कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ

- 1- 19 अगस्त 2023 को IBN-Edunet एवं महाविद्यालय के कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ द्वारा छात्र-छात्राओं हेतु एक दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित किया गया। जिसमें कम्प्यूनिकेटिंग विथ इम्पैक्ट, स्किल बिल्ड प्लेटफार्म आदि विषयों पर चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में कुल प्रतिभागियों की संख्या 180 थी।
- 2- 18 दिसम्बर 2023 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में देवभूमि उद्यमिता योजना के अन्तर्गत कार्यशाला आयोजित की गई, जिससे विद्यार्थियों का कौशल विकास हो सके। इस योजना के नोडल ऑफिसर डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने इसका उद्देश्य, शिक्षकों, नीति-निर्माताओं, निवेशकों, छात्रों और उद्योगों में उद्यमशीलता के विषय में जागरूकता को बढ़ाने हेतु जागरूक किया।
- 3- कौशल विकास को बढ़ावा देने हेतु पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत 28 एवं 29 दिसम्बर 2023 को ड्रग्स कैम्प का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में देवभूमि उद्यमिता योजना इ.डी.आई. अहमदाबाद के इंडस्ट्री एक्सपर्ट एण्ड फैंकल्टी मेंटर दीपक चौहान ने विद्यार्थियों को स्वरोजगार से जुड़ी विभिन्न योजनाओं तथा कार्यप्रणाली का व्यावहारिक ज्ञान दिया। इस कार्यक्रम में कुल प्रतिभागी 155 उपस्थित रहे।
- 4- कौशल विकास को उत्साहवर्द्धन करने हेतु देवभूमि योजना के अन्तर्गत 12 दिवसीय EDP (Entrepreneurship Development Programme) का आयोजन हुआ जो 28 फरवरी 2024 से 13 मार्च 2024 तक सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में प्रतिदिन नवीन वक्ता अपनी व्याख्यान देते थे और विद्यार्थियों को उद्यमिता से सम्बन्धित मार्गदर्शन किया करते थे। इस कार्यक्रम में कुल 45 विद्यार्थी नियमित रूप से उपस्थित थे।
- 5- 6 मार्च 2024 को के.एल.ए. समूह के प्रबन्धक श्री अशोक कुमार ने 'उद्यमिता में कैरियर' किस तरह बनाएँ, इस पर विस्तार से चर्चा की। के.एल.ए. समूह का सालाना टर्नओवर 500 करोड़ प्रति वर्ष है।
- 6- 07-05-2024 को आपदा प्रबंधन पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन में कैसे करियर बनाएँ बताया गया और साथ ही इमरजेंसी में आपदा से कैसे बचें ये भी समझाया गया।
- 7- दिनांक 31-5-2024 को विद्यार्थियों को रिमोट सेंसिंग एक जी.आई.एस. में किस तरह कैरियर बनाएँ, बताया गया।

इससे सम्बन्धित कहाँ-कहाँ पर कोर्स हैं यह भी बताया गया।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव  
संयोजक

### रिपोर्ट

आज 7 फरवरी 2025 को पीएनजी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर नैनीताल के बी.एड. विभाग में कैरियर एवं काउंसलिंग प्रकोष्ठ के तत्वाधान में केंद्र एवं राज्य स्तरीय शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर निर्माण हेतु होने वाली शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को CTET, UTET जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और कैरियर के अन्य संभावित अवसरों के बारे में विस्तृत जानकारी देना था।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बी.एड. विभाग की विभाग अध्यक्ष डॉ. संगीता कुमारी ने की। मुख्य अतिथि प्रभारी प्राचार्य प्रोफेसर सिद्धेश्वर मौर्य उपस्थित रहे। विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित शिक्षकों और विशेषज्ञ डॉ. लवकुश चौधरी, भौतिक विज्ञान विभाग, डॉ. लोतिका अमित, गृह विज्ञान विभाग, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, कैरियर काउंसलिंग प्रभारी डॉ. सुमन कुमार, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र उपस्थित रहे। डॉ. अजय कुमार, डॉ. हेमावती पंत, श्री ललित मोहन, डॉ. रंजना भारती, श्री अजय सिंह बी.एड. विभाग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अजय कुमार द्वारा किया गया, उन्होंने कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों का स्वागत तथा अभिनंदन किया।

प्रोफेसर सिद्धेश्वर मौर्य ने शिक्षा के महत्त्व और शिक्षक बनने की प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा की, उन्होंने बताया कि एक सफल शिक्षक बनने के लिए केवल किताबों का ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक अनुभव, नैतिकता और शिक्षा पद्धति की समझ भी आवश्यक है। डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने कैरियर काउंसलिंग और परीक्षा रणनीति पर चर्चा की, उन्होंने कहा कि CTET, UTET में सफलता प्राप्त करने के लिए नियमित अध्ययन और उचित समय प्रबंधन आवश्यक है। डॉ. लवकुश ने शिक्षा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि गणित और विज्ञान शिक्षकों की मांग लगातार बढ़ रही है। इसलिए विज्ञान के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। डॉ. लोतिका अमित ने गृह विज्ञान और शिक्षक प्रशिक्षण के संबंध में जानकारी दी, उन्होंने बताया कि गृह विज्ञान केवल घर तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य पोषण और जीवन कौशल से जुड़ा एक महत्वपूर्ण विषय है। डॉ. सुमन कुमार ने शिक्षा के सामाजिक

महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक केवल ज्ञान नहीं देता बल्कि समाज को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके बाद बी.एड. विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. संगीता कुमारी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के मध्य व्यवस्थित तैयारी करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा आए हुए अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. अजय कुमार और डॉ. हेमावती ने CTET, UTET की तैयारी रणनीति पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने परीक्षा पैटर्न महत्त्वपूर्ण विषय, समय प्रबंधन, प्रश्नपत्र विश्लेषण और मॉक टेस्ट की उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को CTET, UTET परीक्षाओं के पैटर्न, योग्यता मापदंड और तैयारी के टिप्स के बारे में बताया। बी.एड. विभाग के सभी अध्यापकों के मार्गदर्शन में चतुर्थ सेमेस्टर के एक 40 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में 20 प्रशिक्षणार्थियों ने अध्यापक पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने प्रतियोगी परीक्षाओं, शिक्षक के व्यावहारिक पहलुओं और कैरियर विकल्पों से संबंधित प्रश्न पूछे जिनका विशेषज्ञों ने विस्तार से उत्तर दिया। कार्यक्रम के समापन पर डॉ. संगीता कुमारी ने सभी विद्यार्थियों को मेहनत और समर्पण के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का मार्गदर्शक होता है एवं एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए सही मार्गदर्शन और अनुशासन आवश्यक है। इस कार्यक्रम में बी.एड. विभाग के सभी प्राध्यापक तथा शिक्षक और परीक्षार्थी उपस्थित रहे।

### कार्यशाला रिपोर्ट

दिनांक 14-09-2024 को कैरियर काउंसलिंग सेल द्वारा महाविद्यालय में पी.एम. विश्वकर्मा योजना के तहत विद्यार्थियों के कौशल विकास की वृद्धि तथा उसके उपयोग हेतु एक वर्षीय ओ. लेवल कोर्स पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने किया। उन्होंने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान अत्यावश्यक है। आस्थान इंस्टीट्यूट रामनगर की रिसोर्स पर्सन कविता अग्रवाल ने आस्थान इंस्टीट्यूट के विभिन्न संचालित पाठ्यक्रमों और उनसे सम्बन्धित निःशुल्क योजनाओं की जानकारी दी। पाठ्यक्रमों के लिए अनिवार्य और वांछनीय योग्यताओं की जानकारी भी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण इशांत अग्रवाल ने कम्प्यूटर भाषा के ओ. लेवल, सी. प्लस प्लस आदि पाठ्यक्रमों एवं उनके उपयोग के बारे में बताया। अग्रवाल जी ने बताया कि ये कम्प्यूटर पाठ्यक्रम अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क हैं। अतः वे इसका लाभ उठा सकते हैं। इस मौके

पर कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. अनुराग श्रीवास्तव जी ने इस प्रकार की कार्यशाला को विद्यार्थियों के लिए रोजगार परक और महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में अधिकांश नौकरियों में कम्प्यूटर की आवश्यकता होती है, अतः ये पाठ्यक्रम उनके लिए काफी महत्त्वपूर्ण हैं। इस मौके पर कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. अनुराग श्रीवास्तव, प्रकाश सिंह बिष्ट, चीफ प्रॉ. प्रो. एम.एस. मौर्या, डॉ. जे.पी. त्यागी, डॉ. सुरेश चन्द्रा, डॉ. डी.एन. जोशी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के 50 छात्र एवं छात्राये उपस्थित रहीं।

### रिपोर्ट

दिनांक 10 अगस्त 2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल) में कैरियर काउंसलिंग सेल द्वारा करियर गाइडेंस के लिए काशीपुर की 'विजन वे' संस्था के द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न कक्षाओं के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं अतिथियों का स्वागत कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. एस.एस. मौर्य जी ने किया। ट्रेनर सुलेखा जी ने छात्र-छात्राओं को विदेशों में अध्ययन की महत्ता के विषय में बताया। उन्होंने बताया कि देश के साथ-साथ विदेशों में भी रोजगार के अच्छे अवसर मौजूद हैं, जिन्हें विद्यार्थी अपने करियर निर्माण हेतु प्रयोग कर सकते हैं। उन्होंने अध्ययन और रोजगार हेतु विभिन्न केन्द्रों और विश्वविद्यालयों के विषय में बताया। उन्होंने उनके लिए न्यूनतम अर्हताओं के विषय में भी जानकारी दी। पवनीत कौर जी ने भी विदेशों में विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के बारे में बताया। उन्होंने वहाँ प्रवेश हेतु न्यूनतम उत्तीर्ण प्रतिशत, प्रक्रियाओं, वीजा पासपोर्ट तथा शिक्षा हेतु लोन प्राप्त करने के सम्बन्ध में जानकारी दी। उन्होंने विदेश भेजने के नाम पर होने वाले फ्रॉड से बचने के विषय में भी बताया। कार्यक्रम का संचालन कैरियर काउंसलिंग सेल के नोडल, डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने किया। उन्होंने छात्र-छात्राओं से एक लक्ष्य तय करने के विषय में प्रकाश डाला। उन्होंने विदेशों में रोजगार प्राप्ति के अवसरों के विषय में बताया। डॉ. सिराज अहमद ने भी छात्र-छात्राओं से अपने भविष्य के रोजगार एवं करियर के चुनाव के साथ, उसी के अनुरूप अध्ययन करने पर बल दिया। डॉ. प्रकाश बिष्ट जी ने विजन वे की टीम को महाविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने भविष्य में इस प्रकार के और कार्यक्रम करने का आश्वासन दिया। उन्होंने छात्र-छात्राओं की समस्याओं और प्रश्नों का निराकरण एवं समाधान भी किया। इस अवसर पर डॉ. दीपक खाती तथा डॉ. पी.सी. पालीवाल जी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभिन्न कक्षाओं के 56 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

## III Series - Gurudivas Vyakhyan Mala

| S.No. | Date     | Name of Deptt.    | Topic of Lecture  | Name of Resource Person   |
|-------|----------|-------------------|---|---|
| 1.    | 05/09/23 | Higher Education  | Quality Assurance Strategies Under New Educative Policy                             | Director Dr. C.D. Suntha<br>Higher Education Uttarakhand  |
| 2.    | 21/09/23 | Commerce          | Prospects & Challenges of Tourism in Himalayan States.                              | Prof. Atul Joshi<br>Dean & Head, Faculty of Commerce<br>Kumaun University, Nainital                       |
| 3.    | 19/10/23 | Sociology         | A Sociological Perspective of Environment, Tourism & Social Harmony in Uttarakhand. | Prof. B.S. Bisht,<br>Former Head Deptt. of Socioloty,<br>Kumaun University, Nainital                      |
| 4.    | 09/11/23 | English           | How to write & Speak simple & Powerful English.                                     | Dr. Archana D.Tyagi<br>Associate Prof.<br>B.S.M.PG College, Rurkee.                                       |
| 5.    | 23/11/23 | Geography         | Concept of Environment Consciousness in Indian Culture.                             | Dr. Ganesh Kumar Pathak<br>Retired Principal A.M.<br>PG College Dubey Chhapra, Balia (U.P)                |
| 6.    | 07/12/23 | Psychology        | Mental Health of Women in current scenerio  | Prof. R.S. Giri<br>Govt. Model Degree College,<br>Raja Nagar, swar Rampur.                                |
| 7.    | 04/01/24 | Physics           | Magnetic Memory & Data Storage Technology   | Dr. Bhagwati Prasad Joshi<br>Deptt. of Materials Engineering,<br>(IISC), Bangalore.                       |
| 8.    | 22/02/24 | History           | Human condition : A way out & the Role of history.                                  | Prof. B.M. Pandey, Principal,<br>Govt.Degree College, Talla Salt,<br>Almora.                              |
| 9.    | 29/02/24 | Economics         | Role of MSMEs in Indian Economy   | Dr. Ajit Singh,<br>Deptt. of regional economic<br>MJP Ruhailkhand University.                             |
| 10.   | 07/03/24 | Zoology           | Prevention of Heart attack  | Dr. Kushal Madan<br>Sir Ganga Ram Hospital, New Delhi   |
| 11.   | 14/03/24 | Political Science | Need for womens Employment in 2024 : A socio economic                               | Prof. Chandra Kanta K Mathur<br>Deptt. of Pol.Science<br>Syama Prasad Mukharji, College,<br>Punjabi Bagh. |

## III Series - Gurudivas Vyakhyan Mala

| S.No. | Date     | Name of Deptt. | Topic of Lecture  | Name of Resource Person   |
|-------|----------|----------------|---|---|
| 12.   | 25/04/24 | Music          | The Aesthetical Enhancement of Music through Ras Bhav   | Dr. Namrata Deb<br>Deptt. of Music Assistant Prof.<br>Music (vocal) , Jagat Taran Girls Degree College, Prayagraj U.P.  |
| 13.   | 30/05/24 | Sanskrit       | वैदिक विज्ञान के विविध आयाम   | Prof. Manoj Mishra<br>Central Sanskrit, University<br>Ganganath Jha Campus<br>Prayagraj U.P.  |
| 14.   | 06/06/24 | Home Science   | Diet in Obesity   | Prof. Archana Kushwaha<br>Head, Deptt. of Food & Nutri College<br>of Community Science G.B. Pant<br>University of Agriculture & Technology<br>Pantnagar, U.S. Nagar , U.K |
| 15.   | 13/06/24 | Chemistry      | Membrane Separation Technologies in water treatment Current Development & Future opportunities in India | Dr. Bali Ram Prof. Emeritus<br>Deptt. of Chemistry, Siddharth<br>University, Siddharth Nagar, Kapil<br>Vastu (U.P)  |
| 16.   | 11/07/24 | B.Ed.          | Tools and Techniques of Evaluation  | Dr. A.P. Singh Principal (Retd.)<br>U.P. Govt. Higher Education   |
| 17.   | 25/7/24  | Hindi          | व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका   | Prof. Prabha Pant<br>विभागाध्यक्ष, हिन्दी<br>एम.बी.रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,<br>हल्द्वानी, नैनीताल   |
| 18.   | 15/08/24 | N.C.C          | Role of youth in Nation Building  | Lieut. Dr. Pankaj Mehta<br>Senior faculty,<br>Deptt. of Environmental Science<br>Central University of Jammu  |
| 19.   | 22/08/24 | Botany         | Man & Nature  | Prof. Govind Singh Rajwar<br>former Principal & Professor of Botany<br>Govt.PG College Agastyamuni  |
| 20.   | 29/08/24 | Math           | Hydrodynamics and instabilities in Nature   | Prof. Deepak Kumar Tiwari<br>Deptt. of Mathematice<br>M.B. Govt. P.G. College Haldwani,<br>Nainital   |

## IV Series - Gurudivas Vyakhyan Mala

| S.No. | Date       | Name of Deptt.    | Topic of Lecture   | Name of Resource Person  |
|-------|------------|-------------------|--|--|
| 1.    | 5-9-2024   | Hindi             | तुलसीदास का समन्वयवाद एवं लोक नायकत्व  | Prof. Girish Chandra Pant<br>Govt. P.G. College Maldhanchaur<br>(Nainital)   |
| 2.    | 24-10-2024 | History           | The significance of History and its crisis   | Prof. Girija Prasad Pandey<br>Deptt. of History, Uttarakhand Open University, Haldwani, Nainital                                   |
| 3.    | 19-12-2024 | Commerce          | Happiness through Education  | Prof. Vijay Kumar Shrotriya<br>Deptt. of Commerce Delhi School of Economics University of Delhi.                                   |
| 4.    | 26-12-2024 | Geography         | Moving Ahead Towards the Sustainable development in Himalayas : Challenges and prospects | Prof. Prakash Chandra Tiwari (Retd.)<br>Deptt of Geography Kumaun University, Nainital   |
| 5.    | 27-2-2025  | B.Ed.             | Importance of Multilingualism in N.B.P. 2020   | Prof. T.N. Singh<br>Principal, Ram Sakal Singh Science College, B.R.A. Bihar University Muzaffarpur, Bihar                         |
| 6.    | 6-3-2025   | Economics         | Gender Responsive Budgeting : A Tool for women empowerment                               | Prof. M.Azam Khan<br>Deptt. of Economics Faculty of Social Sciences, Aligarh Muslim University, Aligarh                            |
| 7.    | 20-3-2025  | Chemistry         | Scientific Temperament : Need of the Hour  | Dr. Pankaj Kandwal,<br>Assosiates Prof. NIT, Srinagar, Uttarakhand   |
| 8.    | 27-3-2025  | Sociology         | Govt. Social Development Policies A steps to wards a developed India                     | Mr. Ashok Kumar Pandey<br>CDO, Nainital Govt.of Uttarkhand   |
| 9.    | 3-4-2025   | Sanskrit          | भारतीय संस्कृत ज्ञान परम्परा (स्मृतियों के विशेष परिप्रेक्ष्य में)                       | प्रो० भगवतशरण शुक्ल<br>काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी   |
| 10.   | 7-4-2025   | Political Science | Multiculturalism: Theory and Practice  | Prof. Gyana Ranjan Swain<br>School of Political Science Gangadhar Mehar University Sambalpur, Odisha                               |
| 11.   | 8-5-2025   | Psychology        | Body language, Paralanguage & Behaviour  | Prof. Kamla D Bhardwaj<br>Deptt. of Psychology H.S.B Govt. PG College, Someshwar (Almora)  |
| 12.   | 29-5-2025  | Music             | How Indian Classical Music Enhances Focus, Memory & Learning                             | Dr. Gagandeep Hothi<br>Sr. Assistant Prof. Deptt. of Music D.S.B. Campus, KU, Nainital   |
| 13.   | 12-6-2025  | Home Science      | Essentials of life style Management  | Dr. Sheetal Chhaya<br>Prof. Deptt. of Nutrition and Dietics Parul Institute of Applied Sciences Parul University, Vadodra, Gujarat |
| 14.   | 21-8-2025  | Zoology           | Antibiotic Resistance A Global Threat  | Dr. Deepika Yadava<br>Prof. of Zoology Shivaji College, University of Delhi  |

|     |          |             |  |   |
|-----|----------|-------------|--|---|
| 15. | 4-9-2025 | Mathematics | Innovation and its future prospects : Intellectual property rights in the current scenario | Prof. (Dr.) Ashutosh Kumar Bhatt<br>Director, School of vocational Education professor, School of Computer Science and Information Technology Uttarakhand Open University, Haldwani |
| 16. | 5-9-2025 | Physics     | Natural Clock's  | Dr. Pankaj Bhagel<br>Scientist - F,<br>Group Incharge of AMS and Geochronology Inter University Accelerator Centre, New Delhi   |

## उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

अध्ययन केन्द्र संख्या 16022

ज्ञान अर्थव्यवस्था के इस युग में विकास का सबसे महत्वपूर्ण तत्व उच्च शिक्षा है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए मूल्यवान दस्तावेज पेश किये हैं। इन दिनों मुक्त और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली (ओ.डी.एल.) कई व्यावसायिक, पेशेवर और तकनीकी पाठ्यक्रम प्रदान करती है, जिसमें प्रौद्योगिकी के उच्च उपयोग की ओर उन्मुख विशेष रूप से डिजाइन किये गये कार्यक्रम सम्मिलित हैं। मुक्त और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में दूरदराज के स्थानों और दुर्गम इलाकों में रहने वाले लोगों तक पहुँचने की भी क्षमता है। मुक्त और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली (ओ.डी.एल.) के उद्देश्यों के अनुरूप उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय (यू.ओ.यू.) की स्थापना उत्तराखण्ड विधानसभा के एक अधिनियम (अक्टूबर 2005 के अधिनियम संख्या 23) द्वारा राज्य में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से ज्ञान और कौशल के प्रसार के उद्देश्य से की गयी थी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य राज्य के त्वरित उत्थान और विकास के लिये 'शिक्षा आपके दरवाजे पर' नीति के अन्तर्गत कुशल और ज्ञान आधारित मानव संसाधन तैयार करने के लिये लक्षित समूहों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है। इसके साथ-साथ यू.ओ.यू. उच्च शैक्षणिक मानकों को बनाये रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) ने वर्ष 2015 में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी से एक एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर कर, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का एक अध्ययन केन्द्र महाविद्यालय परिसर में संचालित किया।

रामनगर महाविद्यालय में यू.ओ.यू. का जो अध्ययन केन्द्र संचालित है उसका अध्ययन केन्द्र कोड 16022 है। अध्ययन केन्द्र 16022 में निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं-

- 1- बी.ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, संगीत)  
B.A. (Hindi, English, Sanskrit, Geography, Economics, Sociology, History, Political Science, Psychology, Home Science, Music)
- 2- बी.एस.सी. (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित)  
B.Sc. (Physics, Chemistry, Zoology, Botany, Mathematics)
- 3- बी.कॉम (B.Com.)
- 4- एम.ए. (राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, संस्कृत, लोक प्रशासन, शिक्षा शास्त्र, अर्थशास्त्र, योगा, मनोविज्ञान, भूगोल, एम.एस.डब्ल्यू)  
M.A. (Political Science, Sociology, Hindi, English, History, Sanskrit, Public Administration, Education, Economics, Yoga, Psychology, Geography, MSW)
- 5- एम.एस.सी. (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित)  
M.Sc. (Physics, Chemistry, Zoology, Botany, Mathes)
- 6- एम.कॉम (M.Com.)
- 7- सर्टिफिकेट कार्यक्रम जैसे सी.एफ.एन., सी.आर.टी.आई., सी.आई.एन., सी.एम.ई., सी.ओ.एफ., सी.वी.ई.ओ.एम., सी.वी.के., सी.वी.टी.ई.ई., सी.वाई.एस., सी.वी.डी.एम.एम. इत्यादि (सर्टिफिकेट कार्यक्रमों को दिये गये लिंक पर क्लिक करके देखा जा सकता है-  
<https://uou.ac.in/prog?type=CD>  
Certificate Programme like CFN, CRTI, CIN, CME, COF, CVEOM, CVK, CVTEE, CYS, CVDMM etc. (To check certificate programme in details please click on

<https://uou.ac.in/prog?type=CD>

8- डिप्लोमा कार्यक्रम जैसे डी.पी.एच.सी.एन., डी.वाई.एस. इत्यादि। (डिप्लोमा कार्यक्रमों को दिये गये लिंक पर क्लिक करके देखा जा सकता है-  
<https://uou.ac.in/prog?type=DD>

Diploma Programme like DPHCN, DYS etc (To check diploma programme in details please click on  
<https://uou.ac.in/prog?type=DD>

9- व्यावसायिक शिक्षा : बी.एड. (ओ.डी.एल.)  
Vocational Education : B.Ed. (ODL)

प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये महाविद्यालय में एक समिति गठित की जाती है। वर्तमान सत्र के लिये गठित समिति के सदस्यों के नाम एवं नम्बर निम्नांकित हैं-

1. डॉ. दीपक खाती, संयोजक यू.ओ.यू. 9411537116
2. डॉ. प्रमोद पाण्डे, उप संयोजक यू.ओ.यू. 9412124461
3. श्री विजय सिंह, अनुसेवक/सहायक 9758081448

**डॉ. दीपक खाती**  
समन्वयक, यू.ओ.यू.

## अभिभावक शिक्षक संघ

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल) में प्रत्येक शैक्षणिक सत्र के प्रारम्भ में अभिभावक शिक्षक संघ का गठन किया जाता है; जिसमें अभिभावक और कुछ स्थानीय व्यक्ति सहभाग करते हैं। इस संघ का मूल उद्देश्य यह है कि अभिभावकों और सम्मानित सदस्यों द्वारा महाविद्यालय तथा छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियों तथा समस्याओं को उजागर किया जाता है।

महाविद्यालय के शैक्षणिक उन्नयन तथा अपने विचारों द्वारा सार्थक और सकारात्मक भूमिका निभाने में अभिभावक-शिक्षक संघ का विशेष योगदान है। इसी क्रम में कतिपय अभिभावकों के अपने पाल्य की शिक्षा तथा शिक्षणोत्तर गतिविधियों के सम्बन्ध में और महाविद्यालय के सकारात्मक विकास हेतु कुछ अभिभावकों के विचार/अभिमत/अभिव्यक्तियाँ निम्नवत् हैं-

- 1- श्रीमती बलजीत कौर (माता)
- 2- श्री चन्द्र प्रकाश खाती (पिता)
- 3- श्रीमती पुष्पा जखमोला (माता)
- 4- श्रीमती शान्ति देवी (माता)
- 5- श्रीमती कल्पना प्रजापति (माता)

**सत्र : 2024-25**

पुरस्कृत मेधावी छात्र/छात्राओं के वक्तव्य -

| नाम                  | विषय                               |
|----------------------|------------------------------------|
| 1- अमीषा             | , e-, -] Hw/s ] II सेम.            |
| 2- गौरव खुल्वै       | एम.ए., इतिहास                      |
| 3- उज्ज्वल खुल्वे    | एम.ए., मनोविज्ञान                  |
| 4- सुमन              | एम.एससी., वनस्पति विज्ञान, IV सेम. |
| 5- प्रियंका प्रजापति | एम.एससी., भौतिक विज्ञान, IV सेम.   |
| 6- निशा बिष्ट        | एम.एससी., जन्तु विज्ञान, IV सेम.   |

**शिक्षक अभिभावक संघ : अभिभावकों के वक्तव्य -**

मेरी बेटी सिमरन कौर एम.ए. मनोविज्ञान में यहाँ से उत्तीर्ण हुई उसका महाविद्यालय की पढ़ाई और शिक्षकों के बीच बहुत अच्छा अनुभव रहा। मैं बलवीर कौर सत्र 2022-23 में अभिभावक शिक्षक संघ के माध्यम से उपाध्यक्ष पद पर रही। मुझे यह कहना है कि मेहनत से की गयी पढ़ाई बच्चों के जीवन में सफलता का लक्ष्य बनाती है। भविष्य में विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

**अमीषा, एम.ए. भूगोल द्वितीय सेमे.**

मेरी पुत्री कु. कृति खाती इस संस्था में बी.एस.सी. प्रथम वर्ष से एम.एस.सी. रसायन विज्ञान व उसके पश्चात् बी.एड. की छात्रा रही। संस्था का अनुशासन व पठन-पाठन व अन्य शिक्षणोत्तर गतिविधियाँ सराहनीय हैं-

**चन्द्र प्रकाश खाती, रामनगर**

मेरी पुत्री कु. मनीषा जखमोला इस संस्था में बी.एस.सी. VI सेमेस्टर की विज्ञान छात्रा है। संस्था का अनुशासन और शिक्षा के क्षेत्र में इस संस्था का कार्य सराहनीय है।

**पुष्पा जखमोला, रामनगर**

मेरी पुत्री रजनी रावत वर्तमान में बी.एस.सी. VI सेमेस्टर (विज्ञान) की छात्रा है। महाविद्यालय के सभी विभागों का कार्य सराहनीय है।

**शान्ति, रामनगर**

मेरी पुत्री प्रियंका प्रजापति महाविद्यालय में एम.एस.सी. भौतिक विज्ञान की छात्रा रह चुकी है, महाविद्यालय में शिक्षा का माहौल प्रशंसनीय है।

**कल्पना प्रजापति, रामनगर**

सत्र 2024-25

### पुरस्कृत मेधावी विद्यार्थियों के वक्तव्य -

मैं अमीषा पुत्री श्री भूपाल चन्द्र विगत वर्ष पी.एन.जी.पी. जी. महाविद्यालय से भूगोल विषय में एम.ए. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत थी, मेरा अनुभव महाविद्यालय में छात्रा के रूप में अच्छा रहा।

अगर पढ़ाई के स्तर पर कहूँ तो महाविद्यालय में मुझे अपने भूगोल विभाग के अध्यापकों से अच्छा सहयोग मिला तथा पढ़ाई अच्छे से पूरी हुई।

#### अमीषा

मैं गौरव खुल्बे पुत्र श्री विनोद चन्द्र खुल्बे विगत वर्ष मैं पी. एन.जी.पी.जी. महाविद्यालय से इतिहास विषय में एम.ए. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत था। मेरा अनुभव महाविद्यालय में छात्र के रूप में बेहतरीन रहा। नये दोस्त तो बने ही बने उसके साथ कुछ बेहतरीन शिक्षकों का साथ भी मिला, जो हर पल आपका साथ देने के लिए तैयार थे।

अगर पढ़ाई के स्तर पर कहूँ तो महाविद्यालय में मुझे अपने विभाग के डॉ. शरद भट्ट, अखिलेश भट्ट आदि अध्यापकों का पूर्ण सहयोग मिला तथा शिक्षा अच्छे से पूर्ण हुई।

#### गौरव खुल्बे

मैं उज्ज्वल खुल्बे पुत्र श्री सुरेश चन्द्र खुल्बे, विभागीय स्तर में अपने अध्यापकों का धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने सदैव छात्रहित में अपना समय दिया। खाश तौर पर मनोविज्ञान विभाग में मौजूद सभी अध्यापकगणों का सहज व सहायता प्रदत्त स्वभाव।

#### उज्ज्वल खुल्बे

मैं सुमन पुत्री श्री चन्द्रशेखर, आज 20-02-2025 को आयोजन में उपस्थित रही। जिसमें सभी मेधावी छात्रों को प्रमाण पत्र दिए गये। मैं अपने महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय श्रीमान एम.सी. पाण्डे जी का धन्यवाद करती हूँ एवं अन्य सभी विभागों के प्राध्यापकों को उनके अमूल्य समय के लिए धन्यवाद देती हूँ।

#### सुमन

मैं प्रियंका प्रजापति पुत्री श्री हरद्वारी लाल, विगत वर्ष पी. एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, के एम.एस.सी. भौतिक विज्ञान में अध्ययनरत रही हूँ। मैं 2022-24 सत्र की छात्रा हूँ। अब बात की जाय कॉलेज में मेरे अनुभव की तो यहाँ से मैंने बहुत कुछ सीखा जैसे- योगा, भौतिक विज्ञान सम्बन्धित प्रयोगात्मक सत्र, नमामि गंगे प्रोग्राम इत्यादि। यहाँ मैंने Curricular Activities के साथ-साथ Co-curricular Activities भी करी

अतः मैं अन्त में अपने विभाग के प्रोफेसर, तथा सभी विभाग के प्रोफेसर और प्राचार्य को धन्यवाद व अपना आभार व्यक्त करना चाहूँगी।

#### प्रियंका प्रजापति

I Nisha Bisht student of Zoology Department, have passed out from P.N.G. Govt. P.G. College. I feel grateful that I have got to gain a lot of precious knowledge from my subject and learnt a lot in the college. I completed my M.Sc. in 2024 and have passed with very good marks making my teachers and parents proud. My teachers have been very supportive and helpful.

At last, I just wish that I continue to make everyone proud and happy with my performance in future.

#### Nisha Bisht

## योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग

सत्र : 2023-24 की उपलब्धियाँ -

विगत वर्षों की भांति योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर "आओ हम सब योग करें" अभियान के तहत 25 अप्रैल से 27 मई एवं 21 मई से 20 जून दो चरणों में निःशुल्क योग शिविरों का आयोजन कर हजारों लोगों को योग प्रशिक्षण से स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया। प्रथम चरण 25 अप्रैल से 27 मई तक रा.इ. कालेज, क्यारी, ढेला, छोई, ढिकुली, रा.उ.मा. विद्यालय बैलजुड़ी पिरूमदारा, ग्रेट मिशन पब्लिक स्कूल, आर्मी पब्लिक स्कूल, सेंट जॉन्स स्कूल, ओकबड्स स्कूल, मदर्स ग्लोरी पब्लिक स्कूल उनमें एक दिवसीय, दो

दिवसीय, तीन दिवसीय निःशुल्क योग शिविर का आयोजन कर छात्र-छात्राओं को योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

द्वितीय चरण 21 मई से 20 जून तक महाविद्यालय प्रांगण, सहित कोटाबाग, बैलपड़ाव, पिरूमदारा, मुरादाबाद, बरेली, अम्बाला एवं रामनगर के विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में भी निःशुल्क योग शिविरों का आयोजन कर योग प्रशिक्षण दिया गया, जिससे हजारों लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुँचा। योग शिविरों का निर्देशन प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, संयोजन डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल एवं डॉ. सुमन कुमार का रहा। योग प्रशिक्षण डॉ. मुरलीधर कापड़ी योग प्रशिक्षक द्वारा दिया गया। जिसमें योग विभाग के कई छात्र-छात्राओं

ने प्रतिभागिता के साथ प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। 21 जून 2023 को महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें 300 लोगों ने प्रतिभाग किया।

योग दिवस का आयोजन महाविद्यालय हॉल में किया गया। योग महोत्सव का दिशा-निर्देशन प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, संयोजन योग प्रभारी डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल एवं डॉ. सुमन कुमार का रहा। संचालन डॉ. डी.एन. जोशी ने किया। योग प्रशिक्षण (योगाभ्यास) योग प्रशिक्षक डॉ. मुरलीधर कापड़ी ने अन्तर्राष्ट्रीय समयानुसार किया। जिसमें मुख्य अतिथि मा. विधायक, मा. ब्लाक प्रमुख एवं मा. सांसद प्रतिनिधि रहे एवं अन्य गणमान्य जनों, प्राध्यापक, कर्मचारी, छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में किया गया। योग विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा सुन्दर योग प्रस्तुतियाँ दी गयी, वहीं योग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विजेता छात्रों को पुरस्कार एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये गये। समापन समारोह में उपस्थित अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किये गये। निःशुल्क योग शिविरों का आयोजन करने वाले छात्र-छात्राओं एवं योग प्रशिक्षक को प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट किये गये।

#### सत्र : 2024-25 की उपलब्धियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2024 के उपलक्ष्य में योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग द्वारा 21 मई से 20 जून 2024 तक महाविद्यालय प्रांगण, बैलपड़ाव IRB, पीरुमदारा, मालधन चौड़, दुर्गापुरी, रामनगर इत्यादि स्थानों में निःशुल्क योग शिविरों का आयोजन कर हजारों लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया। शिविर संचालन योग प्रशिक्षक डॉ. मुरलीधर कापड़ी एवं विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण का कार्य योग विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा किया जा रहा था। जिसमें सपना शर्मा, मीनाक्षी, विनीता सैनी, सपना पाण्डे, हरजीत सिंह द्वारा प्रमुख रूप से अपनी भूमिका का निर्वहन किया गया। शिविरों का संयोजन योग प्रभारी डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल एवं डॉ. सुमन कुमार द्वारा किया गया। शिविरों का निर्देशन प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे द्वारा प्रदान किया गया।

विगत पांच वर्षों से योग विभाग द्वारा “आओ हम सब योग करें” अभियान के तहत सैकड़ों शिविरों का आयोजन कर चुका है। जिससे हजारों लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

21 जून 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस महोत्सव का

भव्य आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय छात्र-छात्राओं सहित आम जन मानस सहित 350 लोगों ने प्रतिभाग किया। जिसका आयोजन महाविद्यालय हॉल में किया गया। योग महोत्सव का दिशा निर्देशन प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, संयोजन योग प्रभारी डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल, डॉ. सुमन कुमार एवं संचालन समारोहक डॉ. डी.एन. जोशी ने किया। योग प्रशिक्षण (योगाभ्यास) डॉ. मुरलीधर कापड़ी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समयानुसार किया गया। मुख्य अतिथि मा. विधायक रामनगर मा. ब्लाक प्रमुख रामनगर, मा. सांसद प्रतिनिधि रामनगर, पूर्व मा. राज्य महिला आयोग उपाध्यक्षा, अन्य गणमान्य, प्राध्यापक, कर्मचारी, छात्र-छात्राओं एवं अन्य वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में भव्य आयोजन किया गया। योग विभाग के छात्र-छात्राओं द्वारा योग की मनोहारी प्रस्तुतियाँ दी गयी। समापन समारोह में मुख्य अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट किये गये। निःशुल्क शिविरों का आयोजन कर योग प्रशिक्षण देने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये गये।

**सत्र : 2023-24 एवं 2024-25 में अर्जित डॉ. नितिन ढोमणे की उपलब्धियाँ -**

- 1- योग एवं नशा मुक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत योग द्वारा नशा मुक्ति जागरूकता कार्यशाला डॉ. नितिन ढोमणे, सेण्ड जोसेफ एवं एम.पी. हिन्दू इण्टर कालेज, रामनगर
- 2- राजकीय बालिका इण्टर कालेज, रामनगर में महाविद्यालय के तत्वावधान में।
- 3- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा - 2023-24 एवं 2024-25 में सहयोगी के रूप में।
- 4- 2023-24 में योग कार्यक्रम (शिविर) तीन दिवसीय दुबई में आयोजित।
- 5- 2024-25 योग के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली पर थाईलैण्ड में तीन दिवसीय योग शिविर आयोजित।
- 6- 2024-25 दिल्ली एवं देहरादून में योग शिविर एक दिवसीय।
- 7- 2024-25 सम्भल में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में प्राकृतिक चिकित्सा गोष्ठी के अन्तर्गत मुख्यवक्ता के रूप में वक्तव्य 23-03-2025।



स्त्री की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है।

- अरस्तू

## व्यावसायिक अध्ययन केन्द्र

महाविद्यालय में गतिमान व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का विवरण

| क्र.सं. | व्यवसायिक/रोजगारपरक पाठ्यक्रम का नाम  | सम्बद्ध विश्वविद्यालय का नाम  | प्रभारी का नाम              |
|---------|---|-------------------------------|-----------------------------|
| 1.      | डिप्लोमा-1 वर्षीय (स्नातकोत्तर स्तर) योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा वर्ष 2004 से संचालित | कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल  | डॉ० सुमन कुमार              |
| 2.      | स्नातकोत्तर डिग्री एवं वैकल्पिक चिकित्सा 2018-19 से संचालित                         | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० मूलचन्द्र शुक्ल         |
| 3.      | डिप्लोमा इन ईकोटूरिज्म वर्ष 2005 से संचालित   | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० कृष्णा भारती            |
| 4.      | डिप्लोमा इन कम्प्यूटराइज्ड एकाउंटिंग 2008 से संचालित                                | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० ममता भदौला जोशी         |
| 5.      | डिप्लोमा इन टूर एंड ट्रेवल मैनेजमेंट वर्ष 2005 से संचालित                           | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० जितेन्द्र प्रकाश त्यागी |
| 6.      | डिप्लोमा इन टूरिज्म स्टडीज वर्ष 2005 से संचालित                                     | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० लोतिका अमित             |
| 7.      | डिप्लोमा इन ऑफिस मैनेजमेंट एवं सैक्रेट्रियल प्रैक्टिस वर्ष 1998 से संचालित          | कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल | डॉ० दीपक खाती               |

महाविद्यालय में उपरोक्त सात व्यावसायिक पाठ्यक्रम छात्र/छात्राओं के भविष्य निर्माण तथा रोजगार के अवसरों की प्राप्ति हेतु रोजगार के क्षेत्रों/विभिन्न आयमों के लाभ प्राप्ति के लिए छात्र/छात्राओं हेतु महाविद्यालय में संचालित है, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से सम्बद्ध इन रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए महाविद्यालय के व्यावसायिक अध्ययन केन्द्र के द्वारा प्रति वर्ष छात्र/छात्राओं को आमंत्रित किया जाता है, महाविद्यालय में रोजगारपरक इन पाठ्यक्रमों के द्वारा समय-समय पर छात्र/छात्राओं के कौशल वृद्धि हेतु, कार्यशालाएँ, सेमिनार तथा अभ्यास कार्यक्रमों के साथ-साथ शिविरों का भी संचालन किया जाता है, जिससे कि छात्र/छात्राओं तथा आम जनमानस को महाविद्यालय के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की उपयोगिता तथा जानकारी उपलब्ध हो सके।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्राओं को महाविद्यालय के द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के अन्तर्गत दूरस्थ छात्रों से आने वाले छात्र के लिए पुरुष छात्रावास की व्यवस्था और सरकार द्वारा चलायी जा रही छात्रवृत्ति योजनाएं अर्हतानुसार प्रदान कर दी जाती है। पाठ्यक्रम स्ववित्त पोषित माध्यम से संचालित होते हैं।

उक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण कर अनेक छात्र-छात्राएँ रोजगार प्राप्त कर अनेक क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

जिस राष्ट्र में विद्वान सताए जाते हैं, वह विपत्तिग्रस्त होकर वैसे ही नष्ट हो जाता है, जैसे टूटी नौका जल में डूबकर नष्ट हो जाती है।

- अथर्ववेद

## राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)

महाविद्यालय के राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) की दो उप इकाईयां संचालित हैं जो 79 यूके बटालियन एनसीसी नैनीताल तथा 24 यूके गलर्स बटालियन एनसीसी अल्मोड़ा से सम्बद्ध है। इनकी आख्या निम्नवत है-

1. 79 यूके बटालियन एन.सी.सी. नैनीताल - पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में 79 यूके बटालियन एनसीसी नैनीताल की सब यूनिट के द्वारा वर्ष 2023-24 व 2024-25 में किये कार्यों का उल्लेख वर्षवार अग्रांकित है-

### (वर्ष 2023-24)

79 यूके बटालियन की 105 सीटें हैं जिसमें छात्र (SD) और छात्राएं (SW) दोनों सम्मिलित हैं। 79 यूके बटालियन के एएनओ लेफ्टिनेंट (डॉ.) डी.एन. जोशी हैं जो महाविद्यालय में भूगोल विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। दिनांक 20.07.2023 को रैंक सेरेमनी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कमान अधिकारी कर्नल एस.बी. मलागी व कार्यक्रम अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने संयुक्त रूप से कैडेट्स को रैंक पहनाकर सम्मानित किया।

सीनियर अन्डर ऑफिसर एस.डी. में आर्तिक बिष्ट व सक्षम चौहान तथा एस डब्ल्यू में श्रेया रावत को बनाया गया। सार्जेंट एस.डी कमलजीत सिंह व एस डब्ल्यू ईशा नेगी, कारपोरल की रैंक करन पाण्डेय व ज्योति वर्मा को दी गई। लांस कारपोरल की रैंक सुमित व खुशी कोरंगा को पहनाई गई।

दिनांक 12 अगस्त 2023 को नामांकन (वर्ष 2023-24) हेतु 79 उत्तराखंड बटालियन एनसीसी के कमान अधिकारी कर्नल एस.बी. मलागी के निर्देशन में शारीरिक एवं मानसिक दक्षता, लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार कर 64 कैडेट्स का चयन किया गया।

एनसीसी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के अन्तर्गत कारगिल विजय दिवस, नशामुक्ति अभियान, इंटरनेशनल यूथ डे, स्वतंत्रता दिवस, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, गाबैज फ्री इंडिया, स्वच्छता ही सेवा, खादी महोत्सव, राष्ट्रीय एकता दिवस आदि में समस्त कैडेट्स द्वारा पूर्ण मनोयोग से सक्रिय सहभागिता की गई।

अन्डर ऑफिसर श्रेया रावत द्वारा थल सैनिक शिविर में दिनांक 19-9-2025 से 30-9-2025 नई दिल्ली में उत्तराखण्ड

निदेशालय की ओर से शूटिंग स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप में प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर दिनांक 6-10-2023 को महाविद्यालय पहुंचने पर प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी द्वारा श्रेया रावत को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

दिनांक 31-10-2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर रन फॉर यूनिटी एवं स्वच्छता अभियान चलाया गया। दिनांक 22-11-2023 को पुनीत सागर अभियान के तहत स्वच्छता अभियान चलाया गया। अभियान का मुख्य विषय डस्टबिन का सर्वोत्कृष्ट प्रयोग रहा। अभियान का उद्देश्य अपने परिवेश की स्वच्छता का संदेश देना था कि प्रत्येक व्यक्ति डस्टबिन का प्रयोग करें। जैविक एवं अजैविक कूड़े को उचित माध्यम से निस्तारित करें।

दिनांक 26 नवंबर 2023 को एनसीसी दिवस पर पुनीत सागर अभियान के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कोसी नदी के बैराज क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया। एएनओ लेफ्टिनेंट (डॉ.) डी.एन. जोशी के नेतृत्व में जन जागरूकता रैली भी निकाली गई। संविधान दिवस के अवसर पर कैडेट्स को संविधान की उद्देशिका की शपथ भी ग्रहण कराई गई। 04 यूनिट रक्तदान भी किया गया।

दिनांक 7 दिसम्बर 2023 को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया गया। प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे ने वीर शहीदों का स्मरण करते हुए शौर्य दीवार पर वीर सपूतों के चित्रों पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर भारतीय सेवा से सेवानिवृत्त आर्टिलरी के हवलदार श्री मोहन सिंह नेगी, गढ़वाल राइफल्स के हवलदार श्री सत्येंद्र सिंह बिष्ट, कुमाऊं रेजीमेंट के हवलदार श्री ज्वाला दत्त उनियाल एवं सिपाही श्री मदन भारती को प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी एवं एएनओ (डॉ.) डी.एन. जोशी ने संयुक्त रूप से प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

दिनांक 12 दिसम्बर 2023 को इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स 2023 के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी ने एनसीसी कैडेट्स को मोटे अनाजों के महत्व, स्वास्थ्य के लिए उनकी उपयोगिता एवं लाभों को बताया। उन्होंने ज्वार, बाजरा, महुआ, झुंगरा आदि को दैनिक आहार में शामिल करने को प्रेरित किया।

- कैडेट सपना तड़ियाल ने सत्र 2023-24 में दिनांक 29-11-2024 से 28-1-2025 तक गणतंत्र दिवस शिविर (RDL-2024) में प्रतिभाग किया।
- सत्र 2023-24 में कैडेट्स ने गणतंत्र दिवस शिविर संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत शिविर', आर्मी ओडिटोरियम, थल सैनिक शिविर (प्री), पर्वतारोहन शिविर तथा लीडरशिप आदि में अत्यन्त उत्साह से प्रतिभाग किया।
- एनसीसी 'बी' प्रमाण पत्र परीक्षा में कुल 19 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया जिसमें से 15 कैडेट्स ने AYE ग्रेड प्राप्त किया।
- एनसीसी 'सी' प्रमाण पत्र परीक्षा में कुल 39 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया जिसमें से 05 कैडेट्स ने AYE ग्रेड, 21 BEE ग्रेड तथा 13 ने CEE ग्रेड प्राप्त किया।
- दिनांक 9-3-2024 को आर्मी रिट्यूमेंट ऑफिसर कर्नल आदित्य मिश्रा ने कैडेट्स को अग्निवीर भर्ती प्रक्रिया के संदर्भ में व्याख्यान किया।
- दिनांक 21-6-2024 को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में कैडेट्स ने प्रतिभाग कर योग का प्रचार-प्रसार किया।
- कैडेट देवाशीष पटवाल, राहुल रिवाड़ी, रोहित सैनी, जसवीर सिंह पाली, पंकज अरोरा, मो. सिशान, .....देशवाला, आयुष नेगी, अजय सिंह रावत, अभिषेक कुमार व गौरव डंगवाल भारतीय सेना में अग्निवीर भर्ती हुए।

दिनांक 5-6-2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कैडेट्स ने वृक्षारोपण पोस्टर प्रतियोगिता, पर्यावरण जागरुकता अभियान, प्लास्टिक संरक्षण, स्वच्छता अभियान।

### (वर्ष 2024-25)

- दिनांक 15-7-2024 को वर्ल्ड यूथ स्किल डे मनाया गया। कौशल भारत-कुशल भारत थीम के अन्तर्गत कैडेट्स ने वृक्षारोपण एवं पर्यावरणीय जागरुकता अभियान में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि उपजिलाधिकारी रामनगर श्री राहुल शाह ने समस्त कैडेट्स से पर्यावरण संरक्षण हेतु जनमानस को प्रेरित करने का संदेश दिया।

कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे व 79 यूके बटालियन के एनएनओ लेफ्टिनेण्ट डॉ. डी.एन. जोशी तथा समस्त कैडेट्स उपस्थित रहे।

- दिनांक 24-7-2024 को एनसीसी 'बी' एवं 'सी' प्रमाण पत्र परीक्षा के प्रमाण पत्र प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी एवं चीफप्राक्टर प्रो. एम.एम. मौर्य जी द्वारा कैडेट्स को प्रदान कर सम्मानित किया गया।
- दिनांक 26-7-2024 को कारगिल विजय दिवस का रजत जयंती समारोह आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, भारतीय सेना से सेवानिवृत्त कारगिल योद्धा कैप्टन गोविन्द मासीवाल, कैप्टन बहादुर भण्डारी, कैप्टन एन.वी. पाण्डे, कैप्टन आनन्द सिंह बिष्ट, सीएचएम चन्द्रमोहन, हवलदार भुवन सिंह डंगवाल, एएनओ, लैफ्टिनेंट डी.एन. जोशी, लैफ्टिनेंट कृष्णा भारती एवं प्राध्यापकों तथा एनसीसी कैडेट्स द्वारा शौर्य दीवार पर वीर शहीदों के छविचित्रों पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गये।
- दिनांक 30-7-2024 को रैंक सरैमनी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि 79 यूके बटालियन एनसीसी नैनीताल के कमान अधिकारी कर्नल राजेश कौशिक, विशिष्ट अतिथि एडम ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल बी.एम. खडका, प्रभारी प्राचार्य प्रो. एस.एस. मौया ने सभी कैडेट्स के टर्न आउट, ड्रिल एवं अनुशासन की प्रशंसा की। सीनियर अंडर ऑफिसर की रैंक छात्र दल में सक्षम चौहान, और छात्रा दल में श्रेया रावत को पहनाई गई। अंडर ऑफिसर की रैंक सुमित, ज्योति वर्मा व खुशी कोरंगा को दी गई। सूरज पाण्डेय एवं महक को सार्जेंट की रैंक की जिम्मेदारी दी गई। विक्रम जलाल व पारुल को कारपोरल की रैंक प्रदान की गई। करन कोटली व मुस्कान बिष्ट को लेंस ऑफिसर की रैंक प्रदान की गई। इस अवसर पर भी एएनओ ले. डी.एन. जोशी व 24 बटालियन की एएनओ लेषमात्र कृष्णा भारती ने समस्त कैडेट्स को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।
- दिनांक 13-8-2024 को सत्र 2024-25 के लिए एनसीसी में नामांकन प्रक्रिया सम्पादित की गई जिसमें 40 कैडेट्स का चयन किया गया।
- दिनांक 13-8-2024 को तिरंगा यात्रा निकाली गई जिसमें एनसीसी कैडेट्स ने बढ़-चढ़ कर प्रतिभाग किया।

- दिनांक 15-8-2024 स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। 79 यूके बटालियन एनसीसी सब यूनिट एवं कैरियर काउंसलिंग प्रकाष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में गुरु दिवस व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। व्याख्यान का शीर्षक राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका रहा। मुख्य वक्ता लेफ्टिनेंट (डॉ.) पंकज मेहता एसोसियट एनसीसी आफिसर एवं असिस्टेंट प्रोफेसर पर्यावरणीय विज्ञान विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ जम्मू, जम्मू एण्ड काश्मीर रहे। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका में विभिन्न उदाहरणों द्वारा कैडेट्स को समझाया। व्याख्यान में प्राचार्य प्रो. एम. सी. पाण्डे, एनएनओ लैफ्टिनेंट प्रो. डी.एन. जोशी सहित विभिन्न प्राध्यापक एवं एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।
- सत्र 2024-25 में इस्टीमेट ट्रेनिंग परेड, हिमालय प्रतिज्ञा, एक मेड़ माँ के नाम अभियान, एक भारत श्रेष्ठ भारत शिविर, गाँधी जयन्ती, मत्स्य सम्पदा योजना पर कार्यशाला, एनसीसी रेविंग डे सेलिब्रेशन, रक्तदान शिविर, फायरिंग प्रेक्टिस, बेसिक लीडरशिप कैम्प, एडवांस लीडरशिप कैम्प, संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर, युवा आपदा मिश्र शिविर, प्री आरडी कैम्प, गणतंत्र दिवस परेड आदि विभिन्न एनसीसी गतिविधियों में कैडेट्स द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।
- गणतंत्र दिवस परेड 2025 में सीनियर अन्डर ऑफिसर सक्षम चौहान, अन्डर ऑफिसर सुमित, कैडेट मनोज कुमार ने दिनांक 29 दिसम्बर 2024 से 29 जनवरी 2025 तक नई दिल्ली में उत्तराखण्ड निदेशालय की ओर से प्रतिभाग कर महाविद्यालय का मान बढ़ाकर गौरवान्वित किया। गणतंत्र दिवस परेड में प्रतिभागोपरान्त महाविद्यालय पहुँचने पर तीनों कैडेट्स को प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे जी व एनएनओ

लैफ्टिनेंट (डॉ.) डी.एन. जोशी ने उपहार एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

- सत्र 2024-25 में बेस्ट कैडेट स्कॉलरशिप सीनियर अण्डर ऑफिसर श्रेया रावत व सीनियर अण्डर ऑफिसर सक्षम चौहान को प्राप्त हुई।
- दिनांक 8 व 9 फरवरी 2025 को एनसीसी 'बी' प्रमाण पत्र परीक्षा सम्पन्न हुई जिसमें 19 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया जिसमें सभी कैडेट्स उत्तीर्ण हुए और उनमें से 15 कैडेट्स ने AYE ग्रेड प्राप्त किया।
- एनसीसी 'सी' प्रमाण-पत्र परीक्षा दिनांक 15 व 16 फरवरी 2025 को सम्पन्न हुई जिसमें कुल 42 कैडेट्स सम्मिलित हुए। इस परीक्षा में 8 कैडेट्स ने AYE ग्रेड तथा 24 कैडेट्स ने 'BEE' ग्रेड प्राप्त किया।
- कैडेट नरेन्द्र सिंह, मनोज सिंह रावत, पवन पन्त, दिपांशु मेहरा एवं उमाशंकर का चयन भारतीय सेवा में अग्निवीर के रूप में हुआ।
- दिनांक 17-3-2025 को आर्मी रिक्रूटमेंट ऑफिसर (एआरओ) अल्मोड़ा के निदेशक कर्नल महेश कुमार ने 'सेना की भर्ती कैसे करें' दिवस पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान द्वारा कैडेट्स को भारतीय सेना में भर्ती प्रक्रिया को समझाया गया।
- दिनांक 21-6-2025 को कैडेट्स द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह में प्रतिभाग कर योग के विभिन्न आसनो, प्राणायामों को कुशलता से किया गया।

ले. (डॉ.) देवकीनन्दन जोशी

ए.एन.ओ., 79 यूके बटालियन, एनएसएस सबयूनिट

## 24 यू.के. गर्ल्स बटालियन एन.सी.सी. अल्मोड़ा

महाविद्यालय में छात्रा इकाई 24 यू.के. गर्ल्स बटालियन अल्मोड़ा से सम्बद्ध है। पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में 24 यू.के. गर्ल्स बटालियन की आख्या निम्नानुसार है-

### सत्र- 2024-25

- 24 यू.के. गर्ल्स बटालियन की रामनगर में 110 सीटें हैं।
- सत्र 2024-25 में कुल 109 छात्रायें पंजीकृत हुई इन्हें कैडेट अभिव्यक्ति 2023-24 एवं 2024-25

रैंक प्राप्त हुई।

- इस सत्र में 31 छात्रा कैडेट्स ने 'बी' प्रमाण-पत्र की परीक्षा दी एवं सभी 31 कैडेट्स ने 'बी' परीक्षा उत्तीर्ण की इनमें 11 कैडेट्स ने 'ए' ग्रेड प्राप्त किया।
- इस सत्र में 41 छात्रा कैडेट्स ने 'C' प्रमाण पत्र की परीक्षा दी एवं सभी 41 कैडेट्स ने 'C' प्रमाण पत्र परीक्षा उत्तीर्ण की, इनमें 8 कैडेट्स ने 'A' ग्रेड प्राप्त किया।

- दिनांक 8-04-2024 को रैंक सेरेमनी आयोजित की गयी, जिसमें ज्योति सती को सीनियर अंडर ऑफिसर व ज्योति राणा एवं वंदना को अंडर ऑफिसर की रैंक प्रदान की गयी।
- दिनांक 21-06-24 को योग दिवस मनाया गया।
- दिनांक 15-07-24 को हरेला दिवस के उपलक्ष्य में कैडेट्स द्वारा वृक्षारोपण करते हुये हरियाली का संदेश दिया गया।
- दिनांक 26-07-2024 को कारगिल दिवस मनाया गया।
- दिनांक 29-07-24 को बाघ दिवस के अवसर पर इको टूरिज्म विभाग व वर्ल्ड टाइगर रिजर्व के संयुक्त तत्वाधान में एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया।
- दिनांक 14-08-24 को कैडेट्स ने तिरंगा यात्रा द्वारा हर घर तिरंगा अभियान चलाया।
- दिनांक 01-10-24 से 07-10-24 तक वन्य प्राणी सप्ताह के अन्तर्गत कैडेट्स ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया।
- दिनांक 02-10-24 को गाँधी जयंती के अवसर पर कैडेट्स द्वारा महाविद्यालय परिसर में श्रमदान करके स्वच्छता का संदेश दिया गया।
- दिनांक 24-11-24 को एन.सी.सी. दिवस के अवसर पर कैडेट्स द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गयी।
- दिनांक 08 व 09 फरवरी 2025 को 'B' प्रमाण-पत्र की परीक्षा महाविद्यालय में आयोजित की गयी। जिससे विभिन्न महाविद्यालयों एवं स्कूलों के कैडेट्स द्वारा परीक्षा दी गयी।
- दिनांक 20-02-25 को कैडेट्स द्वारा नशामुक्त अभियान कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।
- दिनांक 22-04-25 को पृथ्वी दिवस के अवसर पर जागरूकता रैली निकाली गयी तथा इसकी महत्ता बताते हुये भाषण प्रतियोगिता एवं कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया।
- 24 यू. के बटालियन अल्मोड़ा द्वारा JNV सुयालबाड़ी में CATC कैम्प (संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर) का आयोजन किया

गया यह शिविर 03 जून 2024 से 12 जून 2024 तक चला। जिसमें रामनगर महाविद्यालय की 24 यू.के. बटालियन की इकाई का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा, शिविर में प्रतिभाग के दौरान कैडेट्स द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में शानदार जीत हासिल की गयी। महाविद्यालय पहुँचने पर प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे ने समस्त कैडेट्स का स्वागत करते हुये उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। प्रशिक्षण शिविर में कैडेट्स ने ड्रिल, मैप रीडिंग, फायरिंग, वैपन ट्रेनिंग, फायर फाइटिंग, आप्सटेकल ट्रेनिंग, टैंट पिचिंग आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कैंप कमाण्डेंट कर्नल मनोज कुमार काण्डपाल द्वारा अंजलि को गोल्ड मैडल दिया गया।

- दिनांक 17-06-24 से 26-06-24 तक 12 कैडेट्स द्वारा ट्रेनिंग कैंप (हिमांचल ट्रेक) में प्रतिभाग किया गया, जिसमें कैडेट्स द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।
- दिनांक 04-09-24 से 13-09-24 तक BLC कैंप में सीनियर अंडर ऑफिसर ज्योति सती ने प्रतिभाग किया।
- दिनांक 28-09-24 से 09-10-24 तक 06 कैडेट्स ने EBSB-II रानीबाग में प्रतिभाग किया।
- दिनांक 07-10-24 से 18-10-24 तक आर्मी अटैचमेंट कैंप रानीखेत में आयोजित किया गया। जिसमें 14 कैडेट्स सम्मिलित हुये।
- दिनांक 15-11-24 से 22-11-24 तक रानीबाग में ट्रेकिंग कैंप में 10 कैडेट्स ने प्रतिभाग किया।
- यह वर्ष 24 यू.के. गर्ल्स बटालियन की रामनगर इकाई के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। इस वर्ष प्रथम बार अंजलि गोस्वामी का चयन गणतंत्र दिवस परेड दिल्ली के लिए हुआ। अंजलि ने 26 जनवरी 2025 की गणतंत्र दिवस में शामिल होकर महाविद्यालय का मान बढ़ाया। इसकी इस उपलब्धि पर महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे एवं 24 यू.के. बटालियन अल्मोड़ा के कमान अधिकारी कर्नल एम.के. काण्डपाल सहित सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार ने बधाई एवं शुभकामनायें दीं।



## NSS ONE' DAYS CAMP 2024-25

1-आज 20-09-2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर के स्वयंसेवियों द्वारा 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े के अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर में स्वयंसेवियों द्वारा स्वच्छता शपथ ग्रहण की, तत्पश्चात महाविद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया।



3- आज दिनांक 30 सितंबर, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई और स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में रक्त समूह जांच शिविर आयोजित किया गया।

4-दिनांक 2 अक्टूबर, 2024 को पीएनजी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में महात्मा गांधी एवं शास्त्री जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान चलाया गया।



5- दिनांक 4 अक्टूबर, 2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना, व दया फाउंडेशन रामनगर के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय में रक्त दान शिविर

2-आज 23-09-2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस मनाया धूमधाम से महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का स्थापना दिवस हर्ष और उल्लास के साथ मनाया



का आयोजन किया गया।

6- आज दिनांक 07-10-2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई और गृह विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में गढ़-भोज दिवस का आयोजन किया गया।

7- आज दिनांक 05-11-2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में यातायात सड़क सुरक्षा विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।



8-दिनांक 07-11-2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ युवा कल्याण विभाग देहरादून के निर्देश के क्रम में My Bharat Outreach कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा सफाई अभियान चलाया गया।



9 दिनांक 09-11-2024 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस का 75वां स्थापना दिवस मनाया गया।



11 आज दिनांक 30/11/ 2024 को विश्व एड्स दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय में विश्व एड्स दिवस मनाया गया।



12- दिनांक 10 फरवरी, 2025 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में NSS 'बी' / 'सी' प्रमाण पत्र परीक्षा शान्तिपूर्ण सम्पन्न हुई। पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर तथा राजकीय महाविद्यालय, मालधन चौड़ इकाई को NSS 'बी' / 'सी' प्रमाण पत्र परीक्षा का परीक्षा केन्द्र बनाया गया था।

13--आज दिनांक 22.03.2025 को विश्व जल दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा महाविद्यालय में विश्व जल दिवस मनाया गया।



# NSS 7' DAYS CAMP 2024-25 GIRLS & BOYS UNIT

सात दिवसीय विशेष शिविर आख्या 2024-25

## प्रथम दिवस दिनांक 24-3-2025

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर का हुआ शुभारंभ आज दिनांक 24-03-2025 को पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर आदर्श विद्यालय राजकीय इंटर कॉलेज करनपुर, रामनगर में हुआ शुभारंभ।



## द्वितीय दिवस दिनांक 25-3-2025

स्वयंसेवकों ने सीखे बैंक प्रणाली के गुर- पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर द्वितीय दिवस में स्वयं सेवकों ने बैंक प्रणाली की बारीकियों को सीखा।



आभिव्याक्त 2023-24 एव 2024-25

## तृतीय दिवस दिनांक 26-3-2025

नशा मुक्ति अभियान के तहत निकाली जन जागरूकता रैली पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर के तीसरे दिन ग्राम करनपुर में नशा मुक्ति अभियान के तहत एक रैली का आयोजन किया गया, जिसमें स्वयं सेवकों ने रैली में 'जब होगा नशे का नाश, तब होगा देश का विकास' नारे के माध्यम से लोगों को जागरूक किया।



## चतुर्थ दिवस दिनांक 27-3-2025

जनसंपर्क अभियान- पी.एन.जी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के चतुर्थ दिवस पर गुरुवार को ग्राम करनपुर में स्वयंसेवकों ने जनसंपर्क अभियान का आयोजन कर ग्रामीणों को सामाजिक बुराइयों से बचाव के लिए प्रेरित किया। स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर लोगों

से संवाद स्थापित किया और नशे से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक किया।



### पंचम दिवस दिनांक 28-3-2025 योग सेवा और रचनात्मकता

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर के राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के पंचम दिवस का शुभारम्भ योग साधना, समाज सेवा और रचनात्मक प्रतियोगिताओं के अनूठे संगम के साथ हुआ।



### षष्ठम् दिवस दिनांक 29-3-2025 अनुशासन का छात्र जीवन में महत्व

आदर्श विद्यालय राजकीय इंटर कॉलेज करनपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर के छठवें दिन शिविर में भाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था "अनुशासन का छात्र जीवन में महत्व" जिसमें स्वयंसेवकों ने बड़-चढ़कर प्रतिभाग किया और प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया।



### सप्तम दिवस दिनांक 30-03-2025 रंगारंग कार्यक्रमों के साथ हुआ समापन

पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन रंगारंग कार्यक्रमों और समाज सेवा का संकल्प के साथ हुआ। इस शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से सशक्त होने की दिशा में कार्य किया, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व को भी आत्मसात किया।



## क्रीड़ा परिषद्

### सत्र 2023-24

सत्र 2022-23 में महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग के खिलाड़ी महेन्द्र कुमार आर्य को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में कुलपति पदक प्रदान किया गया, जो रामनगर महाविद्यालय के खेल इतिहास में प्रथम कुलपति मेडल धारक खिलाड़ी बने। साथ ही महाविद्यालय के ड्राप रोबाल खिलाड़ियों ने अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता स्तर कु.वि.वि. की टीम से प्रतिभाग करते हुए अनेक पदक प्राप्त किए, जिसमें प्रतियोगिता के मिक्स डबल में श्रुति हालसी ने स्वर्ण पदक, ट्रिपल इवेंट में प्रियांशी रावत ने रजत पदक, मिक्स डबल में पूजा तड़ियाल ने स्वर्ण पदक, ट्रिपल इवेंट में भावना जोशी ने रजत पदक तथा मिक्स डबल इवेंट में महेन्द्र कुमार आर्य ने स्वर्ण पदक और प्रदीप चौधरी ने कांस्य पदक प्राप्त किए।

सत्र 2023-24 में महिला खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया।

महाविद्यालय की बी.ए. प्रथम सेमेस्टर की छात्रा कु. नीलम भारद्वाज का चयन बी.सी.सी.आई. द्वारा दिनांक 19 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2023 तक आयोजित सीनियर महिला टी-20 ट्रॉफी में उत्तराखण्ड महिला क्रिकेट टीम के लिए चयन हुआ।

37वें राष्ट्रीय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड की मिनी गोल्फ टीम के सदस्य के रूप में एम.ए. योगा तृतीय सेमेस्टर की छात्रा कु. खुशी शर्मा का चयन हुआ।

महाविद्यालय की एम.ए. प्रथम सेमेस्टर की छात्रा कु. नीलम मनराल का चयन 70वीं सीनियर नेशनल कबड्डी चैम्पियनशिप हेतु राज्य की महिला कबड्डी टीम के लिए चयन हुआ।

**अन्तर्महाविद्यालय क्रास कन्ट्री पु./म. वर्ग एवं वॉलीबाल प्रतियोगिताओं का आयोजन**

कु.वि.वि. द्वारा सत्र 2023-24 में महाविद्यालय को कु.वि.वि. नैनीताल अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने का मौका मिला, जिसमें प्रथम प्रतियोगिता के अन्तर्गत क्रास कन्ट्री पुरुष/महिला वर्ग प्रतियोगिता का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 एम.सी. पाण्डे (मुख्य अतिथि) तथा कु.वि.वि. नैनीताल के क्रीड़ाधिकारी डॉ. नागेन्द्र शर्मा जी द्वारा किया गया। इसमें लगभग 13 (08 पुरुष तथा 05 महिला) टीमों के 87 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में एम.बी.पी.जी. हल्दानी विजेता तथा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर

उपविजेता रहा।

द्वितीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत वॉलीबाल पुरुष वर्ग का आयोजन दिनांक 25-26 नवम्बर 2023 को किया गया, जिसका उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे (मुख्य अतिथि) एवं कु. वि.वि. नैनीताल के क्रीड़ाधिकारी डॉ. नागेन्द्र शर्मा जी द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में 09 टीमों के कुल 92 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया तथा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की टीम ने खटीमा महाविद्यालय को 2-0 से हराकर ट्राफी अपने नाम की। उक्त दोनों प्रतियोगिताओं के आयोजन डॉ. योगेश चन्द्र, क्रीड़ा प्रभारी के दिशा-निर्देशन में किया गया।

**कु.वि.वि. अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की टीम का उत्कृष्ट प्रदर्शन-**

महाविद्यालय की विभिन्न टीमों द्वारा कु.वि.वि. अन्तर्महाविद्यालय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया, जिसमें महाविद्यालय की बॉक्सिंग पुरुष वर्ग, खो-खो महिला वर्ग, वॉलीबाल पुरुष वर्ग ने अपनी प्रतिद्वंद्वी टीम को हराकर विजेता बनने का गौरव हासिल किया। वहीं योग महिला, वॉलीबाल महिला, क्रास-कन्ट्री पुरुष/महिला वर्ग, फुटबाल पुरुष वर्ग, एथलेटिक्स महिला वर्ग प्रतियोगिताओं में उपविजेता रही।

### क्रीड़ा परिषद् सत्र 2024-25 की उपलब्धियाँ

सत्र 2024-25 में महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग के खिलाड़ियों ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। क्रीड़ा विभाग के खिलाड़ियों ने 38वें नेशनल गेम्स, अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं तथा राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया।

**38वें राष्ट्रीय खेलों में महाविद्यालय के चार खिलाड़ियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व किया, जिनका विवरण इस प्रकार है-**

● भारती गिरी, बी.ए. षष्ठ सेमे. का चयन खो-खो महिला टीम के लिए किया गया। महाविद्यालय के लिए यह गौरव का विषय है कि भारती गिरी खो-खो महिला टीम की कप्तान रही।

● निशा मेहरा, बी.ए. षष्ठ सेमे. का चयन खो-खो महिला टीम के लिए किया गया। अतः महाविद्यालय की दो छात्राओं को उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करने का गौरव हासिल हुआ।

● बिट्टू राजपूत, बी.ए. चतुर्थ सेमे. का चयन वेटलिफ्टिंग

के लिए हुआ, जिसमें इन्होंने 89 किलोग्राम में उत्तराखण्ड वेटलिफ्टिंग टीम का प्रतिनिधित्व किया।

● गौरव सिंह नेगी, बी.ए. चतुर्थ सेमे. का चयन मॉर्डन पेटॉथलॉन प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करने का मौका हासिल किया।

**राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व-**  
14 अगस्त से 18 अगस्त को लिटिल स्कालर्स सीनियर सेकेण्डरी स्कूल काशीपुर में आयोजित 13 मॉर्डन पेटॉथलॉन राष्ट्रीय प्रतियोगिता-2024 में महाविद्यालय के छात्र गौरव सिंह नेगी, बी. ए. चतुर्थ सेमे. ने जूनियर वर्ग में ट्रायल एथली इवेंट में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता में महाविद्यालय के 10 खिलाड़ियों ने उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें से अग्रांकित खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता के विभिन्न इवेन्ट्स में पदक प्राप्त किये-

- **सिंगल इवेंट** - अजय मेहरा तथा नीशू रावत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- **डबल इवेंट** - भावना जोशी, अंजली रावत एवं प्रियांशी रावत ने प्रथम स्थान हासिल किया।
- **ट्रिपल इवेंट** - हीरा सिंह भण्डारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- **मिक्स डबल इवेंट** - श्रुति हालसी ने प्रथम स्थान हासिल किया।
- नीरज मेहरा तथा खुशाल सिंह ने डबल इवेंट में प्रतिभाग किया।

#### अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन -

सत्र 2024-25 में महाविद्यालय में कु.वि.वि. नैनीताल के क्रीड़ा विभाग द्वारा चार प्रतियोगिताएँ आवंटित की गईं, जिनमें प्रथम प्रतियोगिता के अन्तर्गत क्रॉस कन्ट्री पुरुष/महिला वर्ग प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 14 अगस्त 2024 को किया गया, जिसका उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे (मुख्य अतिथि) तथा कु.वि.वि., नैनीताल के क्रीड़ाधिकारी डॉ. नागेन्द्र शर्मा जी द्वारा किया गया। जिसमें लगभग 13 (08 पुरुष तथा 05 महिला) टीमों के 87 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में एम.बी.पी.जी. हल्द्वानी विजेता तथा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर उपविजेता रहा जबकि महिला वर्ग में एम.बी.पी.जी. हल्द्वानी विजेता तथा डी.एस.बी. परिसर नैनीताल उपविजेता रहीं।

द्वितीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग

द्वारा दिनांक 5-6 अक्टूबर 2024 को वॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विजेता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर तथा उपविजेता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खटीमा की टीम रहीं।

अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत महाविद्यालय के क्रीड़ा विभाग द्वारा तृतीय प्रतियोगिता के अन्तर्गत पुरुष और महिला बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 28 नवम्बर 2024 को किया गया, जिसमें पुरुष तथा महिला वर्ग में विजेता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी की टीम रहीं। जबकि पुरुष वर्ग में उपविजेता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर तथा महिला वर्ग में डी.एस.बी. परिसर नैनीताल रहा।

कु.वि.वि. नैनीताल द्वारा आवंटित चतुर्थ प्रतियोगिता के अन्तर्गत अन्तर्महाविद्यालय खो-खो पुरुष प्रतियोगिता दिनांक 19 फरवरी 2025 को आयोजित कराया गया। जिसमें 05 महाविद्यालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर की टीम विजेता तथा डी.एस.बी. परिसर नैनीताल की टीम उपविजेता रही।

#### वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन-

महाविद्यालय का वार्षिक क्रीड़ा समारोह 21-22 नवम्बर 2024 को महाविद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में आयोजित की गई, जिसमें पुरुष वर्ग व महिला वर्ग की कुल 28 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन मार्च पास्ट से किया गया, जिसके मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे रहे। दो दिवसीय इस समारोह की विभिन्न प्रतियोगिताओं में 140 से अधिक खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। नीरज बिष्ट, बी.कॉम. प्रथम सेमेस्टर छात्र चैम्पियन एवं निशा मेहरा बी.ए. तृतीय सेमेस्टर छात्रा चैम्पियन रहीं।

#### क्रीड़ा प्रभारियों एवं कार्यकाल की सूची

| क्र. | प्रभारी का नाम          | कार्यकाल        |
|------|-------------------------|-----------------|
| 1.   | प्रो. किशन गुरुरानी     | 1975            |
| 2.   | प्रो. बी.एम. गुप्ता     | 1975            |
| 3.   | अनुपलब्ध                | 1976 से 1981 तक |
| 4.   | प्रो. चन्द्रशेखर पाण्डे | 1981 से 1987 तक |
| 5.   | डॉ. रवि प्रकाश उप्रेती  | 1987 से 1993 तक |
| 6.   | डॉ. दर्शन कुमार साह     | 1993 से 1997 तक |
| 7.   | डॉ. बी.डी. दानी         | 1997 से 2014 तक |
| 8.   | डॉ. जी.सी. पंत          | 2015 से 2021 तक |
| 9.   | डॉ. योगेश चन्द्र        | 2021 से अद्यतन  |

## महाविद्यालय के स्वर्ण काल के प्रतिभावान खिलाड़ी

| क्र. सं. | खिलाड़ी का नाम    | वर्ष      | अभ्युक्ति  |
|----------|-------------------|-----------|--|
| 1        | राशि मल्होत्रा    | 1981-82   | तीन वर्ष लगातार वि.वि. टेबिल टेनिस की टीम का प्रतिनिधित्व।   |
| 2        | आनन्द बल्लभ बिष्ट | 1980-81   | फुटबाल टीम के प्रतिनिधित्व पर विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान।   |
| 3        | संजीव माहेश्वरी   | 1984-85   | कु.वि.वि. बैडमिन्टन टीम के कप्तान।   |
| 4        | मनमोहन सिंह मेहरा |           | तीन वर्ष से अधिक विश्वविद्यालय बालीबाल टीम का प्रतिनिधित्व करने पर विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान।    |
| 5        | प्रमोद कुमार जोशी |           |  |
| 6        | नन्दन सिंह नेगी   | 1989-90   | अन्तर वि.वि. नार्थ जोन बॉक्सिंग प्रतियोगिता में सिल्वर मेडल।                                       |
| 7        | विजेन्द्र कुमार   | 1995-96   | अन्तर वि.वि. नार्थ जोन प्रतियोगिता में छठा स्थान।  |
| 8        | अतुल मनराल        | 1995-96   | तीन वर्ष से अधिक विश्वविद्यालय बास्केटबाल टीम का प्रतिनिधित्व करने पर विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान। |
| 9        | शफीकुर रहमान      | 1996-97   | कु0वि0वि0 फुटबाल टीम के कप्तान।  |
| 10       | हरीश लाल शर्मा    | 1998      | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय फुटबाल प्रतियोगिता- 98 में कु0वि0वि0 की विजेता टीम के सदस्य।       |
| 11       | मनमोहन सिंह       |           | कु0वि0वि0 वालीबाल टीम के कप्तान।   |
| 12       | सुमित तिवारी      | 2001-2004 | सॉफ्ट टेनिस इंडिया कोचिंग कैम्प में प्रतिभाग।  |
| 13       | सुरेश सिंह बिष्ट  | 2002-2003 | 51वें सीनियर नेशनल वॉलीबाल प्रतियोगिता में विजेता टीम के सदस्य।                                    |
| 14       | राजेन्द्र प्रसाद  | 2003-2004 | कु0वि0वि0 बास्केटबाल टीम के कप्तान।  |
| 15       | विशान सिंह        | 2014-15   | कु0वि0वि0 खो-खो टीम के कप्तान।   |
| 16       | कु. ममता रावत     | 2017-18   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                               |
| 17       | अमन शर्मा         | 2017-18   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                               |
| 18       | कु. ममता रावत     | 2018-19   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता के सिंगल इवेंट में स्वर्ण पदक।             |
| 19       | अमन शर्मा         | 2018-19   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेंट में रजत पदक।                  |
| 20       | विवेक थापा        | 2018-19   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेंट में रजत पदक।                  |
| 21       | रोहित             | 2018-19   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में 01 स्वर्ण, 01 रजत तथा 03 कांस्य पदक।    |
| 22       | गीता              | 2018-19   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में 01 स्वर्ण, 04 रजत तथा 01 कांस्य पदक।    |
| 23       | आकाश              | 2021-22   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में रजत पदक।                                |
| 24       | आकांक्षा रावत     | 2021-22   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में स्वर्ण तथा कांस्य पदक।                  |
| 25       | खुशी शर्मा        | 2021-22   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय मिनी गोल्फ प्रतियोगिता में कांस्य पदक।                             |
| 26       | भावना जोशी        | 2021-22   | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में कांस्य पदक।                            |

|    |                |         |  |
|----|----------------|---------|--|
| 27 | श्रुति हाल्सी  | 2021-22 | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                       |
| 28 | प्रियांशी रावत | 2021-22 | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                       |
| 29 | काजल डोबी      | 2021-22 | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                       |
| 30 | महेन्द्र आर्य  | 2021-22 | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में कांस्य पदक।                    |
| 31 | कु. मनीषा      | 2022-23 | अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 5000 मीटर दौड़ में 8वाँ स्थान।   |
| 32 | कु. मनीषा      | 2022-23 | नार्थ ईस्ट जोन अन्तर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में 5000 मीटर दौड़ में 5वाँ स्थान |
| 33 | महेन्द्र आर्य  | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक।                   |
| 34 | श्रुति हाल्सी  | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक।                   |
| 35 | प्रियांशी रावत | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक।                   |
| 36 | पूजा तडियाल    | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                      |
| 37 | भावना जोशी     | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में रजत पदक।                      |
| 38 | प्रदीप चौधरी   | 2022-23 | अखिल भारतीय, अन्तर विश्वविद्यालय ड्राप रोबाल प्रतियोगिता में कांस्य पदक।                   |

### नेशनल प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय के खिलाड़ियों की सूचना

| खेल का नाम                     | प्रतियोगिता का नाम   | खिलाड़ियों के नाम  | उपलब्धि  |
|--------------------------------|--|--|--|
| वेटलिफ्टिंग                    | राष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में प्रतिभाग                       | दीपक जोशी  | -  |
| वॉलीबॉल                        | खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2020<br>गुवाहाटी असम 10 से 22 जनवरी 2020       | अनुज कुमार   | द्वितीय स्थान  |
| मिनी गोल्फ                     | 37वीं राष्ट्रीय खेल, गोवा 26 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2023 तक             | खुशी शर्मा   | -  |
| मिनी गोल्फ                     | 37वीं राष्ट्रीय खेल, गोवा 26 अक्टूबर से 9 नवम्बर 2023 तक             | श्री महेन्द्र कुमार  | -  |
| कबड्डी                         | 70वीं सीनियर राष्ट्रीय कबड्डी (म0)<br>प्रतियोगिता 10-12 दिसम्बर 2023 | नीलम मनराल   | -  |
| क्रिकेट                        | राष्ट्रीय सीनियर (म0) टी-20<br>क्रिकेट चैम्पियनशिप                   | कु0 नीलम भारद्वाज  | -  |
| ड्राप रोबाल                    | 14वीं सीनियर राष्ट्रीय ड्राप रोबाल<br>प्रतियोगिता 29-31 मार्च 2024   | अजय मेहरा<br>हीरा सिंह भण्डारी<br>श्रुति हाल्सी<br>नीशू रावत<br>प्रियांशी रावत<br>अंजली रावत<br>भावना जोशी<br>नीरज मेहरा<br>खुशाल सिंह | सिंगल इवेंट में प्रथम<br>त्रिपल इवेंट में प्रथम<br>मिक्स डबल इवेंट में प्रथम<br>सिंगल इवेंट में प्रथम<br>डबल इवेंट में प्रथम<br>डबल इवेंट में प्रथम<br>डबल इवेंट में प्रथम<br>-<br>- |
| खो-खो महिला                    | 38वें राष्ट्रीय खेल, उत्तराखण्ड                                      | भारती गिरी   | कप्तान, उत्तराखण्ड<br>खो-खो टीम  |
| वेटलिफ्टिंग<br>मार्डन पेटॉथलॉन | 38वें राष्ट्रीय खेल, उत्तराखण्ड                                      | निशा मेहरा<br>बिट्टू राजपूत<br>गौरव नेगी   | -<br>-<br>-  |

## स्वर्ण काल में वार्षिक क्रीड़ा समारोह के छात्र/छात्रा चैम्पियन

| वर्ष      | छात्र चैम्पियन                           | छात्रा चैम्पियन                 |
|-----------|--|---------------------------------|
| 1979-1980 | जगदम्बा प्रसाद जुयाल तथा भूपाल सिंह रावत | हंसा डंगवाल                     |
| 1980-1981 | चन्द्रशेखर वैला                          | सावित्री रावत                   |
| 1981-1982 | चन्द्रशेखर वैला                          | सावित्री रावत                   |
| 1984-1985 | महिपाल सिंह डंगवाल                       | मनजीत कौर तथा चन्द्रा माहेश्वरी |
| 1995-1996 | आनन्द सिंह रावत                          | लक्ष्मी रावत                    |
| 1996-1997 | विजेन्द्र कुमार                          | गंगा जोशी                       |
| 1997-1998 | शहजाद आलम                                | लक्ष्मी रावत                    |
| 1998-1999 | प्रकाश मठपाल तथा विजय पाल सिंह रावत      | लक्ष्मी रावत                    |
| 1999-2000 | खीम सिंह                                 | गंगा जोशी तथा मीनाक्षी हाल्सी   |
| 2000-2001 | खीम सिंह                                 | हेमा सती                        |
| 2001-2002 | खीम सिंह                                 | मीनाक्षी हाल्सी                 |
| 2002-2003 | महिपाल सिंह बंगारी                       | मीनाक्षी हाल्सी                 |
| 2003-2004 | सुरेन्द्र कम्बोज                         | राजवीर कौर                      |
| 2004-2005 | सुरेश चन्द्र                             | राजवीर कौर                      |
| 2005-2006 | प्रदीप पंत                               | राजवीर कौर                      |
| 2006-2007 | गणेश प्रसाद                              | रमा उनियाल                      |
| 2008-2009 | राजेन्द्र सिंह                           | रमा उनियाल                      |
| 2009-2010 | भूपेन्द्र सिंह                           | रमा उनियाल                      |
| 2015-2016 | मनोज सिंह                                | प्रियंका नेगी                   |
| 2016-2017 | मनोज सिंह                                | नेहा                            |
| 2017-2018 | रूपेश यादव                               | सोनिया रावत                     |
| 2018-2019 | अनमोल शर्मा                              | कोमल तथा कु. ललिता बधानी        |
| 2019-2020 | रूपेश यादव                               | प्रियंका रावत                   |
| 2021-2022 | अनमोल शर्मा                              | लक्ष्मी ऐरड़ा                   |
| 2022-2023 | पीयूष पाल                                | मनीषा                           |
| 2024-2025 | नीरज बिष्ट                               | निशा मेहरा                      |

क्रीड़ा प्रभारी

## राष्ट्रीय खेलों में पदकधारक खिलाड़ी



अजय मेहरा, बी.-एस.सी. V सेमे.  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के सिंगल इवेन्ट में प्रथम स्थान



नीशू रावत, बी.कॉम. III  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के सिंगल इवेन्ट में प्रथम स्थान



भावना जोशी, बी.ए. III वर्ष  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेन्ट में प्रथम स्थान



अंजली रावत, एम.-एस.सी. I  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेन्ट में प्रथम स्थान



प्रियांशी रावत, एम.कॉम. III  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेन्ट में प्रथम स्थान



हीरा सिंह भण्डारी, पी.जी. योग  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के त्रिपल इवेन्ट में प्रथम स्थान



श्रुति हालसी, बी.कॉम. III  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के मिक्स डबल इवेन्ट में प्रथम स्थान



नीरज मेहरा, एम.कॉम. I (2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेन्ट में प्रतिभाग एवं ऑल इंडिया मिनी गोल्फ प्रतियोगिता-2024 में कांस्य पदक



खुशल सिंह, बी.ए. III  
(2024-25)

14वें सीनियर राष्ट्रीय ड्रॉप रोबाल प्रतियोगिता के डबल इवेन्ट में प्रतिभाग

## राज्य स्तरीय टीम में चयनित प्रतिभावान खिलाड़ी



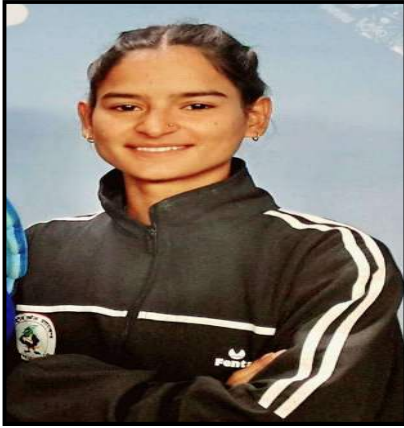
**महेन्द्र आर्या, एम.ए. चतुर्थ सेमे.**  
37वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की मिनी  
गोल्फ टीम में चयन (2023-24)  
एवं कुलपति मेडल धारक



**खुशी शर्मा, एम.ए. योग**  
(2023-24)  
37वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की  
मिनी गोल्फ टीम में चयन



**नीलम भारद्वाज, बी.ए. प्रथम सेमे.**  
(2023-24)  
बी.सी.सी.आई. सीनियर महिला टी-20 ट्राफी के  
लिए उत्तराखण्ड महिला क्रिकेट टीम में चयन



**भारती गिरी, बी.ए. तृतीय सेमे.**  
(2024-25)  
38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की  
खो-खो महिला टीम की कप्तान



**निशा मेहरा, बी.ए. तृतीय सेमे.**  
(2024-25)  
38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की  
खो-खो महिला टीम की सदस्य



**बिट्टू राजपूत, बी.ए. तृतीय सेमे. 2024-25)**  
38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की  
वेटलिफ्टिंग टीम में 89 किलोग्राम वेट  
कैटेगरी में प्रतिभाग



**गौरव सिंह नेगी, बी.ए. चतुर्थ सेमे.**  
(2024-25)  
38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखण्ड की  
मॉर्डन पेटाथलॉन की टीम की सदस्य



**योगिता नेगी, बी.-एससी. चतुर्थ सेमे.**  
(2024-25)  
75वें जूनियर राष्ट्रीय बास्केटबाल प्रतियोगिता-  
2025 में उत्तराखण्ड की टीम की सदस्य



**नीलम मनराल, एम.ए. IV**  
(2023-24)  
70वीं सीनियर राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में  
उत्तराखण्ड की महिला कबड्डी टीम में चयन

अखिल भारतीय अन्तरविश्वविद्यालय/नॉर्थ जोन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले  
प्रतिभावान खिलाड़ी



साक्षी पाठक, बी.-कॉम. तृतीय  
(2024-25)

नार्थ जोन फुटबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



आदर्श कुमार, बी.ए. प्रथम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन फुटबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



दिया जलाल, बी.ए. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन फुटबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



लक्ष्मण आर्या, बी.ए. पंचम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन ताइक्वाडों प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



सलोनी रावत, बी.ए. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन फुटबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



अनामिका, बी.ए. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन वॉलीबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



मनीष आर्या, बी.ए. तृतीय  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



दिव्य पाण्डे, बी.ए. तृतीय  
(2024-25)

नार्थ जोन वॉलीबाल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



विकास मेहरा, बी.ए. पंचम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**लखवीर सिंह**  
बी.ए. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**प्रियंका रावत**  
बी.-एससी. प्रथम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन बास्केटबॉल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



**गौरव आर्या**  
बी.ए. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन वॉलीबॉल प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**हिमानी कार्की**  
बी.-एससी. तृतीय सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**दीपा मेहरा**  
बी.-एससी. पंचम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम की सदस्य



**नीरज गिरि गोस्वामी**  
बी.ए. पंचम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



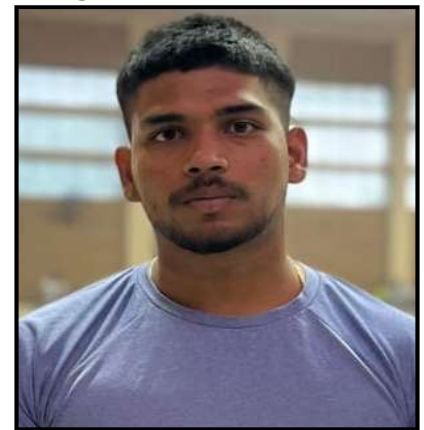
**अभिषेक अधिकारी**  
बी.ए. प्रथम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**हरेन्द्र सिंह राणा**  
बी.कॉम. प्रथम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन खो-खो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य



**हरषित बिष्ट**  
बी.ए. प्रथम सेमे.  
(2024-25)

नार्थ जोन ताइक्वांडो प्रतियोगिता-2024 में  
कु.वि.वि. नैनीताल की टीम के सदस्य

## प्राध्यापकों की सूची वर्ष 2023-24

| क्र.सं. | नाम                       | पद नाम                                     | क्र.सं. | नाम                       | पद नाम                                       |
|---------|---------------------------|--|---------|---------------------------|--|
| 1.      | डॉ. राम दुलार सिंह        | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान         | 20.     | डॉ. अनुराग श्रीवास्तव     | असि. प्रोफेसर, भूगोल                         |
| 2.      | डॉ. राजीव सिंह कनौजिया    | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान    | 21.     | डॉ. प्रकाश चन्द्र पालीवाल | असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान               |
| 3.      | डॉ. सिद्धेश्वर सिंह मौर्य | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान    | 22.     | डॉ. ऋचा पुनेठा            | असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान               |
| 4.      | डॉ. अनुमिता अग्रवाल       | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र        | 23.     | डॉ. शिप्रा पन्त           | असि. प्रोफेसर, संगीत                         |
| 5.      | डॉ. जगमोहन सिंह नेगी      | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान      | 24.     | डॉ. दीपक खाती             | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य         |
| 6.      | डॉ. प्रमोद जोशी           | एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, गणित       | 25.     | डॉ० जे०पी० त्यागी         | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान |
| 7.      | डॉ. सुमन कुमार            | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र   | 26.     | डॉ. ममता भदोला जोशी       | असि. प्रोफेसर, वाणिज्य                       |
| 8.      | डॉ. निवेदिता अवस्थी       | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान    | 27.     | डॉ. कृष्णा भारती          | असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र                   |
| 9.      | डॉ. अल्का                 | असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र            | 28.     | डॉ. सुभाष चन्द्र          | असि. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान                 |
| 10.     | डॉ. शरद भट्ट              | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, इतिहास        | 29.     | डॉ. डी.एन. जोशी           | असि. प्रोफेसर, भूगोल                         |
| 11.     | डॉ. भावना पन्त            | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, जन्तु विज्ञान | 30.     | डॉ. देव आशीष              | असि. प्रोफेसर, मनोविज्ञान                    |
| 12.     | डॉ. जया भट्ट              | असि. प्रोफेसर, इतिहास                      | 31.     | डॉ. दुर्गा तिवारी         | अतिथि शिक्षक, हिन्दी                         |
| 13.     | डॉ. ललित मोहन             | असि. प्रोफेसर, हिन्दी                      | 32.     | डॉ. रश्मि आर्या           | अतिथि शिक्षक, अर्थशास्त्र                    |
| 14.     | डॉ. शंकर मण्डल            | असि. प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान               | 33.     | डॉ. मनोज कुमार नैलवाल     | अतिथि शिक्षक, रसायन वि.                      |
| 15.     | डॉ. पवन टम्टा             | असि. प्रोफेसर, गणित                        | 34.     | डॉ. हेम चन्द्र भट्ट       | अतिथि शिक्षक, वाणिज्य                        |
| 16.     | डॉ. कुसुम गुप्ता          | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान    | 35.     | डॉ. भानुप्रताप दुर्गापाल  | अतिथि शिक्षक, वाणिज्य                        |
| 17.     | डॉ. मूलचन्द्र शुक्ल       | असि. प्रोफेसर, संस्कृत                     | 36.     | डॉ. मुकेश चन्द्र          | अतिथि शिक्षक, गणित                           |
| 18.     | डॉ. योगेश चन्द्र          | असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र                 | 37.     | डॉ. नवभा जोशी             | अतिथि शिक्षक, रसा. वि.                       |
| 19.     | डॉ. सुरेश चन्द्रा         | असि. प्रोफेसर, हिन्दी                      | 38.     | श्री प्रकाश सिंह बिष्ट    | अतिथि शिक्षक, अंग्रेजी                       |
|         |                           |  | 39.     | डॉ. विजयानन्द             | अतिथि शिक्षक, समाजशास्त्र                    |
|         |                           |  | 40.     | डॉ. आलोक कण्डारी          | अतिथि शिक्षक, भौतिक वि.                      |
|         |                           |  | 41.     | डॉ. अखिलेश भट्ट           | अतिथि शिक्षक, इतिहास                         |
|         |                           |  | 42.     | डॉ. मीनाक्षी नेगी         | अतिथि शिक्षक, राजनीति वि.                    |
|         |                           |  | 43.     | डॉ. रागिनी गुप्ता         | अतिथि शिक्षक, जन्तु वि.                      |
|         |                           |  | 44.     | डॉ. रीता तिवारी           | अतिथि शिक्षक, हिन्दी                         |

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है, और पश्चाताप पर खत्म।  
बुद्धिमान दूसरों की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।

## प्राध्यापकों की सूची वर्ष 2024-25

| क्र.सं. | नाम                    | पद नाम                                   | क्र.सं. | नाम                       | पद नाम                                       |
|---------|------------------------|--|---------|---------------------------|--|
| 1.      | प्रो. सिद्धेश्वर मौर्य | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान  | 22.     | डॉ. अनुराग श्रीवास्तव     | असि. प्रोफेसर, भूगोल                         |
| 2.      | डॉ. पुनीता कुशवाहा     | एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, हिन्दी   | 23.     | डॉ. ऋचा पुनेठा            | असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान               |
| 3.      | प्रो. अनीता जोशी       | प्रोफेसर, मनोविज्ञान                     | 24.     | डॉ. पी.सी. पालीवाल        | असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान               |
| 4.      | प्रो. अनुमिता अग्रवाल  | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र      | 25.     | डॉ. दीपक खाती             | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य         |
| 5.      | प्रो. जगमोहन नेगी      | प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान    | 26.     | डॉ. शिप्रा पन्त           | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संगीत           |
| 6.      | डॉ. प्रमोद जोशी        | एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, गणित     | 27.     | डॉ. देवकी नन्दन जोशी      | असि. प्रोफेसर, भूगोल                         |
| 7.      | डॉ. सुमन कुमार         | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र | 28.     | डॉ. जे.पी. त्यागी         | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान |
| 8.      | डॉ. लोतिका अमित        | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान  | 29.     | डॉ. ममता भदोला जोशी       | असि. प्रोफेसर, वाणिज्य                       |
| 9.      | डॉ. सिराज अहमद         | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, भूगोल       | 30.     | डॉ. कृष्णा भारती          | असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र                   |
| 10.     | डॉ. लवकुश              | असि. प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान             | 31.     | डॉ. गुरप्रीत सिंह         | असि. प्रोफेसर, मनोविज्ञान                    |
| 11.     | डॉ. शरद भट्ट           | असि. प्रोफेसर, इतिहास                    | 32.     | डॉ. देव आशीष              | असि. प्रोफेसर, मनोविज्ञान                    |
| 12.     | डॉ. जया भट्ट           | असि. प्रोफेसर, इतिहास                    | 33.     | डॉ. विजय कुमार            | असि. प्रोफेसर, वाणिज्य                       |
| 13.     | डॉ. नरेश कुमार         | असि. प्रोफेसर, इतिहास                    | 34.     | डॉ. इन्दू आर्या           | असि. प्रोफेसर, संगीत                         |
| 14.     | डॉ. ललित मोहन          | असि. प्रोफेसर, हिन्दी                    | 35.     | डॉ. प्रकाश सिंह बिष्ट     | अतिथि शिक्षक, अंग्रेजी                       |
| 15.     | डॉ. अल्का              | असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र               | 36.     | डॉ. नवभा जोशी             | अतिथि शिक्षक, रसायन विज्ञान                  |
| 16.     | डा. मूलचन्द्र शुक्ल    | असि. प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, संस्कृत     | 37.     | डॉ. रश्मि आर्या           | अतिथि शिक्षक, अर्थशास्त्र                    |
| 17.     | डा. ऋतु                | असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र               | 38.     | डॉ. मनोज कुमार नैलवाल     | अतिथि शिक्षक, रसायन विज्ञान                  |
| 18.     | डॉ. सुरेश चन्द्रा      | असि. प्रोफेसर, हिन्दी                    | 39.     | डॉ. भानु प्रताप दुर्गापाल | अतिथि शिक्षक, वाणिज्य                        |
| 20.     | डॉ. पवन टम्टा          | असि. प्रोफेसर, गणित                      | 40.     | डॉ. मुकेश चन्द्र          | अतिथि शिक्षक, गणित                           |
| 21.     | डॉ. नीमा राणा          | असि. प्रोफेसर, हिन्दी                    | 41.     | डॉ. रागिनी गुप्ता         | अतिथि शिक्षक, जन्तु विज्ञान                  |
|         |                        |  | 42.     | डॉ. हेम चन्द्र भट्ट       | अतिथि शिक्षक, वाणिज्य                        |
|         |                        |  | 43.     | डॉ. मीनाक्षी नेगी         | अतिथि शिक्षक, राजनीति विज्ञान                |
|         |                        |  | 44.     | डॉ. गरिमा पाण्डे          | अतिथि शिक्षक, अंग्रेजी                       |
|         |                        |  | 45.     | डॉ. प्रकाश चन्द्र सिंह    | अतिथि शिक्षक, राजनीति विज्ञान                |

कल्याणकर वाणी ही मुख से निकालें, पापी वाणी नहीं। कल्याणकर वाणी का उच्चारण अच्छा है। पापी वाणी को मुख से निकालने वाला बाद में पछताता है।

-जातक

## शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ष 2023-24

| क्र. | नाम                        | पद नाम                       |
|------|----------------------------|------------------------------|
| 1.   | श्री गोविन्द सिंह जंगपांगी | मु. प्रशासनिक अधिकारी        |
| 2.   | श्री पूरन चन्द्र सती जी    | प्रधान सहायक                 |
| 3.   | श्री रणजीत सिंह            | विद्युतकार                   |
| 4.   | डॉ. प्रमोद कुमार पाण्डे    | प्रयो. सहा. रसा. विज्ञान     |
| 5.   | श्री प्रकाश चन्द्र पपने    | प्रयो. सहा., भौतिक विज्ञान   |
| 6.   | श्री आनन्द बल्लभ रिखाडी    | प्रयो. सहा., वनस्पति विज्ञान |
| 7.   | श्री दिनेश चन्द्र पाण्डे   | प्रयो. सहा., रसायन विज्ञान   |
| 8.   | श्री नन्दन सिंह रौतेला     | प्रयो. सहा. रसायन वि.        |
| 9.   | श्री नसीम अहमद             | प्रयो. सहा., जन्तु विज्ञान   |
| 10.  | श्रीमती पूजा गैड़ा         | प्रयो. सहा., जन्तु विज्ञान   |
| 11.  | अर्पिता वत्सल              | प्रयो. सहा. गृहविज्ञान       |
| 12.  | श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ी  | तबला वादक                    |
| 13.  | श्री धनसिंह                | अनुसेवक                      |
| 14.  | श्री हुकुम सिंह            | अनुसेवक                      |
| 15.  | श्री राम सिंह              | अनुसेवक                      |
| 16.  | श्री नागेन्द्र सिंह        | अनुसेवक                      |
| 17.  | श्री हरीसिंह               | माली                         |
| 18.  | श्री विजय सिंह             | अनुसेवक                      |
| 19.  | श्री किशन सिंह             | अनुसेवक                      |
| 20.  | श्रीमती राधिका देवी        | अनुसेवक                      |
| 21.  | श्री धरम सिंह              | अनुसेवक                      |
| 22.  | श्रीमती किरन देवी          | सफाईकार                      |
| 23.  | श्रीमती गौसिया खानम        | अनुसेवक                      |
| 24.  | श्री आकाश लाल              | अनुसेवक                      |
| 25.  | श्री सौरभ                  | सफाईकार                      |
| 27.  | श्री इमरान खान             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 28.  | श्री प्रकाश चन्द्र         | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 29.  | श्री मदन भारती             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 30.  | श्री योगेश सती             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 31.  | श्री दीपक सिंह             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 32.  | श्री भगत सिंह              | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 33.  | श्री राकेश सिंह            | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 34.  | श्री रविन्द्र कुमार आर्य   | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 35.  | श्री बलवन्त भण्डारी        | उपनल कार्मिक, अनुसेवक        |
| 36.  | श्री सुशील कुमार           | उपनल कार्मिक, चौकीदार        |

## शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ष 2024-25

| क्र. | नाम                        | पद नाम                         |
|------|----------------------------|--------------------------------|
| 1.   | श्री गोविन्द सिंह जंगपांगी | मुख्य प्रशासनिक अधिकारी        |
| 2.   | श्री लक्ष्मी दत्त मठपाल    | वैयक्तिक अधिकारी               |
| 3.   | श्री पी.सी.सती             | प्रधान सहायक                   |
| 4.   | श्री रणजीत सिंह            | विद्युतकार                     |
| 5.   | श्री प्रकाश चन्द्र पपने    | प्रयोग. सहायक भौतिकी विज्ञान   |
| 6.   | डॉ. प्रमोद पाण्डे          | प्रयो. सहायक भौतिकी विज्ञान    |
| 7.   | श्री आनन्द बल्लभ रिखाडी    | प्रयो. सहायक वनस्पति विज्ञान   |
| 8.   | श्री नन्दन सिंह रौतेला     | प्रयो. सहायक रसायन विज्ञान     |
| 9.   | श्री नसीम अहमद             | प्रयोगशाला सहायक जन्तु विज्ञान |
| 10.  | श्री निति                  | प्रयोगशाला सहायक भूगोल         |
| 11.  | श्रीमती अर्पिता            | प्रयोगशाला सहायक गृह विज्ञान   |
| 12.  | श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ी  | तबला वादक                      |
| 13.  | श्री दर्शन सिंह            | उपनल लिपिक                     |
| 14.  | श्री हुकुम सिंह            | अनुसेवक                        |
| 15.  | श्री धन सिंह               | अनुसेवक                        |
| 16.  | श्री हरी सिंह              | माली                           |
| 17.  | श्री किशन सिंह             | अनुसेवक                        |
| 18.  | श्री राम सिंह              | अनुसेवक                        |
| 19.  | श्री विजय सिंह             | अनुसेवक                        |
| 20.  | श्री नागेन्द्र सिंह        | अनुसेवक                        |
| 21.  | श्रीमती राधिका देवी        | अनुसेवक                        |
| 22.  | श्री धरम सिंह              | अनुसेवक                        |
| 23.  | श्रीमती गौसिया खानम        | अनुसेवक                        |
| 24.  | श्री आकाश लाल              | अनुसेवक                        |
| 25.  | श्रीमती किरन देवी          | पर्यावरण मित्र                 |
| 27.  | श्री इमरान खान             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 28.  | श्री प्रकाश चन्द्र         | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 29.  | श्री मदन भारती             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 30.  | श्री योगेश सती             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 31.  | श्री दीपक सिंह             | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 32.  | श्री भगत सिंह              | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 33.  | श्री राकेश सिंह            | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 34.  | श्री रविन्द्र कुमार आर्य   | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 35.  | श्री बलवन्त भण्डारी        | उपनल कार्मिक, अनुसेवक          |
| 36.  | श्री सुशील कुमार           | उपनल कार्मिक, चौकीदार          |

## बी.एड. विभाग वर्ष 2023-24

| क्र. नाम                 | पद नाम                           |                        |                                  |
|--------------------------|----------------------------------|------------------------|----------------------------------|
| 1. डॉ. संगीता कुमारी     | विभागाध्यक्ष बी.एड.              |                        | <b>2024-25</b>                   |
| 2. डॉ. अजय कुमार         | प्रवक्ता, एस.एस.टी., बी.एड.      | क्र. नाम               | पद नाम                           |
| 3. डॉ. हिमावती पन्त      | प्रवक्ता, गणित, बी.एड.           | 1. डॉ. संगीता कुमारी   | विभागाध्यक्ष बी.एड.              |
| 4. डॉ. विनिता विश्वकर्मा | प्रवक्ता, अग्रेजी, बी.एड.        | 2. डॉ. अजय कुमार       | प्रवक्ता, एस.एस.टी., बी.एड.      |
| 5. डॉ. भूपेश पन्त        | प्रवक्ता, विज्ञान, बी.एड.        | 3. डॉ. हिमावती पन्त    | प्रवक्ता, गणित, बी.एड.           |
| 6. श्री ललित मोहन        | प्रवक्ता, हिन्दी, बी.एड.         | 4. श्री ललित मोहन      | प्रवक्ता, हिन्दी, बी.एड.         |
| 7. श्री अजय सिंह         | प्रवक्ता, शारीरिक शिक्षा, बी.एड. | 5. श्री अजय सिंह       | प्रवक्ता, शारीरिक शिक्षा, बी.एड. |
| 8. डॉ. रंजना भारती       | अतिथि प्रवक्ता, बी.एड.           | 6. डॉ. रंजना भारती     | अतिथि प्रवक्ता, बी.एड.           |
| 9. श्रीमती हेमा पन्त     | पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एड.         | 7. श्री सतेन्द्र बिष्ट | स्टोर कीपर                       |
| 10. श्री सतेन्द्र बिष्ट  | स्टोर कीपर                       | 8. श्री ज्वाला दत्त    | अनुसेवक                          |
| 11. श्री ज्वाला दत्त     | अनुसेवक                          |                        |                                  |

## PNG P.G COLLEGE RAMNAGAR, NAINITAL UTTARAKHAND Total Degree Awarded Ph.D Scholar Details till 2025

| S.N. | NAME OF SUPERVISOR      | NAME OF SCHOLAR    | AWARDED YEAR |
|------|-------------------------|--------------------|--------------|
| 1    | DR. FARHAT HUSSAIN      | NAKIUDDIN          | 2000         |
| 2    |                         | NISHANT PAPNEY     | 2004         |
| 3    | DR. B.C. MALKANI        | SANTOSH KUMAR      | 2009         |
| 4    | DR. D.C. TIWARI         | KIRAN KUMAR PANT   | 1992         |
| 5    |                         | CHANDRA PRAKASH    | 1993         |
| 6    |                         | VISHNU SARAN DEVAL | 2000         |
| 7    |                         | DEEPAK KHATI       | 2008         |
| 8    | DR. SANJEEV MEHROTRA    | MAHESH MITTAL      | 2010         |
| 9    |                         | GAURAV AGARWAL     | 2007         |
| 10   |                         | POONAM MENROTRA    | 2009         |
| 11   |                         | RAJNIKANT KUMAR    | 2014         |
| 12   | DR. DHARMENDRA KUMAR    | CHARU AGARWAL      | 2016         |
| 13   |                         | DINESH JOSHI       | 2021         |
| 14   | DR. KIRAN KUMAR PANT    | KAMLA BHAKUNI      | 2022         |
| 15   |                         | SONIYA VILASROI    | 2024         |
| 16   | DR. MOHAN CHANDRA PANDE | GAUTAM RAWAT       | 13-01-2024   |

**PNG P.G COLLEGE RAMNAGAR, NAINITAL UTTARAKHAND**  
**Total Digree Awarded Hindi Ph.D Scholar Details till 2025**

| S.N. | Research Guide         | Research Scholar    | Subject | Registration Date | Awarded Date |
|------|------------------------|---------------------|---------|-------------------|--------------|
| 1    | प्रो. डी.के. पनेरू     | बी.आर. पनेरू        |         |                   | 1987         |
| 2    |                        | राजकुमारी धवन       |         |                   | 1989         |
| 3    |                        | भगवती जोशी          |         |                   | 1989         |
| 4    |                        | अनीता अग्रवाल       | हिन्दी  |                   | 1990         |
| 5    |                        | सरोज कश्यप          |         |                   | 1993         |
| 6    |                        | निर्मला पांडे       |         |                   | 1993         |
| 7    |                        | गिरीश चंद्र पंत     |         |                   | 1993         |
| 8    | डॉ. विमला सिंह         | गोपाल राम           |         | 2005              | 2009         |
| 9    |                        | तारा                |         | 2005              | 2011         |
| 10   |                        | ममता पाण्डेय        | हिन्दी  | 2012              | 2019         |
| 11   |                        | भावना अग्रवाल       |         | 2018              | 2023         |
| 12   |                        | मीना                |         | 2016              | 2025         |
| 13   | प्रो. अधीर कुमार       | चन्द्रा बिष्ट       |         |                   | 2007         |
| 14   |                        | मेनका रानी          |         |                   | 2008         |
| 15   |                        | अश्विनी कुमार सिंह  |         |                   | 2009         |
| 16   |                        | कुमारी पूजा भट्ट    |         |                   | 2018         |
| 17   |                        | जी सिंह रावत        |         |                   | 2022         |
| 18   |                        | राकेश कुमार         |         |                   | 2022         |
| 19   |                        | कुमारी प्रियंका     |         |                   | 2023         |
| 20   |                        | रश्मि अग्रवाल       |         |                   | 2024         |
| 21   | प्रो. गिरीश चन्द्र पंत | प्रवेश चन्द्र वर्मा |         | 28-05-2013        | 27-05-2022   |
| 22   |                        | शशिकला              | हिन्दी  | 20-06-2017        | 27-05-2022   |
| 23   |                        | श्री कृष्ण चन्द्र   |         | 20-04-2015        | 18-07-2022   |
| 24   |                        | भावना वर्मा         |         | 10-08-2018        | 29-03-2023   |

थोड़ा पढ़ना, ज्यादा सोचना, कम बोलना और ज्यादा सुनना, यही हैं बुद्धिमान बनने के उपाय।

-टैगोर

| S.N. | Research Guide    | Research scholar            | Subject | Registration date        | Awarded Date             |
|------|-------------------|-----------------------------|---------|--------------------------|--------------------------|
| 1    | Pro. B. M. Pandey | Shahnaaz                    |         | 2013 2021                |                          |
| 2    | Dr. Jaya Bhatt    | Kamal Singh<br>Ganesh joshi | History | 31-10-2014<br>21-07-2016 | 13-05-2022<br>08-05-2023 |
| 3    | Dr. Sarad Bhatt   | Charan Singh                |         | 16-12-2014               | 11-08-2023               |

| S.N. | Research Guide  | Research scholar | Subject | Registration date | Awarded Date |
|------|-----------------|------------------|---------|-------------------|--------------|
| 1    | Dr. Kamad Kumar | Sanjeev Kumar    |         |                   | 2017         |
| 2    | Dr. Bhawna Pant | Shalini          | Zoology |                   | 2023         |
| 3    | Dr. Bhawna Pant | Rajdeep Sood     |         |                   | 2025         |

| S.N. | Research Guide       | Research scholar     | Subject      | Registration date | Awarded Date |
|------|----------------------|----------------------|--------------|-------------------|--------------|
| 1    | Pro. Hemalata Mishra | Himanshu Mishra      | Pol. Science |                   | 2021         |
| 2    |                      | Tarun Kumar Arya     |              |                   | 2023         |
| 3    |                      | Vinay Prakash Mishra |              |                   | 2023         |
| 4    | Dr. J.P. Tyagi       | Mohit Joshi          |              |                   | 2024         |

### Total Registered Till 2025

| S.N | Name of Supervisor      | Researcher              | Year of Registration |
|-----|-------------------------|-------------------------|----------------------|
| 1   | Dr. J P Tyagi           | Shukhchain              | 12-9-2020            |
| 2   |                         | Pooja Sah               | 11-9-2021            |
| 3   |                         | Manisha Rana            | 7-15-2019            |
| 4   |                         | Ankit Kumar             | 12-9-2020            |
| 5   |                         | Kartik Chandola         |                      |
| 6   |                         | Himanshu Pathak         |                      |
| 7   | Dr D N Joshi            | Bhagya Sri              | 11-19-2020           |
| 8   |                         | Rashmi                  | 11-11-2021           |
| 9   |                         | Sangam Gopal            | 11-20-2021           |
| 10  | Dr. Siraj Ahmad         | Jyoti Tamta             |                      |
| 11  | Dr R.S Kanojia          | Imra Khanam             | 2016                 |
| 12  |                         | ManMohan Singh Khantwal | 2017                 |
| 13  |                         | Prakash Singh Manral    | 2019                 |
| 14  |                         | Kiran Arya              | 2019                 |
| 15  |                         | Vinod Kumar             | 2021                 |
| 16  |                         | Chhatrapati Pandey      | 2021                 |
| 17  |                         | Krishna Pal             |                      |
| 18  | Dr Subhash Ch Pokhriyal | Saurabh Pande           |                      |
| 19  |                         | Bhumika Bisht           |                      |

|    |                        |                          |            |
|----|------------------------|--------------------------|------------|
| 20 | Dr. Bhawana Pant       | Bhuwan Chandra           |            |
| 21 |                        | Rabila Ahmad             |            |
| 22 | Prof S.S. Maurya       | Neha Das                 | 12-2-2020  |
| 23 |                        | Hema Negi                | 11-9-2020  |
| 24 |                        | Gausia                   | 8-1-2016   |
| 25 |                        | Harshi Joshi             |            |
| 26 | Dr Mamta Bhadola Joshi | Lalita joshi             | 11-9-2021  |
| 27 |                        | Karishma                 | 12-4-2020  |
| 28 |                        | Shoeb Ajim Ansari        | 6-13-2019  |
| 29 |                        | Divya Singh              | 8-7-2023   |
| 30 | Dr Deepak Khati        | Nurulla Abbas Ansari     | 6-12-2019  |
| 31 |                        | Noor Nisha               | 6-13-2019  |
| 32 |                        | Bilal                    | 5-6-2019   |
| 33 |                        | Rohit Kumar              |            |
| 34 |                        | Vijay Kumar              |            |
| 35 | Dr Krishna Bharati     | kumud chaudhary          | 12-31-2022 |
| 36 |                        | Geeta Sanwal             | 12-30-2020 |
| 37 |                        | Jagdish                  | 12-8-2020  |
| 38 |                        | Bhupendra Singh Panchpal |            |
| 39 |                        | Neeraj Kumar             |            |
| 40 | Prof Anita Joshi       | Kusum Gupta              | 10-29-2021 |
| 41 |                        | Vivek Arya               | 11-10-2020 |
| 42 |                        | Azam                     | 1-17-2023  |
| 43 | Dr Anurag Srivastav    | Jeetendra                | 11-2-2020  |
| 44 |                        | Ramesh Ch Joshi          | 6-8-2023   |
| 45 |                        | Geeta                    | 7-25-2019  |
| 46 |                        | Ankit Kumar              |            |
| 47 | Dr P.C. Paliwal        | Puja Gole                | 1-20-2023  |
| 48 |                        | Latika Sagarwal          |            |
| 49 | Dr Sarad Bhatt         | Dipika Rautela           | 8-11-2017  |
| 50 |                        | Priyanka Sharma          |            |
| 51 |                        | Suman Bisht              |            |
| 52 |                        | Anurag Sharma            |            |
| 53 | Dr Jaya Bhatt          | Gajendra Singh           |            |
| 54 |                        | Smriti Bisht             |            |
| 55 |                        | Vishakha Rani            |            |
| 56 |                        | Arun Kumar               |            |
| 57 | Prof. Mohan C Pande    | Insha Ahmad              | 1-9-2023   |
| 58 |                        | Rajani                   | 1-9-2023   |
| 59 |                        | Pratibha Lodhiyal        |            |
| 60 |                        | Sunil Kumar              |            |
| 61 | Dr Lalit Mohan         | Deepa Rani               |            |

|     |                           |                        |             |
|-----|---------------------------|------------------------|-------------|
| 62  |                           | Rakshit Kumar          |             |
| 63  |                           | Suresh Chandra         |             |
| 64  |                           | Pratibha Lodiya        | 11.01. 2024 |
| 65  | Dr Pramod Joshi           | Farat                  | 12-10-2020  |
| 66  |                           | Lalit Mohan Kandpal    | 1-19-2023   |
| 67  |                           | Muniba                 |             |
| 68  | Dr Dharnendra Tewari      | Pawan Kumar            | 11-18-2021  |
| 69  |                           | Harshita Bisht         | 11-20-2021  |
| 70  |                           | Bhashkar Pandey        |             |
| 71  | Dr Abynuta Agrawal        | Sarita Bisht           | 11-9-2021   |
| 72  |                           | Neha Barodia           | 12-30-2022  |
| 73  |                           | Namrata Kumari         |             |
| 74  |                           | Anjali Pandey          |             |
| 75  |                           | Jagdish Prasad         |             |
| 76  | Prof G C Pant             | Manoj chandra          | 18-09-2018  |
| 77  | Dr Mool Chadra Shukla     | Urvashi Pawar          |             |
| 78  | Dr Kamala Tewari          | Neelam Negi            |             |
| 79  | Prof Jag Mohan Singh Negi | Rakesh Singh Negi      |             |
| 80  |                           | Babita Kandpal         |             |
| 81  | Dr Yogesh Chandra         | Garima Dev             | 1-20-2022   |
| 82  |                           | Hemant Kumar           | 2018        |
| 83  |                           | Usha Rani              | 2021        |
| 84  |                           | Vaishali               | 2022        |
| 85  | Dr Adheer Kumar           | Rashmi Agrawal         |             |
| 86  | Dr Dharendra Singh        | Vikas                  |             |
| 87  | Prof. B.M. Pandey         | Devendra shukla        | 2013        |
| 88  |                           | Mahendra kumar shukla  | 2018        |
| 89  | Dr. Kiran Kumar Pant      | Praksoon Kamboj        |             |
| 90  |                           | Pawan Kumar            |             |
| 91  |                           | Pratibha Shah          |             |
| 92  |                           | Urvashi Bhatt          |             |
| 93  | Dr. Naresh Kumar          | Rahul Kumar Arya       |             |
| 94  |                           | Bhupal Singh Bisht     |             |
| 95  | Dr. Neema Rana            | Abhisek Kumar          |             |
| 96  |                           | Mohit Singh            |             |
| 97  | Dr. Gurpreet Singh        | Deepti                 |             |
| 98  | Dr. Dev Ashish            | Moh. Rajab             |             |
| 99  |                           | Pankaj Singh Nagarkoti |             |
| 100 | Dr. Lotika Amit           | Yatendra Singh Panwar  |             |
| 101 |                           | Avantika Negi          |             |
| 102 | Dr. Punita Kushwaha       | Surendra Joshi         | 05.07.2019  |
| 103 |                           | Girish Chandra Shukla  | 27.10.2021  |
| 104 |                           | Anand Singh            | 09.11.2021  |
| 105 |                           | Meena Devi             | 07.01.2023  |

| S.N. | Research Guide            | Research scholar       | Subject  | Registration date |
|------|---------------------------|------------------------|----------|-------------------|
| 1    | Dr. Vanay Kumar Vidyalkar | Neelam                 | Sanskrit | 2012              |
| 2    |                           | Khilanand Joshi        |          | 2012              |
| 3    |                           | Rajendra Bhatt         |          | 2021              |
| 4    |                           | Prasash Chandra Ruvali |          | 2021              |
| 5    |                           | Ku. Umesvari Arya      |          | 2021              |

| S.N. | Research Guide     | Research scholar | Subject   | Registration date |
|------|--------------------|------------------|-----------|-------------------|
| 1    | Dr. Sangeeta Gupta | Neeraj Kumar     | Economics |                   |
| 2    |                    | Sunil Kumar      |           |                   |
| 3    |                    | Ku. Anuradha     |           |                   |
| 4    |                    | Kamini Gupta     |           |                   |

| S.N. | Research Guide | Research scholar      | Subject   | Registration date |
|------|----------------|-----------------------|-----------|-------------------|
| 1    | Dr. B.D. Dani  | Anchalesh Kumar       | Sociology | 2012              |
| 2    |                | Getta Upadhayay       |           | 2012              |
| 3    |                | Shashi Verma          |           | 2021              |
| 4    |                | Manohar Chandra Joshi |           | 2021              |
| 5    |                | Rohit Kumar Joshi     |           | 2021              |
| 6    |                | Pawan Kumar           |           |                   |
| 7    | Dr. Vidya ray  | Najiya Bano           | Sociology |                   |

### TOTAL Ph-D AWARDED 1975-2025

|    |              |     |
|----|--------------|-----|
| 1  | Music        | NIL |
| 2  | Home Science | NIL |
| 3  | Maths        | NIL |
| 4  | English      | NIL |
| 5  | CHEMISTRY    | NIL |
| 6  | Physics      | NIL |
| 7  | Hindi        | 24  |
| 8  | PSYCHOLOGY   | 9   |
| 9  | Pol Science  | 4   |
| 10 | Commerce     | 16  |

|    |              |           |
|----|--------------|-----------|
| 11 | Geography    | 1         |
| 12 | History      | 4         |
| 13 | Zoology      | 3         |
| 14 | Economics    | 4         |
| 15 | Sanskrit     | 5         |
| 16 | Sociology    | 7         |
| 17 | Botany       | 1         |
|    | <b>TOTAL</b> | <b>78</b> |

## नशा मुक्ति कार्यक्रम



एम पी हिंदू इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राएं सुपर ब्रेन योग अभ्यास के माध्यम से आत्मबल में वृद्धि करते हुए।



नशा मुक्त उत्तराखंड 2.0, समाज कल्याण विभाग के द्वारा महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया यह एक प्रशिक्षण कार्यशाला थी जिसमें अध्यक्ष रामनगर नगर पालिका अतिथि के रूप में उपस्थित रहे



पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से एमपी हिंदू इंटर कॉलेज के विद्यार्थियों में नशे के विरुद्ध जन जागृति अभियान

## संगीतायन : आयोजित संगीत विभाग



## अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक

# नमामि गंगे द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की कुछ झलकियां



अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक

# वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता की झलकियां



अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक

**NCC विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां**

*Happy 75th Republic Day*



**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक**

## NCC विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां



अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक

## पुरातन छात्र-छात्राओं की शिक्षणोत्तर गतिविधियाँ



# पुरातन छात्र-छात्राओं की शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ

## P. N. G. GOVERNMENT POST-GRADUATE COLLEGE RAMNAGAR [NAINITAL] PHOTO GROUP B. COM FINAL (1981-82)



**Sitting First Row (Left to Right)** Mr. A.K. Agrawal, R.G. Joshi (C.R.), M.G. Padalia, N.G. Pokhriyal (President), Prof. R.K. Mishra, Dr. Lakh Singh (Principal), Prof. M.G. Jain, S.C. Joshi (Secretary), L.M. Bishi, D. Singh, M.N. Andola  
**Standing First Row (Left to Right)** Mr. R. C. Bhatt, V. P. Joshi, K. S. Bishi, K. S. Jalal, Y. C. Sati, A. G. Upadhyaya, K. C. Sudaryal  
**Standing Second Row (Left to Right)** A. K. Mehrotra, T. C. Bujhalokoti, S. Chandra, Hinkhar Ali, S. P. Singh  
**Standing Third Row (Left to Right)** Mr. M. C. Wala, B. S. Bishi, D. Ram, H. C. Upadhyaya, O. P. Agrawal, K. N. Dani, R. K. Agrawal, J. Singh, N. C. Pandey, V. Singh, D. P. Srivastava, R. K. Maheshwari  
**Mr. B. L. (Peon), P. D. Pathak, R. Singh, G. S. Bishi, 'S' Bhat, M. Singh (Peon)**  
 Bharat Press, Kashipur, Phone : 163  
 Datta Photo Studio, Kashipur.

पी० एन० जी० राजकीय महाविद्यालय रामनगर (नैनीताल)  
 एम० कक्षा० छात्राध्यक्ष  
 वर्ष - 1986 - 87



**छात्रों वर सैठे (आगे से) -** सर्वेपी प्रमन सिंह चौहान (महेश्वर बालिभर परिवार), रा० सी०बी० मालवानी (विद्यासायब), पी० रा० मधुवान (महाश्वर विद्यासायब), पी० इर सिंह राय (महामाधुर्य), रा० मार० के० मधुवान, कु० तरुण गुला।  
**प्रथम पंक्ति में (अच्छे लुप) -** मधुवान सिंह, मधुवन सिंह, मनीम मोदी, संदीप आचार्य, नुरजोत सिंह, रावेन्द्र कुमार, सुरेश किशोर।  
**द्वितीय पंक्ति में (अच्छे लुप) -** मीरान सिंह, रमन मोहन, मीरान सिंह एवं कल्याण सिंह।  
 -जाहरी पीठे एर लुपि



अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक

महाविद्यालय की विकास यात्रा के शिलान्यास पट

इस स्नातकोत्तर महाविद्यालय का  
**शिलान्यास**  
दि 28 अप्रैल 1970 रविवार तदनुसार  
संवत् 2038 वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी को  
माननीय श्री नारायण देव तिवारी  
मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार  
के कर कर्मलों द्वारा  
सम्पन्न हुआ।

इस महाविद्यालय भवन का  
**उद्घाटन**  
दि 28 मार्च 1981 रविवार तदनुसार  
संवत् 2038 वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी को  
माननीय श्री नारायण देव तिवारी  
मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार  
के कर कर्मलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

**क्षेत्रावास भवन**  
का उद्घाटन  
माननीय श्री रामदत्त जोशी  
मूलपूर्व विधायक  
के कर कर्मलों द्वारा दिनांक 8 फरवरी 1983  
तदनुसार माघ 22 शुक्ल पक्ष  
द्वादशी बृहस्पतिवार संवत् 2038 का  
सम्पन्न हुआ।

पी.एन.जी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर  
**विज्ञान संकाय भवन**  
का उद्घाटन  
माननीय श्री पून चन्द्र शर्मा  
राज्य मंत्री, पर्वतीय विभा. उ. प्र. सरकार  
के कर कर्मलों द्वारा दि. 20 नवम्बर 1981 रविवार  
सम्पन्न हुआ।

पी. एन. जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय  
के पुस्तकालय भवन का  
**शिलान्यास**  
दि. 12 जून 1993 शुक्रवार को  
डा. कान्ता कुमारी संयुक्त सचिव वि. विद्यालय अनुदान प्रायोग  
के कर कर्मलों द्वारा सम्पन्न हुआ।  
डा. सुहम्मत ईद  
प्राचार्य, राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय

**लोक निर्माण विभाग**  
उत्तरांचल  
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर में प्रयोगशाला  
कार्य का निर्माण, रु. 15.00 लाख का  
**शिलान्यास**  
श्री नारायण देव तिवारी  
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तरांचल सरकार के कर कर्मलों द्वारा  
डा. (श्रीमती) इन्दिरा हृदयेश  
माननीय राज्य मंत्री, उच्च शिक्षा, उच्च माध्यमिक, शैक्षणिक कार्य,  
सूचना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उत्तरांचल सरकार की अध्यक्षता में  
श्री लाल कृष्ण शर्मा  
माननीय मंत्री, शिक्षा एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा, उत्तरांचल सरकार एवं  
उत्तरांचल विधानसभा के उपाध्यक्ष के अध्यक्षता में  
डा. महेंद्र सिंह पारस  
माननीय सचिव, नैनीताल क्षेत्र तथा  
श्री योगेश्वर सिंह रावत  
माननीय अध्यक्ष, उत्तरांचल सरकार के लोक निर्माण  
विभाग उत्तरांचल के अधिकारी  
दिनांक 05 फरवरी 2004, दिन बृहस्पतिवार  
तदनुसार दिनांक 20/02/2004, दि. 22 गते, शुक्ल पक्ष चतुर्थी  
को सम्पन्न हुआ।  
अभिषेक अधिकारी  
निर्माण संचालक नि. वि.  
रामनगर, नैनीताल

इस क्रीडा भवन का उद्घाटन  
माननीय श्री दीवान सिंह बिष्ट  
(संयुक्त सचिव एवं विधायक रामनगर)  
के कर कर्मलों द्वारा दि. 12-10-09 दिन  
सोमवार को किया गया।  
कार्यदायी संस्था  
लो. नि. वि. रामनगर  
प्राचार्य श्रीमती उषा देवी  
क्रीडा प्रभारी  
डा. नो. डी. दानी  
स्वास्थ्य अधिकारी  
अर्जुन सिंह खत्री एवं  
समस्त स्वाधिकारी  
सहभाग

**उत्तराखण्ड लोक निर्माण विभाग**  
कार्य का नाम - निजा नैनीताल में विनियमित क्षेत्र रामनगर द्वारा वित्तपोषित  
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के परिसर में बहुउद्देशीय भवन का निर्माण  
स्वीकृत लागत - रु. 34.50 लाख  
का  
**“ लोकार्पण ”**  
**डॉ धन सिंह रावत**  
माननीय कैबिनेट मंत्री  
(उच्च शिक्षा, विद्यापीठ शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, सहकारिता, विविक्तता स्वायत्त एवं विविक्तता शिक्षा)  
उत्तराखण्ड सरकार के  
कर कर्मलों द्वारा  
एवं  
**श्री दीवान सिंह बिष्ट**  
माननीय विधायक विधान सभा क्षेत्र 61 - रामनगर (नैनीताल)  
की अध्यक्षता में  
आज दिनांक - 21 अगस्त 2022 दिन रविवार  
को सम्पन्न हुआ।  
(श्रीधर सिंह गर्वाल) (डॉ संजीव कुमार शर्मा) (डॉ एन सी पाध्ये) (श्री विवेक कुमार)  
कार्यपालक निदेशक प्राचार्य अतिरिक्त अधिका  
नियंत्रिका नैनीताल उच्च शिक्षा, हल्द्वारी पी. एन. जी. राज. महाविद्यालय निर्माण संचालक नि. वि. रामनगर (नैनीताल)

पी. एन. जी. राजकीय स्नातकोत्तर  
महाविद्यालय रामनगर के स्नातकोत्तर भवन  
का  
**उद्घाटन**  
दि 10-12-2015 मंगलवार तदनुसार विक्रमी संवत् 2072  
मार्गशीर्ष 28 गते शुक्ल पक्ष चतुर्थी को  
माननीय डॉ (श्रीमती) इन्दिरा हृदयेश जी.  
कैबिनेट मंत्री, वित्त एवं उच्च शिक्षा उत्तराखण्ड सरकार  
के कर कर्मलों द्वारा  
सम्पन्न हुआ।

माननीय श्रीमती अमृता रावत जी मा.  
पूर्व विधायक जी द्वारा विधायक निधि से  
5.00 लाख रु. की धनराशि पुस्तकालय  
में नवीन पुस्तकों के लिये दी गयी।  
नवीन पुस्तकों को लाने में अथक प्रयास  
सुमित लोहनी (क्षेत्र संघ अध्यक्ष) के द्वारा  
किया गया।  
प्राचार्य विशेष सहयोग  
डा. हेमा प्रसाद अमिता लोहनी  
उपाध्यक्ष राज्य महिला आयोग

मद-विधायक निधि, वर्ष - 2024 - 25  
मा. विधायक - श्री दीवान सिंह बिष्ट जी  
(61 विधानसभा क्षेत्र रामनगर)  
कार्य का नाम - पी.एन.जी.पी.जी. कॉलेज रामनगर में आइटीएयम  
की ओर जाने वाले पथ पर टैल शैड निर्माण।  
लागत - ₹ 5.00 लाख  
कार्यदायी संस्था - विकास संचालक रामनगर (नैनीताल)

# महाविद्यालय छात्र संघ 2023-24



ललित कड़ाकोटी-अध्यक्ष



शिवांग रस्तोगी-उपाध्यक्ष



नीलम मनराल-छात्रा उपाध्यक्ष



चेतन पंत-सचिव



दीपक नेगी-संयुक्त सचिव



मोहित कुमार-सांस्कृतिक सचिव



रोहित कुमार-कोषाध्यक्ष



पीयूष जोशी  
विश्व विद्यालय प्रतिनिधि



प्राची बंगारी  
कला संकाय प्रतिनिधि



मनीषा बेलवाल  
वाणिज्य संकाय प्रतिनिधि

महाविद्यालय छात्र संघ  
2025-26



कृष्ण कुमार-अध्यक्ष



मनोज कुमार पाण्डे-उपाध्यक्ष



खुशी कश्यप- छात्रा उपाध्यक्ष



मनीष जोशी- सचिव



अभिनव लटवाल- संयुक्त सचिव



कृतिका मंदोलिया- सांस्कृतिक सचिव



सक्रान्त सिंह-कोषाध्यक्ष



रोहित नेगी-वि0वि0 प्रतिनिधि



**--: प्राध्यापक वर्ग :-**

**बैठी प्रथम पंक्ति (बायें से दायें)—** डॉ० सुमन कुमार, डॉ० लवकुश, डॉ० प्रमोद जोशी, प्रो० जगमोहन सिंह नेगी, प्रो० एस०एस० मौर्या, प्राचार्य प्रो० एम०सी० पाण्डे, डॉ० पुनीता कुशवाहा, प्रो० अनीता जोशी, प्रो० अनुमिता अग्रवाल, डॉ० जया भट्ट, डॉ० लोतिका अमित ।

**द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें)—** डॉ० डी० एन० जोशी, डॉ० सुभाष पोखरियाल, डॉ० अनुराग श्रीवारत्तव, डॉ० हेम भट्ट, डॉ० सिराज अहमद, डॉ० शरद भट्ट, डॉ० गरिमा, डॉ० नभवा जोशी, डॉ० रश्मि आर्य, डॉ० शिशा पन्त, डॉ० कुसुम गुप्ता, डॉ० कृष्णा भारती, डॉ० रागिनी गुप्ता, डॉ० मीनाक्षी जोशी, डॉ० ममता भदोला जोशी, डॉ० ऋतु चौधरी, डॉ० ऋचा पुनेठा, डॉ० नीमा साणा ।

**तृतीय पंक्ति —** डॉ० मुरली कापड़ी, डॉ० जे०पी० त्यागी, डॉ० ललित मोहन, डॉ० योगेश चन्द्र, डॉ० प्रकाश चन्द्र पातीवाल, डॉ० दीपक खाती, डॉ० देव आशीष, डॉ० सुरेश चन्दा, डॉ० प्रकाश सिंह बिष्ट, डॉ० विजय कुमार, डॉ० पवन टम्टा, डॉ० मनोज कुमार नैलवाल, डॉ० नरेश कुमार, डॉ० नितीन डोमण ।



**--: शिक्षार्णोत्तर कर्मचारी वर्ग :-**

**बैठी प्रथम पंक्ति (बायें से दायें):**— श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ी, श्री दर्शन सिंह, श्री प्रकाश पपनै, श्री मोहन सिंह बिष्ट, श्री आनन्द बल्लभ रेखाड़ी, श्री गोविन्द सिंह जंगपांगी (वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी), प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, श्री प्रमोद चन्द्र पाण्डे, श्री नितिन, श्रीमती अर्पिता वत्सल, श्री नसीम अहमद, श्री नन्दन सिंह चौतेला ।

**द्वितीय पंक्ति (खड़े हुए):**— श्री राकेश सिंह भण्डारी, श्री भगत सिंह, श्री दीपक कुमार, श्री विजय सिंह, श्री सुशील, श्री योगेश सती, श्री रवीन्द्र कुमार, श्री मदन भारती, श्री बलवन्त, श्री किशन सिंह, श्री ज्वाला दत्त उनियाल, श्रीमती गौसिया खनम, श्री हरि सिंह, श्री हुकुम सिंह, श्री धरम सिंह ।



**--: सम्पादक मण्डल (पत्रिका समिति) :-**

(बायें से दायें) – प्रियांशु लखचौरा, (छात्र संपादक), पूजा मेहरा (छात्रा संपादक), डॉ० डी०एन० जोशी, डॉ० पुनीता कुशवाहा (प्रधान संपादक), प्रोफेसर एम० सी० पाण्डे (प्राचार्य), डॉ० प्रकाश सिंह बिष्ट, श्री गोविंद सिंह मेवाड़ी, डॉ०नीमा राणा, डॉ०मूलचन्द्र शुक्ल ।



**--: परीक्षा समिति :-**

बैठी प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) – डॉ० शरद भट्ट (संयोजक), प्राचार्य प्रोफेसर एम०सी०पाण्डे, प्रो० अनीता जोशी  
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – डॉ० सुभाष चन्द्र, डॉ० कुसुम गुप्ता, डॉ० योगेश चन्द्र

**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक**



**-: शास्ता मण्डल :-**

बैठी प्रथम पंक्ति (बायें से दायें)– डॉ० प्रमोद जोशी , प्रो० एस०एस० मौर्या (संयोजक), प्रो० एम०सी० पाण्डे, प्रो० अनीता जोशी  
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें)– डॉ० लवकुश, डॉ० सुमन कुमार, डॉ० दीपक खाती, डॉ० ममता भदोला जोशी



**-: कॅरियर काउन्सलिंग एवं प्लेसमेंट समिति :-**

बायें से दायें – डॉ० प्रकाश सिंह बिष्ट, डॉ० अनुराग श्रीवास्तव (संयोजक), प्राचार्य प्रो० एम०सी० पाण्डे, डॉ० लोतिका अमित, डॉ० रागिनी गुप्ता ।

**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक**



**--: क्रीडा समिति :-**

बैठी प्रथम पंक्ति (बायें से दायें)– डॉ० सुमन कुमार, प्राचार्य प्रोफेसर एम०सी० पाण्डे, डॉ० योगेश चन्द्र (संयोजक)  
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें)– डॉ० विजय कुमार, श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ी, डॉ० देव आशीष, डॉ० कुसुम गुप्ता, डॉ० रश्मि आर्य, डॉ० ममता भदोला जोशी



**--: आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.) :-**

बायें से दायें–बैठी पंक्ति :- श्री गोविन्द सिंह जंगपांगी (वैयक्तिक अधिकारी) डॉ. प्रमोद जोशी, प्राचार्य प्रो. मोहन चन्द्र पाण्डे, प्रो. अनीता जोशी, डॉ. शरद भट्ट ।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति):- डॉ. दीपक खाती, डॉ. सुभाष पोखरियाल, डॉ. पी.सी. पालीवाल, डॉ. देव आशीष, डॉ. योगेश चन्द्र ।

**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक**



### --: शोध समिति :-

डॉ. ममता भदौला जोशी, डॉ. पवन टम्टा, प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, डॉ. ललित मोहन ।



### विभिन्न शिक्षणोत्तर गतिविधियों के प्रभारी

**प्रथम पंक्ति :-** डॉ. लोतिका अमित (प्रभारी रेजर लीडर), डॉ. कृष्णा भारती (प्रभारी एन.सी.सी. छात्रा वर्ग), प्राचार्य प्रो. एम.सी. पाण्डे, डॉ. डी.एन. जोशी (प्रभारी एन.सी.सी.), डॉ. नीमा राणा (प्रभारी नमामि गंगे)

**द्वितीय पंक्ति:-** डॉ. ममता भदोला / जोशी (प्रभारी एन.एस.एस.), प्रो. जगमोहन सिंह नेगी (जिला समन्वय), डॉ. सुरेश चन्द्रा (प्रभारी एन.एस.एस.), डॉ० जे०पी० त्यागी (प्रभारी रोवर रेंजर) ।

**अभिव्यक्ति : स्वर्ण जयंती विशेषांक**

1975-2025  
50 years of Excellence



## Institutional Journey

This multi-faculty institution emerged from a visionary private foundation in 1975, achieving provincial status in next year. Since that pivotal moment, the college has maintained an unwavering trajectory of progress. Nestled in the majestic Shivalik foothills, it stands as the academic gateway between the Garhwal and Kumaon divisions.

Spread across a sprawling 14.50-acre riverside campus on the banks of the Kosi, we have evolved into a premier Post-Graduate hub. Affiliated with Kumaon University, Nainital, the college fosters excellence across Arts, Science, and Commerce, remaining a cornerstone of regional intellectual development.

**Established**  
1975

**Provincialised**  
1976

**UGC Inclusion**  
Section 2f 12(B) [1989]

**Affiliation**  
Kumaon University

**NAAC Accredited College**



**पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय**  
**रामनगर (नैनीताल) उत्तराखण्ड**

**Ph.: 05947-251326 • Website: [www.gpgcramnagar.org](http://www.gpgcramnagar.org) • E-mail: [principal\\_pngrmr@yahoo.com](mailto:principal_pngrmr@yahoo.com)**